परमेश्वर के रहस्य बाँटिए

बख़्त सिंह

SHARING GOD'S SECRETS

परमेश्वर के रहस्य बाँटिए

बख़्त सिंह

प्रकाशक
मसीही साहित्य संस्था
70 जनपथ, नई दिल्ली-1

SHARING GOD'S SECRETS

by

BAKHT SINGH

This book has been copyrighted to prevent misuse. It should not be reprinted or translated without written permission from the author and publisher.

Hindi Edition

First Print 2000 Copies in 2018

Printed & Published by

MASIHI SAHITYA SANSTHA

70 Janpath, New Delhi - 110001

Ph: 011-23320253, 23320373

E-mail: mssjanpath@gmail.com

₹ 150/-

प्राक्कथन

हमारे प्रिय भाई बख़्त सिंह अब 80 साल के हो गए हैं। वे परमेश्वर के उद्धार की एक अद्‌भुत कहानी हैं। अपनी युवावस्था में, उन्होंने परमेश्वर के वचन को फाड़ कर फेंका था, और हर तरह के मसीही प्रभाव का कड़ा विरोध किया था, लेकिन परमेश्वर अपने पवित्र-आत्माा द्वारा उनका पीछा करता रहा, और उसने अहंकार से भरे इस युवा सिख को मजबूर करते हुए उसे घुटनों के बल झुकाया, और तब उसने अपने पापों का अंगीकार किया, और यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार किया।

जब भाई बख़्त सिंह एक युवक के रूप में कैनैडा में थे, और जब परमेश्वर उनके ऊपर अपने इस दावे का दबाव बना रहा था कि वे उसके सेवक हैं और उन्हें उसकी सेवकाई के लिए अपने आपको अलग करना है, तो उन्होंने दो साल तक प्रभु का विरोध करते हुए संघर्ष किया था। उनका बहाना यह था कि उनकी बोली में एक हक़लापन है इसलिए वे प्रचार नहीं कर सकते; लेकिन अंततः उन्होंने अपने जीवन पर मसीह के दावे को स्वीकार कर लिया और भारत लौट आए। उनकी बोली की तक़लीफ के बावजूद, परमेश्वर ने उन्हें अद्‌भुत रीति से भारत के अनेक स्थानों में नई वाचा की कलीसियाएं स्थापित करने में इस्तेमाल किया - ख़ास तौर पर आंध्र-प्रदेश, तमिलनाडु और गुजरात में।

अब तक *परमेश्वर के रहस्यों को बाँटना* पुस्तक तीन भागों में उपलब्ध थी, लेकिन भाई बख़्त सिंह के 80वें साल में, उनके स्मरणोत्सव में उन तीनों भागों को मिलाकर एक पुस्तक बनाई जा रही

है – इस प्रार्थना के साथ कि परमेश्वर उसकी महिमा के लिए भाई बख़्त सिंह को उपयोगी सेवा के और बहुत से वर्षों की आशिष दे।

इस पुस्तक में भाई बख़्त सिंह की 12 सबसे प्रिय पुस्तकों में से पूरे वर्ष के लिए प्रतिदिन के पाठ लिए गए हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक इस तरह संपादित किया गया है कि एक छोटे स्वरूप में ये पुस्तक उनकी सेवकाई का सारांश बन जाएं।

जैसे–जैसे प्रतिदिन के पाठ पढ़े जाएंगे, वे पाठक के जीवन में आशिष और नवजीवन देंगे, और इस उद्देश्य के पूरा होने के लिए हम इस काम पर परमेश्वर की आशिष चाहते हैं।

प्रकाशक

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ सं॰
1.	परमेश्वर के आनन्द के रहस्य	8
2.	परमेश्वर के निवास-स्थान के रहस्य	39
3.	बैतनिय्याह के रहस्य	68
4.	परमेश्वर की महिमा के रहस्य	99
5.	पुन:प्राप्ति के रहस्य	129
6.	परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य	160
7.	रूपान्तर की पर्वतीय-चोटी के अनुभव के रहस्य	190
8.	जय के रहस्य	222
9.	परमेश्वर के चुनाव के रहस्य	253
10.	ईश्वरीय चाल-चलन के रहस्य	283
11.	नमक के संदेश के रहस्य	314
12.	पवित्र-आत्मा के रहस्य	344

जनवरी 1

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"परमेश्वर का आनन्द मेरी सामर्थ्य है।" नहे 8:10

परमेश्वर का आनन्द उसके सब बच्चों के लिए है। वे सभी इस आनन्द को पा सकते हैं जो दिन-प्रतिदिन उसके वचन को उनके हृदयों में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं, और जो कुछ भी प्रभु उसमें से उन्हें देता है, उसे ग्रहण करते हैं और विश्वास द्वारा उसका पालन करते हैं।

नहेम्याह के इस आठवें अध्याय में, हम इस्राएल की संतानों को परमेश्वर के वचन को एक नए सिरे से सुनने के लिए एकमत और एकमन होकर इकट्ठा होता हुआ पाते हैं। जब परमेश्वर के सेवकों ने उनके सामने उसकी व्याख्या की तो उनके हृदयों में आनन्द भर गया, और हम पढ़ते हैं कि "उन्होंने बड़ा आनन्द मनाया" *(8:17)।*

यह हो सकता है कि हमारी हठ और मूर्खता की वजह से हमारा पिछला जीवन नाकामियों से भरा हुआ रहा हो। लेकिन प्रभु हमारे भूतकाल को क्षमा करने के लिए, और हमें फिर से एक नया आनन्द - "प्रभु का आनन्द" देते हुए स्वयं अपने साथ जोड़ने के लिए तैयार है। उस आनन्द को हमारी सामर्थ्य होना है - ऐसा आनन्द जो हमारे उसकी तरफ मन फिराने के क्षण से ही शुरु हो जाता है, और जब हम एक-एक क़दम उसके साथ आगे बढ़ते हैं, तो वह एक गुणात्मक रूप में बढ़ता जाता है।

जनवरी 2

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"आनन्दित हो क्योंकि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।"
लूका 10:17,20

प्रभु यीशु ने कहा कि आनन्दित होने की असली वजह यह हक़ीक़त है कि हमारे नाम उसके द्वारा स्वर्ग में लिखे गए हैं। यह स्वर्गीय आनन्द का आधार है। यह बात महिमा से भरी है और अकथनीय आनन्द देती है - ऐसा आनन्द जो कोई मनुष्य हमसे छीन नहीं सकता। यहीं से आनन्द शुरू होता है, और महाक्लेश भी इसे हमसे नहीं ले सकता।

क्या प्रभु यीशु द्वारा आपका नाम उसके कील-छिदे हाथों द्वारा जीवन की पुस्तक में लिखा गया है? अपने पापों से मन फिरा लें। उसके लहू में धुल जाएं। उसके धार्मिकता के वस्त्र को पहन लें। सिर्फ और सिर्फ तभी आपका नाम वहाँ लिखा जा सकता है। कोई देर किए बिना यह सुनिश्चित कर लें कि आपके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

"उसने मुझे उद्धार का वस्त्र पहनाया है" (यशायाह 61:10)।

जब हमारे पास वे वस्त्र होते हैं तो हममें आनन्द की भरपूरी होती है। वे हमें यह हिम्मत और आज़ादी देते हैं कि हम कहीं भी जीवित परमेश्वर के नाम को पुकार सकते हैं। वे स्वयं हमारे प्रभु की धार्मिकता और जीवन हैं। जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपने मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करते हैं तो उसका जीवन हमारी आत्माओं का ओढ़ना बन जाता है। यही वह बात है जिसमें हम "भरपूर आनन्द" मनाते हैं।

जनवरी 3

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है; तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।" भजन. 16:11

जब हम परमेश्वर के सम्मुख रहते हैं तो हमारा आनन्द गुणात्मक रूप में बढ़ता है, और सिर्फ वहीं आनन्द की भरपूरी पाई जा सकती है। बहुत लोग यह साक्षी दे सकते हैं कि उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं, लेकिन वे यह नहीं कह पाते कि वे लगातार प्रभु की उपस्थिति में रहते हैं। प्रभु के बच्चों के साथ रहना और उनके साथ मिलकर आराधना और काम करना सम्भव है, और फिर भी यह हो सकता है कि आप प्रभु के साथ जुड़े हुए न हों। यह भी हो सकता है कि हम एक प्रार्थना सभा में हों और हमें फिर भी प्रभु की उपस्थिति महसूस न हो - एक सचेत रूप में उसके साथ जुड़े हुए न हों।

लेकिन आप उसकी उपस्थिति को महसूस नहीं करेंगे, तो आप आनन्द की भरपूरी नहीं पा सकते। इसकी अनेक वजह हो सकती हैं, लेकिन इसमें आपका ही दोष होगा। परमेश्वर की संतान होते हुए, बशर्ते उसके सामने आपका हृदय और आपका विवेक शुद्ध हों, तो आप उसकी उपस्थिति को जान सकते हैं और महसूस कर सकते हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप जीवित और प्रेम करने वाले परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के इस रहस्य को जान सकें क्योंकि उसके लोगों के लिए उसका यही उद्देश्य और लक्ष्य है।

जनवरी 4

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"प्रभु में मग्न रह, और वह तेरे सारे मनोरथों को पूरा करेगा।" भजन. 37:4

जो आनन्द हमें नया जन्म पाने के समय मिलता है, और जो प्रभु की उपस्थिति में रहने से गुणात्मक रूप में बढ़ता जाता है, वह तब और भी दृढ़ हो जाता है जब हम प्रभु में अपना आनन्द पा लेते हैं और अपने बाक़ी सभी आनन्द पूरी तरह भूल जाते हैं – चाहे वह खाना या पीना हो, मित्र हों, पदोन्नति या बड़ा नाम हो, या बाइबल का विशेष ज्ञान भी क्यों न हो।

अगर हम प्रभु में अपना आनन्द पा लेंगे, तो जो आनन्द ये सब बातें हमें दे सकती हैं, प्रभु के आनन्द में हमें उससे कितना बढ़कर दिया जाएगा! क्या हमारा प्रभु सबसे बढ़कर और सबसे भला नहीं है? और उसकी महिमा कभी कम नहीं होती। इसलिए हममें यही अभिलाषा हो कि हम उसकी महिमा को ज़्यादा से ज़्यादा देखने वाले हों। वह सब कुछ नहीं जो वह हमें देता है, बल्कि जो वह स्वयं है। इसलिए नहीं क्योंकि वह हमारी देह को चंगा करता है और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देता है, बल्कि इसलिए क्योंकि हमने उसके सुन्दर मुख की महिमा की झलक देख ली है। यही वह बात है जो हमारे हृदयों को आनन्द से भर देती है।

जनवरी 5

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"हे प्रभु, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न होता हूँ।"
भजन. 40:8

जब हमने पहले प्रभु को जाना था, तब हम यह नहीं जानते थे कि हम उसकी इच्छा को कैसे जानें, उसकी आवाज़ को कैसे सुनें, यह कैसे समझें कि वह कहाँ और कैसे काम कर रहा है। लेकिन, जब हम उसके साथ चलना शुरू कर देते हैं, और ज़्यादा नज़दीकी से उसके साथ रहने लगते हैं, तो हमें यह पता चल जाता है कि "हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं"*(2 कुरि. 6:1)*।

जब हम परमेश्वर के वचन का प्रचार सुनते हैं, और प्रभु यीशु मसीह के नाम को ऊँचे पर उठाए जाते हुए, उसे ग्रहण किए जाते हुए, और उसका काम होता हुआ देखते हैं, तब हमारे हृदय आनन्द से भर जाते हैं। जब प्रभु हमारी ख़ुशी बन जाता है, तो उसका नाम, उसकी भलाई और उसकी महिमा हमारा भरपूर आनन्द बन जाता है, और हममें यह इच्छा पैदा हो जाती है कि हम उसकी इच्छा को जानें और उसे पूरा करें। अगर हम आनन्दित होकर यह कह सकें: "प्रभु, चाहे तू मुझे यहाँ रख या कहीं और भेज दे"; जब हम अपने पूरे हृदय से यह कह सकें: "तेरी इच्छा पूरी हो" तब वह आनन्द उसकी इच्छा पूरी करने के लिए हमारी सामर्थ्य बन जाएगा।

क्या आप चाहते हैं कि प्रभु का आनन्द आपकी सामर्थ्य बन जाए? तो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में प्रसन्न होना सीख लें। उसकी इच्छा को जानने के लिए समय निकालें और समय दें, और फिर उसे पूरी करने को अपनी ख़ुशी बना लें। ऐसा करने के लिए आपको पीड़ाएं सहनी पड़ेंगी, एक लम्बी दूरी तय करनी पड़ेगी, लेकिन यह एक सच्चाई होगी कि आप उसकी इच्छा पूरी कर रहे होंगे, और यह बात आपको भरपूर आनन्द और ख़ुशी देगी।

जनवरी 6

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा, कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।” यूहन्ना 16:24

यह सीखें कि प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करना क्या होता हैं “स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार/सामर्थ्य उसकी है” *(मत्ती 28:18)।* इस बात में अलौकिक रहस्य रखा हुआ है। और वह सामर्थ्य, वह अधिकार अब इस पृथ्वी पर हमारे द्वारा इस्तेमाल होना है। हमारी सामर्थ्य हमारे प्रभु यीशु के नाम में है।

जब संकट या शत्रु आए, तब हम क्या करें? ऐसे समय में हमारी सामर्थ्य कहाँ होती है? यक़ीनन, वह हमारे शब्दों में नहीं होती, लेकिन यीशु मसीह के नाम में हमारे अधिकार को इस्तेमाल करने में होती है। शत्रु को एक बाढ़ की तरह आने दें *(यशा. 59:19)*, उसे एक दहाड़ते हुए सिंह की तरह आने दें *(1 पत. 5:8)*, हम उसे प्रभु यीशु मसीह के नाम में बाँध देंगे। यह हमारा आनन्द और सामर्थ्य है। मसीह में हम जयवंत से बढ़कर हैं।

जनवरी 7

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"ये बातें हम तुम्हें इसलिए लिखते हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" 1 यूह. :4

जब वचन के गुप्त रहस्य हम पर प्रकट किए जाते हैं, तब हमारे हृदय एक ऐसे आनन्द से भर जाते हैं जो हमें सशक्त करता है। हमारी शक्ति सिर्फ बाइबल के ज्ञान में नहीं है। जब अपने पवित्र-आत्मा के द्वारा, स्वयं प्रभु यीशु उसके वचन के रहस्यों को हम पर प्रकट करता है, हम तब शक्तिशाली होते हैं। "मैं तुझे...बड़ी बातें दिखाऊँगा" *(यिर्म. 33:3)*।

हमारे प्रेमी प्रभु द्वारा उसके जीवित वचन को हम पर खोलना ही हमारा बल होता है। और फिर जब हम दिन-प्रतिदिन परमेश्वर के वचन पर मनन करते रहते हैं और वह अपने आपको हम पर और ज़्यादा प्रकट करता जाता है, तब हम अपने आनन्द को भी और ज़्यादा बढ़ता हुआ पाते हैं। जब हम उसकी राह तकते रहते हैं, तो वह हमें दिन-प्रतिदिन ताज़गी से भरा कुछ नया देता है, और परमेश्वर का वचन हमारे लिए वास्तविक हो जाता है - वह हमारा आनन्द और हमारी सामर्थ्य बन जाता है।

जनवरी 8

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“वे महासभा के सामने से आनन्द मनाते हुए चल दिए कि उसके नाम के लिए वे अपमान सहने के योग्य तो ठहरे।” प्रेरितों. 5:41

जब हम प्रभु यीशु मसीह के लिए अपमानित होने की पीड़ा सहने लायक़ समझे जाते हैं, तो हमें निराश और हताश होने की बजाय आनन्दित होना चाहिए क्योंकि इस तरह हम उसकी महिमा को एक नए रूप में देखते हैं, और उस आनन्द में हम एक नई और अद्‌भुत सामर्थ्य पाते हैं। उसके नाम के लिए अपमानित होने से हम उसकी सेवा और सम्मान करने के लिए एक और बड़ी ज़िम्मेदारी की जगह पर पदोन्नत होते हैं।

“अगर मसीह के नाम के कारण तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो तुम धन्य हो” *(1 पत. 4:14)।*

इसलिए, आनन्द मनाएं, क्योंकि आपको इस योग्य जाना गया है कि आपको उसके नाम की ख़ातिर पीड़ा सहने की अलौकिक ज़िम्मेदारी दी जा सके। यह वास्तविक पदोन्नति है। जब आप अपने इस विशेषाधिकार को समझ जाएंगे, तब आप बलवंत हो जाएंगे।

ऐसा हो कि हममें से हरेक प्रभु के उस आनन्द में प्रवेश करना सीखे जो हमारा बल है।

जनवरी 9

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, बल्कि धार्मिकता, मेल और वह आनन्द है जो पवित्र-आत्मा में है।" रोमियों 14:17

पृथ्वी का आनन्द भौतिक वस्तुओं को प्राप्त कर लेने में से आता है। मनुष्य यह सोचते हैं कि जो कुछ वे चाहते हैं अगर वह उन्हें मिल जाए तो वे प्रसन्नता पा लेंगे लेकिन फिर जब जल्दी ही या बाद में, जीवन में निराशा आती है तो सारी आशाएं टूट जाती हैं। जिन बातों में आप अपना आनन्द देख रहे थे, अंत में वही खोखली साबित होती हैं। प्रभु यीशु मसीह, वह जीवित, प्रेमी मुक्तिदाता जो पापियों के लिए मरा है, सिर्फ वही है जो आपको आनन्द दे सकता है। लेकिन जो आनन्द वह आपको देना चाहता है वह पृथ्वी का आनन्द नहीं है। वह स्वयं उसका स्वर्गीय आनन्द है।

पवित्र-आत्मा, जो हममें रहने के लिए आता है, परमेश्वर के उपहार के रूप में हममें धार्मिकता की भरपूरी तैयार करता है, और वह धार्मिकता ही हमारी शांति और आनन्द का स्रोत् होता है। मनुष्य परमेश्वर और मनुष्यों के सामने सही (धर्मी) ठहरने के लिए बड़ा संघर्ष करते हैं, लेकिन मनुष्य जिसे धार्मिकता के काम कहते हैं, उन्हें परमेश्वर मैले चिथड़े कहता है *(यशा. 64:6)*। वह चाहे यहूदी धार्मिकता हो, या हिन्दू धार्मिकता हो, या बौद्ध धार्मिकता हो, या 'परम्परावादी मसीही' धार्मिकता हो, परमेश्वर उसे मैले चिथड़े कहता है। परमेश्वर उसके प्रेम के मुफ्त उपहार के रूप में आपको उसकी धार्मिकता देना चाहता है।

वह प्रेम के साथ शांति को जोड़ता है और उसे अनन्त से गुणा करता है। यह उसकी कृपा है! और उस प्रेम और शांति के साथ वह पवित्र-आत्मा का आनन्द जोड़ देता है। लेकिन अगर आप परमेश्वर के पवित्र-आत्मा को आपके अन्दर आने और काम करने देंगे, और आप स्वयं परमेश्वर की धार्मिकता से धर्मी हो जाएंगे, और इसके नतीजे के तौर पर आप परमेश्वर के आनन्द से उछल पड़ेंगे, क्योंकि पवित्र-आत्मा आपको यह आश्वासन दे देगा कि अब आप परमेश्वर की नज़र में सही (धर्मी) हो गए हैं, और क्योंकि आप दिन-प्रतिदिन स्वयं को उसमें ज़्यादा भरपूर, शुद्ध और सशक्त होता हुआ पाएंगे।

जनवरी 10

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"जंगल और निर्जन प्रदेश आनन्दित होंगे, और रेगिस्तान मग्न होकर गुलाब की तरह फूले-फलेगा। वह आनन्द और ऊँचे स्वर से हर्षित होगा और आनन्द मनाएगा। उसको लेबनॉन की महिमा और कर्मेल व शारोन का वैभव दिया जाएगा। वे प्रभु की महिमा देखेंगे और हमारे परमेश्वर के वैभव को देखेंगे।" यशा. 35:1,2

प्रभु कितने सहज और सुन्दर तरीके से अपने आनन्द का कुल योग बताता है। जब एक मनुष्य के आज्ञा न मानने द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया, तो वह उसके साथ एक श्राप भी आया था, और उस श्राप की वजह से ही आज हर जगह काँटे, सूखा/सूनापन, और निराशा है। मनुष्य अपनी प्रगति और संस्कृति द्वारा जो भी करना चाहता है, उसका अंत सिर्फ काँटे, सूखापन और रेगिस्तान ही होता है। हरेक घर में काँटे और कंटीली झाड़ियाँ हैं।

आपका जीवन और कुछ नहीं सिर्फ एक ऐसा निर्जन प्रदेश है जिसे कोई मनुष्य न तो बदल सकता है और न ही बेहतर बना सकता है। तब देखें कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है: "रेगिस्तान गुलाब की तरह खिल उठेगा... वह भरपूरी से फले-फूलेगा और हर्षित होगा और आनन्द मनाएगा।"

यह परमेश्वर की कृपा का चमत्कार है। वह न सिर्फ उस पाप को क्षमा करने के लिए तैयार है जिसकी वजह से हमारे जीवन में सारा सूखापन और सूनापन आता है, बल्कि वह उसके प्रेम के द्वारा उस सूखे और सूने जीवन को गुलाब के फूलों से सजाना चाहता है।

जनवरी 11

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"प्रभु के छुड़ाए हुए जयजयकार करते हुए सिय्योन में लौट आएंगे, और उनका मुकुट अनन्तकाल का आनन्द होगा। वे हर्ष और आनन्द पाएंगे तथा शोक और आहें भरना जाता रहेगा।" यशा. 35:10

परमेश्वर के कृपा के चमत्कार को देखें। हालांकि आपका जीवन बर्बाद होकर एक रेगिस्तान बन चुका है, फिर भी हमारा प्रभु यह कहता है: "मैं भरपाई करूँगा। मैं पुन:स्थापित करूँगा। मैं खोई हुई हरेक बात की भरपाई कर दूँगा।" जो आनन्द हमें प्रभु देता है, वह कितना अद्‌भुत है! वह सब जो बर्बाद हो चुका, ख़राब हो चुका है, और खो चुका है, अब उसकी भरपाई हो सकती है और वह पुन:स्थापित किया जा सकता है।

परमेश्वर की कृपा के चमत्कार द्वारा पाप और पराजय के सभी सालों की अब आपके लिए भरपाई कर दी जाएगी। और सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि जो कुछ आपने खोया है, आपको उससे ज़्यादा लौटा दिया जाएगा। इसलिए उसे पूरी तरह ग्रहण करें। जिस आनन्द को वह भरपूरी से ऐसे प्रेम और सहजता से देता है, उसे ग्रहण करें। उसे आंशिक रूप में न लें। वह हमें सब दे देता है। और बदले में सब माँगता है। आपके प्रभु को आपका पूरा, भरपूर प्रेम लेने दें। फिर आपके हृदय में आनन्द और हर्ष और गीत होंगे, और प्रभु का आनन्द आपकी सामर्थ्य बन जाएगी।

जनवरी 12

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है।" भज. 16:11

नए जन्म के समय हमने जिस आनन्द को ग्रहण किया है, क्योंकि वह पृथ्वी का नहीं बल्कि स्वयं प्रभु का आनन्द है, इसलिए यह ज़रूरी है कि वह गुणात्मक रूप में बढ़े और पूरे अनन्त में ज़्यादा सामर्थी, समृद्ध और भरपूर होता जाए। इसके अलावा, यह कोई स्वार्थी आनन्द नहीं है।

यह ऐसा आनन्द है जिसमें इस पृथ्वी पर और स्वर्गीय स्थानों में अनेक लोग सहभागी हैं - असल में, वे सभी इसमें सहभागी हैं या हो रहे हों जिन्हें नए जन्म का वही अनुभव हुआ है। पृथ्वी के आनन्द इस तरह नहीं बाँटे जा सकते। लेकिन यह आनन्द स्वर्गीय आनन्द है और हमारा यह विशेषाधिकार है कि हम पृथ्वी के दूसरे बहुत से लोगों के साथ इसका परिचय कराएं और इसे उनके साथ बाँटें।

वह क्या था जिसे दाऊद ने इस योग्य बनाया कि वह बड़े हर्ष के साथ आनन्दित हो सकता था और दूसरों को भी उसके साथ उस आनन्द में सहभागी कर सकता था? उसके जीवन में कुछ घटनाएं घटी थीं, और उनमें से हरेक ने उसे व्यक्तिगत रूप में प्रभु के उस आनन्द के ज्ञान में बढ़ाया था जो उसकी सामर्थ्य बन गया था।

जनवरी 13

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“तब शमूएल ने तेल भरा सींग लेकर उसके भाइयों के बीच में उसका अभिषेक किया, और उसी दिन से परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ दाऊद के ऊपर उतरता रहा।” 1 शमू. 16:13

दाऊद की तरह हममें से हरेक भी पृथ्वी के एक परिवार में पैदा हुआ है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि परमेश्वर आपको एक स्वर्गीय राजा बनाना चाहता है? क्या आपने कभी ऐसा स्वप्न देखा है कि आपके परमेश्वर और सृष्टिकर्ता का आपके लिए ऐसा बड़ा उद्देश्य है? परमेश्वर का वचन पढ़ें और यह देखें परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करता है और उसने आपके लिए क्या योजना बना रखी है। तब आपका दिन ज़रूर आनन्दमय हो जाएगा।

फिर भी, जब आपको इस बात का अहसास होता है कि परमेश्वर का आत्मा एक ऐसे चिन्ह् के रूप में आपके ऊपर उण्डेला गया है कि अब आप हमेशा के लिए उसके हो गए हो, तब आप यह जान लेते हैं कि यह तो शुरूआत है। हालांकि नए जन्म का आनन्द बहुत अद्भुत होता है, फिर भी वह सिर्फ एक शुरूआत ही होती है। जब आप उद्धार का उपहार ग्रहण करते हैं, और आप पर पवित्र-आत्मा की छाप लग जाती है, तब आप यह जानने लगेंगे कि आपको बुलाने, आपको प्रेम करने और आपको छुटकारा देने के पीछे परमेश्वर का असली उद्देश्य क्या है।

यह आनन्द की शुरूआत है - यह जानना कि परमेश्वर ने बुलाया और चुना है। बुराई के ऊपर जय पाने का आनन्द बड़ा आनन्द होता है, लेकिन आपके परमेश्वर के पास आपके लिए इससे भी बड़ा आनन्द रखा हुआ है।

जनवरी 14

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“तब दाऊद वह सब कुछ छुड़ा लाया जो अमालेकी ले गए थे। और उनका कुछ न खोया, वरन् हरेक छोटी-बड़ी वस्तु... दाऊद सब लौटा ले आया।” 1 शमू. 30:18,19

जब हम परमेश्वर को निराश कर देते हैं, और उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ काम करते हैं, तो एक आवश्यक रूप में हमें तकलीफ उठानी पड़ती है। लेकिन दाऊद को उसकी ग़लती समझ आ गई थी और उसने परमेश्वर से परामर्श किया। इसका नतीजा यह हुआ कि “दाऊद सब लौटा ले आया।”

दाऊद की तरह हम सब भी बहुत सी ग़लतियाँ करते हैं। हालांकि हमारा नया जन्म हो गया है, हमने प्रभु के प्रेम का स्वाद चख लिया है, और प्रभु की इच्छा को जानना भी सीख लिया है, फिर भी कभी-कभी हम उसकी इच्छा को जानने में नाकाम हो जाते हैं और अपनी सोच-समझ से काम करने लगते हैं। जब आप ग़लती करने वाले हो जाते हैं तो आपके मित्र भी आपके विरोधी बन सकते हैं। लेकिन प्रभु के पास लौट आने और उसकी इच्छा पूरी करने से आप शुद्ध हो जाते हैं, क्षमा पा लेते हैं और ढंप जाते हैं।

तब आप आनन्द मना सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने आपकी ग़लती को क्षमा कर दिया है और अब आप उसके द्वारा फिर से इस्तेमाल किए जा सकते हैं। और तब आपके हृदय में बड़ा आनन्द भर जाएगा क्योंकि आप प्रभु के साथ आपका फिर से मेल-मिलाप हो गया है और आपकी प्रार्थना का जवाब मिल गया है।

जनवरी 15

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“फिर दाऊद ने सिय्योन का गढ़ ले लिया, जो अब दाऊद का नगर है।” 2 शमू. 5:7,9क

जिस दिन दाऊद ने सिय्योन का गढ़ जीता, वह भी एक आनन्द मनाने का दिन था। यहोशू यबूसियों को सिय्योन से निकालने में नाकाम रहा था। वे दाऊद का ठट्ठा उड़ाने लगे थे लेकिन परमेश्वर की कृपा और सामर्थ्य से उसने उन्हें निकाल दिया।

हाँ, जिस दिन उसने ऐसा किया, वह उसके लिए एक प्रसन्नता से भरा दिन था, क्योंकि उस दिन के बाद से उसे यह बात कुछ और ज़्यादा साफ नज़र आने लगी थी कि परमेश्वर ने उसे क्यों चुना था। उसे परमेश्वर की वह स्वर्गीय योजना नज़र आने लगी थी जो उसने अपने लोगों के लिए बनाई थी, और यह कि कैसे यबूसियों के यरूशलेम में रहने से वह योजना पूरी नहीं हो सकती थी... यह एक स्वर्गीय योजना थी कि उन्हें परमेश्वर के सिर्फ उन्हीं लोगों द्वारा निकाला जाए जो मिस्र में से निकल कर आए थे।

उसने अपने लोगों को इसलिए चुना था कि वे न्याय करने में उसके सहकर्मी और साझेदार हों। परमेश्वर आप पर, उसके लोगों पर यह भरोसा करता है कि वे उसकी स्वर्गीय योजनाओं को पूरा करें।

जनवरी 16

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"तब दाऊद ने खलिहान और बैलों को पचास शेकेल चाँद देकर मोल ले लिया। तब दाऊद ने वहाँ परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। तब परमेश्वर ने देश के लिए की गई विनती सुन ली और इस्राएल पर से महामारी दूर हो गई।" 2 शमू. 24:24,25)

जब परमेश्वर दाऊद को यबूसी अरौना के खलिहान में लेकर आया, तब वह उसके जीवन का एक और ख़ुशी का दिन था। दाऊद जनगणना के प्रलोभन में पड़ गया था, मानो उसकी सामर्थ्य उसके लोगों और उसकी सेना की संख्या पर निर्भर थी। इसलिए परमेश्वर को उसे सज़ा देनी पड़ी, और उसने यबूसी अरौना के खलिहान में आकर पश्चाताप् किया था।

वह एक भयानक पाप था, लेकिन परमेश्वर ने उसे क्षमा किया, और इसलिए वह दाऊद के जीवन में एक प्रसन्नता से भरा दिन था।

क्या आपके जीवन में भी वह दिन प्रसन्नता से भरा दिन नहीं होता जब परमेश्वर आपके भी किसी ऐसे ही गंभीर पाप को क्षमा करता है जो आपने उसकी इच्छा की तरफ से अंधे होकर उसकी आज्ञा को तोड़ने द्वारा किया था?

जनवरी 17

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"इसलिए अब ध्यान रख क्योंकि परमेश्वर ने पवित्र स्थान के निमित्त एक भवन बनाने के लिए तुझे चुना है; अतः साहस कर और काम में लग जा। तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर की डेवढ़ी, और उसके मकानों, और उसके भण्डार-घरों और उसके कक्षों का नक़्शा दिया ... यह सब लिखित रूप में है, क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे नमूने के सब विस्तृत विवरण को समझने के लिए बुद्धि दी (2 इति. 28:10,19)।

जिस जगह दाऊद को सज़ा दी गई थी, उसी जगह पर परमेश्वर के घर का निर्माण किया गया *(2 इति. 3:1)*। उस दिन से दाऊद के सच्चे आनन्द की शुरुआत हुई। उसके जीवन में बहुत ख़ुशी के दिन और अद्‌भुत दिन आए थे, लेकिन उनमें से किसी की भी तुलना उस आनन्द से नहीं की जा सकती थी जो उसे वेदी के पास, परमेश्वर के मन्दिर की जगह पर मिला था।

अब परमेश्वर दाऊद को मन्दिर का नक़्शा और यह आश्वासन दे सकता था कि उसने उसके पुत्र को मन्दिर के निर्माण के लिए चुन लिया था। जो आनन्द दाऊद को अब मिला था वह एक बिलकुल अलग तरह का आनन्द था। यह वह आनन्द था जो परमेश्वर के घर के निर्माण की स्वर्गीय योजना के प्रकाशन में से आया था।

राजा ने आनन्द मनाया, और लोगों ने भी आनन्द मनाया। लेकिन दाऊद अब जिस आनन्द से आनन्दित हो रहा था वह उसके जीवन के पिछले सभी अनुभवों मे से गुज़रे बिना नहीं मना सकता था। उसका हरेक चरण में से गुज़रना ज़रूरी था।

प्रभु का आनन्द आपकी सामर्थ्य है, लेकिन स्वर्गीय नमूने का प्रकाशन पाने, और यह जानना कि परमेश्वर ने हमें इसलिए बुलाया है कि हम उसे बाँटें, ऐसे हरेक आनन्द से बढ़कर होता है जिनका अनुभव हमें पहले हुआ होता है। इस आनन्द में, आप परमेश्वर के लोगों के लिए उसकी योजना और उद्देश्य में प्रवेश पा लेते हैं - इस समय के लिए और आने वाले युगों के लिए। इसलिए प्रार्थना करें कि प्रभु आपको आनन्द से आनन्द की ओर लेकर चले, जब तक कि आप उस प्रभु के उस आनन्द में प्रवेश न पा लें जो आपकी सामर्थ्य है।

जनवरी 18

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"परमेश्वर के मार्ग तो सिद्ध हैं।" भजन. 18:30

परमेश्वर अंत को हमेशा आरम्भ से देखता है। यह एक ऐसी बात है जो हम मनुष्य आसानी से नहीं समझ पाते, लेकिन अगर हम धीरज से बाट जोहते रहते हैं, तो परमेश्वर स्वयं हमें सिखाता है।

परमेश्वर ने जिस समय से दाऊद को बुलाया था, तब से ही उसके लिए उसका एक बहुत ऊँचा और स्वर्गीय उद्देश्य था, हालांकि दाऊद को बहुत सालों तक इसका अहसास नहीं हुआ था। हम भी जब मन फिरा कर प्रभु के पास आते हैं, यह नहीं जान पाते कि हमारे उद्धार के पीछे परमेश्वर के मन में क्या बात है। उस समय तो हमारी दिलचस्पी सिर्फ क्षमा पाने, शुद्ध हो जाने, और परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने में ही होती है। और जब वह हमें उसके मार्गों की शिक्षा देने लगता है, तब हम उससे सवाल-जवाब करने लगते हैं और उसका विरोध भी करने लगते हैं।

लेकिन हम परमेश्वर के वचन में से यह देखते हैं कि अलग-अलग तरह की मुश्किलों द्वारा परमेश्वर उसके मन की बात को हम पर एक स्पष्ट और क्रमिक रूप में प्रकट करता रहता है। हमारे जीवन के सभी अनुभवों में ज़्यादा गहराई और एक स्वर्गीय अर्थ का आरम्भ हो जाता है। हम यह पाते हैं कि परमेश्वर हमें एक ऐसे तरीक़े से लेकर चल रहा है जो उसके मन, उसके विचार और उसकी योजना के अनुसार है। फिर हम यह पाते हैं कि परमेश्वर का मन जानने के लिए हमें बड़े धीरज के साथ इंतज़ार करना पड़ता है।

जनवरी 19

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"प्रभु तेरा परमेश्वर तेरे बीच में है, वह बचाने वाला पराक्रमी योद्धा हैं वह तेरे कारण हर्षित होगा, वह अपने प्रेम के कारण चुप रहेगा, वह हर्ष से गीत गाता हुआ तेरे कारण आनन्दित होगा" (सप. 3:17)।

आपने मनुष्यों को प्रसन्नचित्त और आनन्दित देखा होगा, लेकिन क्या आपने परमेश्वर को हर्षित होते हुए देखा है? हममें से कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि जब हमारा सृष्टिकर्ता प्रसन्न होता है, तब वह कैसा नज़र आता है। लेकिन यह सच है कि परमेश्वर आनन्दित होता है।"प्रभु तेरा परमेश्वर... तेरे कारण हर्षित होगा... वह हर्ष से गीत गाता हुआ तेरे कारण आनन्दित होगा।"

यह कल्पना करें कि आप स्वयं प्रभु को गीत गाता हुआ सुन रहे हैं! आपको तब कैसा महसूस होगा जब आप अपने जीवित और प्रेम करने वाले प्रभु को आपके लिए गीत गाता हुआ सुनेंगे? आपसे प्रेम करने, आपको बचाने, और आपके हृदय में उसका प्रेम उण्डेलने के बाद, वह आपके लिए हर्षित होते हुए गीत गाएगा। एक नए-जन्मे बच्चे के साथ उसकी माता को देखें। वह उसके लिए ऐसे प्रेम से भरी होती है कि वह उसे गले लगाती और उसे चूमती रहती है।

आनन्द से उसका मुख चमकता रहता है, और अपने बच्चे के हृदय में अपना प्रेम उण्डेलते समय उसका माना बहुत मधुर होता है। जब हमारा नया जन्म होता है और हम उसका प्रेम ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाते हैं, तब परमेश्वर भी हमारे लिए ऐसे ही गीत गाएगा। और आप उसका वह गीत सुन सकेंगे जो किसी भी स्वर्गदूत के गीत से ज़्यादा मधुर होगा। प्रभु का आनन्द ऐसा आनन्द है। यह वह आनन्द है जो हमें अलौकिक सामर्थ्य से भर देता है।

जनवरी 20

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"फिर दाऊद ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर का भवन यही है; और इस्राएल के लिए होमबलि की वेदी भी यही है।" 1 इति. 21:28; 22:1

परमेश्वर ने दाऊद को सिर्फ एक पार्थिव राज्य के लिए नहीं बुलाया था। उसने उसके लिए एक ऊँचा और महान् राज्य रखा था। हमने दाऊद के जीवन में आनन्द को बढ़ते हुए देखा है, और हमने यह भी देखा है कि वह क्या था कि जिसने परमेश्वर और दाऊद दोनों को ही सबसे बड़ी तसल्ली दी थी – यह दाऊद को परमेश्वर द्वारा दिया गया मन्दिर की योजना और नक़्शे का प्रकाशन था।

इससे पहले कि परमेश्वर उस पर अपनी योजना प्रकट कर पाता, जैसा कि हमने देखा है, उसे दाऊद को पीड़ा के मार्ग में से यबूसी अरौना के खलिहान तक लाने की ज़रूरत पड़ी थी। तब दाऊद को इस समझ आया कि जिस ज़मीन पर उसने वेदी बनाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाई थी, प्रभु को उसका मन्दिर बनाने के लिए उसी ज़मीन के टुकड़े की ज़रूरत थी।

परमेश्वर पहले ही दाऊद को यह बता सकता था कि उसे उस स्थान पर मन्दिर बनाना है, लेकिन दाऊद समय ऐसी कोई आज्ञा या निर्देश पाने की तैयारी में नहीं था। जब हम वास्तव में तैयार होते हैं, परमेश्वर सिर्फ तभी हमें उसके मन की बात बताता है।

जनवरी 21

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

पौलुस कहता है, "मुझमें, अर्थात् मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता।" रोमियों 7:18)

खलिहान ऐसी जगह होती है जहाँ गेहूँ को भूसे से अलग किया जाता है। सभी लोग यही कह रहे थे कि दाऊद कितना बुद्धिमान मनुष्य है, लेकिन उसके जीवन-भर अक्सर दाऊद में बुद्धि से ज़्यादा भूसा ही नज़र आया था। उसकी सभी नाकामियों में से परमेश्वर उससे कहता रहा था: 'भूसे को देख!' अनेक खलिहानों में पहुँचाए जाने के बाद ही दाऊद के मस्तिष्क में से भूसा साफ हो पाया था। हालांकि वह राजा था, फिर भी परमेश्वर को उसे बहुत बार डाँटना पड़ा था, और दाऊद को उसके छुटकारे की बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी थी।

हम सभी को परमेश्वर के सेवक होने के लिए एक बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ती है। हमारे भूसे से हमें अलग किए जाने की, जिसमें सबसे पहले हमें मस्तिष्क में भरे भूसे से छुटकारा पाने की ज़रूरत होती है! वह भूसा क्या है? परमेश्वर की नज़र में यह वह सब कुछ है जो हमने अपनी बौद्धिक क्षमता द्वारा हासिल किया है।

यशायाह 40:6 के हम पढ़ते हैं: "प्रत्येक प्राणी घास है।" प्रभु गेहूँ का दाना है - वह हमारा सच्चा ज्ञान है। हमारे सभी अनुभवों की रचना इसीलिए की गई है कि वे हमें इस ज्ञान पर निर्भर रहना सिखाएं।

जनवरी 22

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"इस प्रकार समस्त इस्राएली परमेश्वर की वाचा के सन्दूक को जयजयकार के नारे लगाते नरसिंगे, तुरहियाँ, झांझ, सारंगियाँ और वीणा बजाते हुए ले चले थे... तब परमेश्वर के सन्दूक को लाकर उन्होंने उसे उस तम्बू के भीतर रखा जिसे दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था, और उन्होंने परमेश्वर के आगे होम-बलियाँ और मेल-बलियाँ चढ़ाईं।"
1 इति. 15:28; 16:1

जब दाऊद ने भूमि ख़रीद ली, तो उसमें यह इच्छा जागी कि वह परमेश्वर की वाचा के सन्दूक को वहाँ ले आए, लेकिन एक बार फिर उसने प्रभु को निराश किया। उसने काम एक सांसारिक योजना से, सांसारिक संसाधनों से, और सांसारिक तरीक़े से करना चाहा।

गिनती की पुस्तक में, प्रभु ने वाचा के सन्दूक को ले जाने की स्वर्गीय योजना बताई थी। किसी मनुष्य के पास यह अधिकार नहीं है ईश्वरीय आदेश को बदल सके। परमेश्वर ने दाऊद की आँखें खोलीं और 1इतिहास 15 में उसने सन्दूक को उठाकर यबूसी अरौना से ख़रीदी हुई जगह में लाने के लिए लेवीयों को इकट्ठा किया। दाऊद के लिए वह कितनी ख़ुशी का दिन था!

बड़े आनन्द और हर्ष के साथ, और वाचा के संदूक के अनेक वर्षों तक घूमते रहने के बाद, अब वे उसे ला रहे थे - "जयजयकार के साथ आनन्द मनाते हुए, और नरसिंगे, तुरहियाँ और झांझ बजाते हुए।" यह बड़े आनन्द का समय था - जिसमें उस दिन के बड़े आनन्द में गायक उनके पूरे हृदय से गा रहे थे और दाऊद स्वयं भी उस उत्सव में शामिल था *(पद 27)*।

जनवरी 23

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"हम सच्चे मन और पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर के पास आएं।" इब्रा. 10:22

जब हम अंतत: परमेश्वर की वाचा के संदूक को उसकी जगह पर आता हुआ देखेंगे, तो हम बड़े आनन्द से भर जाएंगे। वाचा का संदूक प्रभु यीशु मसीह का प्रतीकात्मक स्वरूप है। उसे आपके हृदय में, आपके घर में और आपकी कलीसिया में उसकी योग्य जगह मिलनी चाहिए। जब ऐसा हो जाता है, तब बड़ा आनन्द होता है।

दाऊद ने अनेक युद्ध जीते थे लेकिन उनमें से किसी ने भी उसके हृदय को वह आनन्द नहीं दिया था जो उसे परमेश्वर के संदूक को उस जगह पर आते हुए देखने से मिला था जिस जगह को उसने अरौना से ख़रीदा था। जब हम प्रभु यीशु मसीह को विश्वासियों के हृदय में राजाओं के राजा के रूप में, उनके घरों में प्रमुख के रूप में, और मण्डली में प्रभु के रूप में विराजमान होते हुए देखते हैं, तो वही हमारा आनन्द और सामर्थ्य होता है।

आपका ध्यान हमेशा इन तीन बातों पर रहना चाहिए: पहली बात, कि प्रभु यीशु को आपका व्यक्तिगत रूप से शीर्ष (सिर) होना है; दूसरी बात, कि उसे आपके परिवार का शीर्ष होना है; तीसरी बात, कि जिस मण्डली में आप संगति करते है, उसे उस मण्डली का शीर्ष होना है। जब ये बातें आपके जीवन का सत्य होंगी, सिर्फ तभी वाचा का संदूक उसके रखे जाने की सही जगह पर पहुँच पाएगा। यही हमारा आनन्द है, लेकिन फिर भी, यह सिर्फ एक शुरूआत ही होती है।

क्या आप सच्चाई के साथ यह कह सकते हैं कि प्रभु का आनन्द आपकी सामर्थ्य है? आप क्योंकि परमेश्वर के हृदय में और भरपूरी के साथ प्रवेश पा रहे हैं, तो क्या आपका आनन्द बढ़ रहा है?

जनवरी 24

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न होता हूँ।" भजन. 40:8

प्रभु का आनन्द, जो हमारी सभी परिस्थितियों, अनुभवों और ज़िम्मेदारियों में हमारी असली ताक़त है, वही हमारी सच्ची आत्मिक उन्नति का रहस्य होता है।

यह सम्भव है आप कुछ महीनों की बजाय अनेक वर्षों तक एक आत्मिक बच्चे बने रहें, और यह एक अफसोस की बात है कि बहुत लोग ऐसे ही होते हैं। लेकिन परमेश्वर चाहता है कि उसका हरेक बच्चा पूरी तरह से बढ़े और ज़िम्मेदारी उठाने वाला हो। परमेश्वर की यह इच्छा है कि आप प्रतिदिन उन्नत हों। जब आप परमेश्वर के वचन को पढ़ते और उस पर मनन करते हैं तो आप उसको जानने लगते हैं, और फिर आपके अन्दर उसकी उपस्थिति में रहने की भूख बढ़ने लगती है। परमेश्वर के साथ समय बिताने से ही आप उसके ज्ञान में बढ़ते हैं।

जब हम प्रभु में हर्षित होने लगते हैं, तब उसकी इच्छा पूरी करने से हमें सच्ची ख़ुशी मिलने लगती है। "हे मेरे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करने से मैं प्रसन्न होता हूँ" *(भजन. 40:8)।* कई बार प्रभु की इच्छा जानने के लिए हमें महीनों या सालों तक भी इंतज़ार करना पड़ता है, और उस इंतज़ार के दौरान हम बड़े मूल्यवान पाठ सीखते हैं।

हम उसके नाम को अधिकार के साथ इस्तेमाल करना सीखते हैं; हम उसके वचन के रहस्यों को समझना सीखते हैं; और वहाँ से हम उस जगह पर पहुँचते हैं जहाँ हम उसके लिए अपमानित होने को तैयार होते हैं। जैसे-जैसे हम इन अनुभवों में से गुज़रते हैं, हम आपने आत्मिक पुरुषत्व में बढ़ते हैं, और इसका अर्थ है कि फिर हम परमेश्वर द्वारा हमारे लिए रखी उस आत्मिक ज़िम्मेदारी को उठाने के लिए तैयार हो जाते हैं जिसे हमारे साथ बाँटने का वह इंतज़ार कर रहा है।

जनवरी 25

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो आकाश में हैं प्रकट किया जाए।" (इफि. 3:10)।

दाऊद के लिए सबसे अद्‌भुत दिन वह दिन था जब परमेश्वर ने उसे एक विस्तृत रूप में मन्दिर का पूरा नमूना दिया *(1 इति. 28:19)।* परमेश्वर उसके जीवन के आरम्भ में उस पर यह प्रकट नहीं कर सकता था। इससे पहले कि परमेश्वर उसे यह प्रकाशन देता, उसे दाऊद के आत्मिक रूप में बढ़ने का इंतज़ार करना पड़ा था।

अनेक लोग आज "कलीसिया" या "मसीह की देह" के बारे में बहुत सामान्य ढंग से बात करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं जो इन शब्दों के वास्तविक अर्थ जानते हैं। बहुत कम लोग हैं जो कलीसिया के बारे में परमेश्वर के सच्चे विचार को जानते हैं। उनकी सभी "आत्मिक" बातों के बावजूद अनेक लोग उनके जीवनों में नज़र आने वाले झगड़ों और ईर्ष्या द्वारा यह दिखा देते हैं कि वे जिन बातों को जानने का प्रचार करते हैं, असल में वे उन बातों को नहीं जानते।

परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि वह कलीसिया में अभिव्यक्त होने वाली सहभागिता द्वारा वह आकाश के अधिकारियों और शक्तियों के सामने अपनी सामर्थ्य प्रकट करे।

जनवरी 26

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"... मैंने तो अपने हृदय की खराई में स्वेच्छा से यह सब कुछ दिया है; और यहाँ उपस्थित तेरी प्रजा के लोगों को स्वेच्छापूर्वक तुझे भेंट देते देखकर मुझे आनन्द हुआ है।" 1 इति. 29:17

जब आप आत्मिक रूप में प्रशिक्षित होते हैं, और अनेक अनुभवों द्वारा आत्मिक परिपक्वता तक पहुँचाए जाते हैं, सिर्फ तभी आपको पूरी तरह से परमेश्वर के घर – उसकी कलीसिया के बारे में उसके पूरे परामर्श की जानकारी मिलती है। दाऊद ने बहुत से युद्ध लड़े थे, और उसने इनमें ही उसका आत्मिक प्रशिक्षण पाया था।

1 इतिहास 26:27 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के घर की मरम्मत करने के लिए उन्होंने युद्ध में प्राप्त लूट का कुछ भाग अर्पित किया था। अगर आप परमेश्वर की संतान हैं और उसकी आज्ञापालन करते हुए आगे बढ़ने लगे हैं, तो परमेश्वर आपको तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक वह आपको एक वैसा ही स्पष्ट नमूना नहीं दे देगा जैसा उसने दाऊद को दिया था।

उसके अनेक अनुभवों में, दाऊद मन्दिर के लिए सामग्री इकट्ठी कर रहा था। उसका हरेक पहलू, हरेक सामग्री, उसकी खिड़कियाँ, दरवाज़े और उसके रंग भी, परमेश्वर की महिमा को दर्शाने वाले थे – एक प्रतीकात्मक रूप में, वे प्रभु यीशु मसीह को उसकी कलीसिया के बीच में दिखाने वाले थे। वह एक आत्मिक इमारत है जो मसीह में परमेश्वर के उस प्रेम को प्रकट करता है जिसमें मनुष्य के लिए उद्धार रखा है।

जनवरी 27

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“आज के दिन अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करने के लिए कौन तैयार है?” 1 इति. 29:5

आख़िरकार, बहुत सालों के अनुभव और प्रशिक्षण के बाद, दाऊद उस जगह पहुँचा जहाँ वह परमेश्वर के घर के दर्शन की आत्मिक ज़िम्मेदारी उठाने लायक़, और फिर यह कहने लायक़ हो सका था, “अब मैं यह जान गया हूँ कि परमेश्वर ने मुझे क्यों चुना है।”

सुलैमान को नक़्शा दिखाने के बाद, उसने अपने सभी सामर्थी पुरुषों को यह अवसर और विशेषाधिकार दिया कि उस काम में उनका भी कुछ हिस्सा हो। यह विशेषाधिकार सिर्फ उनके लिए था जिनके हृदय “इच्छुक” थे।

यह हो सकता है कि परमेश्वर की सेवा में हम प्रचार, या प्रार्थना, या सिखाना, या कोई भी दूसरा मामूली काम कर रहे हों, लेकिन अगर वह मनुष्यों के दबाव में किया जा रहा है, तो वह परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं होगा। अगर आप कभी भी परमेश्वर के लिए सिर्फ किसी दबाव में आकर काम करेंगे, या आप उस काम में से पृथ्वी पर क्या हासिल कर सकते हैं, तो आपके लिए स्वर्ग में कोई प्रतिफल नहीं होगा। परमेश्वर यह माँग करता है कि हम स्वेच्छा से सेवा करें।

जनवरी 28

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

“तब लोग आनन्दित हुए क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण हृदय से और स्वेच्छा से परमेश्वर के लिए दिया था, और राजा दाऊद भी बहुत आनन्दित हुआ।” 1 इति. 29:9

हम शायद वास्तव में यह कह सकते हैं कि दाऊद के जीवन में, और पूरे देश में भी वह सबसे ख़ुशी का दिन था। प्रभु का आनन्द उनकी सामर्थ्य बन गया था। आपमें से कौन अपने आपको युद्ध और परमेश्वर की सेवा के लिए अर्पित करने के लिए तैयार है - एक तथा-कथित पार्थिव कलीसिया के लिए नहीं, बल्कि स्वर्गीय कलीसिया - उसकी देह के लिए?

अब जबकि वह अपने कील-छिदे हाथों को आपकी तरफ बढ़ा रहा है और आपसे यह निवेदन कर रहा है, तो उसके इन शब्दों को सुनें: “आज के दिन अपने आपको परमेश्वर के लिए समर्पित करने के लिए कौन तैयार है?” *(1 इति. 29:5)।* दाऊद ने असल में इस बात में ही आनन्द मनाया था। अगर आप अपने मुक्तिदाता के पास आकर अपनी मर्ज़ी से उसे पूरी तरह से अपना जीवन, अपना धन व अपनी सारी प्रतिभाएं इस सबसे ऊँचे, स्वर्गीय भवन को बनाने के लिए उसे दे देते हैं, तब क्या वह और भी ज़्यादा आनन्दित न होगा?

तब सिर्फ आप ही प्रभु के उस आनन्द की भरपूरी को जानेंगे जो आपकी सामर्थ्य होगा। वास्तव में यही सच्चा आनन्द है और यह पूरी कलीसिया को भी आनन्दित करेगा।

जनवरी 29

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"जैसे दूल्हा अपनी दूल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा" (यशा. 62:5)।

उपरोक्त पद तुरन्त ही यह संकेत दे देता है कि परमेश्वर हमारे साथ जो कुछ भी करता है, उसमें उसका लक्ष्य हमारे साथ सहभागिता करना है। यह वह लक्ष्य है जिसकी तरफ वह हमें एक-एक क़दम करके इसलिए बढ़ाता है कि हम पीछे न लौट जाएं, और यही हमारे प्रभु के साथ सिद्ध रूप में एक हो जाने का सर्वोच्च आनन्द है।

बाइबल कहती है, "दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है।" यह उस पुण्य आनन्द की बात है जो सिर्फ उस जीवन के साथ सहभागिता में से आता है जो परमेश्वर का उपहार है।

परमेश्वर ने आदम को हव्वा इसलिए दी थी कि उसे एक ऐसा साथी मिल जाए जिसके साथ सहभागिता कर सके। परमेश्वर यह चाहता है कि हम सब सच्ची सहभागिता करें। बाइबल में सहभागिता एक अनोखा शब्द है, और जिसका नया जन्म नहीं हुआ है, वह इसका सही अर्थ कभी न समझ सकेगा। पिता और पुत्र के साथ सहभागिता पूरी तरह से और सिर्फ उनके लिए है जिन्होंने उससे नया जीवन पा लिया है, और जो हमेशा, और हमेशा के लिए, उसके साथ और उसमें बने रहते हैं।

हम परमेश्वर के प्रेम का बयान इसी तरह करते हैं। यह परमेश्वर का जीवन है जो हमारी तरफ बहता है और हमारा जीवन है जो परमेश्वर की तरफ बहता है। सच्ची सहभागिता एक-दूसरे में होती है, वह हमें परमेश्वर के पुत्र के असली ईश्वरीय प्रतिरूप की समानता और स्वरूप में ले जाती है।

जनवरी 30

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"आओ हम आनन्दित और हर्षित हों और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेमने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है।" प्रका. 19:7

प्रकाशितवाक्य 21 में, कलीसिया की तुलना उस दुल्हन से की गई है जो उसके पति के लिए तैयार की गई है – एक ऐसी दुल्हन जो एक परिपूर्ण रूप में परमेश्वर के प्रेम, आनन्द और बुद्धि को और अपने स्वामी के हृदय के रहस्यों को ग्रहण करने के लिए तैयार है। जब आप स्वर्ग में जाएंगे, तब प्रभु आपके साथ सहर्ष अपना सब कुछ बाँटेगा, लेकिन फिर भी आपको यह प्रसन्नता होगी कि पूरे अनन्त में आप उसकी अधीनता में रहेंगे।

क्या अब आपको यह समझ आया कि प्रभु आपको क्यों अपना बनाना चाहता है? क्या आपको यह समझ आया कि आपको क्यों बुला रहा है, क्यों आपको प्रेम कर रहा है, और क्यों आपको अनुशासित कर रहा है? वह चाहता है कि वह एक स्वर्गीय आनन्द के साथ आपमें आनन्दित हो, और यह कि आपकी परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र-आत्मा के साथ ऐसी गहरी आत्मीयता हो जिसके बारे में स्वर्गदूत कभी नहीं जान सकते। यह इसलिए है कि आप पूरे अनन्त में सबसे मधुर प्रेम में आनन्दित होते रहें – कि आप एक स्वर्गीय, अनन्त प्रेम से प्रेम किए जाने के महान् आनन्द को जान सकें।

आकाश की सारी शक्तियाँ आप में परमेश्वर की महिमा और सौन्दर्य को देखने का इंतज़ार कर रही हैं, और परमेश्वर आपको उसके हर्ष और स्नेह का पात्र बनाना चाहता है। क्या आप उसे ऐसा न करने देंगे कि वह आपको उस आनन्द-उत्सव में पहुँचा सके?

जनवरी 31

परमेश्वर के आनन्द के रहस्य

"तेरे दाहिने हाथ पर आनन्द की भरपूरी है।" भज. 16:11

परमेश्वर तब तक चैन नहीं लेगा जब तक वह हममें से वह ग्रहण नहीं कर लेगा जिसके उसने अनादि से इंतज़ार किया है। सर्वशक्तिशाली और पवित्र परमेश्वर आपको स्वयं अपनी धार्मिकता देता है जिसमें कोई ख़राबी या कमी नहीं है। परमेश्वर स्वर्ग के दूतों के सामने हमें निष्पाप प्रस्तुत करना चाहता है। आपमें मौजूद परमेश्वर की धार्मिकता का स्वभाव ऐसा है कि अगर वह आपमें होगी, तो स्वर्ग के दूत भी आपकी तरफ दोष लगाने वाली अंगुली नहीं उठा सकते। क्या आपने ऐसी धार्मिकता को पा लिया है या आप अभी तक किसी और बात में भरोसा कर रहे हैं?

"वरन् प्रभु यीशु मसीह को धारण कर लो और शारीरिक वासनाओं की तृप्ति में मन न लगाओ" *(रोमियों 13:14)*।

"तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो परमेश्वर के मुख में से निकलेगा" *(यशा. 62:2)*।

परमेश्वर हममें उसके रहने की जगह चाहता है – एक ऐसा विश्राम चाहता है जो उसे हमारे बिना स्वर्ग में भी नहीं मिलता। वह इस पृथ्वी पर से एक कलीसिया इकट्ठी कर रहा है, ऐसे चुने हुए लोगों का समूह जो उसे आनन्द, विश्राम और संतोष दे सकें। यही आनन्द आपकी सामर्थ्य है, और यही वह आनन्द और महान् प्रेम है जो हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में आपके लिए प्रस्तुत करते हैं।

फरवरी 1

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"और सब पर यह प्रकाशित करूँ कि उस रहस्य का प्रबन्ध क्या है... कि कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो आकाश में है प्रकट किया जाए।" (इफि. 3:9,10)

जब परमेश्वर की कृपा से हम उसके पुत्र के लहू द्वारा छुड़ा लिए जाते हैं, तो हम मिट्टी के ऐसे पात्र-समान होते हैं जो एक निपुण कलाकार के हाथ में दे दिए गए हैं। एक अज्ञात रूप में परमेश्वर का दक्ष हाथ हमें चित्रित करता है - हम पर स्वर्गीय चित्रकारी करता है। रात-दिन वह हममें स्वर्गीय रचनाएं बनाता है।

और एक ऐसा दिन आ रहा है जब वह हमें स्वर्ग के दूतों के सामने खड़ा करके कहेगा, "आओ, मेरे दूतों, पौलुस नाम के इस पात्र को देखो!" और वे परमेश्वर से कहेंगे, "तूने इसे ऐसा सुन्दर कैसे बना दिया?"

मैं आपको कोई परियों की कहानी नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन का सत्य बता रहा हूँ! जब हम अपने प्रभु को आमने-सामने देखेंगे, और उसके जैसे बन जाएंगे, तो स्वर्गीय प्राणी भी हमारी प्रशंसा करेंगे।

जब हम उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक अपनी बाइबल पढ़ते हैं, तब हम यह देख पाते हैं कि परमेश्वर इस योजना को एक वास्तविक रूप में कैसे पूरा करेगा। वह उस योजना को इस समय भी पूरा कर रहा है, क्योंकि अनादि से परमेश्वर का यही उद्देश्य रहा है कि वह हम पर और हमारे द्वारा उसकी महिमा को प्रकट करे।

फरवरी 2

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

“और परमेश्वर उसके ऊपर खड़ा है और कह रहा है, ‘मैं तेरे दादा अब्राहम का और इसहाक़ का परमेश्वर हूँ। जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझे और तेरे वंश को दूँगा। तेरा वंश धूलि-कण के समान होगा... और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के समस्त कुल आशिष पाएंगे।” उत्पत्ति 28:13-14)

याकूब अंधा था; जो उसने देखा, और जो उसने सुना, वह उसे नहीं समझ सकता था; फिर भी, हालांकि वह परमेश्वर के उद्देश्यों को नहीं समझ सका था, वे उद्देश्य नहीं बदले थे। याकूब डर की वजह से उन्हें समझ नहीं पाया था।

जब तक हमारे हृदयों में भय रहता है, तब तक हम कभी यह नहीं समझ पाएंगे कि परमेश्वर क्या कह रहा है। शैतान हर समय हमारे हृदयों में नाना प्रकार के भय डालता रहेगा, और इस भय के द्वारा हमें परमेश्वर के उद्देश्य और योजनाओं को समझने से दूर कर दिया जाता है।

इससे पहले कि याकूब यह समझ पाता कि परमेश्वर के कहने का क्या अर्थ था, उसे बहुत से मुश्किल पाठ सीखने की ज़रूरत थी। उसे भय से छुटकारा पाने में 20 साल से भी ज़्यादा समय लगा। लेकिन हमें सब बातें सिखाने के लिए हमारे पास पवित्र-आत्मा है, कि हम भय से तुरन्त छुटकारा पा सकते हैं। परमेश्वर के घर की ईश्वरीय समझ प्राप्त होने के बाद ही हम यह जान पाते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के हाथ से हम कितनी आशिष ग्रहण कर सकते हैं।

फरवरी 3

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"और वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान का निर्माण करें कि मैं उनके बीच में रहूँ" (निर्ग. 25:8)।

याकूब के समय के सैकड़ों साल बाद, परमेश्वर ने जो बात याकूब से उत्पत्ति 28 में कही थी, उसने पर्वत पर मूसा को मिलाप वाले तम्बू का नमूना दिखाने द्वारा और ज़्यादा स्पष्ट किया। पर्वत पर मूसा ने बहुत सी बातों को देखा, जिसमें उसने परमेश्वर के घर को भी उसकी महिमा में देखा था।

इब्रानियों की पत्री मे हम देखते हैं कि मूसा ने पर्वत पर जो देखा था वह सिर्फ उस घर की छाया मात्र थी जिसे परमेश्वर अब बना रहा है। जैसा कि इब्रानियों 3:6 में प्रेरित कहता है कि अगर हम अपने विश्वास और आशा को अंत तक थामे रहें, तो हम ही प्रभु यीशु मसीह का घराना हैं।

परमेश्वर हमें उस घराने में कैसे सहभागी करता है? हमारे प्रभु यीशु मसीह ने पतरस से कहा था, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" इस सवाल के जवाब में पतरस ने यह कहा था, "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र।" तब प्रभु ने पतरस से कहा था, "शमौन पतरस, माँस और लहू ने इस बात को तुझ पर प्रकट नहीं किया है, बल्कि मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है। मैं तुझ से कहता हूँ कि इसी प्रकाशन पर मैं अपनी कलीसिया का निर्माण करूँगा।"

अब हमें मसीह का दैहिक नहीं बल्कि आत्मिक प्रकाशन चाहिए, क्योंकि ईश्वरीय प्रकाशन द्वारा हम अपने प्रभु को जितना ज़्यादा जानेंगे, हम परमेश्वर के घर को बनाने के लिए उतना सामान ला सकेंगे।

फरवरी 4

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

“सहसा आकाश से एक ज्योति चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा, और उसने एक आवाज़ सुनी” (प्रेरितों. 9:34)।

जब तरसुस का शाऊल दमिश्क के मार्ग पर जा रहा था, तब उसने एक बड़ी ज्योति देखी और एक आवाज़ सुनी। लेकिन वह सिर्फ इसी आधार पर आगे बढ़ते हुए कलीसिया का निर्माण नहीं कर सकता था। इसके बाद उसने यह देखना शुरू किया कि प्रभु यीशु मसीह कौन था। यह देखने के लिए उसे जंगल में जाना पड़ा था *(गल. 1:15-17)*, और वहाँ उसे कलीसिया का आत्मिक अर्थ नज़र आना शुरू हुआ था। तभी वह लोगों को कलीसिया का रहस्य बताने योग्य हुआ था, क्योंकि यह सिर्फ प्रकाशन द्वारा परमेश्वर की तरफ से ही आता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हम इसी सत्य को एक ज़्यादा भरपूर रूप में प्रकट होता हुआ देखते हैं। वहाँ हम परमेश्वर के तम्बू, स्वर्गीय घर, परमेश्वर के पवित्र नगर को स्वर्ग से उतरता हुआ देखते हैं। जो अभी तैयार हो रहा है, हम उसे पूर्ण रूप में देख सकते हैं। लेकिन उस दिन के आने से पहले, पुरानी बातें बीत चुकी होंगी *(प्रका. 21:5)*।

सिर्फ तभी आप स्वर्गीय यरूशलेम, परमेश्वर के मन्दिर, परमेश्वर के घर को देख सकेंगे। क्या आप अपना पुराना जीवन त्याग देने के लिए तैयार हैं? अपने पुराने जीवन का सब कुछ छोड़ दें और प्रभु को आपको पूरी तरह नया बनाने दें।

फरवरी 5

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

प्रभु कहता है, "बबूल की लकड़ी का सन्दूक बनाना जो ढाई हाथ लम्बा, डेढ़ हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ ऊँचा हो" (निर्ग. 25:10)।

इससे पहले कि हम मिलाप वाले तम्बू के संदेश को ज़्यादा गहराई से समझ सकें, हमें उसके ढाँचे के ऊपर एक नज़र डालनी पड़ेगी। हमें *अध्याय 24 व 25* के एक-एक पद को अध्ययन करना पड़ेगा।

पहले हम वाचा के सन्दूक के बारे में पढ़ते हैं *(निर्ग. 25:10-22)*। ये सन्दूक, जो बबूल की लकड़ी का बना था, भीतर और बाहर सोने से मढ़ा हुआ था। उसका ढक्कन, जो चोखे सोने का बना हुआ था, परमेश्वर की 'दया का आसन' - 'प्रायश्चित् का ढक्कन' था। इस सोने के तख़्त के साथ दोनों सिरों पर गढ़कर दो करूब बनाए गए थे, और परमेश्वर इन दोनों के बीच में से बात करता था।

तम्बू का भीतरी भाग महापवित्र स्थान कहलाता था, इसके आगे एक और बढ़ा स्थान था जो 'पवित्र स्थान कहलाता था। इसमें एक दीपदान था, एक धूप की वेदी थी और एक रोटी की मेज़ थी *(निर्ग. 25:23-29; 30:1-6)*।

फरवरी 6

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

“और तू निवास-स्थान के लिए दस पर्दे बनाना: ये बटे हुए महीन मलमल के नीले, बैंजनी और लाल रंग के हों, और इनमें किसी कुशल कारीगर से करूबों की कढ़ाई करवाना” (निर्ग. 26:1)।

तम्बू को ढाँपने वाले परदों पर ध्यान दें। तम्बू की दीवारें तो सोने से मढ़े बबूल की लकड़ियों की थीं, लेकिन उसकी छत पर्दों की बनी हुई थी *(निर्ग. 26:1)।* पर्दों की चार परत थीं। पहली परत के परदे के छोर में 50 नीले फन्दे थे और उसके साथ जुड़ी हुई दूसरी परत के पर्दे के छोर में भी 50 नीले फन्दे थे जो सोने के पचास आंकड़ो के साथ जुड़े हुए थे। वे आपस में जुड़कर “एक तम्बू” बन जाते थे।

मलमल में नीले, बैंजनी और लाल धागे गुंथे हुए थे और उन पर कढ़ाई करके करूब बनाए गए थे। तम्बू के बीच के पर्दों और द्वार के लिए भी यही सामग्री इस्तेमाल की गई थी। मिलाप वाले तम्बू का हरेक विवरण हमें प्रभु यीशु मसीह के बारे में कुछ-न-कुछ सिखाता है।

पर्दों का दूसरा समूह बकरी के बालों का बनाया गया था *(निर्ग. 26:7-13)।* इस बार वे 10 नहीं बल्कि 11 पर्दे थे। ये सब मिलकर मन्दिर का तम्बू बनते थे। इनके ऊपर मेढ़ों की लाल रंग से रंगी हुई खालों का आवरण था। और सबसे ऊपर सुइसों की खालों का भी एक ओढ़ना था *(निर्ग. 26:14)।*

फरवरी 7

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"उसने स्वयं अपने लहू द्वारा सदा के लिए एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश करके हमारे लिए अनन्त छुटकारा पा लिया है" (इब्रा. 9:12)।

"हमें यीशु के लहू द्वारा एक नए और जीवित मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस हुआ है, जिसे उसने पर्दे अर्थात् अपनी देह के द्वारा हमारे लिए खोल दिया है" *(इब्रा. 10:19,20)।*

जैसा कि हमने देखा है, भीतरी भाग महापवित्र स्थान कहलाता था और बाहरी भाग पवित्र स्थान कहलाता था। याजक प्रतिदिन दीपदान और धूप की वेदी को जलाए रखने और प्रति सप्ताह भेंट की रोटी को बदलने के लिए पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते थे। लेकिन सिर्फ हारून महायाजक ही महापवित्र स्थान के पर्दे के अन्दर जा सकता था, और वह भी यह वर्ष में सिर्फ एक बार ही कर सकता था। दूसरे लोग उसमें बिलकुल भी प्रवेश नहीं कर सकते थे। ऐसा ही पर्दा बाद में यरूशलेम के मन्दिर में भी लगा हुआ था, जब हमारा प्रभु सूली पर मरा, तब उस पर्दे के बीच में से फटकर दो टुकड़े हो जाना इस बात का चिन्ह् था कि अब यीशु के लहू के द्वारा महापवित्र स्थान में जाने का रास्ता खुल गया है।

फरवरी 8

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"यह ध्यान रखना कि तू उन्हें उसी नमूने के अनुसार बनाए जो तुझे पर्वत पर दिखाया गया था।" (निर्ग. 25:40)।

फिर तू वेदी को बबूल की लकड़ी से बनाना, और वह पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी हो, और उसकी ऊँचाई 3 हाथ हो। तू उसे कांसे से मढ़ना *(निर्ग. 27:1,2)*। उसके पास ही कांसे की एक हौदी थी *(निर्ग. 30:17:21)*।

आँगन की बाहरी दीवारें महीन मलमल के पर्दे थे जो काँसे के खाँचों में लगे खम्भों में लगाए गए थे *(निर्ग. 27:9-18)*। उत्तरी और दक्षिणी दीवारें सौ हाथ लम्बी और पाँच हाथ ऊँची थीं, और पश्चिमी दीवार 50 हाथ लम्बी थी, लेकिन बीच में एक द्वार था जो 20 हाथ चौड़े मलमल की कढ़ाई किए हुए पर्दे से ढंका हुआ था।

इन सब वस्तुओं के अर्थ आपको बाइबल में ही खोजने होंगे। हमारे पास बाइबल ही सबसे अच्छी टीका है। लेकिन इन सब बातों के बारे में परमेश्वर ने मूसा से एक स्पष्ट बात कही थी, "यह ध्यान रखना कि तू उन्हें उसी नमूने के अनुसार बनाए जो तुझे पर्व पर दिखाया गया था" *(निर्ग. 25:40)*। यक़ीनन, यह वचन हमसे यही कहता है कि हमें चाहे विस्तार से सारी बात समझ में आए या न आए, लेकिन ये हमें स्वर्गीय हक़ीक़तें बताती हैं।

फरवरी 9

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

“तब सब लोगों ने एक स्वर में जवाब दिया, ‘परमेश्वर ने जो-जो वचन कहे हैं, वे सब हम मानेंगे” (निर्ग. 24:3)।

पर्वत पर मूसा अकेला ही गया था। परमेश्वर ने उस पर जो प्रकट किया, उसने आकर वह लोगों को बता दिया। और लोगों का जवाब यह था, “परमेश्वर ने जो-जो वचन कहे हैं, वे सब हम मानेंगे” *(पद 3)।*

जो लोग प्रभु की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार नहीं होंगे, वे कभी यह नहीं समझ सकेंगे कि प्रभु क्या कह रहा है। बाइबल के ज्ञान की कमी नहीं है, लेकिन लोग वे नहीं करते जो वे सीखते हैं। ऐसी ज्योति जिसे अस्वीकार कर दिया जाता है, अंधकार बन जाती है। इससे पहले कि हम आगे बढ़ सकें, हमें परमेश्वर को यह वचन देना पड़ता है: “हे परमेश्वर, तू जो कुछ हमें सिखाएगा, हम वह मानेंगे।”

परमेश्वर एक बहुत महत्वपूर्ण वाचा बाँधने वाला था। उसकी तैयारी में, मूसा ने एक वेदी बनाई, उसने वेदी पर बलि रखीं, और उनके लहू को लोगों पर छिड़का। यह हमें सिखाता है कि सिर्फ प्रभु यीशु मसीह के लहू के नीचे आए हुए लोग ही यह समझ सकते हैं कि परमेश्वर क्या कह रहा है। जो भी अनन्त वाचा के लहू से ख़रीदा नहीं गया है, और उसके पापों से शुद्ध नहीं हुआ है, तो असल में वह इन बातों को कभी समझ ही नहीं पाएगा।

स्वर्गीय बातों को समझने के लिए पहला क़दम हमें अनन्त वाचा के लहू के नीचे लाना होता है। लहू दो बातें करता है - शुद्धता और जीवन। इन बलियों के चित्र में *(निर्ग. 24:10)*, इस्राएल के प्राचीन सभी जगह के सभी पापियों के लिए प्रभु यीशु मसीह की पीड़ा और मृत्यु को देख रहे थे। “देखो, परमेश्वर का मेमना जो जगत का पाप उठा ले जाता है” (यूह. 1:29)।

फरवरी 10

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

“उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया। उसके चरणों के नीचे नीलमणि का चबूतरा सा दिखाई दिया जो आकाश की तरह ही स्वच्छ था” (निर्ग. 24:10)।

पर्वत की उस चोटी पर, परमेश्वर मूसा को नियम, आज्ञाएं और मिलाप वाले तम्बू का नक़्शा देने वाला था। लेकिन पहले इस्राएल के प्राचीनों को स्वर्ग का दर्शन दिखाया गया था, और उसके बाद ही उन्होंने मूसा को परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ते और बादल में प्रवेश करते हुए देखा था।

मिलाप वाले तम्बू के विवरण का अध्ययन करने से हमें परमेश्वर के आत्मिक घर के बारे में कुछ जानकारी हो जाती है। अगर स्वाभाविक रीति से बात करें, तो हम यह कह सकते हैं, “हमें इन बातों का विवरण जानने में अपना समय क्यों बर्बाद करना है?” लेकिन जब हमें यह समझ आ जाता है कि वे ऐसी स्वर्गीय बातें हैं जो स्वर्गीय सिद्धान्त प्रकट करती हैं, तब हम उन्हें प्रेम और सम्मान के साथ पढ़ेंगे। परमेश्वर ने इस सहज तरीक़े से हमें स्वर्ग के बारे में सिखाने की योजना बनाई है।

पहले, मूसा को पर्वत पर 6 दिन तक परमेश्वर की सिर्फ उस महिमा को दिखाया गया जो एक भस्म करने वाली आग की तरह थी। फिर सातवें दिन परमेश्वर ने मूसा को पुकारा, और उसे बादल में प्रवेश करने के लिए कहा। बादल ने उसे इस तरह ढाँप लिया कि फिर उसे कोई मनुष्य नहीं देख सकता था। फिर 40 दिन और 40 रात गुज़र गए जिसमें परमेश्वर ने मूसा के साथ बात की। इससे पहले कि परमेश्वर मूसा से बात करता, यह ज़रूरी था कि मूसा परमेश्वर की महिमा को देखें।

सिर्फ नम्र व दीन मन के लोग ही परमेश्वर के साथ बातचीत कर सकते हैं। इससे पहले कि मूसा परमेश्वर का प्रवक्ता बन पाता, परमेश्वर के जन के लिए हरेक परीक्षा में से गुज़रना ज़रूरी था। जब हम अपने प्रभु की ख़ातिर पीड़ा, कष्ट और क्लेश में से गुज़रने के लिए तैयार हो जाते हैं, तब परमेश्वर इन बातों को एक सामान्य तरीक़े से हम पर प्रकट कर देगा।

फरवरी 11

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"प्रभु ने मूसा से कहा, 'इस्राएलियों से कह कि वे मेरे लिए भेंट उठाएं। प्रत्येक जो स्वेच्छा से देना चाहे, उसी से मेरे लिए भेंट ली जाए" (निर्ग. 25:1,2)।

परमेश्वर स्वयं उसके लिए और उसके घर के काम के लिए ऐसी कोई भेंट स्वीकार नहीं करेगा जो किसी दबाव या ग़लत उद्देश्य से दी गई है। मैं आपसे पूछता हूँ: "आपके पास जो कुछ भी है, उसमें से कुछ भी अपने लिए रखे बिना, हर्ष और प्रसन्नता से क्या सब कुछ परमेश्वर को दे देने का रहस्य आप जानते हैं? क्या आप परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ देना जानते हैं?

परमेश्वर कहता है, "मैं सिर्फ स्वेच्छा से दी गई भेंट ही स्वीकार करूँगा।" इसमें एक रहस्य छुपा हुआ है। यह रहस्य उस हृदय में छुपा हुआ है जो स्वेच्छा से परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ देता है। अगर परमेश्वर के घर में आप वास्तव में कुछ सेवा करना चाहते हैं - चाहे वह प्रार्थना है, सिखाना है, मुलाक़ात करने जाना है, या किसी भी तरह की सेवा है, तो उसे आनन्दित और प्रसन्नचित्त होकर करें।

ऐसा कभी न सोचें कि परमेश्वर उसके काम के लिए ऐसा पैसा चाहता है जिसके लिए आपको भीख माँगनी पड़ती है, या फिर कहीं से ज़बरदस्ती करके लाना पड़ता है। परमेश्वर ऐसे पैसे को कभी इस्तेमाल नहीं करेगा। मनुष्य उसे स्वीकार कर लेंगे, लेकिन परमेश्वर कभी स्वीकार नहीं करेगा। वह सिर्फ उससे घृणा करेगा, क्योंकि वह सिर्फ स्वेच्छा और हर्ष से दी हुई भेंट ही चाहता है। पवित्र-आत्मा आप पर जैसा बोझ डाले, आपका देना वैसा ही हो।

फरवरी 12

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"और जो भेंट तुम्हें उनसे लेनी है, वह यह है - सोना, चाँदी और कांसा" (निर्ग. 25:3)।

सोने, चाँदी, कांसे और बबूल की लकड़ी का आत्मिक अर्थ क्या है? और परमेश्वर ने इन वस्तुओं की माँग क्यों की थी? सोना ईश्वरीय स्वभाव दर्शाता है। हम सभी को ईश्वरीय बुद्धि, ईश्वरीय शक्ति और ईश्वरीय ज्ञान की ज़रूरत होती है। और परमेश्वर ने अपने पुत्र में ये सब हमें दे दिया है *(1 कुरि. 1:30)।* जब हम प्रभु यीशु मसीह की ईश्वरीय योजना के अनुसार काम करते हैं, तो हम उसके घर के लिए सोना जमा करते हैं। चाँदी छुटकारे का प्रतीक है। हमारे प्रभु को एक दास की क़ीमत में बेचा गया था। लेकिन हमें बचाने के लिए उसने अपने जीवन-से-भरा लहू बहा दिया। जब भी आप परमेश्वर के घर में चाँदी देखें, तो वह छुटकारे की बात करती है, उस क़ीमत की जो प्रभु ने हमें छुड़ाने के लिए चुकाई है। जब हमारा नया जन्म होता है, तो हम प्रभु यीशु मसीह की "ख़रीदी हुई वस्तु" बन जाते हैं। हमारी आत्मा और हमारी देह अब उसकी हैं। "हम दाम चुका कर ख़रीदे गए हैं" *(1 कुरि. 6:20)।* अब मैं यह नहीं कह सकता कि मेरे हाथ, मेरे पैर, मेरे होंठ या मेरी आँखें मेरी अपनी हैं। वे प्रभु यीशु मसीह के हैं क्योंकि उसने मुझे ख़रीद लिया है और अपने लहू से मेरी क़ीमत चुका दी है *(1 पत. 1:18,19)।*

हमारी देह पवित्र-आत्मा का मन्दिर है *(1 कुरि. 6:19)।* इस वजह से ही हमें अपने अंगों, अपने कपड़ों, अपनी आदतों, अपने तौर-तरीक़ों और अपनी बातचीत से परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए *(1थिस्स. 4:4,5; 1 तीम. 2:9,10)।* यह शुद्ध चाँदी है। मेरी और मेरी आत्मा प्रभु की ख़रीदी हुई चीज़ बन गई है। अब मैं सांसारिक वस्तुओं और सांसारिक वैभव पर अपना पैसा बर्बाद नहीं कर सकता। अब मुझे अपने कपड़ों, अपने शिष्टाचार, और अपने तौर-तरीक़ों से अपने प्रभु की महिमा करनी है। यह हरेक विश्वासी का विशेषाधिकार है कि वह इस तरह परमेश्वर के घर में चाँदी ला सके। कांसा न्याय की बात करता है। जिन्होंने कांसे के सर्प की तरफ देखा, उन्होंने यह स्वीकार किया कि वे स्वयं न्याय का सामना कर रहे थे, और शैतान (सर्प) उनके आज्ञा-उल्लंघन और मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार था। अपनी सूली के द्वारा हमारे प्रभु यीशु ने हमारे शत्रु को हरा दिया है। उसने उसे कुचल दिया है, और विश्वास के द्वारा हम उसमें जयवंत होते हैं।

सोना ईश्वरीय स्वभाव दर्शाता है, चाँदी उस छुटकारे की क़ीमत का प्रतीक है जो प्रभु ने हमारे छुटकारे के लिए चुकाई है, और कांसा उस न्याय को दर्शाता है जो प्रभु को हमारी तरफ से सहना पड़ा है। हम सभी को यह आज्ञा दी गई है कि हम यह सामग्री जमा करें और उसके पास लाएं।

फरवरी 13

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"नीले, बैंजनी और लाल रंग के वस्त्र" (निर्ग. 25:4)।

मिलाप वाले तम्बू के भीतरी आवरण के लिए 10 पर्दे *(निर्ग. 26:1-6)*, महापवित्र स्थान के आगे एक पर्दा *(26:31-33)*, व तम्बू के द्वार *(26:36-37)* और बाहरी आंगन के द्वार के कपड़े *(26:16-17)*, इन सभी कपड़ों के साथ महायाजक के कपड़े *(28:4-8)* इन तीनों रंगों से बटी हुई महीन मलमल से कढ़ाई करके बनाए हुए कपड़े थे।

नीला रंग आसमानी रंग है। नीला रंग पृथ्वी पर रहते हुए हमें हमारा आसमानी काम याद दिलाता रहता है। एक स्वर्गीय व्यवसाय और एक स्वर्गीय सेवा हरेक सच्चे विश्वासी का विशेषाधिकार है। क्या आप अपने स्वर्गीय व्यवसाय के अनुसार जीवन बिता रहे हैं? क्या आप अपने मुक्तिदाता के लिए आत्माएं जीत रहे हैं? क्या आप लोगों को अपने प्रभु के बारे में बता रहे हैं? क्या परमेश्वर की महिमा आपके अन्दर से प्रकट हो रही है? क्या स्वर्गीय काम के प्रति आपकी विश्वासयोग्यता द्वारा शैतान को हराया जा रहा है?

बैंजनी एक राजसी रंग है। वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के राजा होने को दर्शाता है। मिलाप वाले तम्बू में बैंजनी रंग लोगों को उनकी राजसी बुलाहट की याद दिलाने के लिए रखा गया था *(निर्ग. 19:6)*। ईश्वरीय योजना यह है कि हम वास्तव में परमेश्वर के राजा और राजकुमार बन जाएं।

लाल रंग हमें उस शुद्धता के बारे में बताता है जो हम यीशु के क़ीमती लहू द्वारा पाते हैं *(यशा. 1:18; 1 पत. 1:19; 1यूह. 1:7)*। चाहे तुम्हारे किरमिजी (लाल) रंग के भी क्यों न हों, प्रभु यीशु मसीह का लहू हरेक पाप को धो सकता है। अंत में हम बटी हुई महीन मलमल पर आते हैं। महीन मलमल संतों की धार्मिकता के काम है *(प्रका. 19:8)*। "उसने मुझे धार्मिकता का वस्त्र पहनाया है।" हम अब इसलिए धर्मी हैं क्योंकि हमने प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता का वस्त्र पहन लिया है।

फरवरी 14

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"बकरी के बाल, और लाल रंग से रंगी हुई मेंढ़ों की खालें, और सूइसों की खालें" (निर्ग. 25:4,5)।

मन्दिर का अतिरिक्त ओढ़ना वह "तम्बू" था जो बकरी के बालों से गूंथा हुआ था। एक बकरा सबसे सीधी खड़ी पहाड़ियों पर भी चढ़ जाता है। पहाड़ी की खड़ी ढाल उसे निरुत्साहित नहीं करती क्योंकि उसे ऊँचाइयों पर ही चरने की आदत होती है। वह "ऊँचाइयों की खोज में ऊपर की ओर चढ़ता हुआ बड़ा भव्य नज़र आता है। हमें भी ऐसे ही चलना चाहिए। मसीही जीवन एक बहुत ऊँची पहाड़ी चढ़ने समान ही है। क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द मनाना चाहते हैं? क्या आप परमेश्वर की महिमा देखना चाहते हैं? आपको निराश होने और पीछे हटने से इनकार करते हुए, हरेक मुश्किल रूपी पहाड़ी पर चढ़ते रहना होगा।

मिलाप वाले तम्बू का दूसरा आवरण मेढ़ों की लाल रंग से रंगी खालों का ओढ़ना था। उससे तम्बू पूरी तरह ढँप जाता था, और उसके बाहर लटके छोरों की वजह से वह बाहर से पूरा लाल नज़र आता था। यह भी प्रभु द्वारा हमारे लिए किए गए उस प्रबन्ध का प्रतीकात्मक स्वरूप है जिसमें वह हम सबको उसके लहू द्वारा पूरी तरह ढाँपे रखता है। पुरानी वाचा के अंतराल में, पाप की बलि के रूप में बैलों, बकरों और मेंढ़ों के लहू की भेंट चढ़ाए जाने का हमारे सामने एक लम्बा इतिहास है - सब कुछ आगे उसकी तरफ इशारा करता है।

अंतिम आवरण सुइस के खालों का तम्बू था। वह पूरे तम्बू का ओढ़ना था। सुइस अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखता है। वह हमेशा उन पर पैनी नज़र रखता है, और किसी पशु को उनके पास आने और उन पर हमला करने नहीं देता। इस तरह, सुइस की खाल के ओढ़ने में से हम एक और पाठ सीखते हैं: यह कि हमारा प्रभु हम पर ऐसे ही नज़र रखता है जैसे एक उक़ाब अपने बच्चों पर नज़र रखता है *(व्य.वि. 32:11-12)*, या एक चरवाहा उसकी भेड़ों की रखवाली करता है *(यहेज़. 34:11)*।

बीमार, पीड़ित, ज़रूरतमंद और ग़रीबों की देखभाल करने की ज़रूरत होती है, लेकिन ऐसे पुरुष कहाँ हैं जो परमेश्वर के सच्चे चरवाहे होंगे? हमें यह प्रार्थना करने की ज़रूरत है: 'हे परमेश्वर, अपनी कलीसिया को ऐसे सच्चे चरवाहे दे जो हमारी ऐसी ही देखभाल कर सकें जैसे सुइस अपने बच्चों की देखभाल करता है।'

फरवरी 15

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"और बबूल की लकड़ी" (निर्ग. 25:5)।

महापवित्र स्थान में रखा वाचा का सन्दूक, और पवित्र स्थान में रखी धूप की वेदी, और रोटी की मेज़, तख़्ते, और मन्दिर के खम्भे, बाहरी आंगन के खम्भे और कांसे की बड़ी वेदी – ये सब वस्तुएं बबूल की लकड़ी की थीं। बबूल का पेड़ कीकर प्रजाति के पेड़ों में से आता है।

जगत के किसी भी हिस्से में पाए जाने वाला यह सबसे सामान्य पेड़ होता है, और जलाने के अलावा वह और ज़्यादा किसी काम में नहीं आता।

प्रभु यीशु ने, महिमा के प्रभु ने, अपना स्वरूप एक सामान्य मनुष्य जैसा बना लिया था। एक आम इंसान की तरह वह आकर सबसे ग़रीब लोगों के साथ रहा। प्रभु यीशु बबूल की लकड़ी की तरह बन गया – सिद्ध मनुष्य – कि वह किसी भी परीक्षा में, किसी भी समय में, किसी भी जगह में वह आपकी मदद कर सके। बबूल की लकड़ी में से सीधे तख़्ते बनाना बहुत मुश्किल काम होता है। फिर भी तम्बू के सारे तख़्ते सीधी पट्टियाँ थे– टेढ़ों को सीधा कर दिया गया था। यह कैसे हुआ था?

मिलाप वाले तम्बू में इस्तेमाल हुई लकड़ी कीकर के उस काले पेड़ में से इस्तेमाल की गई थी जो अरब के सूखे, बंजर रेगिस्तान में उगता है। ये बबूल कठोर, मज़बूत, और चिकना होता है जिसमें कोई गाँठें नहीं होतीं और बहुत सुन्दर होता है। वह इतना कठोर और ठोस होता है और उसमें जैसे कोई ख़राबी ही नहीं होती, और इसलिए उसमें से 12 हाथ जितनी लम्बाई वाले तख़्ते काटे जा सकते हैं।

यह हमारे प्रभु यीशु मसीह का कितना सुन्दर चित्रण है। उसमें कोई टेढ़ापन नहीं था, कोई मोड़-जोड़ नहीं था, कोई ख़राबी नहीं थी। फिर भी वह सूखी भूमि में से उगी एक जड़ की तरह निकल आया था *(यशा. 53:2)।* हम सभी अपने स्वभाव में टेढ़े होते हैं। हमारा प्रभु हमें सीधा करने के लिए बबूल की लकड़ी जैसा बन गया था।

फरवरी 16

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"उजियाले के लिए तेल..." (निर्ग. 25:6)।

तेल पवित्र-आत्मा का चिन्ह् है। *मत्ती 25:13* में, हम यह देखते हैं कि दूल्हे के आने का इंतज़ार करते हुए हमारी कुप्पियाँ तेल से भरी हुई और हमारे दीपक जलते हुए रहने चाहिए। *इफि. 5:18* में, हमें यह आज्ञा दी गई है कि हम "आत्मा से भरते जाएं।" हमने यह देखा है कि पवित्र स्थान में, दूसरे कक्ष में, तीन वस्तुएँ रखी हुई थीं। उसके दक्षिणी भाग में सोने का दीपदान था जिसमें सात नालियाँ थीं।

ज़कर्याह की पुस्तक के *अध्याय 4* में, नबी को एक दर्शन में एक सोने का दीपदान दिखाया गया था जिसमें लगातार दो जीवित जैतून के पेड़ों में से तेल उण्डेला जा रहा था *(पद 2,3 व 12)।* परमेश्वर के दूत ने उससे कहा, "मेरा काम मानवीय सोच या मानवीय शक्ति से नहीं बल्कि सिर्फ मेरे आत्मा द्वारा ही होता है" *(पद 6)।* मन्दिर में रात-दिन जलते रहने वाले दीपों के द्वारा परमेश्वर उसके लोगों से कह रहा था: "मेरा काम सिर्फ एक ही तरह हो सकता है: न बल से न शक्ति से, लेकिन मेरे आत्मा के द्वारा।" परमेश्वर कितने स्पष्ट और सुन्दर तरीक़े से बात कर रहा था।

परमेश्वर कहता है, "याद रखना! मैंने तुम्हें सोने के दीपदान की तरह बनाया है कि मेरी ज्योति सब मनुष्यों पर चमके, कि सब मनुष्य मेरी महानता और महिमा को जानें।" इस तरह, जैतून के ये दोनों पेड़ एक विश्वासयोग्य, भरोसेमंद और सच्ची साक्षी के बारे में बताते हैं। अगर आप *उत्पत्ति 8:11* और *भजन 52:8* पढ़ें, तो आप यह देखेंगे जैतून के पेड़ परमेश्वर की दया और कृपा के बारे में बताते हैं। जैतून के पेड़ के द्वारा प्रभु ज़कर्याह से कह रहा था, "मेरी कृपा के संदेश का सब जगह प्रचार कर। हालांकि मेरे लिए पाप का न्याय करना अनिवार्य होता है, फिर भी मेरी दया और कृपा न कभी निष्फल और न कभी बदलने वाली होंगी।"

जब तक कि आप सोने के दीपदानों की तरह नहीं जगमगाएंगे, रात-दिन एक सुन्दर रूप में जलते नहीं रहेंगे, तब तक आप कभी भी परमेश्वर की महिमा को प्रकट नहीं कर सकेंगे। दीपदान का यही मुख्य संदेश था। हमें परमेश्वर की ज्योति बनकर जगमगाना है, परमेश्वर के आत्मा के जीवित तेल से जलते रहना है। सभी सात नालियाँ सोने के एक ही टुकड़े में से बनी थीं और परमेश्वर के बच्चों के बीच सच्ची एकता दर्शाती हैं।

फरवरी 17

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"अभिषेक के तेल के लिए मसाले" (निर्ग. 25:6)।

अभिषेक का तेल बनाने के लिए परमेश्वर ने बहुत से मसालों का इस्तेमाल किया था। *निर्गमन 30:22-33* तक पढ़ें। वह तेल सिर्फ मन्दिर और मिलाप वाले तम्बू में सिर्फ उनके लिए इस्तेमाल हो सकता था जो मन्दिर में सेवा करते थे; वह किसी दूसरे काम के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता था। वे मसाले- गंधरस, दालचीनी, अगर व तज को जैतून के तेल के साथ इस्तेमाल करना था।

श्रेष्ठगीत 4:12-16 में, कलीसिया की तुलना एक ऐसे बाग़ से की गई है जिसमें गंधरस, जटामांसी, केसर, मुश्क और दालचीनी सभी एक-साथ उग रहे हों। बहुत देखभाल के साथ की गई बाग़बानी के बाद ये पौधे फलने-फूलने लगते हैं। तब उत्तरी और दक्षिणी हवाएं चलने लगती हैं और इन मसालों की मधुर सुगन्ध चारों तरफ फैल जाती है, और बाग़ में चलने वालों को बहुत आनन्दित कर देती हैं। क्या आप प्रभु यीशु मसीह के लिए यह गीत गा सकते हैं! "आ प्रभु यीशु मसीह, मेरे हृदय में, मधुर सुगन्ध से भरे द्रव्यों (मसालों) की तेरी इस वाटिका में आ।" अगर आपका जीवन परमेश्वर की महिमा के लिए नहीं बिताया जा रहा है, तो इसमें प्रभु को कोई सुगन्ध न मिलेगी।

लेकिन अगर आप उसे भाने वाला जीवन बिता रहे हैं, तो सुगन्धमय मसालों के उस बाग़ की तरह, आपका हृदय उसे आनन्दित कर सकता है। *1कुरिन्थियों 3:9* में हम पढ़ते हैं कि हम परमेश्वर का खेत, परमेश्वर की वाड़ी हैं, और *2 कुरिन्थियों 2:14-16* में हम यह पढ़ते हैं कि "परमेश्वर के लिए हम मसीह की मधुर सुगन्ध हैं।" हमारे जीवन ऐसे ही होने चाहिए, कि जब हमारा प्रभु यीशु मसीह अपनी वाटिका में आए, तो उसमें वह मधुर सुगन्ध पाए।

फरवरी 18

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"सुगन्धित धूप के लिए सुगन्ध-द्रव्य" (निर्ग. 25:6)।

मसालों का इस्तेमाल जलाने वाली धूप के लिए भी होता था! *निर्गमन 30:34-38* में उन्हें तैयार करने के लिए दिए गए निर्देश पढ़ें। अभिषेक का तेल उस सेवा के बारे में बात करता है जो हमें परमेश्वर के घर में करनी है, और सुगन्धित धूप उस मध्यस्थता के बारे में बताती है जो विश्वासियों के हृदयों में से परमेश्वर के सिंहासन तक ऊँची जाती है।

परमेश्वर के मन्दिर के पवित्र स्थान में, सुगन्धित द्रव्य सोने की वेदी पर रात-दिन जलती रहती थी - पूरा दिन, और पूरी रात जलती थी। "मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख सुगन्धित धूप और मेरा हाथ उठाना संध्या-बलि ठहरे" *(भजन. 141:2)।*

हम परमेश्वर के "सहकर्मी" हैं, इसलिए हमें प्रार्थना करनी है। और, हालांकि शायद इस पृथ्वी पर हमारी किसी प्रार्थना का जवाब हमें न मिले, लेकिन जब हम स्वर्ग में पहुँचेंगे, तब हमारी हरेक प्रार्थना के लिए दिया गया परमेश्वर का जवाब हम जान लेंगे। ऐसी कोई प्रार्थना नहीं होती जिसका जवाब नहीं दिया जाता। महायाजक को पहले 'प्रायश्चित् के ढक्कन - 'दया के आसन' के आगे धूप जलानी पड़ती थी *(लैव्य. 16:12-13)।* उसके बाद ही उस पर लहू छिड़का जाता था *(लैव्य. 16:15-16)।* यह सब स्वयं प्रभु यीशु मसीह के बलिदान का प्रतीकात्मक स्वरूप या छाया थे। महा-पवित्र स्थान में उसने स्वयं अपना लहू लेकर प्रवेश किया, और इस तरह उसने परमेश्वर को पूरी तरह संतुष्ट किया *(इब्रा. 9:11-12)।*

फरवरी 19

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"सीनाबंद के लिए सुलैमानी पत्थर तथा जड़ने के लिए अन्य माणिक्य पत्थर" (निर्ग. 25:7)।

सबसे पहले, हारून एक सफेद वस्त्र पहनता था, उसके ऊपर एक नीला अंगरखा पहनता था, और फिर एपोद पहनता था। एपोद सोने का तथा नीले, बैंजनी, और लाल रंग के कपड़े और बटी हुई महीन मलमल का बना होता था *(28: 6-8)।* एपोद के कंधे पर दो सुलैमानी मणियाँ लगाई थीं जो "इस्राएल की संतानों को स्मरण दिलाने के लिए" थीं। उन पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खोदकर लिखे गए थे, और, हमें बताया गया है, कि फिर "हारून उनके नाम अपने कंधों पर परमेश्वर के आगे उनके स्मरण के लिए धारण किए रहे" *(पद 9:12)।*

यह हमें बताता है कि हमारा प्रभु हमें अपने कंधों पर उठाए रखता है। प्रभु यीशु को अपने बोझ उठाने दें। अपनी समस्त चिंता उसी पर डाल दें क्योंकि वह आपकी बहुत चिंता करता है *(1 पत. 5:7)।* जब आप यह पाठ सीख लेते हैं, और प्रभु को अपने बोझ उठाने देते हैं, तो आप उसके सिद्ध विश्राम और शांति का आनन्द मना सकते हैं।

एपोद के ऊपर निपुणता से काढ़ा हुआ सोने का ही नीले, बैंजनी और लाल रंग तथा बटे हुए महीन मलमल का सीनाबंद था। सीनेबंद में 12 पत्थर जड़े हुए थे जिनमें इस्राएल के 12 गोत्रों के नाम थे *(पद 15-21)।*

ये 12 पत्थर महायाजक के हृदय के बिलकुल पास रहते थे। वह जहाँ भी जाता था, वे उसके साथ जाते थे, और परमेश्वर उनके द्वारा उसके लोगों को याद दिलाता था कि वह चाहता है कि उसके लोग उसके हृदय के बिलकुल पास रहें।

फरवरी 20

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"अपनी ज्योति और सच्चाई को भेज - वे मेरी अगुवाई करें; वे ही मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर, तेरे निवास-स्थान पर पहुँचाएं।" भजन. 43:3,4

12 पत्थरों के नीचे, सीनाबंद के अन्दर ही दो और पत्थर थे, जिनमें एक का नाम उरीम और तुम्मीम थे। उनकी प्रकृति एक रहस्य है, एक ऐसा भेद जिसे परमेश्वर ने हम पर कभी प्रकट नहीं किया है। हम सिर्फ यही जानते हैं कि इन दोनों पत्थरों की मदद से, महायाजक परमेश्वर की इच्छा को जान लेता था।

भजन 43:3-4 में, हम इन दोनों पत्थरों की तरफ किया गया एक संकेत पाते हैं। उनकी तुलना परमेश्वर की ज्योति और परमेश्वर के सत्य से की जा सकती है। परमेश्वर ने यह हरेक विश्वासी को दिए हैं। जैसे महायाजक उन पत्थरों द्वारा परमेश्वर की इच्छा जान सकता था, वैसे ही, हमारे हृदय में मौजूद उसकी ज्योति और सत्य से हम सभी अब परमेश्वर की इच्छा को जान सकते हैं।

इससे पहले कि हम कहीं जाएं, इससे पहले कि हम अपना पैसा ख़र्च करें, इससे पहले कि हम कोई योजना बनाएं या कोई फैसला करें, हमारे लिए, हमारे बच्चों के लिए या भविष्य के लिए, तो हमें परमेश्वर की इच्छा जान लेनी चाहिए।

फरवरी 21

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"नगर की शहरपनाह की 12 आधारशिलाएं थीं, जिन पर मेमने के 12 प्रेरितों के 12 नाम लिखे थे।" (प्रका. 21:14)।

यहाँ हम पवित्र नगर की शहरपनाह (दीवार) का एक दर्शन पाते हैं जिसकी 12 बुनियादें हैं, और उन पर 12 प्रेरितों के नाम लिखे हैं। ये 12 पत्थर उस मज़बूत प्रेरिताई की नींव हैं जिस पर हम निर्मित हुए हैं *(इफि. 2:19-22)।* अब, ये प्रेरित तो सामान्य पुरुष थे। वे हमारे ही जैसे मनोवेग वाले लोग थे, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें सामर्थी बनाया। हम जानते हैं कि शमौन पतरस किस तरह का व्यक्ति था, लेकिन अपनी नाकामी के बावजूद वह परमेश्वर का मूल्यवान पत्थर बन गया।

शमौन पतरस एक मूल्यवान पत्थर कैसे बन गया? उसके नाम "पेत्रुस" का अर्थ एक मामूली, ऊबड़-खाबड़ पत्थर है, लेकिन अंतत: वह ऊबड़-खाबड़ पत्थर एक मूल्यवान, चमकता हुआ नींव का पत्थर बन गया। नींव का पहला पत्थर यशब था *(प्रका. 21:19)।* पतरस, वह ऊबड़-खाबड़ पत्थर अब एक जगमगाता हुआ, चमकदार, सुन्दा और मूल्यवान पत्थर यशब बन गया है। वह ऐसा कैसे बन गया?

मूल्यवान पत्थरों को ऐसी जगमगाहट वाले पत्थर बनने के लिए ज़मीन के नीचे बड़ी प्रचण्ड आग में से गुज़रना पड़ता है। परमेश्वर हमसे यह चाहता है कि हम उसकी सिद्ध इच्छा में विश्वास करें, और उन परीक्षाओं को हममें काम करने की अनुमति दें जिन्हें वह उसकी इच्छा को हममें पूरा करने के लिए भेजता है। वह इस तरह ही हमें एक जगमगाते हुए पत्थर बनाता है।

अगर हम परमेश्वर की ज्योति और सत्य को हममें काम करने देंगे, तो हम ऐसे मूल्यवान पत्थर बन जाएंगे जो परमेश्वर के हृदय के पास रहते हुए उसके भरपूर प्रेम और स्नेह का आनन्द उठाएंगे।

फरवरी 22

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"क्योंकि एक तम्बू बनाया गया जिसके पहले भाग में दीपदान, मेज़ और भेंट की रोटियाँ थीं यह पवित्र स्थान कहलाता है। दूसरे पर्दे के पीछे तम्बू का वह भाग था जो परम्-पवित्र स्थान कहलाता है" (इब्रा. 9:2,3)।

मिलाप वाला तम्बू परमेश्वर के रहने की जगह थी। मनुष्य उसमें प्रार्थना करने के लिए नहीं, लेकिन अपने काम करने जाते थे। यह महान् मन्दिर लकड़ी के तख़्तों से बना था। इनमें से हरेक तख़्ता 15 फुट ऊँचा व 2 फुट 3 इंच चौड़ा था। वे अन्दर और बाहर सोने से मढ़े हुए थे *(निर्ग. 26:15-25)*। तम्बू के दो भाग थे: अगला भाग पवित्र स्थान कहलाता था, और उसके पीछे का छोटा भाग, महापवित्र स्थान; अगला भाग पिछले भाग से दोगुना बड़ा था।

जंगल में खड़ा वह तम्बू उस सच्चे स्वर्गीय घर की छाया थी जिसका महायाजक स्वयं हमारा प्रभु यीशु मसीह है *(इब्रा. 8:1,2)*। इस वजह से ही परमेश्वर ने मूसा से कहा था: "देख, जो नमूना तुझे पर्वत पर दिखाया गया था, उसी के अनुसार सब कुछ बनाना" *(पद 5)*।

मिलाप वाले तम्बू का पूरा विवरण, उसकी मामूली से मामूली बात भी, मूसा को परमेश्वर द्वारा दी गई थी, और उसके विस्तृत विवरण को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी इमारत और ढाँचा कभी किसी मानवीय शिल्पी द्वारा नहीं बनाया जा सकता था।

फरवरी 23

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"जो जय पाए, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसे मैं भी जय पाकर पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ" (प्रका. 3:21)।

तम्बू का बाहरी भाग, पवित्र स्थान, हमें कलीसिया के पार्थिव काम के बारे में बताता है। भीतरी भाग, या महापवित्र स्थान, हम उसी कलीसिया के स्वर्गीय काम के बारे में बताता है। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया की यह दोहरी सेवकाई है। अगर कलीसिया के लिए ईश्वरीय योजना को प्रकट होना है, तो दोनों को साथ-साथ होना है। पहले हम अपने स्वर्गीय काम को देखें।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 में, प्रेरित यूहन्ना को एक स्वर्गीय दर्शन दिया गया था। उसने स्वर्ग में एक सिंहासन लगा देखा था, और उसके चारों ओर 24 सिंहासन रखे थे। तब उसने सिंहासन के चारों तरफ एक मेघ-धनुष देखा और उसके आगे सोने के सात दीपदान जल रहे थे। जैसा कि आप जानते हैं मेघ-धनुष में सात रंग होते हैं - बैंगनी, गहरा नीला, आसमानी, हरा, पीला और लाल। परमेश्वर ने मनुष्य के साथ सात वाचाएं बांधी हैं। इन सात वाचाओं की वजह से हमें उसके सिंहासन में सहभागी होने का अधिकार मिला है।

फरवरी 24

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"सिंहासन के सामने आग के सात दीप जल रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्माएं हैं" (प्रका. 4:5)।

यूहन्ना ने सिंहासन के आगे सात दीपदान जलते हुए देखे, जो परमेश्वर की सात आत्माएं हैं। ये हमें पवित्र-आत्मा के सात-स्तरीय काम के बारे में बताते हैं *(रोमियों 8)।*

वह विश्वासी में रहता है *(पद 9);* उसे सजीव करता है *(पद 11);* हमारी अगुवाई करता है *(पद 14);* वह हममें पुत्रत्व की आत्मा बन जाता है कि फिर हम परमेश्वर को हे पिता कहकर पुकार सकते हैं *(पद 15);* वह हमारी आत्मा के साथ मिलकर यह साक्षी देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं *(पद 16,17);* वह परमेश्वर की इच्छानुसार हमारी मध्यस्थता करता है *(पद 27)।* और अंत में, हमारा सहायक हमें एक जय के बाद दूसरी जय में तब तक लेकर चलता रहता है जब तक हम मसीह के साथ उसके स्वर्गीय सिंहासन पर नहीं जा बैठते *(पद 26,37)।*

सिंहासन के पीछे यूहन्ना ने सात रंगों वाला मेघ-धनुष देखा था। सिंहासन के आगे उसने सात दीपदान देखे थे। हमारे पीछे परमेश्वर की वाचा है। हमारे अन्दर पवित्र-आत्मा काम कर रहा है। इस तरह, परमेश्वर ने कलीसिया के करने के लिए स्वर्गीय और पार्थिव काम का प्रबन्ध किया है।

फरवरी 25

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"प्राण देने तक विश्वासी रह, तब मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा" (प्रका. 2:10)।

अब हमें अपने पृथ्वी के काम के बारे में दो शब्द कहने हैं। हमने देखा था कि हरेक तख़्ते की लम्बाई 10 हाथ थी। बाइबल में 10 परिपक्वता का अंक है – ऐसी आत्मिक परिपक्वता और ज़िम्मेदारी जो पीड़ाओं और परीक्षाओं द्वारा परखे जाने के बाद हासिल होती है। आत्मिक परिपक्वता बौद्धिक ज्ञान द्वारा प्राप्त नहीं होती।

आपके पास बहुत सा सच्चा ज्ञान हो सकता है, लेकिन सिर्फ कठिनाइयों, परीक्षाओं और क्लेशों के बाद ही आप आत्मिक तौर पर परिपक्व हो सकते हैं, और इस पृथ्वी पर आपका जीवन ही आपके प्रशिक्षण का मैदान है।

अब, लकड़ी के वे तख़्ते जो 10 फुट लम्बे और 2 फुट चौड़े थे, और हरेक की चूलों के नीचे दो-दो चाँदी के खाँचे थे। परमेश्वर खाँचों के लिए सोना भी इस्तेमाल कर सकता था, लेकिन उसने चाँदी का इस्तेमाल करने का चुनाव किया था। क्यों? क्योंकि चाँदी, जैसा हमने देखा था, बाइबल में चाँदी छुटकारे का प्रतीक है। यह उस क़ीमत का प्रतीक है जो हमारे प्रभु यीशु ने हमें छुड़ाकर उसके साथ जोड़ा है।

बाइबल में अंक 2 सहभागिता में एकता का प्रतीक है *(मत्ती 18:19)।* हरेक तख़्ता दो ख़ाँचों में बैठाया जाना था, वर्ना वह स्थिर नहीं रह पाता। चाँदी के खाँचों में टिकाई गई चूलें हमें बताती हैं कि हम सभी के छुटकारे के लिए एक ही दाम चुकाया है, और हम सभी प्रभु के लिए एक समान मूल्यवान हैं।

फरवरी 26

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"बीच का बेंड़ा जो तख़्तों के बीच में हो, वह निवास-स्थान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचे" (निर्ग. 26:28)।

तम्बू के तख़्तों को जोड़ने के लिए लकड़ी चार बेंड़ों को भी सोने से मढ़ना था और बेंड़ों के खाँचों के लिए सोने के ही कड़े बनाने थे। इनमें से चार बेंड़े तो बाहर से भी नज़र आते, लेकिन पाँचवें बेंड़े को तख़्तों के बीच में से एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाकर तख़्तों को जोड़ कर रखना था *(निर्ग. 26:26-29)*।

सारे तख़्ते मिलकर सारे जगत में फैली पूरी कलीसिया की एकता के बारे में बताते हैं। तख़्तों के ये पाँच बेंड़े उन पाँच आत्मिक सम्बंधों के बारे में बताते हैं जिनमें विश्वासी आपस में जुड़कर एक हो जाते हैं। परमेश्वर की कलीसिया में असली आत्मिक एकता के लिए, हमें पाँच बातों की ज़रूरत होती है। चार बाहरी सम्बंध हैं और एक छुपा हुआ केन्द्रीय सम्बंध है जो हम सभी को जोड़ता है। छुपा हुआ केन्द्रीय सम्बंध प्रभु यीशु मसीह का वह जीवन है जो सारे जगत के सभी विश्वासियों को जोड़ता है।

चार बाहरी सम्बंधों का उल्लेख *प्रेरितों के काम 2:42* में किया गया है। हमें बताया गया है कि "वे लगातार प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में मग्न रहते थे।" परमेश्वर की कृपा में वे इस प्रकार आत्मिक रूप में उन्नत होते थे। अगर हम ये चार बातें हरेक स्थान की मण्डलियों में प्रकट होते हुए पाएंगे, तो हम एकता और सामर्थ्य देखेंगे। हम इनमें से किसी को भी अलग नहीं हटा सकते। लेकिन जो सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण सम्बंध है, वह हममें बसने वाला प्रभु यीशु मसीह का जीवन है।

यह वह छुपा हुआ बेंड़ा है जो तम्बू के एक छोर से दूसरे छोर तक जाता है। जब प्रभु यीशु मसीह हमारे जीवन का प्रभु बन जाता है, तो यह असम्भव है कि हम सबसे प्रेम न करें क्योंकि प्रभु यीशु का प्रेम हममें से उसके सभी बच्चों के लिए प्रवाहित होगा।

फरवरी 27

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"वाचा का सन्दूक जो चारों ओर से सोने से मढ़ा हुआ था, जिसमें मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान था, हारून की फूली-फली लाठी और वाचा की पटियाँ थीं" (इब्रा. 9:4)।

मिलाप वाले तम्बू के बीच में, महा-पवित्र स्थान में, सिर्फ एक ही वस्तु थी - वाचा का सन्दूक: बबूल की लकड़ी से बना ढाई हाथ लम्बाई ग डेढ़ हाथ चौड़ाई ग डेढ़ हाथ ऊँचाई वाला सन्दूक जो सोने से मढ़ा हुआ था, और जिसका ढक्कन - प्रायश्चित का ढक्कन - ठोस सोने का था जिसके सोने में से ही ढालकर उसके दोनों सिरों पर सोने के दो करूब बनाए गए थे।

इस्राएल की संतानें जिस दिन से जंगल की यात्रा में निकली थीं और जिस दिन तक उन्होंने 40 साल बाद प्रतिज्ञा देश में प्रवेश किया, उन्हें प्रतिदिन स्वर्ग से रोटी मिलती थी। मन्ना, जो ओस की तरह नज़र आती थी और उसका स्वाद तेल में तली हुई रोटी और शहद जैसा था। इसे सूर्योदय के समय इकट्ठा किया जाता था और वह सभी लोगों को तृप्त करने के लिए काफी होती थी। उसमें से एक ओमेर (2 लीटर) मन्ना, सोने के एक मर्तबान में वाचा के सन्दूक में इस साक्षी के रूप में रखी गई थी कि परमेश्वर ने हरेक व्यक्ति के लिए स्वर्गीय भोजन की पर्याप्त व्यवस्था की थी।

वाचा के सन्दूक में दूसरी वस्तु हारून की वह लाठी थी जिसमें से कलियाँ, फूल और फल निकल आए थे जो इस बात की याद दिलाने के लिए थी कि परमेश्वर किस प्रकार की सेवा चाहता है। उसने सिर्फ मूसा और हारून को चुना था क्योंकि इस बड़ी ज़िम्मेदारी के लिए चुने जाने से पहले, वे जंगल में बहुत सालों तक अनेक परीक्षाओं द्वारा परखे गए थे।

वाचा के सन्दूक में तीसरी वस्तु पत्थर की दो पट्टियाँ थीं। निर्गमन 40:20 में, उन्हें "साक्षी" की पट्टियाँ कहा गया है। परमेश्वर के वचन को सुरक्षित रखने के लिए उसे वाचा के सन्दूक में रखा जाना ज़रूरी था। हमारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छुपा हुआ है *(कुलु. 3:3)।* ऐसा होने दें कि प्रभु यीशु मसीह हमारे जीवन पर उसका अधिकार ले ले, और उसे अपने में छुपा ले, और तब हममें भरपूर जीवन होगा।

फरवरी 28

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"उसके ऊपर तेजोमय करूब थे जो प्रायश्चित् के ढक्कन पर छाया किए हुए थे" (इब्रा. 9:5)।

प्रायश्चित् के ढक्कन के साथ ही जुड़े हुए सोने के दो करूब थे *(निर्ग. 25:18-20)।* उनका सम्बंध सेवकाई से है *(यहेज़. 1)।* परमेश्वर के पास एक महत्वपूर्ण संदेश था जिसे वह यहेज़केल के द्वारा सब जातियों के पास पहुँचाना चाहता था। लेकिन इससे पहले कि यहेज़केल उसे समझ पाता, परमेश्वर ने उसे करूबों का दर्शन दिया।

इससे पहले कि यहेज़केल परमेश्वर का प्रवक्ता बन पाता, या एक सच्चा साक्षी, नबी, या परमेश्वर का सेवक बन पाता, यह ज़रूर था कि उसकी परमेश्वर के साथ एक पहचान बन पाती, और वह आत्मिक पहचान उसे करूबों के अर्थ द्वारा दिखाई गई थी।

हालांकि ये जीवित प्राणी बहुत प्रभावशाली और प्रेरणादायी, फिर भी उनका रूप मनुष्यों जैसा था (पद 4), और उनके हाथ मनुष्य जैसे थे *(पद 8)।* यहेज़केल हालांकि मनुष्य ही था, फिर भी परमेश्वर उसके द्वारा एक बड़ी सेवकाई पूरी करना चाहता था। उदाहरण के तौर पर, सिर्फ एक व्यक्ति की प्रार्थना द्वारा क्या हासिल किया जा सकता है। जब लोग प्रार्थना करने का रहस्य जान लेते हैं, और प्रार्थना में पीड़ित होना सीख लेते हैं, तो उनके द्वारा जगत के सभी हिस्सों में कितनी सामर्थ्य प्रवाहित हो जाती है!

इन जीवित प्राण्यिों के पंख भी थे *(पद 8)।* उनके पंख जुड़े हुए थे (पद 9)। इसका अर्थ था कि जहाँ भी एक प्राणी जाता था, बाक़ी तीन को भी उसके साथ जाना पड़ता था। यह सच्ची आत्मिक एकता के बारे में बताता है। उनके साथ मिलकर ही काम करना पड़ा था और साथ मिलकर ही विश्राम करना पड़ता था। वे स्वतंत्र रूप में अकेले किसी एक दिशा में जाने का चुनाव करना चाहते, तो भी वे नहीं जा सकते थे। वे सिर्फ एक इकाई के रूप में ही जा सकते थे। और मसीह की कलीसिया को भी इसी तरह काम करना है। आप जैसे-जैसे आत्मिक रूप में बढ़ते हैं, परमेश्वर के सहकर्मियों के रूप में आपको अपने बीच की आत्मिक एकता नज़र आनी चाहिए।

फरवरी 29

परमेश्वर के निवास स्थान के रहस्य

"इस प्रकार मूसा ने काम पूरा किया... और घर प्रभु के तेज से भर गया" (निर्ग. 40:33,34)। "प्रभु का तेज तुझ पर उदय हुआ है" (यशा. 60:1)।

महा-पवित्र स्थान में कोई प्राकृतिक प्रकाश नहीं था। जब तक परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हुए वहाँ रहने नहीं आता, तब तक तम्बू को अंधकार में ही डूबे रहना था। लेकिन परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है। *गिनती 7:89* में हम पढ़ते हैं कि मूसा ने "प्रायश्चित् के ढक्कन पर से जो साक्षी-पत्र के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करूबों के बीच में से उसकी आवाज़ सुनी जो उससे बात कर रहा था।"

महिमा कोई दर्शन या कोई अद्‌भुत अनुभूति नहीं है। वह हमेशा ऐसी बात होती है जो परमेश्वर की योजना के साथ जुड़ी होती है; और हमें महिमा के ज्ञान और अनुभव तक पहुँचना है, तो यह बहुत ज़रूरी है कि हम ईश्वरीय नमूने और योजना के साथ पूरी तरह सुसंगत हों।

परमेश्वर की महिमा पूरी कलीसिया की सेवा को नज़र में रखते हुए दिखाई जाती है। हमें परमेश्वर की आवाज़ सुनने की और यह जानने की ज़रूरत होती है कि वह क्या कह रहा है, कि फिर हम उसके संदेश को मनुष्यों तक पहुँचा सकें।

हमें परमेश्वर की आवाज़ इसलिए सुननी है कि फिर हम परमेश्वर की योजना में एक पुर्ज़े की तरह सही बैठ जाएं, और परमेश्वर के नगर के ढाँचे में अपनी सही जगह में पहुँच जाएं। हम विश्वासयोग्य पाए जाएं क्योंकि इस प्रक्रिया का अंत महिमा होती है। यह एक पवित्र नगर है, परमेश्वर का निवास-स्थान, जिसमें "परमेश्वर की महिमा है।"

मार्च 1

बैतनिय्याह के रहस्य

"वह बारहों के साथ बैतनिय्याह को चल दिया, क्यों संध्या हो चुकी थी" (मरकुस 11:11)।

सुसमाचारों में यह दर्ज है कि प्रभु यीशु मसीह आठ बार बैतनिय्याह गया था। जहाँ तक हम पवित्र-शास्त्रों में पढ़ते हैं, उसने यरूशलेम में कभी रात नहीं बिताई थी। वह सुबह के समय वहाँ जाता था, बीमारों को चंगा और दूसरे चमत्कार करता था, और पास में ही स्थित जैतून के पहाड़ या बैतनिय्याह चला जाता था।

जैतून का पहाड़ और बैतनिय्याह एक-दूसरे के बिलकुल नज़दीक हैं, और वह या तो जैतून के पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिए चला जाता था, या बैतनिय्याह चला जाता था *(मरकुस 11:1,11,19)।* हरेक अवसर पर - यरूशलेम में चंगा करने, सिखाने, या चमत्कार करने के बाद, संध्या के समय वह या तो बैतनिय्याह या जैतून के पहाड़ पर लौट आता था।

अंत में, वह बैतनिय्याह से ही स्वर्ग पर चढ़ गया था *(लूका 24:50)।* यह सब यही दर्शाता है कि बैतनिय्याह में उसके शिष्यों को सिखाने के लिए प्रभु यीशु के पास ख़ास सबक़ (पाठ) थे और बैतनिय्याह में ही उसने अपने शिष्यों को उसका अंतिम संदेश और आज्ञा दी थी, "सारे जगत में जाओ, और सुसमाचार प्रचार करो।"

मार्च 2

बैतनिय्याह के रहस्य

"और यशायाह ने कहा, 'अंजीर की एक टिकिया लो।' और उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बांधा और वह चंगा हो गया" (2 राजा 20:7)।

बैतनिय्याह का अर्थ है अंजीर का घर। बाइबल में अंजीर स्वास्थ्य दर्शाता है, देखें *2 राजा 20:7*। अंजीर यहूदियों के खाने का एक सामान्य हिस्सा है।

1 शमूएल 25:18 में, हम यह पढ़ते हैं कि कैसे अबीगैल, दाऊद के क्रोध को शांत करने के लिए, दाऊद के लिए उत्तम वस्तुएं लेकर आई थी और उनमें अंजीर की दो सौ टिकियाँ भी थीं। एक दूसरे अवसर पर *1 इतिहास 12:38-40* में अनेक योद्धा मिलकर दाऊद को राजा बनाने के लिए आए थे, और पूरे राज्य में बड़ा आनन्द छा गया था। बड़े उत्सव और भोज हुए और खाने-पीने के लिए सबसे अच्छी चीज़ें थीं। इन सब अच्छी चीज़ों में अंजीर की टिकियाएं भी थीं। यह दर्शाता है कि यहूदियों के पोषण और स्वास्थ्य में अंजीर का कितना मूल्य था। अंजीर के घर के रूप में बैतनिय्याह स्वास्थ्य का भी घर है।

प्रभु यीशु मसीह जगत में हमें सच्चा स्वास्थ्य देने के लिए आया था। सभी मनुष्यों को पाप की बीमारी लगी है और पाप की बीमारी को चंगा नहीं किया जा सकता। दूसरी बीमारियों को चंगा किया जा सकता है, लेकिन पाप की बीमारी को चंगा नहीं किया जा सकता। इसलिए पुरुषों व स्त्रियों को पाप की बीमारी से चंगा करने के लिए प्रभु यीशु मसीह इस जगत में आया।

मार्च 3

बैतनिय्याह के रहस्य

“मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनूँगा, और तुझे ऐसी बड़ी और गहरी बातें बताऊँगा जिन्हें तू नहीं जानता” (यिर्म. 33:3)।

यिर्मयाह 33:6-8 में, हम पढ़ते हैं कि पाप और विद्रोह की वजह से इस्राएल की प्रजा 70 साल तक बेबीलोन में बंधुवाई में रही थी। अपने प्रेम की वजह से, परमेश्वर ने उनसे यह प्रतिज्ञा की थी कि 70 साल के बाद वह उन्हें उनकी बंधुवाई में से छुड़ा लेगा।

उसने कहा, “मैं तुम्हारे पाप, अपराध और अधर्म क्षमा करूँगा,” और उसने यह भी कहा, “मैं तुम्हें स्वास्थ्य और चंगाई भी दूँगा।” प्रभु यीशु मसीह जगत में हमारे पाप, अपराध और अधर्म क्षमा करने और हमें आत्मिक स्वास्थ्य देने के लिए आया था। हमारी अप्रसन्नता और दु:ख की वजह क्योंकि पाप है, इसलिए जब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं प्रसन्नता, आनन्द और आत्मिक समृद्धि से भर जाते हैं। तब हमारे पास यह आज़ादी होती है कि हम अपनी हरेक ज़रूरत पूरी करने के लिए प्रभु यीशु मसीह को पुकार सकें।

बैतनिय्याह आत्मिक स्वास्थ्य और चंगाई के बारे में बताता है। बैतनिय्याह के द्वारा प्रभु यीशु मसीह यह दिखाना चाह रहा था कि मनुष्य आत्मिक स्वास्थ्य और सच्ची शांति कैसे पा सकता है। वह अनेक बार बैतनिय्याह गया था, और हर बार उसने इस रहस्य पर से थोड़ा और पर्दा हटाया था कि वह हमें कैसे सच्चा आत्मिक स्वास्थ्य देता है और हम उसे कैसे ग्रहण कर सकते हैं। सभी बीमारियों और मृत्यु की भी वजह पाप ही है। बैतनिय्याह में चंगाई है, बशर्ते आप प्रभु यीशु मसीह के पास आएं।

मार्च 4

बैतनिय्याह के रहस्य

"प्रभु ने वहीं सदा की आशिष ठहराई है" (भज. 133:3)।

यूहन्ना 11:1 में प्रभु के पहली बार बैतनिय्याह आने का बयान किया गया है। प्रभु मार्था, मरियम और लाज़रस के परिवार से विशेष प्रेम रखता था। उनमें बहुत सी कमियाँ, नाकामियाँ और भीतरी कमज़ोरियाँ थीं, लेकिन वह फिर भी उनसे प्रेम करता था। इसी तरह, वह आपसे और मुझसे भी प्रेम करता है, लेकिन अगर हम उसके प्रेम को पूरी तरह ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं होंगे, तो जो जीवन, आनन्द और स्वास्थ्य वह हमें देने की पेशकश करता है, हम उसका आनन्द नहीं उठा सकेंगे।

मनुष्य धन-सम्पत्ति से सम्पन्न होते हुए भी भीतर से बहुत दुःखी हो सकता है। पृथ्वी की सम्पन्नता ईश्वरीय प्रेम का चिन्ह् नहीं होता, लेकिन अनेक हृदयों में यह बहुत ही ग़लत धारणा भरी हुई है। मनुष्य स्वास्थ्य, सम्पन्नता और आत्मिक आशिष की बात करते हैं, लेकिन परमेश्वर की आशिष अनन्त के लिए होती है *(भजन. 133:3)।*

सच्ची आशिष का अर्थ हमेशा अनन्त जीवन होता है, और अनन्त जीवन के द्वारा हम जिन बातों में आनन्दित होते हैं, वही सच्ची आशिष होती है। जब हममें एक भीतरी शांति होती है, तब हम सच्चे जीवन का आनन्द मनाते हैं, और परमेश्वर द्वारा हमारे जीवनों में पीड़ाओं और मुश्किलों को आने की अनुमति देने के बावजूद, हम अनन्त जीवन की वजह से सच्ची आशिष का आनन्द उठा सकते हैं। हमारे पास आशिषों का आना विभिन्न तरीक़ों से होता है। असल में, भजन संहिता 119:67,71 में, हम यह देखते हैं कि कैसे दाऊद ने पीड़ा और परीक्षाओं को एक आशिष के रूप में देखा था। वह अपनी पीड़ा में इसलिए धन्यवाद देता है क्योंकि उनमें उसने परमेश्वर के वचन का पालन करना और उन्हें समझना सीखा था (भजन. 18:91,35 व 36)। उस पीड़ा द्वारा ही उसकी सीमाएं बढ़ी थीं। इसी तरह अय्यूब 42:6,12,13 में, अय्यूब भी अनेक पीड़ाओं में से गुज़रने के बाद दोगुनी आशिष पाई थी। परमेश्वर हमारे जीवन में चाहे जो कुछ भी दे, चाहे वह पीड़ादायक भी क्योंकि न हो, फिर भी वह एक आशिष बन जाता है क्योंकि हम अनन्त जीवन में आनन्दित रहते हैं।

मार्च 5

बैतनिय्याह के रहस्य

"मैं जानता हूँ कि मुझमें (अर्थात् मेरे शरीर में) कुछ भी भला वास नहीं करता" (रोमियों 7:18)।

प्रभु मार्था और मरियम पर अपना प्रेम प्रकट करने के लिए बार-बार बैतनिय्याह आता था, लेकिन उसके प्रेम को पूरी तरह से ग्रहण करने के लिए उन्हें तैयार रहने की ज़रूरत थी। पहली बार वह उन्हें उनकी असली दशा दिखाने के लिए आया। अगर हम परमेश्वर के प्रेम को पूरी तरह से ग्रहण करना चाहते हैं, तो हमें पहले अपनी पापमय और भ्रष्ट दशा को देखने की ज़रूरत होती है। हम में कुछ भी भला वास नहीं करता (रोमियों 7:18)। इस पाठ को सीखने में हमें बहुत साल लग जाते हैं क्योंकि हम सोचना ही नहीं चाहते कि हममें कुछ भी भला नहीं है।

बाहरी तौर पर बैतनिय्याह का परिवार बहुत अच्छा परिवार था। वे प्रभु यीशु की देखभाल करते थे और उससे प्रेम भी करते थे। वे फरीसियों और सदूकियों की तरह नहीं थे जो उस पर दोष लगाते थे। ये परिवार प्रभु यीशु मसीह का बहुत सम्मान करता था, और हर बार बड़े आनन्द के साथ उसका स्वागत करते थे। हालांकि बाइबल में उसके वहाँ सिर्फ 8 बार जाने का उल्लेख है, लेकिन प्रभु यीशु जब भी यरूशलेम आता-जाता था, तो रास्ते में वह वहाँ बहुत बार रुका होगा। प्रभु को उनकी दशा की पूरी जानकारी थी, और वह उनके घर में इसलिए नहीं जाता था क्योंकि वे सिद्ध थे।

वह यह जानता था कि वह उनके घर जाते रहने से वह उनके द्वारा क्या कुछ हासिल कर सकता था, इसलिए उसने उनके घर जाना जारी रखा। जब वह पहली बार उनके घर गया था, तो वह उन्हें उनकी वास्तविक दशा दिखाने के लिए गया था, क्योंकि सिर्फ वही हमारे हृदयों को जानता है।

मार्च 6

बैतनिय्याह के रहस्य

“इसलिए अगर कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो नई बातें आ गई हैं। अब ये सब बातें तो परमेश्वर की ओर से हैं...” (2 कुरि. 5:17,18)।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मार्था और मरियम का अच्छा परिवार था। प्रभु यीशु जब उनके घर आता था, तो मार्था फौरन खाना बनाने लगती थी, और मरियम फौरन प्रभु यीशु के चरणों में आकर बैठ जाती है। वह कितना अच्छा परिवार था, बहुत उदार, दयालु, स्नेही, अतिथि-सत्कार करने वाला, और सबसे बढ़कर परमेश्वर का भय मानने वाला। लेकिन प्रभु ने कुछ और भी देख लिया था जो दूसरे नहीं देख सकते थे। जब तक एक व्यक्ति पूरी तरह नया हो जाता, वह परमेश्वर के प्रेम, सामर्थ्य और कृपा को ग्रहण नहीं कर सकता। हालांकि वह बाहरी तौर पर भला और शिष्ट नज़र आ सकता है, इनमें से कोई भी मानवीय गुण, जब तक वह हमारे बदले हुए स्वभाव में नहीं आता, वह परमेश्वर को संतुष्ट नहीं कर सकता। जब तक हम प्रभु यीशु मसीह के पास नहीं आते, तब तक हम दण्ड के अधीन रहते हैं। हमारे पुराने स्वभाव में से जो कुछ भी आता है, हमारा अच्छा व्यवहार या शिष्टाचार या जिसे हम गुण कहते हैं, वह और कुछ नहीं सिर्फ मैले चिथड़े ही हैं (यशा. 64:6)। जब हम नया जीवन पाते हैं, सिर्फ तभी हमारे स्वभाव नए हो पाते हैं।

प्रभु यीशु मसीह बैतनिय्याह में इसलिए आया कि पहले वे उनकी असली आत्मिक दशा को देख लें, क्योंकि उसके बाद ही वह उन्हें आशिष दे सकता था। धीरज और प्रेम के साथ वह तब तक बैतनिय्याह आता रहा जब तक कि उसने पूरे परिवार में एक परिवर्तन होता हुआ नहीं देख लिया।

प्रभु यीशु मसीह बड़े प्रेम के साथ हमारे पास आता है, उसके लोगों और सेवकों को बार-बार हमारे पास तब तक भेजता है जब तक कि हम अपने नए जीवन को पूरी तरह ग्रहण नहीं कर लेते। तब हमारी हाँ की हाँ और नहीं की नहीं हो जाती है, और हमारा हरेक क़दम उसके वश में रहता है। इसमें समय लगता है, लेकिन प्रभु हमारी मुश्किलों को जानता है, और वह बड़े प्रेम के साथ बार-बार हमारे पास आता रहता है।

मार्च 7

बैतनिय्याह के रहस्य

"मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी बातों के लिए चिंतित तथा व्याकुल रहती है, लेकिन वास्तव में एक ही बात ज़रूरी है, और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है, जो उससे छीना न जाएगा" (लूका 10:41-42)।

आरम्भ में हम लाज़रस का कोई ज़िक्र नहीं पाते। यह स्पष्ट है कि आरम्भ में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह एक भला मनुष्य था। उस पर कोई दोष नहीं लगा रहा था क्योंकि वह ईमानदार और मेहनती और एक अच्छा भाई था। हम यह जानते हैं, कि उसके मर जाने पर मार्था और मरियम बहुत रो रही थीं। अगर वह एक बुरा व्यक्ति होता तो उसके मरने पर कोई न रोता। कुछ ऐसे लोग होते हैं जो बहुत दयालु और प्रेमी होते हैं। लेकिन फिर भी उनमें परमेश्वर की बातों के लिए कोई भूख और प्यास नहीं होती।

लूका 10:40 में हम देख सकते हैं कि मार्था कितनी दयालु थी। उसने जब प्रभु को खिड़की में से देखा, तो वह तुरन्त ही आग जलाने और खाना बनाने में व्यस्त हो गई थी। वह एक अतिथि-सत्कार करने वाली, दयालु हृदय वाली, और एक अच्छी रसोई बनाने वाली स्त्री थी। लेकिन उसमें ईर्ष्या और गुस्से की बुराई भी थी। उसने कुछ देर तक तो खाना बनाने का काम किया, लेकिन उसकी एक नज़र मरियम पर और एक खाने पर थी। उसने कुछ देर तक इंतज़ार किया, लेकिन उसके हृदय में आग जल रही थी, और वह तब भी गुस्से से भरी हुई नज़र आ रही थी जब उसने प्रभु यीशु के पास आकर, "प्रभु, इस स्त्री को देख! इससे कह कि आकर मेरी मदद करे।" प्रभु के उसके परिवार में आने से, उसकी सारी छुपी हुई कमज़ोरियाँ बाहर आ गई थीं।

प्रभु जब भी पाप पर से पर्दा हटाता है, तो ऐसा वह हमें आशिष देने के लिए करता है, लेकिन मनुष्य जब ऐसा करता है, तो वह हमें लज्जित करने के लिए करता है। वह बैतनिय्याह में उन्हें लज्जित करने के लिए नहीं बल्कि इसलिए जाता था कि उन्हें उनकी अपनी ग़लती और कमी का अहसास हो, और यह कि वे कैसे और नए हो सकते थे।

मार्च 8

बैतनिय्याह के रहस्य

“अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं; अब मैं पछताता हूँ, और धूल और राख में पश्चाताप् करता हूँ” (अय्यूब 42:5,6)।

मरियम हर तरह से बाहरी तौर पर नम्र व दीन थी। प्रभु के घर में आते ही वह सीधी उसके चरणों में बैठ जाती थी। वह परमेश्वर के वचन के लिए भूखी थी, लेकिन यूहन्ना 11:20 में उसके मनोभाव से हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह स्वाभिमानी भी थी। यह सही है कि प्रभु यीशु तब उनके घर नहीं आया था जब उन्होंने उसे बुलाया था, फिर भी वह आदर के योग्य था। हालांकि मार्था दु:ख से भरी थी, फिर भी जब उसने यह सुना कि प्रभु आया है, तो वह घर में से निकल कर उससे भेंट करने चली गई थी। वह जानती थी कि उसे उसका उचित स्वागत करना चाहिए, और उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करने के लिए वह उससे मिलने के लिए गई जबकि मरियम बैठी रोती रही और यह कहती रही थी: मैं नहीं जाऊँगी! मैं नहीं जाऊँगी! जब हमने उसे बुलाया, वह तब क्यों नहीं आया था? हमने उससे प्रेम किया और उसकी सेवा की थी! मैं नहीं जाऊँगी! वह बहुत स्वाभिमानी थी।

प्रभु बैतनिय्याह में सबसे पहले तो इसलिए गया था कि उस परिवार को उनकी असली भीतरी दशा समझ आए। इससे पहले कि परमेश्वर हमें आशिष दे सके और हमारी मदद कर सके, उसे पहले हमारा असली स्वभाव हमें दिखाना होता है। जब तक हम अपने आपको नम्र व दीन नहीं करते और अपने आपको वैसा नहीं देखते जैसा प्रभु हमें देखता है, तो वह हमें आशिष नहीं दे सकता।

यह सच्ची कलीसिया का चित्र है। बैतनिय्याह की हरेक भेंट में वह कुछ प्रकट करता है। वह हमें भी यह सिखाना चाहता है कि उसका प्रेम एक परिपूर्ण रूप में हममें कैसे आ सकता है। हमारा प्रभु हमारे हृदय, हमारे घर, और हमारी कलीसिया को बैतनिय्याह बनाना चाहता है, और फिर एक जयवंत जीवन होता है, एक ख़ुशहाल घर होता है, और एक जीवित कलीसिया होती है। हमारे प्रभु के बैतनिय्याह जाने से यह तीन-स्तरीय रहस्य खुल जाते हैं।

मार्च 9

बैतनिय्याह के रहस्य

"कि मैं उसे और उसके जी-उठने की सामर्थ्य को जानूँ" (फिलि. 3:10)।

प्रभु यीशु मसीह की बैतनिय्याह की पहली मुलाक़ात का बयान लूका 10:38-42 में है। वह दूसरी बार तब गया था जब मार्था और मरियम ने उसे बुलाया था। पहली बार वह अपनी मर्ज़ी से गया था। लेकिन यूहन्ना 11:3 में, बहनों ने उसे एक ख़ास ज़रूरत आ पड़ने की वजह से बुलवाया था। उनका भाई बहुत बीमार हो गया था। उस समय वे यह नहीं जानती थीं कि प्रभु यीशु मसीह के फौरन न आने में उनके लिए कैसी महान् आशिष रखी थी।

हमारे मसीही जीवन के आरम्भ में, हम प्रभु के पास सिर्फ तभी जाते हैं जब हम बीमारी में या किसी ज़रूरत में होते हैं। हम सिर्फ अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों या समस्याओं के लिए ही प्रार्थना करते हैं। हम सिर्फ अपनी व्यक्तिगत ज़रूरत के बारे में ही सोचते हैं। लेकिन, फिर हमें पता चलता है कि जब प्रभु हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने में देर करने लगता है, तो इसका अर्थ यही होता है कि वह हमें और बड़ी आशिष देना चाहता है। परमेश्वर के वचन से हम जानते हैं कि संसार में सबसे बड़ी शक्ति जी-उठने की सामर्थ्य है (फिलि. 3:10)। पौलुस को चमत्कारों, दर्शनों या तीसरे स्वर्ग की भी लालसा नहीं थी। वह सिर्फ दो बातों की लालसा कर रहा था: "यह कि मैं उसे और उसके जी-उठने की सामर्थ्य को जानूँ।"

प्रभु यीशु मसीह बैतनिय्याह में इसी उद्देश्य से गया था - कि मार्था, मरियम और लाज़रस उस एक और ज़्यादा आत्मीय रूप में जानें, और इसलिए कि उन्हें उसके जी-उठने की सामर्थ्य का एक व्यक्तिगत अनुभव हो सके।

मार्च 10

बैतनिय्याह के रहस्य

"यीशु ने कहा, 'पुनरुत्थान (जी-उठना) और जीवन मैं हूँ" (यूह. 11:25)।

यूहन्ना 11:22 में मार्था ने कहा, "तू जो कुछ परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर वह तुझे दे देगा।" पद 24 में वह दोबारा कहती है कि मैं जानती हूँ कि वह पुनरुत्थान के दिन जी उठेगा। लेकिन जब यीशु ने कहा कि लाज़रस इसी दिन जी उठेगा, तो इस बात पर वह विश्वास न कर सकी थी हालांकि उसे यह विश्वास था कि वह अंतिम दिन जी उठेगा। जब प्रभु यीशु लाज़रस को मृतकों में से जीवित करने वाला था, तब भी मार्था ने बीच में कहा, "प्रभु, अब तो उसमें से दुर्गन्ध आती होगी, क्योंकि उसे मरे हुए आज चौथा दिन है।" प्रभु ने उन्हें पहले ही पत्थर हटा देने के लिए कह दिया था, लेकिन उनका विश्वास सिर्फ एक हवा के झोंके की तरह था। प्रभु ने मार्था और मरियम को जी-उठने की सामर्थ्य के बारे में सिखाने के लिए एक बहुत पीड़ादायक अनुभव का इस्तेमाल किया था।

हमारा विश्वास ज़्यादातर एक बौद्धिक विश्वास ही होता है। पद 32 में, मरियम जब उठकर वहाँ आई जहाँ प्रभु यीशु था, तो उसने यह कहा, "प्रभु तू अगर यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता" मानो चंगाई सिर्फ यीशु के उनके घर आ जाने पर ही निर्भर थी। उनका विश्वास जीवित विश्वास नहीं था। लाज़रस (यूहन्ना 11:44) कफन में लिपटा हुआ ही कब्र में से बाहर निकला था। इसका भी एक उद्देश्य था।

अगर परमेश्वर चाहता तो वह उसे कफन के बिना भी बाहर ला सकता था। लेकिन यीशु ने कहा, "उसके बंधन खोल दो और उसे जाने दो।" इस तरह लाज़रस मुक्त हो गया था। उसके अन्दर एक नई शक्ति का संचार हुआ था और मार्था और मरियम में भी स्वत: शक्ति प्राप्त की थी। अब मार्था, मरियम और लाज़रस वास्तव में एक प्रसन्नचित्त परिवार बन गया था, और उनके हृदयों के बदल जाने की वजह से फिर उनके बीच में होने वाले सारे लड़ाई-झगड़े ख़त्म हो गए थे। जब हम जी-उठने की सामर्थ्य पा लेते हैं, तब हम एक ऐसी सही मनोदशा में आ जाते हैं कि हम परमेश्वर की योजना का आनन्द उठा सकते हैं।

मार्च 11

बैतनिय्याह के रहस्य

"जो मुझे सामर्थ्य प्रदान करता है, उस मसीह के द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलि. 4:13)।

प्रभु पौलुस को बहुत से पीड़ादायक अनुभवों में से लेकर गुज़रा (2कुरि. 12:7-10)। आज भी कोई यह नहीं जानता कि उसकी देह में चुभाया गया काँटा क्या था। लेकिन हम यह मानते हैं कि वह उसके लिए बहुत पीड़ादायक था। इस वजह से ही उसने 3 बार प्रभु से प्रार्थना करके उसे दूर कर देने के लिए कहा था। पौलुस कोई शिकायत करने वाला व्यक्ति नहीं था। उसने कभी किसी बात के लिए प्रभु से कोई शिकायत नहीं की थी, तब भी नहीं जब वह बहुत सी परीक्षाओं में से गुज़रा था (2कुरि. 11:24-28)। उन सारी पीड़ाओं को सहते हुए उसने एक बार भी शिकायत नहीं की थी। वह बड़े दु:ख सहना जानता था। उसने एक बार भी ऐसा नहीं कहा था, "हे प्रभु, अब दोबारा मुझे ऐसे दु:ख और तकलीफ न देना।" और फिर उसकी देह में चुभने वाला काँटा आया। वह इतना पीड़ा देने वाला था कि उसे दूर हटाने के लिए उसने प्रभु से तीन बार प्रार्थना की। उसने कहा, "मैं अब इसे सहन नहीं कर सकता। यह मेरे लिए बहुत पीड़ादायक है।" प्रभु ने कहा, "मेरी कृपा तेरे लिए काफी है।" उस काँटे का एक उद्देश्य था। उसका सबसे पहला उद्देश्य तो पौलुस को दीन-हीन दशा में रखना था कि वह गर्व से भर कर ऊँचा न हो जाए, और दूसरा यह कि उसके द्वारा पौलुस जी-उठने की सामर्थ्य को जाने। फिलिप्पियों 4:11-13 में उसने कहा: "जो मुझे सामर्थ्य प्रदान करता है, उस मसीह के द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

ऐसे समय थे जब उसे कई दिन तक बिना खाए रहना पड़ा था, और उसकी दूसरी भी ज़रूरतें थीं, फिर भी वह उसकी सारी परीक्षाओं में अपने अन्दर एक शक्ति का अनुभव करता था। परमेश्वर हमारे जीवन में ऐसी अनेक पीड़ादायक स्थितियों और हालातों को तैयार होने देता है जिनमें हम उसकी विश्वासयोग्यता को साबित कर सकें, और इसलिए कि हमारे अन्दर पुनरुत्थान की सामर्थ्य ज़्यादा से ज़्यादा आ सके।

मार्च 12

बैतनिय्याह के रहस्य

"मैं तुझमें से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और मैं तुझे आशिष दूँगा" (उत्पत्ति 12:2)।

जी-उठने की सामर्थ्य को प्रमाणित करने के लिए परमेश्वर ने अब्राहम को तब तक इंतज़ार कराया जब तक कि वह और उसकी पत्नी एक संतान पैदा कर पाने की उम्र को पार न कर गए। परमेश्वर जब तक उनकी मृतप्राय देहों में नया जीवन नहीं डालता वे संतान पैदा नहीं कर सकते थे। हारान छोड़ने के बाद 25 साल तक जिस पीड़ा में से उन्हें गुज़रना पड़ा था, उसकी हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। अब्राहम एक धर्मीजन था, लेकिन उसका कोई पुत्र नहीं था (उत्पत्ति 12:2; 15:2)। उसने एक पुत्र पाने के लिए बहुत लम्बे समय तक प्रतीक्षा की थी, और अंततः उसने अपने घर के एक दास को अपना वारिस बनाने का फैसला कर लिया था। अनेक वर्षों तक वह बहुत पीड़ा और परीक्षाओं में से गुज़रा था और इसमें कोई संदेह नहीं कि अनेक लोगों ने उसे ताने मारे होंगे और यह कहते हुए उसका मज़ाक उड़ाया होगा, "तू तो कहता था कि परमेश्वर तुझमें से एक बड़ी जाति बनाएगा। तो उसने तुझे अब तक एक पुत्र क्यों नहीं दिया? अगर वह चाहता, तो वह बहुत पहले तुझे एक पुत्र दे देता।" इस तरह लोगों ने उसे ताने देते हुए उसका मज़ाक उड़ाया होगा और परमेश्वर तब तक ख़ामोश रहा जब तक अब्राहम को जी-उठने की सामर्थ्य के बारे में पता नहीं चल गया (रोमियों. 4:18-25)। लेकिन यह विश्वास उसे 24 साल तक इंतज़ार करने के बाद ही दिया गया था। और उसने यह अनुभव किया कि हालांकि उसकी पत्नी और वह संतान उत्पन्न करने की उम्र पार कर चुके थे, परमेश्वर ने उसकी पत्नी और उसके अन्दर उसके जी-उठने की सामर्थ्य को उण्डेला था। अगर परमेश्वर ने उनकी देहों में नया जीवन न डाला होता, तो उस चमत्कार का होना असम्भव होता।

आरम्भ में, जब परमेश्वर ने अब्राहम पर अपने आपको प्रकट किया, तब उसमें कुछ विश्वास था। और वह तुरन्त ही अपने पिता का घर छोड़कर प्रभु के पीछे चल पड़ा था। लेकिन प्रभु सिर्फ इससे संतुष्ट नहीं हुआ था। वह उस विश्वास को चाहता था जो जी-उठने की सामर्थ्य पर अपने अधिकार का दावा कर सकता था।

मार्च 13

बैतनिय्याह के रहस्य

"मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते" (यूह. 15:5)।

सिर्फ पुनरुत्थान की सामर्थ्य द्वारा ही एक व्यक्ति सारी सीमाओं, परीक्षाओं और प्रलोभनों पर जय पा सकता है। सिर्फ जी-उठने की सामर्थ्य द्वारा ही हम प्रभु यीशु का आत्मीय ज्ञान पा सकते हैं। इस वजह से ही पौलुस में दर्शनों, स्वप्नों या चिन्हों की कोई लालसा नहीं थी, और न ही वह तीसरे स्वर्ग तक उठाया जाना चाहता था। वह मसीह और उसे जी-उठने की सामर्थ्य को जानना चाहता था।

यह विश्वास आसानी से नहीं आता, जब तक कि हम बहुत सी बातों में नाकाम नहीं हो जाते। जब हम बहुत बार नाकाम हो चुके होते हैं, सिर्फ तभी हम यह कहते हैं, "हे प्रभु, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं किसी काम का नहीं हूँ।" सचेत या अचेत रूप में, हम अपने बल, अपनी बुद्धि और अपने ज्ञान पर निर्भर रहते हैं। पौलुस ने कहा, "मैं प्रतिदिन मरता हूँ" (1 कुरि. 15:31)। मनुष्यों के रूप में हम अपने बाइबल के सारे ज्ञान, चतुराई, और बीते समय की आशिषों के बावजूद कमज़ोर ही रहेंगे। हम सोचते हैं कि हम अपने पुराने स्वभाव द्वारा परीक्षाओं/प्रलोभनों पर प्रबल हो सकते हैं। शैतान प्रतिदिन हमारे जीवन में विचार, शब्द या कार्य द्वारा कुछ-न-कुछ लाता रहता है, और प्रभु हमारे जीवन में कुछ निराशा, एक पीड़ादायक स्थिति, या कोई परीक्षा और पीड़ा को आने की अनुमति देता है कि उसके द्वारा हमें यह सिखाए कि हमें कैसे लगातार उस पर निर्भर रहना है। "तुम मेरे बिना कुछ नहीं कर सकते" (यूह. 15:5)। आप सब बातों के लिए प्रभु पर निर्भर रह सकते हैं। आम तौर पर हम छोटी नहीं बल्कि बड़ी बातों के लिए ही प्रभु के पास जाते हैं। ऐसा मनोभाव हमें बहुत सी बातों में नाकाम होने की दिशा में ले जाता है। हमें मामूली मामलों में- हरेक बोझ, हरेक सेवकाई और हरेक ज़रूरत में भी जी-उठने की सामर्थ्य को जानने की ज़रूरत होती है।

मार्च 14

बैतनिय्याह के रहस्य

"उसने यह मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए रखा है" (यूह. 12:7)।

यूहन्ना 12 में प्रभु यीशु मसीह की बैतनिय्याह की तीसरी मुलाक़ात का विवरण है। इस मौक़े पर मरियम ने प्रभु के पैरों पर जटामांसी का बहुत मूल्यवान आधा लीटर इत्र उण्डेल दिया था। सारा घर उसकी सुगन्ध से भर गया था, और दूर से गुज़रने वाले लोगों ने भी उसकी सुगन्ध को महसूस किया होगा क्योंकि वह बहुत तीव्र और मधुर था। हमारा मसीही जीवन, हमारा घरेलू जीवन और हमारा कलीसियाई जीवन भी ऐसा ही होना चाहिए। प्रभु यीशु की मधुरता की सुगन्ध हमारे पास से गुज़रने वाले हरेक व्यक्ति को महसूस होनी चाहिए। जो घर पहले दुःख, आँसुओं और लगभग प्रतिदिन ही कुड़कुड़ाहट से भरा रहता था, अब शांति, आनन्द और जय का घर बन गया था। हमारा नया जन्म होने से पहले, हम एक शोक के घर की तरह होते हैं, और हमारे जीवन, हार, नाकामी, और बहुत सी मुश्किलों से भरे रहते हैं, वैसे ही जैसे अध्याय 11 में बैतनिय्याह था। कुछ घरों में लोग कुड़कुड़ाहट और शिकायत से भरे रहते हैं, और एक समय में यह घर भी ऐसा ही था, लेकिन अब वह शांति और आनन्द से भरा है, और वह एक सहभागिता, आराधना और जय का घर बन गया है क्योंकि अब उसकी सामर्थ्य परिवार में आ गई है।

यूहन्ना 11 में हम देखते हैं कि उन सभी ने कैसे एक सामूहिक रूप में पुनरुथान की सामर्थ्य का अनुभव पाया था।

मार्च 15

बैतनिय्याह के रहस्य

"उन्होंने वहाँ उसके लिए भोजन तैयार किया और मार्था सेवा कर रही थी" (यूह. 12:2)।

मरियम, मार्था और लाज़रस को बड़ी कठिनाई, पीड़ा और लज्जा का सामना करना पड़ा था, लेकिन फिर उसी पीड़ा के साथ उन्होंने जी-उठने की सामर्थ्य को भी महसूस किया था; और यूहन्ना 12 में हम पाते हैं कि वह घर अब पूरी तरह से एक अलग घर बन गया था। यह कल्पना करें कि मेज़ की तरफ प्रभु बैठा है और दूसरी तरफ लाज़रस और कोई दूसरे मेहमान भी बैठे हैं। मार्था बड़े आनन्द के साथ सेवा कर रही है और मरियम प्रभु यीशु मसीह के चरणों पर जटामांसी का बहुमूल्य इत्र उण्डेल रही है। ये पाँच बातें उस कृपा के विषय में बताती हैं जो एक जयवंत जीवन, एक ख़ुशहाल घर और एक जीवित कलीसिया के लिए ज़रूरी होती है। बड़े प्रेम और आनन्द के साथ उन्होंने प्रभु यीशु मसीह अपने घर का मुखिया बना दिया था। उससे पहले वह उनके घर में सिर्फ एक मेहमान की तरह ही आता-जाता था।

हर बार जब वह आता था, तो वे एक मेहमान की तरह उसका स्वागत करते थे, उसका सम्मान करते थे, उसे भोजन देते थे और उसका मनोरंजन करते थे। तब वह सिर्फ एक मेहमान था। लेकिन अब उन्होंने अपने अनुभव में यह जान लिया था कि वह उनका प्रभु, मुक्तिदाता और सृष्टिकर्ता था, और इसलिए यह ज़रूरी था कि वही उनके घर और जीवनों का मुखिया हो। इसलिए उन्होंने उसे उनके घर और जीवनों पर पूरा अधिकार दे दिया था। जब वे दुःख में थे, तब बहुत लोग उन्हें संभालने और तसल्ली देने के लिए आए थे, लेकिन उनमें से किसी के पास भी उनके दुःख को दूर करने की साम्थ्र्य नहीं थी। लेकिन प्रभु यीशु ने उनकी सारी समस्याओं को हल कर दिया, और उनके दुःख को आनन्द में बदल दिया, और इसलिए उन्होंने स्वेच्छा और आनन्द के साथ उसे अपने परिवार का मुखिया बना दिया था।

मार्च 16

बैतनिय्याह के रहस्य

"मेरे प्रेम में बने रहो" (यूह. 15:9)।

अनेक मसीही प्रभु को इसी तरह अपने घर का मुखिया मानते हैं, लेकिन उनके जीवनों में प्रभु यीशु का प्रभुत्व नज़र नहीं आता। अनेक निष्फलताओं और पराजयों के बाद ही उन्हें प्रभु यीशु मसीह को उनके जीवन का मुखिया बना कर सब कुछ उसे सौंप देने का महत्व समझ आता है। मैंने अपने जीवन में इस सामर्थ्य को पाने के लिए दो साल तक पीड़ा सही थी। मैं पूरा-पूरा दिन बाइबल पढ़ता था, कई घण्टे प्रार्थना और बाइबल-अध्ययन में बिताता था, सभाओं में हाज़िर रहता था, और अपने आपको सारे सांसारिक मामलों से दूर रखता था। लेकिन मुझे अपने जीवन में तब तक एक कमी महसूस होती रही जब तक मुझे प्रभु ने एक जयवंत जीवन जीने का रहस्य नहीं बता दिया।

एक रात को प्रभु मुझे मिला और उसने मुझसे कहा, "बख़्त सिंह, मुझे बता कि तेरे पाप कैसे क्षमा हुए थे?" मैंने कहा, "प्रभु, मैंने यह अंगीकार किया था कि मैं बड़ा पापी हूँ, और यह विश्वास किया था कि तू मेरे पापों के लिए मरा है, और तूने मेरे पापों को क्षमा कर दिया है।" फिर प्रभु ने मुझसे कहा, "क्या तू यह विश्वास करता है कि तू सबसे ज़्यादा कमज़ोर है और तेरा शरीर के ऊपर कोई ज़ोर नहीं है?" और उसी क्षण मुझ पर यह रहस्य प्रकट हो गया: कि एक मामूली सी बात के लिए भी मुझे उसके परामर्श की ज़रूरत है; और यह कि मैं हरेक मामूली बात के लिए भी बुद्धि, ज्ञान और बल पाने के लिए उस पर वैसे ही निर्भर रह सकता हूँ जैसे एक बच्चा हर क़दम पर अपनी माँ को थामे रहता है क्योंकि वह किसी भी बात के लिए स्वयं अपने ऊपर भरोसा नहीं कर सकता। हमें इसी तरह अपना बोझ प्रभु के ऊपर डाल देने की ज़रूरत होती है (यूह. 15:5)। छोटी-से-छोटी बात के लिए भी हमें उसके पास जाना पड़ता है।

मार्च 17

बैतनिय्याह के रहस्य

"क्योंकि अगर हम उसकी मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो... उसके जी-उठने..." (रोमि. 6:5)।

हमें प्रभु यीशु को अपने पारिवारिक जीवन, अपने व्यक्तिगत जीवन और अपने कलीसियाई जीवन के मुखिया के रूप में स्वीकार करना होगा। इससे पहले कि हम प्रार्थना, रविवार की सभा, या अपने व्यक्तिगत कामों की कोई योजना बनाएं, हमें प्रभु के सामने जाकर अपनी सारी योजनाएं बनानी चाहिए। लेकिन हमारे व्यवहारिक अभ्यास में, हम उसके पास छोटी नहीं बड़ी बातों के लिए ही जाते हैं। हमारी रविवार की सभा के लिए हम दो-तीन बार प्रार्थना करते हैं, लेकिन खुली मैदानी सभाओं के लिए कोई प्रार्थना नहीं करते। मनुष्य परमेश्वर की बातों को ऐसे ही हल्के तौर पर लेते हैं। लेकिन हमें सब बातों के लिए उसके पास जाने और उससे सलाह करने की ज़रूरत महसूस होनी चाहिए - चाहे वह हमारे पारिवारिक जीवन के लिए हो, व्यक्तिगत जीवन के लिए हो, कलीसियाई जीवन के लिए हो, या एक छोटी और बड़ी सेवकाई के लिए हो। तब हम एक नए जीवन को अपने अन्दर, अपने परिवार के अन्दर और अपनी कलीसिया के अन्दर प्रवाहित होता हुआ पाएंगे। लेकिन यह याद रखें: मृत्यु और जी-उठने की सामर्थ्य साथ-साथ चलते हैं।

जब हमारा नया जन्म होता है, तो हम प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में बोए और आरोपित किए जाते हैं। "बोए जाना" एक महत्वपूर्ण शब्द है। यहाँ उसका अर्थ "कलम लगाए जाना" है। कलम लगाए जाने के बाद, वे पेड़ जो पहले कड़वे फल देते थे, अब अच्छे, मीठे और बड़े फल देने लगते हैं। पौलुस ने प्रभु यीशु में रोपे जाने के लिए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया है। प्रभु यीशु ने न सिर्फ हमारे पापों को क्षमा किया है, बल्कि हम आत्मिक रूप में उसकी मृत्यु, दफन और जी-उठने के साथ बपतिस्मा लेते हैं, और उसकी मृत्यु की शक्ति द्वारा हम अपने पुराने स्वभाव के प्रति मर सकते हैं।

मार्च 18

बैतनिय्याह के रहस्य

"और अब मैं जो शरीर में जीवित हूँ, तो सिर्फ उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है" (गल. 2:20)।

अनेक लोग प्रभु यीशु की मृत्यु में विश्वास करते हैं, लेकिन वे उनके पुराने स्वभाव के प्रति नहीं मरते, क्योंकि वे पुनरुत्थान की उस सामर्थ्य पर अपना अधिकार होने का दावा नहीं करते कि वह उन्हें नया बना सके। जब हम प्रभु यीशु की मृत्यु में रोपे जाते हैं (रोमियों. 6:5), वैसे ही हम उसके जी-उठने की समानता में भी हो जाएंगे। यह बहुत ज़रूरी है कि एक विजयी और जयवंत जीवन जीने के लिए हम विश्वास से हरेक दिन के हरेक पल में जी-उठने की सामर्थ्य पर अपना अधिकार होने का दावा करते रहें। हर बार जब भी हम बाइबल पढ़ें, तो हमें प्रार्थना करके पढ़ना चाहिए, और अगर सेवाकार्य करना है, तो प्रार्थना करके सेवाकार्य शुरू करें। हमें हरेक काम के लिए जी-उठने की सामर्थ्य प्राप्त करनी चाहिए। परमेश्वर के उपहार को हर पल ग्रहण करना चाहिए। यह प्रबल और जीवित विश्वास है, जैसा कि पौलुस ने गलातियों 2:20 में कहा है, कि यह हमारा नहीं "परमेश्वर के पुत्र का विश्वास है।"

आपको एक सचेत रूप में यह मालूम होना चाहिए कि प्रभु यीशु मसीह आप में रहता है, और फिर अपनी सारी ज़रूरतों, ज़िम्मेदारियों और परीक्षाओं में अपने विश्वास को काम करने देना चाहिए। हम इस सामर्थ्य को हमारे प्रतिदिन के कामों के लिए पा सकते हैं, और इसी सामर्थ्य को प्रलोभनों और कठिनाइयों के समयों में भी पा सकते हैं। हमारे लिए उपलब्ध यह एक अद्‌भुत सामर्थ्य है। ये दोनों बातें एक साथ होती हैं: पहले हम अपनी ख़ुदी में मरने की सामर्थ्य पाते हैं, और फिर विश्वास से जी-उठने की सामर्थ्य पाते हैं।

मार्च 19

बैतनिय्याह के रहस्य

"यीशु के नाम पर हरेक घुटना टिके... और प्रत्येक जीभ यह अंगीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है" (फिलि. 2:10,11)।

प्रभु यीशु शीर्ष (सिर) का प्रतीक है। लाज़रस जी-उठने की सामर्थ्य का प्रतीक है। तीसरी बात वहाँ मेज़ पर खाना था जो परमेश्वर के वचन का प्रतीक है जिसका आनन्द हम प्रभु यीशु के साथ हमारी सहभागिता में उठाते हैं। तब सच्ची उन्नति होगी – व्यक्तिगत रूप में, और पारिवारिक रूप में। चौथी बात, कि मार्था आनन्द के साथ सबको परोस रही थी (यूह. 12:2)।

मरियम भक्ति और आराधना से भरी हुई थी (पद 3)। पहले वह बड़े स्वाभिमान से भरी हुई थी। बाहर से वह नम्र व दीन नज़र आती थी लेकिन भीतर से वह अभिमानी थी। अब उन्होंने यीशु को अपने स्वामी, प्रभु, सृष्टिकर्ता और पुनरुत्थान के रूप में स्वीकार कर लिया था, और अब वे यह कह सकते थे, "तू ही सारी स्तुति के योग्य है!" जब आप उसे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में देख लें तो उसके उस रूप में उसका आदर करें।

एक जयवंत जीवन, एक ख़ुशहाल घर और एक जीवित कलीसिया के लिए 5 सामान्य ईश्वरीय सिद्धान्त हैं। पहला, कि हम सब बातों के लिए उसके पास जाएं, और हमारी सारी योजनाओं के लिए उसका समर्थन पाएं; दूसरा, हमारी सारी ज़रूरतों, मुश्किलों और परीक्षाओं के लिए हम प्रतिदिन जी-उठने की सामर्थ्य हासिल करते रहें; तीसरा, हम संगति करें और परमेश्वर के वचन के अधीन रहें; चौथा, हमारी सेवा आनन्द से भरी हो; और पाँचवाँ, नम्रता और धन्यवाद के साथ सच्ची भक्ति और आराधना हो। एक ख़ुशहाल घर का यह पाँच-स्तरीय रहस्य है, और एक ख़ुशहाल घर ईश्वरीय योजना को पूरा करता है। ऐसा हो कि हमारा प्रभु हमें यह अनुभव दे।

मार्च 20

बैतनिय्याह के रहस्य

"तेरा राजा तेरे पास आता है, वह नम्र और दीन है... और गदही के बच्चे, वरन् लद्दू के बच्चे पर बैठकर आता है" (ज़क. 9:9)।

बैतनिय्याह की चौथी भेंट के समय, उसने अपने राजा होने की बात को प्रकट किया। वह चाहता था कि उसके मित्र इस बात को समझ लें, और यह कि वे इस राज्य के विशेषाधिकारों का कैसे आनन्द उठा सकते थे, और, एक विरोधाभासी रूप में, कैसे नम्र व दीन हो सकते थे। अनेक विश्वासी प्रभु यीशु मसीह को सिर्फ उनके मुक्तिदाता के रूप में ही स्वीकार करते हैं। वे सिर्फ यह चाहते हैं कि वह उनके पाप क्षमा कर दे और उन्हें स्वर्ग ले जाए। वे प्रभु यीशु की असली लालसा को नहीं समझते कि वह उन्हें अपना सहकर्मी और साथी बनाना चाहता है, और ऐसा होने के लिए उन्हें लगातार उसके राज्य और प्रभुत्व की अधीनता में आना होता है। बहुत सालों तक हारने और नाकाम होने के बाद, जब अंततः उन्हें समझ आता है तब वे प्रभु यीशु को उनके स्वर्गीय राजा के रूप में उनके हृदयों में स्थान देते हैं। यह ज़रूरी है कि वह हमारे हृदयों का, हमारे घर का और हमारी कलीसिया का राजा हो, और हमारे बीच में व्यक्तिगत रूप में, पारिवारिक रूप में, और कलीसिया के रूप में उसका अधिकार लगातार काम करता हुआ होना चाहिए।

हालांकि हमारा प्रभु किसी भी पशु को आज्ञा दे सकता था, एक शेर को भी उसकी सवारी होने के लिए बुला सकता था, लेकिन उसने जानबूझ कर एक गदही के बच्चे को अपनी सवारी बनाया। सभी जानवरों में, गदही का बच्चा बड़ा उत्पाती/विद्रोही होता है, और उस पर सवारी करने की कोशिश करने वाले जानते हैं कि यह आसान नहीं होता। फिर भी उसने एक लद्दू का बच्चा चुना। जब वे उस गदही के बच्चे को उसके पास लाए जिस पर अभी तक कोई मनुष्य नहीं बैठा था, तो वह तुरन्त उस पर बैठ गया; उस बच्चे ने कोई विरोध नहीं किया। वह बड़े आनन्द और आज्ञापालन के साथ प्रभु को बैठा कर ले गया।

मार्च 21

बैतनिय्याह के रहस्य

"मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं मन में नम्र और दीन हूँ" (मत्ती 11:29)।

यह एक दु:खद बात है कि अनेक विश्वासी गदही के ऐसे बच्चों की तरह होते हैं जिन्हें बहुत बार पीटना पड़ता है। यह हमारा स्वभाव है; हम हठीले हैं। हम परमेश्वर की आवाज़ को आसानी से नहीं सुनते। हम सिर्फ यह चाहते हैं कि वह हमें आशिष दे और हमें मुश्किलों से बचाए रखे। और जब उसकी इच्छा पूरी करने की बात आती है, तो हम वह नहीं करना चाहते।

हम सिर्फ यही चाहते हैं कि हमारी इच्छा पूरी हो। यही वजह है कि अनेक विश्वासी आत्मिकता में नहीं बढ़ते। वे एक भीतरी तौर पर प्रभु यीशु मसीह का आज्ञापालन नहीं करते। लेकिन गदही का बच्चा कितने आनन्द और अधीनता के साथ प्रभु को ले जा रहा था।

प्रभु यीशु उस समय उसके शिष्यों को यह दिखा रहा था कि अगर वे उसके सच्चे शिष्य होना चाहते हैं, अगर वे उसकी सेवा करना और उसके पीछे चलना चाहते हैं, तो उन्हें गदही के उस बच्चे की तरह बनना पड़ेगा। अपने स्वभाव से वह हठीला था, लेकिन परमेश्वर की उपस्थिति में पूरी तरह से नम्र व दीन व आज्ञाकारी बन गया था। कोई मनुष्य हमारी इच्छा को नहीं तोड़ सकता। हम सभी बहुत हठीले होते हैं, और अनेक वर्षों तक मार खाने के बाद ही ऐसा होता है नम्र व दीन बनते हैं।

हम सभी के अन्दर विविध प्रकार का घमण्ड होता है, और यही वजह है कि हमारे लिए एक भीतरी तौर पर प्रभु की आज्ञा का पालन करना मुश्किल लगता है। प्रभु को अनेक प्रकार से हमारे घमण्ड को तोड़ना पड़ता है। कभी-कभी यह टूटना बीमारी के द्वारा होता है।

मार्च 22

बैतनिय्याह के रहस्य

"प्रभु तलवार और भाले से छुटकारा नहीं देता, क्योंकि युद्ध प्रभु का ही है" (1 शमू. 17:47)।

परमेश्वर हम सभी को अलग-अलग तरीक़ों से तोड़ता है। दाऊद ने स्वयं 1 शमूएल 17:47 में इस बात की साक्षी दी, और बड़े साहस के साथ यह घोषणा की कि वह तलवार और किसी हथियार पर भरोसा नहीं कर रहा था। फिर भी, प्रभु की सामर्थ्य से अनेक युद्ध जीतने के बाद भी वह जनगणना द्वारा गौरान्वित होना चाह रहा था, और लोगों को यह दिखाना चाह रहा था कि शत्रु से लड़ने के लिए उसके राज्य में वीरता से भरे अनेक सामर्थी पुरुष थे। उसने योआब को जनगणना करने की आज्ञा दी। योआब ने उसे याद भी दिलाया कि उसने कोई युद्ध उसकी अपनी शक्ति से या उसकी सेना की शक्ति से नहीं लड़ा था, बल्कि वह प्रभु था जो उसकी तरफ से लड़ा था। फिर भी राजा की आज्ञा प्रबल हुई और जनगणना की गई। तब परमेश्वर का क्रोध दाऊद पर भड़का और उसके घमण्ड को तोड़ने के लिए उसे खलिहान तक लाया गया (2शमू. 24:15-16)।

खलिहान वह जगह होती है जहाँ गेहूँ को फूसे से अलग किया जाता है। दाऊद उसके ज्ञान, रणनीतियों और योजनाओं पर घमण्ड करने लगा था, लेकिन परमेश्वर उससे कह रहा था: "दाऊद, जिसे तू चतुराई कह रहा है वह और कुछ नहीं सिर्फ भूसा है।" उसे नम्र व दीन और ख़ाली करने और उसे तोड़ने और उसके बल और आत्म-निर्भरता को मिटाने के लिए खलिहान तक लाना पड़ा था। परमेश्वर हमारे साथ भी यही करता है कि फिर हम पूरी तरह उस पर निर्भर हो सकें। बाद में उसी खलिहान में सुलैमान का मन्दिर बनाया गया था (2 इति. 3:1)।

मार्च 23

बैतनिय्याह के रहस्य

यीशु ने कहा, "अगर कोई मुझसे प्रेम करता है, तो वह मेरे वचन का पालन करेगा" (यूह. 14:23)।

इसी तरह, बहुत से लोग परमेश्वर के काम में घमण्ड करते हैं। वे परमेश्वर के वचन को नहीं जानते और उसे रूढ़िवादी बातें मानते हैं। इसकी बजाय, वे अपनी उपाधियों और दार्शनिक विचारों पर घमण्ड करते हैं, और लोगों को प्रभावित करने के लिए वे सांसारिक संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं।

वे परमेश्वर के वचन को उस तरह इस्तेमाल नहीं करते जिस तरह करना चाहिए। प्रचार करते समय वे ऐसी बातें करते हैं जिससे उनका संदेश विभाजित हो जाता है, लेकिन मनुष्य कभी परमेश्वर के वचन के ख़िलाफ नहीं जा सकते। परमेश्वर हमारे उस घमण्ड को तोड़ता है जो हमें अपनी संस्कृति में, अपनी राष्ट्रीयता में, और अपनी पढ़ाई-लिखाई में होता है। हम सिर्फ नम्रता और आज्ञापालन द्वारा - सिर्फ परमेश्वर के मुखिया और राजा होने की बात स्वीकार करने द्वारा ही परमेश्वर का घर तैयार कर सकते हैं।

यह दिखाने के लिए, प्रभु यीशु मसीह ने अपनी पूरी महिमा में नहीं बल्कि एक नम्र व दीन व्यक्ति की तरह एक गदही के बच्चे पर बैठकर यरूशलेम में प्रवेश किया। हम गदही के उस बच्चे को वस्त्रों पर चलते हुए और बड़ा आदर दिए जाते हुए पाते हैं।

उस गदही के बच्चे को कितना सम्मान मिला था! जब हम प्रभु यीशु मसीह को एक सही तरह से ऊँचा उठाते हैं, तो हमें भी ऐसा ही सम्मान मिलता है। परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमारा अपने आप में कोई सम्मान नहीं है, लेकिन जब हम पूरी तरह से प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं, तो हम जहाँ भी जाते हैं, अनेक प्रकार से हम पर प्रेम और दया बरसाए जाते हैं। लेकिन, अगर एक सामान्य गदही के बच्चे की तरह हम लात मारने वाले बन जाएंगे, तो हमें पीटा जाएगा या लोग हमें पसन्द नहीं करेंगे।

मार्च 24

बैतनिय्याह के रहस्य

"धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है" (मरकुस 11:9)।

बैतनिय्याह में से होकर यरूशलेम में प्रभु का यह चौथा प्रवेश एक गदही के बच्चे पर बैठकर हुआ, और इसके द्वारा यह दिखाया गया कि वह एक राजा की तरह प्रवेश कर रहा था। सबसे पहले तो हमें उसे एक राजा की तरह हमारे हृदयों में विराजमान करना होता है, फिर हमारे परिवार में, और अंत में हमारी कलीसियाई मण्डली में। उसके बाद ही हम साहस और अधिकार के साथ सुसमाचार का प्रचार कर सकते हैं क्योंकि हमारे भीतर स्वर्गीय राजा सिंहासन पर विराजमान है।

जब हम पूरे अधिकार, पूरी शुद्धता और पूरी नम्रता में सुसमाचार सुनाते हैं, सिर्फ तभी उसके कुछ परिणाम आते हैं। मरकुस 11:8 में, हम देखते हैं कि बैतनिय्याह में से कितना बड़ा आनन्द शुरु हुआ था जो यरूशलेम में भी जारी रहा था।

हालांकि बैतनिय्याह एक छोटा सा गाँव था, फिर भी उस जगह में से आनन्द आया था। इन दिनों में प्रभु सिर्फ उसके बचाए हुए थोड़े से लोगों में से ही उसके उद्देश्यों को पूरा करेगा। हालांकि हम संख्या में कम हैं, लेकिन अगर हम नम्र व दीन और आज्ञाकारी होंगे, तो परमेश्वर हमारे द्वारा बड़े काम कर सकता है। हममें कोई सवाल बिना, एक भीतरी आज्ञाकारिता होनी चाहिए। वह आपसे जो भी करने के लिए कहे, उसे करें। हम यह पाते हैं कि गदही के बच्चे के पास खड़े कुछ लोगों ने जब शिष्यों से पूछा कि तुम क्या कर रहे हो, गदही के बच्चे को क्यों खोलते हो (मरकुस 11:5), तो उन्होंने कहा कि यीशु की उसकी ज़रूरत थी, तब उन्होंने उसे ले जाने दिया। इसलिए प्रभु आपसे जो भी माँगे करे, उसे तुरन्त, स्वेच्छा से और आनन्द के साथ पूरा करें, और तब आप एक जयवंत जीवन के लिए, एक ख़ुशहाल घर के लिए, और एक जीवित कलीसिया के लिए उसकी सामर्थ्य का रहस्य पा लेंगे।

मार्च 25

बैतनिय्याह के रहस्य

"जिसने कोई पाप नहीं किया, और जिसके मुख से कोई छल की बात नहीं निकली" (1 पत. 2:22)।

मरकुस 11:11 में, हम प्रभु यीशु की बैतनिय्याह की पाँचवीं भेंट का विवरण पाते हैं। मन्दिर के हालात देखने के बाद, हमारा प्रभु बैतनिय्याह को लौट गया (पद 11)। उस दिन उसने यह देखा कि यरूशलेम में मन्दिर में क्या हो रहा था। इससे पहले कि वह वहाँ अपना क्रोध उण्डेलता, वह बैतनिय्याह में शायद अपने हृदय का बोझ उनके साथ बाँटने के लिए लौटा था। जैसा उत्पत्ति 18:17-22 में है, इससे पहले कि परमेश्वर ने सदोम और अमोरा का नाश किया, वह अब्राहम के पास यह कहता हुआ आया था, "मै इस बड़े रहस्य को अपने दास अब्राहम से कैसे छुपा सकता हूँ, क्योंकि वह मेरा मित्र है।"

यरूशलेम में उसने अपनी आँखों से यह देख लिया था कि मन्दिर में क्या हो रहा था (मरकुस 11:17)। वह स्पष्ट रूप में यह कह चुका था कि वह डाकुओं की खोह बन चुका था। उस नगर की ऐसी बुरी दशा थी। जब हम आत्मिक रूप में बढ़ने लगते हैं, तो हमें यह समझ आने लगता है कि प्रभु के सहकर्मी होना क्या होता है। जैसे मलाकी के दिनों में था (मलाकी 1:6,7), वैसा ही तब भी था, और जब प्रभु यीशु अपने शिष्यों के साथ वहाँ घूम रहा था, तब उसने याजकों को बुरे और रोगी पशुओं को बलि चढ़ाते देखा था (पद 8)।

प्रभु यीशु में कोई पाप नहीं था। वह उसके विचार, शब्द, और काम में पूरी तरह निर्दोष था। उसकी नैतिक शुद्धता को पूर्व प्रकट करने के लिए लोगों को एक शुद्ध पशु की बलि चढ़ानी होती थी, और याजक को उस पशु को जाँचना होता था। ऐसा न होने पर उस बलि का कोई मूल्य नहीं था। परमेश्वर उन्हें पहले से यह दिखा रहा था कि उनके स्वयं के उद्धार के लिए उनकी तरफ से किसी निर्दोष को बलि होना होगा।

मार्च 26

बैतनिय्याह के रहस्य

"गुप्त बातें तो प्रभु हमारे परमेश्वर के वश में हैं" (व्य. वि. 29:29)।

प्रभु यीशु ने जिन बातों को मन्दिर में और यरूशलेम में अपने लोगों में देखा था, और जिनका बयान मत्ती 23:13,15-23 किया गया है, उनके बारे में उसने बैतनिय्याह में अपने मित्रों को ज़रूर बताया होगा। मैं यह कल्पना कर सकता हूँ कि उस रात प्रभु यीशु मसीह एक उदास और भारी बोझ से दबे हृदय के साथ यरूशलेम से बैतनिय्याह को लौटा होगा, और मन्दिर को साफ करने से पहले, उसने उन्हें यह रहस्य ज़रूर बताया होगा। जब हम प्रभु यीशु मसीह के सहकर्मी बनने लगते हैं, तब प्रभु हमें ऐसे बहुत से रहस्य बताने लगता है जो उसने दूसरों से छुपा रखे होते हैं *(मत्ती 13:17; व्य.वि. 29:29)।*

इस तरह परमेश्वर के लोग प्रभु यीशु मसीह के साथ अपनी सहभागिता का आनन्द उठा सकते हैं। अगर हम आत्मिक तौर पर बढ़ रहे हैं, तो उनके होने से पहले ही बहुत सी बातों को हम पर प्रकट कर दिया जाएगा। प्रभु ने हमें उसके नबियों द्वारा भूकम्प, अकाल, आदि घटनाओं के होने के विषय में पहले ही चेतावनी दी हुई है, और कुछ भी होने से पहले प्रभु बार-बार अपने लोगों को आने वाले न्याय की तैयारी कर लेने की विशेष सुविधा देता है। इस तरह हम परमेश्वर के हृदय में छुपे हुए रहस्यों में प्रवेश कर सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह का बैतनिय्याह जाने का पाँचवाँ उद्देश्य उनके साथ अपना बोझ बाँटना था जो उसके सहकर्मी बन गए थे।

मार्च 27

बैतनिय्याह के रहस्य

"प्रभु तेरा परमेश्‍वर... तेरे कारण हर्षित होगा। वह उसके प्रेम में विश्राम पाएगा" (सप. 3:17)।

अब हम मरकुस 11:19 में प्रभु यीशु की बैतनिय्याह की छठी भेंट के बारे में पढ़ते हैं। मन्दिर में से लोगों को बाहर निकाल देने के बाद (पद 15-17), हम अपने प्रभु को नगर में से बाहर जाता हुआ पाते हैं (पद 19)। प्रभु यीशु मसीह के लिए वह करना एक बड़ा कठिन काम था। उसने सब लोगों के प्रति अपने प्रेम और संवेदना को प्रकट किया था, लेकिन क्योंकि उन्होंने वह स्वीकार नहीं किया था, इसलिए अब उनका न्याय होना ज़रूरी हो गया था। उसने सर्राफों की मेज़ें उलट दी थीं और सब लोगों को एक चाबुक से बाहर खदेड़ दिया था। वह बहुत उदास महसूस कर रहा था, और इसलिए वह बैतनिय्याह को लौट गया था जहाँ उसे एक सच्चा आराम और तसल्ली मिलती थी। यरूशलेम में दु:ख, दर्द और पीड़ा के अलावा और कुछ नहीं था, लेकिन वह जानता था कि बैतनिय्याह में एक ऐसा छोटा झुण्ड था जो उसे सच्चा आराम और तसल्ली दे सकता था।

प्रभु यीशु ने यरूशलेम को कभी अपना घर नहीं माना था, लेकिन उसने बैतनिय्याह को अपना घर माना, जहाँ वह अपना बोझ और पीड़ा बाँट सकता था; एक ऐसी जगह जहाँ उसकी देखभाल की जाती थी और वह तरो-ताज़ा हो जाता था। यह कैसा रहस्य है! प्रभु यीशु, हमारा सृष्टिकर्ता, अपने लोगों में अपना आराम ढूंढ रहा था। वह यह दर्शा रहा था कि इस आराम को पाने की कितनी लालसा थी। बैतनिय्याह में उसे कोई तकलीफ नहीं थी क्योंकि वे थोड़े से लोग जो उससे प्रेम करते थे, वे बड़े दिल से उसका स्वागत करते थे। बैतनिय्याह में उसे सच्चा आराम, शांति और तसल्ली, और वे लोग मिलते थे जो उसकी बात सुनने के लिए लालायित रहते थे।

मार्च 28

बैतनिय्याह के रहस्य

"प्रभु, तू मुझसे क्या चाहता है?" (प्रेरितों 9:6)।

बहुत से बच्चे अपने पिता के पास सिर्फ तभी जाते हैं जब उन्हें कोई खाने की या दूसरी किसी चीज़ की ज़रूरत होती है, लेकिन वे कभी ऐसा नहीं कहते: "पिता जी, क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ? आप इतने थके हुए और उदास नज़र आ रहे हैं। क्या आपका बोझ कम करने के लिए मैं कुछ कर सकता हूँ?" ऐसे बच्चे बहुत कम होते हैं। लेकिन कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो अपने पिता या माता का मुख देखते और यह कहते हैं, "आप आराम करें। यह काम मैं कर लूँगा।" यह एक सही मनोभाव है!

क्या आप यह कहते हैं, "प्रभु, अब मुझे बता कि तुझे प्रसन्न करने, संतुष्ट करने और तुझे चैन और आराम देने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ?" जो उससे यह सवाल पूछेंगे, उन्हें वह जवाब देगा। जो वह चाहता है, वह हमें बताएगा, वैसे ही जैसे उसने बैतनिय्याह में उन्हें बताया था जिन्होंने उसे संतोष, सान्त्वना, विश्राम और शांति देने की सेवकाई की थी। अगर हम आत्मिक तौर पर बढ़ना चाहते हैं, तो प्रतिदिन हमारा मनोभाव यह कहने वाला होना चाहिए: "प्रभु, मुझे अपनी मुश्किलों या किसी भी तरह की ज़रूरतों की कोई परवाह नहीं है। तू मुझे सिर्फ इतना बता कि क्या तू यह चाहता है कि मैं कहीं जाऊँ, किसी से मिलूँ या किसी की मदद करूँ?

क्या मैं तेरे लिए ऐसा कुछ भी कर सकता हूँ जो तेरी सिद्ध इच्छा के अनुसार हो, ऐसी बात जो तुझे ज़्यादा आनन्द, ख़ुशी और शांति देगी?" तब वह आपको बताएगा कि आपको कहाँ जाना और क्या करना है। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना बहुत अद्‌भुत बात होती है, और जिस तरह से वह उसकी आज्ञापालन करने में हमारी मदद करता है, वह तरीक़ा भी बहुत अद्‌भुत होता है। तब अपने आप और बिना माँगे ही ऐसा होता है कि प्रभु हमारी मदद करता है और हमारी हरेक ज़रूरत को पूरा करता है।

मार्च 29

बैतनिय्याह के रहस्य

"उसने पात्र को तोड़कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेल दिया" (मरकुस 14:3)।

बैतनिय्याह में प्रभु की सातवीं भेंट के लिए हम मत्ती का अध्याय 26 और मरकुस 14:1-9 देखेंगे। मत्ती 26:2 यह कहता है कि दो दिन के बाद फसह का पर्व था, और उसके सिर पर इत्र उण्डेला गया। यूहन्ना 12:1 में हम पढ़ते हैं कि फसह से 6 दिन पहले वह बैतनिय्याह में आया था। मत्ती 26:2 में, हमारे प्रभु ने अपने शिष्यों से फिर से यह कहा था कि उसके दु:ख उठाने, अपमानित किए जाने, मारे जाने और फिर जी-उठने का समय आ गया था। यह बात हालांकि वह कई बार कह चुका था लेकिन फिर भी उसके शिष्यों ने उसकी बात को न तो समझा था और न ही उस पर विश्वास किया था।

इसके विपरीत, स्त्रियों ने प्रभु की बात पर विश्वास किया था। हालांकि उन शिष्यों ने वह नहीं समझा था जो प्रभु एक स्पष्ट रूप में बोल रहा था, फिर भी मरियम समझ गई थी! (मत्ती 26:2,12)। वह सिर्फ उसके गाड़े जाने के लिए उसे तैयार करने आई थी (यूह. 12:7)। किसी तरह से उसकी आँखें खुल गई थीं और उसे यह समझ आने लगा था कि वह सारे जगत के लिए स्वेच्छा से अपनी जान दे रहा था (यूह. 10:11, 14,17,18)।

इत्र के उस पात्र को ख़रीदने में उस स्त्री ने उसकी सारी जमा-पूंजी ख़र्च कर दी होगी। फिर वह उस पात्र को प्रभु यीशु के पास ले आई और उसने उसे उसके ऊपर उण्डेल दिया (मरकुस 14:3)। वह उसकी आख़िरी बूँद भी उस पर उण्डेल देना चाहती थी, इसलिए हम मरकुस 14 में पढ़ते हैं कि उसने उस "पात्र को तोड़" दिया था। अब उसमें कुछ भी बचा नहीं रह सकता था। उसने उसे उसके सिर पर उण्डेल दिया कि उसकी पूरी देह का अभिषेक हो जाए।

मार्च 30

बैतनिय्याह के रहस्य

"धन्यवाद, आदर, महिमा और सामर्थ्य...मेमने के लिए युगानुयुग रहे"(प्रका. 5:13)।

यह स्त्री सिर्फ प्रभु यीशु को ऊँचा उठाना चाहती थी। वह और कुछ नहीं कर सकती थी, इसलिए वह उसका अभिषेक करने और इस काम के द्वारा यह कहने आई थी: "प्रभु मैं यह विश्वास करती हूँ कि तू सारे जगत के लिए अपनी जान दे रहा है। तूने ही ऐसा कहा है। तू भेड़ों के लिए अपनी जान दे रहा है और परमेश्वर के मेमने के रूप में मर रहा है। तू मेरा सृष्टिकर्ता और राजा है।" इसलिए वह सबसे मूल्यवान इत्र लाई और विश्वास से यह कह सकी, "मैं तेरे लिए अपना सब कुछ उण्डेल देने के लिए तैयार हूँ। तू मुझसे कुछ भी माँग, मैं तुझे वह देने के लिए तैयार हूँ।" यह सच्ची आराधना है।

हम भी जब प्रभु यीशु मसीह के शब्दों पर विश्वास करते हैं, तब परमेश्वर की ज्योति हम में जगमगाने लगती है, और हम यह देखने वाले बन जाते हैं कि वह हमारा सृष्टिकर्ता, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु और सच्ची आराधना के योग्य है, तब हम भी यही कहेंगे, "मैं अपना सब कुछ अर्पित करता हूँ।" हमारे लिए जो कुछ भी मूल्यवान है, हम उस पर अपना वह सब कुछ उण्डेल देने और उसके चरणों में बैठे रहने के लिए तैयार रहेंगे। तब वह हमें ऊँचा उठाएगा, और हम उसे जितना ऊँचा उठाएंगे, हम भी उतने ही ऊँचे उठते जाएंगे।

"मेमना, सामर्थ्य, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के योग्य है।"

मार्च 31

बैतनिय्याह के रहस्य

“यहीं ठहरे रहना... जब तक कि तुम स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ” (लूका 24:49)।
“जाओ... और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो” (मरकुस 16:15)।

प्रभु यीशु की बैतनिय्याह की आठवीं भेंट का उल्लेख लूका 24:50 में मिलता है। प्रभु बैतनिय्याह से स्वर्ग में उठा लिया गया था (पद 51)। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में हमें प्रभु के स्वर्ग में उठाए जाने से पहले की बातों का वर्णन पाते हैं (पद 4)।

उसने अपने शिष्यों का आज्ञा दी कि उन्हें “स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण होने के लिए” परमेश्वर के समय का इंतज़ार करना होगा। अगर उन्हें उसका शिष्य होना था तो यह ज़रूरी था कि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करें, उससे प्रेम करें और उसके पीछे चलें। उन्हें उसके समय का इंतज़ार करना था। अक्सर हम परमेश्वर के समय से पहले या फिर बाद में जाते हैं, लेकिन हमें हमेशा परमेश्वर की आज्ञा और परमेश्वर का समय का इंतज़ार करना चाहिए।

दूसरी बात, हमें पूरी तरह से पवित्र-आत्मा की अधीनता में रहना है (प्रेरितों.1:5), और सिर्फ पवित्र-आत्मा की अगुवाई में चलना है (रोमियों 8:14)।

तीसरी बात, कि शिष्यों को परमेश्वर को न तो कुछ बताना था और न ही उसकी योजना में हस्तक्षेप करना था (प्रेरितों. 1:7)। हमें ऐसा होने देना कि सारी बात का अधिकार पूरी तरह से सिर्फ परमेश्वर के ही हाथ में हो। वह सर्वशक्तिशाली प्रभुसत्ता-सम्पन्न परमेश्वर है और वह उसकी योजनाओं में किसी को भी हस्तक्षेप नहीं करने देगा। जब हम उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, तब हम उसकी योजना में शामिल हो जाते हैं।

शिष्य उसके स्वर्ग में उठाए जाने के साक्षी हुए (पद 10)। वे जब टकटकी लगाए स्वर्ग की ओर देख रहे थे, तब दो पुरुष वहाँ आ खड़े हुए और उनसे बोले, “तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? तुमने जो कुछ सुना है, वह जाकर लोगों को बताओ। उन्हें बताओ कि कैसे तुमने प्रभु को स्वर्ग में जाते हुए देखा है और यह कि जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते हुए देखा है, वैसे ही तुम उसे आते हुए भी देखोगे।” यह अंतिम संदेश है: “वह इसी तरह फिर लौटेगा।”

अप्रैल 1

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जब वे तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, 'बचे हुए टुकड़ों को बटोर लो कि कुछ भी नष्ट न हो।' इसलिए उन्होंने वह बटोरा, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से, जो खाने वालों से बच गई थीं, बारह टोकरियाँ भरीं" (यूह. 6:12,13)।

हमारा प्रभु बर्बादी पसन्द नहीं करता; इसलिए उसने यह आज्ञा दी कि कुछ भी बर्बाद न हो। जब उसने उन टुकड़ों पर इतना ख़ास ध्यान दिया था, तो उसे हमारे समय, धन और ऊर्जा का और भी कितना ख़्याल होगा! जब हम अपने जीवनों पर ध्यान देते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि हमारा ज़्यादा समय बर्बाद हो रहा है, हमारा धन ग़लत ढंग से ख़र्च हो रहा है, और हमारी ऊर्जा यूँ ही ख़त्म हो रही है।

मैं एक जगह ठहरा हुआ था। मैं आत्मिक तौर पर नहीं बढ़ रहा था। तब, जब मैंने प्रभु से प्रार्थना की, "प्रभु, मुझ में क्या ख़राबी है?" तो प्रभु ने मुझे यह दिखाया कि मैं स्वयं अपनी शक्ति और बुद्धि से उसकी सेवा कर रहा था, और मैं अपना समय बर्बाद कर रहा था। उसने मुझे दिखाया कि कैसे मैंने सेवा करने के उद्देश्य से उसके साथ अपने सुबह और शाम का एकांत का समय कम कर दिया था। तब मैंने अपनी लापरवाही से मन फिराया और यह दृढ़ फैसला किया कि बाहर जाने से पहले मैं प्रभु की योजना जानने के लिए प्रतीक्षा करूँगा। मैं फल देखना चाहता था।

मैं तीन घण्टे से प्रार्थना कर रहा था और तब प्रभु ने मुझे "सोल्जर्ज़ बाज़ार" जाने के लिए कहा। प्रभु ने हमें प्रतिदिन एक नहीं अनेक आत्माएं दीं। परमेश्वर ने मुझे इस तरह फल देना शुरू किया। वह चाहता है कि हम फल देखने की अपेक्षा करें।

अप्रैल 2

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"तेरे पास ऐसा क्या है जो तुझे दिया नहीं गया है" (1 कुरि. 4:7)।

यही सिद्धान्त हमारे लिए धन के इस्तेमाल में भी लागू होता है। क्या हम अपने धन का ग़लत इस्तेमाल करते हैं?

पहले मैं अपनी जेब में बहुत से छुट्टे सिक्के रखता था क्योंकि मेरी यह आदत थी कि जो भी मुझसे माँगता था, मैं उसे दे देता था। लेकिन एक दिन, जब मैंने ऐसे ही दे दिया, तो प्रभु ने मुझसे बात की और कहा, "यह तेरा नहीं मेरा पैसा है। तू मेरा पैसा कैसे ख़र्च कर सकता है।" उस दिन से मैंने परमेश्वर की अनुमति के बिना एक भी पैसा ख़र्च न करने का फैसला किया।

आपका समय और आपका धन दोनों ही प्रभु के हैं। मैं कभी पैसे को अपना नहीं समझता। मैं तब तक ऐसी कोई वस्तु नहीं ख़रीदता जिसके बारे में मुझे पहले यह यक़ीन नहीं होता कि उसमें परमेश्वर का कोई उद्देश्य पूरा हो रहा है। मुझे याद है कि अमेरिका में मुझे बाल कटाने की ज़रूरत महसूस हो रही थी। मेरे पास पैसे भी थे, लेकिन प्रभु ने मुझे बाल कटाने की अनुमति नहीं दी। मैं तीन सप्ताह तक प्रार्थना करता रहा, और मेरे बाल बढ़ते रहे।

मैं मिनिऐपोलिस आ गया, और वहाँ मुझे प्रभु ने एक दुकान में जाकर बाल कटवाने के लिए कहा। और वह नाई जब मेरे बाल काट रहा था, तब मैंने उससे पूछा, "मिस्टर ब्रूस, क्या आपका नया जन्म हुआ है?" उसने कहा, "नहीं, लेकिन मैं नया जन्म पाना चाहता हूँ।" बाद में, मैंने अपनी बाइबल लेकर उसे मार्ग बताया, और उसने घुटने पर आकर प्रभु को ग्रहण किया। उसने मुझसे बाल काटने के पैसे लेने से भी इनकार कर दिया। इस तरह, प्रभु ने मेरे बाल भी कटवाए, और उस नाई को अपने पास बुलाने के लिए मुझे इस्तेमाल भी किया। परमेश्वर के वचन के अनुसार मेरा यह मानना है कि हमें अपने समय और धन का लेखा देना पड़ेगा।

अप्रैल 3

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"कि पवित्र लोग सेवा कार्य के योग्य बनें, और मसीह की देह उन्नत हो" (इफि. 4:12)।

हमारे बीच में अंतिम प्रार्थना हो रही थी, और जब मैं प्रार्थना कर रहा था, तब अचानक कोई मेरे सामने मुँह के बल गिर पड़ा मानो उसे किसी बिच्छु ने डस लिया हो। तब एक के बाद एक लोग गिरने लगे और दया की याचना करने लगे।

मैंने अपनी आँखों से देखा कि लोग अपने मुँह पर धूल फेंक रहे थे, अपनी छातियाँ पीट रहे थे, और अपने बाल नोच रहे थे। जब यह तीन घण्टे तक होता रहा, तो प्राचीन आकर मुझसे प्रार्थना बंद करने के लिए निवेदन करने लगे। मैंने कहा, "ये मैंने शुरू नहीं किया है... परमेश्वर से कहो कि वह इसे बंद करे।"

हमने सैंकड़ों लोगों को पवित्र-आत्मा द्वारा दोषी ठहराए जाते हुए, अपने पापों का अंगीकार करते हुए, और उद्धार पाते हुए देखा। हम एक जगह में 3-4 सप्ताह तक रहते हुए घरों में सभाएं और बाइबल अध्ययन करते थे, और जुलूस निकाल कर बाइबल भी बेचते थे। लेकिन जब मैं कुछ महीनों के बाद उन जगहों में वापिस लौटता था, तब यह देख कर मुझे बहुत निराशा होती थी कि बहुत थोड़े से लोग ही प्रभु के संग चलते हुए नज़र आते थे; ज़्यादातर लोग वापिस लौट जाते थे। हालांकि एक दु:खद रूप में लोग विश्वास से भटक जाते थे, फिर भी मैं कुछ समय के लिए दूसरे लोगों को काम सौंप देता था।

फिर परमेश्वर ने मुझे यह दिखाना शुरू किया कि सुसमाचार-प्रचारकों के रूप में हम न सिर्फ लोगों के मन फिराव के लिए बल्कि उसके बाद उनकी आत्मिक उन्नति के लिए भी जवाबदार थे। क्या वे हमारे बच्चे नहीं हैं, और क्या हमें उनकी चरवाही करने के लिए तैयार नहीं रहना है? मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मैंने उन लोगों को निराश किया था इसमें मैं ही दोषी था। इन लोगों ने वास्तव में नया जन्म पाया था, और यह स्वाभाविक ही था कि अब वे मार्ग-दर्शन के लिए हमारी तरफ देख रहे थे। उनकी अगुवाई करते हुए उन्हें परिपक्वता और परमेश्वर की योजना में लाने की ज़िम्मेदारी हमारी थी। मैंने इफिसियों 4:11-14 में से इस सत्य बिलकुल स्पष्ट रूप में देख लिया था। पवित्र-शास्त्र के इस भाग के अनुसार, यह प्रेरितों, नबियों, सुसमाचार-प्रचारकों और शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि मन फिराए हुए नए विश्वासियों की सही देखभाल करें और उन्हें परिपक्वता तक लाएं।

अप्रैल 4

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जब तक कि हम विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के पूर्ण ज्ञान में एक न हो जाएं, और उसके पूरे डीलडौल तक न बढ़ जाएं" (इफि. 4:13)।

हम इफिसियों 4:8-12 को दोबारा देखें क्योंकि यहीं पर हमें यह साफ तौर पर समझाया गया है कि कलीसिया की पूरी अभिव्यक्ति ही परमेश्वर का बोझ है। प्रभु ने किसी एक समूह को नहीं बल्कि कलीसिया को पाँच-स्तरीय दान-वरदान दिए हैं। और यह हमारा विशेषाधिकार है कि हम ये दान-वरदान माँगें।

जिस तरह हम परमेश्वर को एक नव-जागृति लाने के लिए कहते हैं, वैसे ही हमें उससे आशिषें देने के लिए भी कहना चाहिए... जैसे प्रेरित, नबी, सुसमाचार-प्रचारक, पास्टर व शिक्षक, जो साथ मिलकर काम करने द्वारा विश्वासियों को एक ठोस नींव पर स्थापित करते हैं। इस तरह मुझे यह नज़र आना शुरू हुआ कि जो लोग नया जन्म पा रहे थे, उनमें दान-वरदान नज़र न आने के लिए हम ही ज़िम्मेदार थे। हमने परमेश्वर से ये दान-वरदान नहीं माँगे थे। प्रेरितों को यह अधिकार दिया गया है कि वे कलीसियाएं स्थापित करें और उन्हें नियुक्त करें जिन्हें परमेश्वर ने सेवकाई के काम के लिए बुलाया है। नबी वे हैं जो परमेश्वर के मन की बात जानकर उसे कलीसिया को बताते हैं।

सुसमाचार प्रचारकों की मुख्य ज़िम्मेदारी सुसमाचार प्रचार करना और अविश्वासियों को मन-फिराव और उद्धार तक लाना होता है। शिक्षक सभी तरह के लोगों के साथ संपर्क करते हैं और धीरज, सहानुभूति और दया के साथ उन्हें परमेश्वर के वचन में से सिखाते हैं। पास्टर माता-पिता, उपचारिका (नर्स) या चरवाहों की तरह होते है। वे परमेश्वर की झुण्ड पर नज़र रखने और उसकी देखभाल करने वाले होते हैं। ये सभी दान-वरदान एक-दूसरे से अलग होकर नहीं सिर्फ एक-दूसरे के साथ मिलकर ही काम कर सकते हैं।

अप्रैल 5

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"उन दीपदानों के बीच में मनुष्य के पुत्र जैसा एक पुरुष था" (प्रका. 1:17)।

जब भी हम परमेश्वर की योजना में आना चाहेंगे, तो शैतान बहुत क्रूरता के साथ युद्ध करेगा। जब परमेश्वर ने चमत्कार किए तो शैतान शान्त रहा, लेकिन जब परमेश्वर अपने स्वर्गीय नमूने (योजना) को दिखा रहा था, तब वह क्रोधित हो गया था। जब हम स्वर्गीय योजना में शामिल किए जाते हैं तो शैतान हमें रोकना और हम पर हमला करना चाहता है। अगर हम वह करते रहेंगे जो हमें अच्छा लगता है, तो उसे कोई आपत्ति नहीं होगी। लेकिन जब हम परमेश्वर की सिद्ध इच्छा में होकर काम करना चाहते हैं, तब शैतान ऐसी मुश्किलें पैदा करता है जिन पर प्रबल होना मुश्किल होता है। परमेश्वर ने यह बोझ कलीसिया को दिया है।

प्रेरित यूहन्ना ने जब परमेश्वर के लोगों को क्लेशों में और बिखरे हुए देखा तो बहुत उदास हो गया था, और उसने उन अनेक लोगों को भी याद किया जिन्हें मार डाला गया था। तब, प्रभु के दिन में जब यूहन्ना आत्मा में प्रार्थना कर रहा था, तब उसके पीछे से उसने एक आवाज़ सुनी, और उसने मुड़ कर यह देखा कि वह कौन है जो उससे बात कर रहा था। यूहन्ना ग़लत दिशा में देख रहा था! इसलिए यह कोई हैरानी की बात नहीं है कि वह निराश हो गया था। और प्रभु यीशु यूहन्ना से कह रहा था: 'यूहन्ना, तू ग़लत दिशा में देख रहा है; पीछे मुड़ और एक नए नज़रिए से देख'।

यूहन्ना ने जो सबसे पहले देखा, वे सात दीपदान थे। आप यह सोच सकते हैं कि उसे सबसे पहले प्रभु यीशु मसीह को देखना चाहिए था। लेकिन नहीं! पद 12 व 13 में हमें बताया गया है कि सबसे पहले उसने सात दीपदान देखे और उसके बाद प्रभु यीशु मसीह को देखा, जो एक महायाजकीय वस्त्र पहने दीपदानों के बीच में चल-फिर रहा था। यह ऐसा है मानो प्रभु यह कह रहा था: 'यूहन्ना, तुझे अगर मुझे चलते और काम करते हुए देखना है, तो वह तू सिर्फ मेरी कलीसिया में ही देख पाएगा। मैं तुझे चिन्ह् चमत्कारों में नज़र नहीं बल्कि कलीसिया में ही नज़र आऊँगा।'

अप्रैल 6

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जब सुलैमान प्रार्थना कर चुका, तब स्वर्ग से आग गिरी जिस से होम बलि तथा अन्य बलियाँ भस्म हो गईं, और परमेश्वर का तेज भवन में भर गया" (2 इति. 7:1)।

परमेश्वर कुछ ख़ास ईश्वरीय सिद्धान्तों के अनुसार ही काम करता है। उसकी महिमा सिर्फ तभी नज़र आती है जब हम उन सिद्धान्तों का पालन करने के लिए तैयार हो जाते हैं। निर्गमन 40 में हम यह देखते हैं कि वह महिमा उन सिद्धान्तों के पालन द्वारा आई थी। पद 16,19,23,25,27,29,32 व 33 में हम यह वाक्यांश पढ़ते हैं: 'जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी।'

और फिर यह लिखा है, 'इस प्रकार मूसा ने काम को पूरा किया।' फिर 40:34 कहता है, "तब निवास परमेश्वर के तेज से भर गया।"

वह वाक्यांश, 'जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी' बार-बार इस तरह दोहराया गया है मानो प्रभु स्वयं सारे काम को जाँच रहा था और वह उसकी हरेक विस्तृत बात से पूरी तरह संतुष्ट था। जब सारा काम परमेश्वर के ठहराए हुए मापदण्डों के अनुसार पूरा होता है, सिर्फ तभी उसकी महिमा नीचे आती है। बाइबल परमेश्वर की महिमा के नीचे आने की बात की इसी तरह व्याख्या करती है।

यह देखें कि हमारा प्रभु यूहन्ना 4:34 में क्या कहता है, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करूँ और उसका काम पूरा करूँ।" जब एक काम परमेश्वर की सिद्ध, प्रकट इच्छा और उसकी स्वर्गीय योजना के अनुसार पूरा होता है, तब उसकी आज्ञानुसार महिमा नीचे आती है। सिर्फ कुछ शक्ति या चमत्कार या चिन्ह् परमेश्वर की महिमा नहीं होती। परमेश्वर की आज्ञा और अनुक्रम के अनुसार किया गया एक पूरा हो चुका परिपूर्ण काम ही परमेश्वर की पूरी महिमा को नीचे लाता है।

अप्रैल 7

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

“जब मूसा परमेश्वर से बात करने मिलापवाले तम्बू में गया, तब उसने प्रायश्चित् के ढक्कन पर से जो साक्षी पत्र के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करूबों के बीच में से उसकी आवाज़ सुनी जो उससे बातें कर रहा था, और परमेश्वर ने उससे बातें कीं” (गिनती. 7:89)।

हम यह कैसे जान सकते हैं कि परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के बीच में है? जिस दिन परमेश्वर की महिमा मिलाप वाले तम्बू में भर गई, उसी दिन से प्रायश्चित् के ढक्कन के ऊपर दोनों करूबों के बीच में से परमेश्वर बात करने लगा था।

परमेश्वर ने मूसा से जलती हुई झाड़ी के बीच में से पहले भी बात की थी; उसने उससे तब भी बात की थी जब उसने पहाड़ी पर ऊपर बुलाया था और उसे पूरी व्यवस्था और मिलाप वाले तम्बू का नमूना दिया था।

लेकिन अब हम जिस तरह से परमेश्वर को बोलता हुआ पाते हैं, वह बिलकुल अलग तरह का बोलना है। अब परमेश्वर ने करूबों के बीच में से मूसा के सामने अपना हृदय खोलना और अपने मन की पूरी बात बताना शुरू कर दिया था।

हमें यहाँ इस बात का सबूत मिलता है कि परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के बीच में थी। परमेश्वर बात कर रहा था और जो भी उसके पास आता था, उस पर वह अपने मन की बात प्रकट करता था। इस्राएल के सभी 12 गोत्रों में से यह विशेषाधिकार हरेक व्यक्ति के पास था कि वह अपनी व्यक्तिगत, पारिवारिक या मण्डली के बारे में दूसरे किसी भी बात के लिए महायाजक हारून के पास जा सकता था, और परमेश्वर के मन की बात और उसकी इच्छा को जान सकता था। तब हारून परमेश्वर के पास जाकर प्रायश्चित् के ढक्कन के ऊपर से परमेश्वर को बात करते हुए सुन सकता था। परमेश्वर का बोलना इस बात का एक बड़ा सबूत है कि परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के बीच में है।

अप्रैल 8

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"मिलापवाले तम्बू पर बादल छा गया" (गिन. 9:15-23)।

यह वह दूसरा बड़ा सबूत था कि परमेश्वर उसकी पूरी महिमा में उनके बीच में था। उनकी आँखें हमेशा उनके बीच में लगे तम्बू के ऊपर ठहरे बादल पर ही लगी रहती थीं। जब भी वह बादल तम्बू के ऊपर से उठता था - चाहे सुबह, या दोपहर, या संध्या, या मध्य-रात्रि को - इस्राएल की संतानों को उसी समय उठकर चल देना होता था। बादल का ठहरे रहना चाहे एक दिन, या एक सप्ताह, या एक महीने या एक साल या उससे भी ज़्यादा समय के लिए हो, तो उन्हें भी ठहरे रहना होता था; वे आगे नहीं बढ़ सकते थे; लेकिन जहाँ कहीं बादल जाता था, उन्हें वहीं-वहीं जाना पड़ता था। इन दो महान् चिन्हों के द्वारा हम जान सकते हैं कि परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के बीच में थी।

फिर 1 शमूएल 4:22 में हम यह पाते हैं कि उनके बीच में से महिमा चली गई थी। इसके अनेक कारण थे। आइए, हम लोगों के आत्मिक पतन के अनेक कारणों में से कुछ कारणों पर विचार करेंगे। न्यायियों 21:25 में, उनकी नाकामी और सूखेपन की सबसे बड़ी वजह यह थी कि "प्रत्येक पुरुष वही करता था जो उसकी दृष्टि में ठीक था।"

1 शमूएल 2:12-17 हम उनके नाकाम होने की दूसरी वजह पाते हैं। एली, जो महायाजक था, उसके पुत्रों ने बलियों को तुच्छ समझना शुरू कर दिया था; और सिर्फ इतना ही नहीं, उन्होंने लोगों के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती शुरू कर दी थी। पद 13 में हमें बताया गया है कि उनके पास एक तीन नोक वाला काँटा था जिससे वे उस माँस को भी अपनी तरफ खींच लेते थे जो परमेश्वर के लिए होता था। आज भी तीन नोक वाले काँटों से यही किया जा रहा है, अर्थात् जो आदर परमेश्वर को दिया जाना चाहिए वह मनुष्यों को दिया जा रहा है जिसकी वजह है (1) धन का प्रेम, (2) शक्ति का प्रेम, और (3) और बड़े नाम का प्रेम।

अप्रैल 9

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"परमेश्वर की महिमा उठ गई, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है" (1 शमू. 4:22)।

और, हमें यह भी पता चलता है कि एली इन सब बातों को जानता था! फिर भी वह उसके पुत्रों की ताड़ना नहीं करता था इस वजह से ही परमेश्वर को उसे ऐसा कठोर दण्ड देना पड़ा था। फिर 1 शमूएल 4:22 में हम यह पाते हैं कि एली यह जानता था कि उसके पुत्र पाप में जीवन व्यतीत कर रहे थे फिर भी उसने उन्हें यह अनुमति दी कि वे वाचा के सन्दूक को युद्ध के मैदान में ले जाएं। ये कुछ ऐसे कारण हैं जो उन दिनों परमेश्वर के लोगों के बीच में सूखेपन और मौत के पाए जाने के लिए ज़िम्मेदार थे।

मुझे तब बहुत आघात लगता है जब मैं परमेश्वर के सेवकों को पैसे के लिए भीख माँगते हुए देखता हूँ। एक बार रेल के एक डिब्बे में मेरे साथ एक हिन्दू स्त्री सफर कर रही थी। उसने मुझसे कहा, "परमेश्वर तुम्हारी ज़रूरतें कैसे पूरी कर सकता है? तुम कहते हो कि तुम किसी संगठन के साथ नहीं जुड़े हो, तब परमेश्वर तुम्हारी ज़रूरतें कैसे पूरी कर सकता है?" मैंने कहा, "मुझे बताइए, जैसा मैंने आपसे पहले कहा था, कि क्या आप यह मानती हैं कि परमेश्वर ने मेरे पाप क्षमा कर दिए हैं?

मैंने अपनी साक्षी देते हुए आपको बताया है कि कैसे अपने पाप क्षमा कराने की कोशिश में मैंने हर संभव तरीक़ा अपनाया था। मैं कितना भी पैसा ख़र्च करने के लिए और ऐसे किसी भी व्यक्ति के पास जाने के लिए तैयार था जो मेरे पाप क्षमा कर सकता था। लेकिन यह कोई नहीं कर सकता था। फिर एक दिन वह दिन आया जब मैंने इन शब्दों को एक स्पष्ट रूप में सुना, 'मेरे मुत्र, तेरे पाप क्षमा हो गए हैं।' मैं आपको बार-बार यह बात कह सकता हूँ कि प्रभु यीशु मसीह ने 30 साल पहले मेरे पाप क्षमा कर दिए थे।"

अगर आप यह विश्वास कर सकती हैं कि परमेश्वर एक पापी को क्षमा कर सकता है, तो आपके लिए यह विश्वास करना भी आसान हो जाएगा कि वही जीवित परमेश्वर मेरी सारी ज़रूरतों को भी पूरा कर सकता है। यह मेरा विश्वास है। और मैं अपने अनुभव द्वारा भी यह जानता हूँ।" हमें पैसा माँगने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। अगर हम परमेश्वर के सेवक हैं, तो वह अपने सेवकों को निराश नहीं करेगा।

अप्रैल 10

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"मैंने उसे परमेश्वर को समर्पित कर दिया है" (1 शमू. 1:28)।

पहला शमूएल से लेकर दूसरा इतिहास के अंत तक, हम ऐसे चार लोगों के नाम पाते हैं जिन्होंने इस्राएल में से दूर हो चुकी महिमा को वापिस लौटा ले आने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

पहली हन्ना है, दूसरा शमूएल है, तीसरा दाऊद है, और चौथा सुलैमान है। इन 6 पुस्तकों में हम यह पाते हैं कि इन चार लोगों ने दूर हट चुकी महिमा को वापिस लाने के लिए बड़ा काम किया था। आगे बढ़ते हुए हम यह देखेंगे कि कैसे ये चार नाम चार ईश्वरीय सिद्धान्तों के बारे में बात करते हैं। इन सिद्धान्तों के पालन द्वारा हम परमेश्वर की खोई हुई महिमा को अपने हृदयों में, अपनी मण्डलियों में, और अपने काम में आता हुआ देखेंगे। पहले हम 1 शमूएल 1:2 देखते हैं। हन्ना नाम का अर्थ है – कृपा।

हमें बताया गया है कि जब हन्ना को बहुत बुरी तरह से उकसाया जा रहा था, तो उसने प्रार्थना और उपवास किए, और फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना नहीं सुनी थी। इसलिए वह रोती रही और विश्वास से प्रार्थना करती रही थी।

उसके सब आँसू उसकी अपनी ज़रूरत के लिए थे। वह यह नहीं जानती थी कि परमेश्वर की भी कुछ ज़रूरत हो सकती थी! और फिर उसकी प्रार्थना बदल गई: "अब मैं अपने स्वार्थ की बात को त्याग रही हूँ, और यह प्रतिज्ञा करती हूँ कि अगर तू मुझे एक लड़का-बच्चा दे, तो मैं उसे तुझे वापिस अर्पित कर दूँगी।" फिर, जब उसने परमेश्वर की ज़रूरत को जान लिया, तो उसने उसे एक पुत्र दे दिया।

अप्रैल 11

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"बालक शमूएल... परमेश्वर के सामने सेवा करता था" (1शमू. 2:18)।
"बालक शमूएल परमेश्वर के सामने बढ़ता रहा" (1 शमू. 2:21)।

परमेश्वर के सेवक होते हुए हमें यह पता लगाना चाहिए कि आज परमेश्वर की क्या ज़रूरत है। भारत में परमेश्वर की क्या ज़रूरत है – उत्तर भारत में, या दक्षिण भारत में? परमेश्वर की अफ्रीका में, यूरोप में, और अमेरिका में क्या ज़रूरत है? हमें प्रार्थना द्वारा यह पता लगाना चाहिए। मेरा मानना है कि हन्ना से हम यह सीखते हैं कि प्रार्थना कैसे करते हैं।

हालांकि हन्ना की प्रार्थना उपवास, आँसुओं और विश्वास के साथ की गई थी; हालांकि वह एक ईमानदार व भक्त स्त्री थी, फिर भी परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना नहीं सुनी थी। उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक वह उसकी ज़रूरत को नहीं समझ गई थी! परमेश्वर का काम करने का अपना एक तरीक़ा है। उसे एक पुरुष की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह एक पुरुष के बिना काम नहीं कर सकता। वह एक ऐसा पुरुष चाहता है जो उसे स्वेच्छा से दिया गया हो, और इसके लिए वह इंतज़ार करता है। हमें यह अधिकार नहीं है कि हम परमेश्वर से अपनी बात मनवाएं; उसके मार्ग हमारे मार्गों से ज़्यादा ऊँचे हैं, और हम निडर होकर उसका इंतज़ार कर सकते हैं।

हन्ना के मामले में परमेश्वर का क्या उद्देश्य था? परमेश्वर बड़े धीरज से इंतज़ार करता रहा था, और हन्ना को अपनी सहकर्मी के रूप में चुनने से वह प्रसन्न था। उसने हन्ना के जीवन में बांझपन की अनुमति दी कि वह परमेश्वर की सच्ची सहकर्मी बन सके। हन्ना को यह कितना बड़ा सम्मान दिया गया था। वह प्रार्थना करती रही थी: प्रभु मेरी बदनामी दूर कर। और परमेश्वर कह रहा था, हन्ना मेरी ज़रूरत का क्या होगा? मेरा नाम भी बदनाम हो रहा है। परमेश्वर की ज़रूरत को जानने के लिए, या यह पता लगाने के लिए कि वह किस बात की खोज में है, हमें प्रार्थना करना सीखना चाहिए। अगर हम चाहते हैं कि परमेश्वर की महिमा उतर आए, तो हमें इस तरह प्रार्थना करना सीखना होगा।

अप्रैल 12

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"परमेश्वर शीलो में फिर से प्रकट हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने शीलो में ही अपने वचन के द्वारा अपने आपको शमूएल पर प्रकट किया था" (1 शमू. 3:21)।

अगर हम यह चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे बीच में अपनी महिमा को भेजे, और अगर हमें ऐसा होने देंगे कि परमेश्वर अपने आपको हम पर प्रकट कर सके, तो यह वह दूसरा सिद्धान्त है जिसका पूरा होना ज़रूरी है। हमें शमूएल जैसे पुरुषों की निर्भय और विश्वासयोग्य साक्षी की ज़रूरत है। हमारे पास बाइबल के बहुत अच्छे शिक्षक हैं, ऐसे अनेक ज्ञानी हैं जो बहुत अच्छी पुस्तकें लिख सकते हैं, और बहुत से अच्छे प्रचारक भी हैं, लेकिन ज़्यादा शमूएल नहीं हैं। हमें परमेश्वर के जनों की ज़रूरत है, ऐसे पुरुष जो परमेश्वर के असली प्रवक्ता हैं, ऐसे पुरुष जो साहस और आज़ादी के साथ यह कह सकते हों: 'सुनो, कि परमेश्वर क्या कहता है' और 'परमेश्वर यूँ कहता है।'

परमेश्वर का वचन शमूएल के पास तब आया था जब वह एक छोटा लड़का ही था। सबसे पहले परमेश्वर ने उससे यह कहा था, "एली के पास जाकर उससे यह कह।" वह, जो एक छोटा लड़का ही था, कैसे एक बूढ़े व्यक्ति को, अपने स्वामी को परमेश्वर का संदेश दे सकता था? और हालांकि वह एक कठोर और भयानक संदेश था, फिर भी उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और वह संदेश उसे दे दिया था। परमेश्वर एक ऐसा पुरुष चाहता है जो उसका प्रवक्ता हो सके और जो किसी मनुष्य का मुख देख कर न डरे। मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि इन दिनों में शमूएल जैसे एक पुरुष की बहुत ज़रूरत है।

मैं अपने पूरे हृदय से यह विश्वास करता हूँ कि जब तक हम शमूएल जैसे पुरुष नहीं होंगे, तब तक हम परमेश्वर की सामर्थ्य को पूरी तरह प्रदर्शित होते हुए नहीं देखेंगे। जब तक हम शमूएल जैसे पुरुष नहीं होंगे, और जब तक परमेश्वर का वचन हममें से उसी आज़ादी के साथ आ-जा न सकेगा जैसे वह हमें दिया जाता है, तो परमेश्वर हमें इस्तेमाल तो करेगा, लेकिन पूरी तरह नहीं; वह हमें आशिष तो देगा, लेकिन भरपूरी से नहीं; वह हमारे बीच में काम करेगा, लेकिन एक गहरे स्तर में नहीं।

अप्रैल 13

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जाति-जाति के पुरुष यह कहें, 'परमेश्वर राज्य करता है" (1 इति. 16:31)।

तीसरा नाम दाऊद का है जो तीसरे ईश्वरीय सिद्धान्त को प्रकट करता है - परमेश्वर के ठहराए हुए तरीक़े से ही काम करने की ज़रूरत है। दाऊद को नम्र व दीन करने के लिए, परमेश्वर ने दाऊद के जीवन में बहुत से प्रलोभनों को भी आने की अनुमति दी थी। परमेश्वर के काम में हमें बहुत दीन-हीन और टूटे हुए होने की ज़रूरत होती है। इसलिए हम जब भी परखे जाने के समय में से गुज़र रहे होते हैं, तो हम याद रखें, कि वह इसलिए होता है कि परमेश्वर हमें नम्र व दीन पात्र बना सके।

शायद हमें भी उन्हीं परीक्षाओं/प्रलोभनों में से गुज़रना पड़ा हो जिनमें से दाऊद को गुज़रना पड़ा था (1 इति. 13:1-11)। उसने यह सोचा था कि कुछ परिवर्तन करने के द्वारा वह ज़्यादा प्रभावशाली नज़र आ सकेगा। लेकिन परमेश्वर के काम में, हम परमेश्वर के ठहराए हुए तरीक़े को नहीं बदल सकते। जो कुछ भी बाइबल में प्रकट किया गया है, वह हरेक समयकाल के लिए, हरेक सेवक के लिए, और हरेक मसीही मत के लिए ठहराया गया है। आप उसे बदल नहीं सकते। आप जब भी प्रलोभित होकर उसे बदलेंगे, तब हमेशा हानि उठानी पड़ेगी।

हम सोचते हैं कि हम एक अलग समय में रह रहे हैं। लेकिन परमेश्वर के वचन से मैं यह स्पष्ट देख सकता हूँ कि अगर हमारे समयकाल में हम स्वर्गीय नमूने के अनुसार नहीं चलेंगे, तो हम परमेश्वर को उसकी पूरी महिमा में आता हुआ नहीं देख सकेंगे। कभी-कभी हमें "खलिहान" में लाने की ज़रूरत पड़ जाती है, क्योंकि परमेश्वर के काम में, हम मानवीय और बुद्धि और चतुराई पर कुछ ज़्यादा ही भरोसा करने लगते हैं। लेकिन हम स्वर्गीय योजना में कोई सुधार नहीं कर सकते।

अप्रैल 14

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"और भवन बनाए जाते समय वह ऐसे पत्थरों से बनाया गया, जो खदान में पहले से गढ़कर तैयार किए गए थे; और जब भवन बनाया जा रहा था, तब हथौड़े, बसूली व लोहे के किसी भी औज़ार की आवाज़ सुनाई न पड़ी" (1 राजा 6:7)।

सुलैमान परमेश्वर की महिमा के आने को सुनिश्चित करने के लिए चौथा ईश्वरीय सिद्धान्त दर्शाता है। जब आप अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और कलीसियाई जीवन में परमेश्वर की योजना के अनुसार चलेंगे, तो आप एक-दूसरे के साथ रहने में एकता, सहयोग, खुलापन, संगति और आत्मिक आनन्द पाएंगे। वर्ना एक तनाव होगा। जब हमारे पास परमेश्वर की योजना होती है, और हम अपनी सेवकाई को जानते हैं, तो हममें कोई ईर्ष्या नहीं होगी। ईर्ष्या की वजह से काम का बहुत नुक़सान हुआ है।

परमेश्वर के सेवक होते हुए भी, हम एक-दूसरे से ईर्ष्या करने वाले हो सकते हैं, और उससे हानि होती है। इसमें कोई संदेह नहीं है। यह हो सकता है कि हमें एक निश्चित रूप में परमेश्वर के मन की बात जानने के लिए साथ मिलकर एक पूरी रात या उससे भी ज़्यादा प्रार्थना करनी पड़े। और तब हम एकता पाते हैं। "प्रभु, मुझे शमूएल की तरह अपना सच्चा प्रवक्ता बना कि मैं तेरा संदेश जान सकूँ, और फिर अधिकार और साहस के साथ उस संदेश को बाँट सकूँ।" "प्रभु, मुझे हन्ना की तरह बना दे, कि मैं तेरी ज़रूरत को जानते हुए प्रार्थना करना सीख सकूँ, और जैसे हन्ना ने अपने पुत्र को तुझे भेंट स्वरूप दे दिया था, वैसे ही मैं भी उस ज़रूरत को पूरा करने का सौभाग्य पा सकूँ।"

"प्रभु, हमें दाऊद जैसे पुरुष दे; ऐसे पुरुष जो तेरे मन के अनुसार हों। जो सांसारिक ज्ञान से पूरी तरह मुक्त हों, और जो तेरे नमूने को ग्रहण कर सकें।" "प्रभु, मुझे सुलैमान की तरह एक शांति का पुरुष बना दे कि मैं एकता और निष्कपटता से जीवित पत्थरों को सही तरह जोड़ते हुए परमेश्वर के मन्दिर का निर्माण कर सकूँ।" ऐसी एकता द्वारा ही हम अंततः परमेश्वर की महिमा को नीचे आते हुए देख सकेंगे।

अप्रैल 15

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

“तब इस डर से कि कहीं चट्टानों से न जा टकराएं, वे जहाज़ के पिछले भाग में लंगर डालकर भोर होने की कामना करने लगे” (प्रेरितों. 27:29)।

मसीही जीवन तूफानों से भरी एक समुद्री यात्रा की तरह है। हमारे घर में तूफान होते हैं, परिवार में तूफान होते हैं, पड़ौस में तूफान होते हैं, और देश में हर तरफ तूफान होते हैं। ये सभी आशंकाओं और भय द्वारा हमारे विश्वास को डगमगाने और कमज़ोर करने के लिए ही आते हैं।

लेकिन हमारी ज़रूरत को जानते हुए, परमेश्वर ने हमारे लिए इंतज़ाम किया है और हमें चार लंगर दिए हैं। इनके द्वारा हम पूरी तरह सुरक्षित रह सकते हैं। प्रेरितों के काम 2:41,42 में हम इन चार लंगारों को देख सकते है जिनका इंतज़ाम परमेश्वर ने हरेक विश्वासी के लिए किया है। “जिन लोगों न उनका वचन ग्रहण किया उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक बपतिस्मा ग्रहण किया और उसी उनमें लगभग 3000 व्यक्ति शामिल हो गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने संगति रखने, रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में मग्न रहे।” पैन्तेकुस्त के दिन इस तरह से काम शुरू हुआ था। परमेश्वर के इन पुरुषों द्वारा परमेश्वर के वचन का प्रचार सामर्थ्य और अधिकार के साथ किया गया था।

जिन लोगों ने वह वचन सुना, उनके हृदय छिद गए थे। उन्होंने तुरन्त विश्वास किया और उन्हें दिए गए वचन का पालन किया। और तब उनके साथ 3000 लोग जुड़ गए थे। और जिनका हमने उल्लेख किया है, उन्हें उसी समय ये चारों लंगर मिल गए थे जो पद 42 में मिलते हैं। उन्होंने सबसे पहले प्रेरितों से शिक्षा पाना और उसे जारी रखना शुरू किया, दूसरे उन्होंने संगति करना शुरू किया, तीसरे वे एक-साथ मिलकर रोटी तोड़ने लगे, और चौथी बात यह कि वे प्रार्थना करने लगे।

अप्रैल 16

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में शिष्यों क संख्या बहुत बढ़ गई, और बहुत से याजकों ने भी इस मत को ग्रहण कर लिया" (प्रेरितों. 6:7)।

ये चारों लंगर उन आरम्भिक विश्वासियों को शैतान के हमलों से बचाते थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में से हम देखते हैं कि विश्वासियों के निराश करने, उन्हें कमज़ोर करने, और प्रभु में उनके विश्वास और आनन्द को चुराने के लिए शत्रु एक तूफान की तरह आता है। लेकिन हम यह भी देखते हैं, कि इन सब बातों के बावजूद, प्रभु का वचन कैसे एक जयवंत रूप में बढ़ता रहा था।

प्रेरितों के काम 12:24: "परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता और बढ़ता गया।"

प्रेरितों के काम 13:49: "और प्रभु का वचन पूरे क्षेत्र में फैलता चला गया।"

प्रेरितों के काम 119:20: "इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्य के साथ फैलता और प्रबल होता गया।"

प्रेरितों के काम 16:5: "इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में दृढ़ होती और संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ती गईं।"

प्रेरितों के काम 13:52: "और चेले आत्मा तथा पवित्र-आत्मा से निरन्तर परिपूर्ण होते गए।"

विश्वासियों को प्रेरितों की शिक्षा, परमेश्वर का शुद्ध वचन खिलाया जाता था और वे उससे पुष्ट होते थे। प्रेरित अपनी सोच-समझ या योग्यता पर निर्भर रहते थे। वे ऐसे पुरुष थे जो परमेश्वर द्वारा सिखाए गए और पवित्र-आत्मा के अभिषेक से भरे हुए थे। वे पवित्र-आत्मा की अगुवाई में परमेश्वर का शुद्ध, मिलावट-रहित वचन सिखाते थे। वे "सहभागिता" में बढ़ रहे थे। वे जो कुछ प्रभु से पाते थे, उसे आपस में एक-दूसरे के साथ बाँटने के लिए अक्सर मिलते रहते थे।

अप्रैल 17

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"रोटी तोड़ते समय उन्होंने उसे पहचान लिया था" (लूका 24:35)।

वे "रोटी तोड़ने" से बढ़ते थे। लूका 24:15-30 में हम प्रभु के जी-उठने के बाद इम्माऊस के मार्ग में जा रहे दो शिष्यों के बारे में पढ़ते हैं। जब रोटी तोड़ने के समय वह उनके साथ बैठा, तब अचानक उनकी आँखें खुल गईं। तब उन्होंने प्रभु को पहचान लिया।

वे इस तरह सिखाए गए थे। हमारा प्रभु ऐसा महान्, सामर्थी और अद्‌भुत है कि हम अपनी सामान्य नज़रों से उसे नहीं देख सकते। वह मानवीय समझ से बाहर है, और मनुष्य की समझ की क्षमताओं से बहुत ऊपर है। और हम फिर भी उसे जान सकते हैं! हमारे लिए वह हमारे सगे सम्बंधियों से ज़्यादा वास्तविक हो सकता है। जब हम उसकी सच्ची महिमा में उसे जान लेते हैं, तो वह हमारे लिए पूरे जगत में सबसे ज़्यादा मूल्यवान बन सकता है।

प्रभु की मेज़, और प्रभु के आने तक उसकी मृत्यु को याद करने के लिए रोटी तोड़ना, हमें उसकी एक ऐसी भीतरी अंतर्दृष्टि पाने का मौक़ा देते हैं जो और किसी भी तरह सम्भव नहीं है। वह आराधना की जगह है। वह ऐसी जगह है जहाँ हम आत्मिक रूप में बढ़ते हैं और उसका सच्चा मूल्य जान लेते हैं। आराधना (Worship) का अर्थ "मूल्य जानना - (Worthship)" होता है। यह दूसरे शब्दों में यह कहना होता है: "मेरा प्रभु मेरे लिए कितना मूल्यवान है? मैं बदले में उसे क्या दे सकता हूँ?"

अप्रैल 18

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है, और उसको दण्डवत् करने आए हैं" (मत्ती 2:2)।

ज्योतिषियों ने पूर्व में उस अनोखे तारे को देखा था, और वे उस लम्बी यात्रा पर निकल पड़े थे; शायद उनकी यात्रा के पूरे होने में दो साल का समय लग गया था। हालांकि वे प्रभु यीशु मसीह को पहले से नहीं जानते थे, फिर भी वे उसके लिए एक क़ीमत चुकाने को तैयार थे। जब वे घर में पहुँचे, तो उन्होंने नन्हें बालक और उसकी माता मरियम को देखा, और भूमि पर गिरकर उसकी आराधना की। और फिर उन्होंने उसे सोना, लोबान और गंधरस की भेंट चढ़ाई। इतना लम्बा सफर तय करके आने के द्वारा उन्होंने उसके मूल्यवान होने की बात को स्वीकार, और जब वह उन्हें मिल गया, तो "उन्होंने उसकी आराधना की।" ऐसी मूल्यवान भेटें लाने द्वारा उन्होंने एक प्रतीकात्मक रूप में यह माना कि:

1) जिसकी हम आराधना करने आए हैं, वह परमेश्वर है – सोना।
2) जिसकी हम आराधना करने आए हैं, वह हमारे लिए पीड़ा सहता है – गंधरस।
3) जिसकी हम आराधना करने आए हैं, वह हमें बचाएगा और हमारा महायाजक होगा – लोबान।

प्रभु यीशु मसीह मेरे लिए भी बहुत मूल्यवान है। उसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपनी जान दी। मैं उसके सम्मुख अपना प्रेम प्रकट करने के लिए कोई भी क़ीमत चुकाने के लिए तैयार हूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उससे अपने पिता, माता, भाई, बहन, पत्नी, बच्चे या किसी से भी ज़्यादा प्रेम करता हूँ! लेकिन वह प्रेम एक सच्चे हृदय में से आना चाहिए। हम एक सभा में यह कह सकते है, "हे प्रभु, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ," लेकिन जब उसकी क़ीमत चुकाने का समय आता है, तो हम पीछे हट जाते हैं! हम बार-बार उसका इनकार करते हैं! हम कितनी बार उसे शोकित करते हैं! हम कितनी बार इस डर की वजह से उसकी आज्ञा का पालन करने से चूक जाते हैं कि मेरा पड़ौसी क्या कहेगा? मेरे मित्र मेरे बारे में क्या सोचेंगे? सारा जगत क्या कहेगा? हम वह क़ीमत ही नहीं चुकाते जिसकी माँग हमसे प्रभु करता है।

अप्रैल 19

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"फिर मैंने देखा कि जिनकी संख्या लाखों और करोड़ों में थी, वे ऊँची आवाज़ से कह रहे थे, 'वध किया हुआ मेमना सामर्थ्य, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के योग्य है" (प्रका. 5:11-14)

यह सेवा के उस काम का चित्र है जो स्वर्ग में पूरा हुआ नज़र आता है। जब हम उसे आमने-सामने देखेंगे तब यही होगा!

प्रभु की मेज़ में भी हम यही संदेश पाते हैं: परमेश्वर वापिस आ रहा है! उसका आना इसलिए ज़रूरी है कि जो उसने शुरू किया है वह एक सिद्ध रूप में पूरा हो। जब तक वह नहीं लौटेगा, तब तक यह पूरा नहीं होगा। हम उसकी मेज़ पर यही करते हैं; हम विश्वास से यह प्रचार करते हैं कि हम उसके आने का इंतज़ार कर रहे हैं। यह हमारा विश्वास है कि वह एक अनोखा दिन होगा जब उसके जैसे बन जाएंगे, और उसके साथ राज्य करेंगे।

इफिसियों 3:18 में, मैं चाहता हूँ कि आप सहभागिता के महत्व पर ध्यान दें। उसके प्रेम और उद्देश्य को हम अपने आपमें कभी नहीं समझ सकते; हमें सब संतों की मदद की ज़रूरत होती है कि हम "उसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई को, और मसीह के उस प्रेम को जान सकें जो ज्ञान से परे है कि हम परमेश्वर की समस्त परिपूर्णता तक भरपूर हो जाएं।"

यहाँ एक बड़ा रहस्य है। आप यह पाएंगे कि जब हम एक परिवार के रूप में इकट्ठे होते हैं, तब हम उसके प्रेम को एक ज़्यादा और भरपूर मात्रा में पाते हैं। इस परिवार में, कोई यहूदी और ग़ैर-यहूदी का फर्क़ नहीं है; सब मुक्त हैं, उसी एक प्रभु में से अनेक परिवारों, जातियों और भाषाओं के लोग पाते हैं।

अप्रैल 20

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; परमेश्वर का खेत और परमेश्वर का भवन हैं" (1 कुरि. 3:9)।

परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमें यह बात हमेशा याद रहे कि हमारे द्वारा परमेश्वर के लिए किया गया ऐसा कोई भी काम जिसमें परमेश्वर की आशिष मौजूद है, अनन्त में बना रहेगा; और यह कि जो कुछ भी हम करते हैं, वह जाँचा, परखा और खरा प्रमाणित किया जाएगा। हमारा काम हमारे साथी-सेवकों और दूसरे साथियों की नज़र में बहुत अच्छा और स्वीकार्य लग सकता है, लेकिन अंत में परमेश्वर उसे अपने मापदण्ड के अनुसार परखेगा। याद रखें कि परमेश्वर उसके काम के बारे में हमेशा अनन्त के नज़रिए से देखता है।

हमें भेजने और सुसमाचार प्रचार करने के लिए कहने के पीछे परमेश्वर के मन में क्या होता है? वह जीवात्माएं क्यों चाहता है? वह, जो हमें प्रेम करने वाला परमेश्वर है, एक खोए हुए पापी को ढूंढ निकालने में इतनी दिलचस्पी क्यों रखता है? वह इस तरह क्यों हमारे पीछे लगा रहता है? इसलिए क्योंकि वह अपने रहने के लिए एक जगह चाहता है; वह एक घर चाहता है! हमें आरम्भ से ही लोगों को यह बता देना चाहिए कि हमें बचाने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य क्या है। उसने यह चाहा है कि आप और मैं उस घर को बनाएं। हरेक विश्वासी को यह विशेषाधिकार दिया जाना चाहिए। यह हो सकता है कि उसकी ऐसा करने की इच्छा न हो, फिर भी उसे अहसास करा देना चाहिए कि वह परमेश्वर के घर का एक हिस्सा है।

मिलाप वाले तम्बू में इस्तेमाल की गई सारी सामग्री सबसे पहले तो उन्हें प्रभु यीशु मसीह के बारे में सिखाने के लिए थी: उसकी कृपा, भलाई, पवित्रता, शक्ति, सौन्दर्य, महिमा और परिपूर्णता। और दूसरी बात यह, कि हम सब उस घर के सदस्य बनने द्वारा कैसे उस परिपूर्णता का हिस्सा – परमेश्वर का निवास-स्थान बन जाते हैं।

अप्रैल 21

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, 'मैं उनमें निवास करूँगा और उनमें चला-फिरा करूँगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे" (2 कुरि. 6:16)।

इफिसियों की पत्री में प्रेरित ने परमेश्वर के लोगों को सात नामों से पुकारा है। वह उन्हें प्रभु यीशु मसीह की "कलीसिया" कहा है, क्योंकि उन्हें संसार में से बाहर बुला लिया गया है। वह उन्हें "मसीह की देह" कहता है क्योंकि उसके हरेक अंग में से वही एक जीवन प्रवाहित होता है। उस देह में परमेश्वर की परिपूर्णता है, उसकी भरपूरी सब में सब कुछ पूरा करता है। उस जीवन का स्वास्थ्य हरेक कोषिका, नस और माँसपेशी तक पहुँचता है। वह उन्हें एक "नया मनुष्य" कहता है - अब कोई यहूदी और कोई यूनानी नहीं है - हरेक मानवीय और राष्ट्रीय फर्क़ भुला दिए गए हैं। वह उन्हें "स्वर्गीय" परिवार कहता है कि हम पिता के ईश्वरीय प्रेम का आनन्द उठा सकें।

फिर वह कहता है, "तुम परमेश्वर का भवन हो।" वह उन्हें फिर से "परमेश्वर का मन्दिर" कहता है। और अंत में, वह उन्हें मसीह की "दुल्हन" कहता है। हमें परमेश्वर का "भवन" क्यों कहा गया है? क्योंकि एक भवन एक नमूने के अनुसार बनाया जाता है। परमेश्वर का भवन बनने के लिए, पहले हमारा निर्माण एक दृढ़ और गहरी नींव - एक चट्टान पर होना चाहिए। परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमें लोगों के साथ परमेश्वर के वचन के अध्ययन में पर्याप्त समय बिताना चाहिए; वर्ना वे आत्मिक तौर पर कमज़ोर बने रहेंगे। हमें यह मालूम होना चाहिए कि हमारा काम सिर्फ प्रचार करना ही नहीं है, बल्कि लोगों को विश्वास के सत्य की बुनियादी गहराई में ले जाना है।

अप्रैल 22

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"अविश्वासी के साथ असमान जुए में मत जुतो, क्योंकि धार्मिकता का अधर्म के साथ क्या मेल? और ज्योति की अंधकार के साथ क्या संगति?" (2 कुरि 6:14)।

कई महीनों तक प्रार्थना करने के बाद, प्रभु ने मुझे एक भयजनक संदेश दिया। उसने मुझसे स्पष्ट कहा, "मैं चाहता हूँ कि तू भारत के हरेक कोने में जा, और जो भी मनुष्य मेरे नाम के कहलाते हैं, चाहे वे पढ़े-लिखे हों या अनपढ़, उन सबके हाथ में पूरा सुसमाचार (बाइबल) पहुँचा दे। उन्हें बता दे कि अगर वे मेरे नाम के कहलाते हैं, तो उनके पास बाइबल होनी चाहिए। दूसरी बात, कि उन्हें बाइबल का इस्तेमाल सिखा। तीसरी बात, कि उन्हें प्रार्थना करना, और उनकी ज़रूरतों के लिए मेरे पास आना सिखा।"

बाइबल में हम यह देखते हैं, कि प्रभु के काम के लिए एक स्वर्गीय नमूना/तरीक़ा होता है। हम किसी भी बात में अविश्वासियों के साथ सहभागिता नहीं कर सकते। प्रचारक और मिशनरी अक्सर विश्वासियों से यह कहते हैं कि उन्हें अविश्वासियों से विवाह नहीं करना चाहिए। "अगर आप एक नया जन्म पाए हुए विश्वासी हैं," वे कहते हैं, "तो यह सुनिश्चित करें कि आपका जीवन-साथी भी नया-जन्म पाया हुआ विश्वासी हो।" लेकिन 2 कुरिन्थियों 6:13-15 के ये पद एक ऐसा सत्य सिखाते हैं जो इस बात से भी आगे जाता है। यह सिर्फ विवाह के मामले तक ही सीमित नहीं है बल्कि कलीसियाई मामलों को भी शामिल करता है। अविश्वासियों के साथ मिलकर हम कैसे काम कर सकते हैं? यह असम्भव है!

हम परमेश्वर की कलीसिया का निर्माण मिले-जुले लोगों से नहीं कर सकते; ऐसा काम सफल नहीं हो सकता। हम एक अच्छी बुनियाद तभी रख सकते हैं जब स्वयं हमें प्रभु यीशु मसीह का एक गहरा और एक जीवित अनुभव होगा। वह कोने का मुख्य पत्थर है। हम प्रेरितों और नबियों की शिक्षाओं पर निर्माण करते हैं। जो कुछ हमें सिखाया जाता है, हम उसका अभ्यास करते हैं, और यह ऐलान करते हैं कि हमने उसका पूरा आज्ञापालन किया है। हमारी अपनी कल्पनाएं और तरीक़े चाहे कितने भी अच्छे क्यों न हों, लेकिन हम उनके अनुसार नहीं चल सकते! हमारी सुरक्षा सिर्फ परमेश्वर के वचन के आज्ञापालन में ही है।

अप्रैल 23

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"इसलिए अपनी और अपने पूरे झुण्ड की रखवाली करो जिसके बीच में पवित्र-आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर के झुण्ड का पोषण कर सको" (प्रेरितों 20:28-32)।

बाइबल हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए हमें एक पूरी योजना प्रदान करती है। बीते समय में जैसे प्रेरित और नबी परमेश्वर द्वारा भेजे गए थे, वैसे ही आज भी वे प्रार्थना द्वारा तैयार किए जा सकते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारी चराई कैसे होनी है, हमें अनुशासित कैसे होना है, और हमें आराधना के लिए कैसे इकट्ठे होना है, हमें एक सही तरह से परमेश्वर के वचन के अनुसार चलने की ज़रूरत होती है।

एक प्रेरित के रूप में, पौलुस की अनेक प्रकार की सेवकाई थी। उसे एक प्रेरित और एक नबी, व एक सुसमाचार-प्रचारक और चरवाहे (पास्टर) की तरह काम करना पड़ता था। परमेश्वर के सेवकों की आज यही सेवकाई है, लेकिन क्या हम इस सेवकाई को पूरा कर रहे हैं? अगर हम स्वयं यह काम नहीं कर सकते तो हम यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर ऐसे लोग खड़े करे कि उसके झुण्ड की रखवाली की जा सके।

आत्मिक तौर पर हमें मिलकर खड़े होना है। हमारी एकता में ही हमारी सुरक्षा है। जब कलीसिया के रूप में हम एक बने रहते हैं, तब शैतान के हमलों का एक ज़्यादा बेहतर तरीके से सामना कर सकते हैं। आप अकेले खड़े नहीं रह सकते। यह हो सकता है कि परमेश्वर ने आपको सामर्थ्य के साथ इस्तेमाल किया हो, और इसके लिए हम परमेश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं, लेकिन याद रखें कि जब शैतान आप पर हमला करता है तब आप अकेले ही पीड़ा सहते हैं! हम सिर्फ एक होकर ही शैतान को हरा सकते हैं न ज्ञान से, न चमत्कारों से, न विज्ञान से , न धन से, और न किसी दूसरे तरीके से, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ्य में एक साथ खड़े रहने द्वारा ही हम उसे हरा सकते हैं।

आत्मिक एकता सिर्फ कलीसिया में ही सम्भव होती है जहाँ हमें सबसे पहले एक परिवार के रूप में, फिर सहकर्मियों के रूप में, फिर प्रभु यीशु मसीह के सहयोगियों के रूप में इकट्ठा किया जाता है - जो एक ही देह में अनेक अंग होते हुए भी एक ही सिर के साथ जुड़े हैं। यह ज़रूरी है कि हम एक कलीसिया के रूप में इकट्ठे रहें, क्योंकि सिर्फ तभी हम कलीसिया को दिए गए दान-वरदानों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं; प्रेरित, नबी, शिक्षक और पास्टर - सब एक साथ मिलकर काम करते हुए और एकता में बने हुए।

अप्रैल 24

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"उन्हें इस क्रम में आगे बढ़ना है: हरेक पुरुष अपने स्थान में अपने झण्डे के पास चले" (गिन. 2:17)।

जब मैं एक सिख पुरुष था, तब ऐसा लगता था कि परमेश्वर कहीं बहुत दूर है, लेकिन अब मैं कह सकता हूँ कि वह मेरे बिलकुल पास है! मैं जानता हूँ कि उसका जीवन मुझमें से प्रवाहित हो रहा है! परमेश्वर के पास हरेक विश्वासी के लिए एक योजना है। दूसरे लोगों को मेरे बारे में फैसले करने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे वहीं रहना चाहिए जहाँ परमेश्वर ने मुझे नियुक्त किया है। मुझे अपनी बुलाहट का पता है। परमेश्वर की स्वर्गीय योजना में, मुझे अपने स्थान और अपनी अवस्था का पता है। परमेश्वर की योजना में क्या आपने अपना स्थान पा लिया है? क्या आप सच्चाई और आनन्द के साथ यह कह सकते हैं कि मुझे अपनी सेवकाई मालूम है?

जब हम परमेश्वर को "हाँ" कह देते हैं, तब हमें प्रशिक्षित करने, हमें सुसज्जित करने, और हमें लेकर आगे बढ़ने की ज़िम्मेदारी परमेश्वर की हो जाती है। शुरू में मेरे लिए यह एक चमत्कारिक बात थी, क्योंकि मुझमें बहुत सी कमियाँ थीं! यह सिर्फ कृपा से होता है। मैं एक बात जानता हूँ: मैं उसकी योजना में हूँ। अगर मुझे एक दृढ़ लेवी होना है, तो मुझे एक दृढ़ चट्टान पर खड़ा होना होगा। मेरे हृदय, मेरे जीवन और मेरी सेवकाई में उसका पहला स्थान है। हरेक विश्वासी को वह होना और वहाँ होना चाहिए जो परमेश्वर ने उसके लिए तय किया है।

सबसे पहले सीखने वाली बात परमेश्वर की स्तुति करना है। हमें सुबह से रात तक परमेश्वर की स्तुति करते रहना चाहिए! प्रभु जब आपको उसका शब्द दे, तब आपको उसका प्रवक्ता होना चाहिए। प्रभु आपसे जो भी माँग करे, उसे पूरा करने से कभी पीछे न हटें। हम उसे स्वेच्छा से नहीं देते, इस वजह से ही हम उसकी स्तुति करना भी नहीं जानते। परमेश्वर भरपूरी से देता है। वह कभी ऊँघता नहीं है; वह कभी भूलता नहीं है; वह मेरी ज़रूरत को जानता है, और सही समय पर वह उसे पूरी करता है।

मेरी 30 साल की सेवकाई में मुझे ऐसा एक भी समय याद नहीं है जब परमेश्वर ने मुझे निराश किया हो। परमेश्वर की तरफ से मिलने वाला थोड़ा, मनुष्यों की तरफ से मिलने वाले ज़्यादा से बहुत ज़्यादा होता है। हमें यह प्रार्थना करते रहना चाहिए कि परमेश्वर हमें सच्चे लेवी बनाए – दृढ़ता से जुड़े हुए, परमेश्वर के हृदय के पास रहते हुए, और जीवित परमेश्वर के साथ एक अटूट सहभागिता का आनन्द मनाते हुए।

अप्रैल 25

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"वह बिना किसी रुकावट के निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह के विषय में शिक्षा दिया करता था" (प्रेरितों. 28:31)।

मैं चाहता हूँ कि आप इस पद के अंतिम भाग पर ध्यान दें। "बिना किसी रुकावट", या "बिना किसी बाधा।" मसीही जीवन की तुलना एक बाधा-दौड़ से की जा सकती है।

प्रेरितों के काम के 28 अध्याय पढ़ने के बाद, मैंने कम-से-कम ऐसी 28 बाधाएं पाई हैं जिन पर परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमें प्रबल होना चाहिए: और विभिन्न स्थानों में परमेश्वर का आत्मा उसके सेवकों में एक अद्‌भुत और सिद्ध रूप में काम करता रहा था कि उनके रास्ते में किसी मनुष्य ने कोई रुकावट पैदा नहीं की थी, और वे इनमें से हरेक बाधा पर प्रबल हुए थे।

परमेश्वर की सेवा में जब हम उसकी सनातन उपस्थिति के प्रति जागरूक रहेंगे, तो हम उसके सामने हरेक पहाड़ को गिरता हुआ देखेंगे। अब हम परमेश्वर के सेवकों के सामने रखी कुछ बाधाओं को देखेंगे, और यह कि कैसे उन्होंने परमेश्वर की कृपा बाधाओं को पार किया था और पहाड़ों को गिरते हुए देखा था। अब हम कुछ बाधाओं को देखेंगे:

प्रेरितों के काम 1:10 - "जबकि वह जा रहा था, तो वे उसे जाते हुए आकाश की ओर एकटक देख रहे थे, और देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने उनके पास आ खड़े हो गए।"

यह उनके सामने आई पहली बाधा थी जिस पर उन्हें जयवंत होना था। प्रभु यीशु मसीह अब स्वर्ग पर उठा लिया गया था। वह चला गया था।

अप्रैल 26

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ, तुम इसी नगर में ठहरे रहना" (लूका 24:49)।

प्रभु ने उन्हें कुछ देर पहले ही यह आधिकारिक आज्ञा दी थी कि उन्हें यरूशलेम, सामरिया और पृथ्वी के छोर तक उसका साक्षी होना था। वे यह जानते थे कि प्रभु उसके वचन के प्रति गंभीर था, लेकिन उसने उन्हें अनुसरण करने के लिए कोई विस्तृत निर्देश - कोई योजना, कोई नक़्शा नहीं दिया था! वह कोई योजना बताए बिना ही चला गया था। उसने उनसे सिर्फ इतना कहा कि वे तब तक यरूशलेम में ही रहें जब तक उन्हें स्वर्ग से पवित्र-आत्मा की सामर्थ्य प्राप्त न हो जाए। संख्या में वे बहुत कम थे; यह एक बड़ी समस्या थी। लेकिन इसके अलावा, उनके ख़िलाफ तीन और ऐसे पहाड़ खड़े थे जिनके ऊपर उन्हें प्रबल होना था।

- यहूदी जाति जो उनसे घृणा करती थी।
- राजनैतिक रोमी शासक जो उन्हें अपने बंधनों में रखना चाहते थे।
- यूनानी लोग और उनकी मूर्ति-पूजक संस्कृति।

हम परमेश्वर से जब भी एक संदेश या आज्ञा पाते हैं, तो हमारा सबसे पहले यही जवाब होता है, "हम कैसे शुरू करें?" आप यह भी महसूस कर सकते हैं कि वह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और "हमारा मामला" दूसरों से कुछ अलग है। इसलिए हमें कुछ स्पष्ट निर्देश मिलना चाहिए। लेकिन परमेश्वर इस तरह काम नहीं करता। वे इस बात से बहुत विचलित हो गए थे कि वह चला गया था; कि उनका प्रभु यीशु अब जा चुका था।

उन्हें स्पष्ट शब्दों में बता दिया गया था कि प्रभु यीशु मसीह वापिस आएगा, और उन्हें सिर्फ विश्वास और प्रतिक्षा करनी थी। उन्हें जाकर सिर्फ इंतज़ार करना था, और उन्हें इंतज़ार करने के लिए कहा गया था, और परमेश्वर के तय किए हुए समय में, वह उन्हें बताने वाला था कि उन्हें आगे क्या करना था।

अप्रैल 27

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जिन लोगों ने उसका वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन उनमें लगभग 3000 लोग शामिल हो गए" (प्रेरितों. 2:41)।

सबसे पहले हमें परमेश्वर के समय का इंतज़ार करना पड़ता है। हमें धैर्य से इंतज़ार करना पड़ता है, क्योंकि वह अपने ठहराए हुए समय के अनुसार ही काम करता है। जब तक हमें प्रभु की तरफ से आगे कूच करने का आदेश न मिले, हमें आगे नहीं बढ़ना चाहिए; और मनुष्यों के कहने से तो हर्गिज़ आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

आरम्भ में, शिष्यों का यह सवाल था: "हम बहुत थोड़े से हैं!" लेकिन दूसरे ही अध्याय में, बात उलट कर यह हो गई कि "हम बहुत ज़्यादा हैं!" अब उनके सामने दूसरी बाधा आई: "उनकी देखभाल कैसे करें; सब कुछ सुव्यवस्थित कैसे हो; अनुशासन कैसे बनाए रखें!" अगला पद हमें ईश्वरीय जवाब देता है, और तब से ही यह कलीसिया को चलाने का वह सिद्धान्त बन गया जिसके अनुसार परमेश्वर काम करता है। "वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में मग्न रहे" (पद 42)।

"और वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने में मग्न रहे।" वह परमेश्वर का शुद्ध वचन था। इस वजह से ही हम लोगों को बाक़ी दूसरी पुस्तकें नहीं बल्कि परमेश्वर का वचन पढ़ने के लिए ही मजबूर करते हैं। विश्वासियों को परमेश्वर के वचन से परिचित होना चाहिए। उन्हें परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर की योजना के बारे में सीखना चाहिए। इसके बाद संगति है। प्रेरित सच्ची संगति को प्रोत्साहित करते थे, क्योंकि संगति विश्वासियों का बल होती है। एक-दूसरे के साथ परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की बात बाँटने से हम एक-दूसरे को उत्साहित करते हैं और आत्मिक रूप में उन्नत होते हैं। उसके बाद प्रेरितों ने फौरन ही रोटी तोड़ना शुरू कर दिया था।

जिन गाँवों में हमने कुछ समय पहले ही आराधना मण्डलियाँ शुरू की हैं, हमें यह देख कर बहुत आनन्द हुआ कि उन सभी में विश्वासी हर्ष के साथ आत्मिक रूप में बढ़ रहे हैं। शुरू में तो वे बाइबल भी नहीं पढ़ सकते थे, लेकिन अब वे कितनी प्रभावशाली *प्रार्थना* करते हैं! और कितनी प्रभावशाली *आराधना* करते हैं! और हालांकि वे ग़रीब हैं, फिर भी उन्होंने आनन्द से देना सीख लिया है। यह इसलिए है क्योंकि उन्होंने प्रभु की आराधना करने का रहस्य जान लिया है। वे खुले-मैदान की सभाओं में भी साहस के साथ साक्षी देते हैं; और इसकी वजह सिर्फ यह है कि उन्होंने आराधना में प्रभु को देख लिया है। इसी तरह, वे एक-दूसरे के लिए और एक-दूसरे के साथ प्रार्थना करना भी सीखते हैं।

अप्रैल 28

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"मेरा परमेश्वर अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हरेक ज़रूरत पूरी करेगा" (फिलि. 4:19)।

अब हम पहली बाधा के लिए प्रेरितों के काम 3:6 को देखते हैं: "तब पतरस ने कहा, 'चाँदी और सोना तो मेरे पास नहीं है'।" कोई पैसा नहीं है! परमेश्वर के एक जन के द्वारा किया जाने वाला यह कैसा अंगीकार है! लेकिन पतरस ने यह बात किसी तरह के संकोच के साथ नहीं कही थी। पतरस आनन्द से भरा हुआ था, क्योंकि उसके पास इसका जवाब पहले से ही था: "लेकिन जो मेरे पास है, वह मैं तुझे देता हूँ: 'यीशु मसीह नासरी के नाम में चल-फिर!" हम भी प्रभु यीशु मसीह के नाम के अधिकार और सामर्थ्य का इस्तेमाल कर सकते हैं।

जब परमेश्वर ने उसकी सेवा के बारे में मुझसे पहली बार बात की थी, कि अगर मैं उसका सेवक होना चाहता हूँ, तो मुझे पंजाब में अपनी विरासत के हरेक दावे को त्याग देना होगा; मुझे किसी संगठन या मिशन के साथ न जुड़ना होगा; और मुझे अपनी भौतिक ज़रूरत के बारे में किसी को कोई संकेत भी नहीं देना होगा। उसके बाद मुझे सिर्फ परमेश्वर की ओर ही देखना था। हालांकि मुझे विश्वास से जीने के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था, फिर भी मैंने इन शर्तों को सहर्ष मान लिया। ऐसे विश्वास के साथ मैं भारत वापिस लौट आया था। सवाल यह होता है: क्या आपको यक़ीन है कि आप परमेश्वर की इच्छा में हैं? क्या आप परमेश्वर की योजना में हैं? अगर ऐसा है, तो बात का फैसला हो चुका है, और अब परमेश्वर वचनबद्ध हो गया है!

अध्याय 4 में, हम एक अलग तरह की चौथी बाधा पाते हैं (पद 16): प्रेरितों को यीशु के नाम में प्रचार करने से रोक दिया गया था। लेकिन उन्हें मिलने वाली धमकियों के बावजूद प्रेरित साहस के साथ पवित्र-आत्माा में यह साक्षी देते रहे: "यह तो हमसे हो नही सकता कि जो हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।" वे उन बातों को मान रहे थे जो मनुष्यों की नहीं परमेश्वर की नज़र में सही थीं। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, कि क्या आपके लिए किसी ऐसी बात के बारे में चुप रहना सही है जिसे परमेश्वर ने आप पर प्रकट कर दिया है?

अप्रैल 29

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"वह अपने दूतों को तेरे विषय आज्ञा देगा।" भजन 91:11)

पाँचवीं बाधा के लिए हम प्रेरितों के काम 5:17 को देखते हैं: महासभा ने अब धमकियों को पूरा कर दिया था और प्रेरितों को कारावास में डलवा दिया था। परमेश्वर हमें बचाने के लिए हमेशा अलौकिक तरीक़े इस्तेमाल नहीं करता है, लेकिन इस बार उसने ऐसा किया। "रात में प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बंदीगृह के द्वार को खोल दिया, और उन्हें बाहर लाकर कहा, 'जाओ, मन्दिर में खड़े होकर लोगों को इस जीवन का सम्पूर्ण संदेश सुनाओ'" (पद 19)।

अब अगले अध्याय में, हम कुड़कुड़ाहट की छठी बाधा को देखेंगे। जब भी परमेश्वर का एक काम बढ़ता है, तो हरेक मण्डली में कुड़कुड़ाने वाले ज़रूर उठ खड़े होंगे। लेकिन प्रेरितों ने यह जान लिया था कि सबसे पहले उनकी वचनबद्धता वचन और प्रार्थना के प्रति थी, और वह छोड़कर उन्हें खाने-पीने की सेवा में नहीं लग जाना था। अब हम झूठे दोष लगाए जाने की सातवीं बाधा देखते हैं (प्रेरितों. 7:54,55)।

परमेश्वर का यह जन स्तिफनुस पवित्र-आत्मा से भरा हुआ था। उसने उन्हें वह सब करने दिया जो वे करना चाहते थे। उसने उनके द्वारा लगाए गए झूठे आरोपों की कोई परवाह नहीं की। और उसने उनका कोई विरोध नहीं किया। उसने यह कहते हुए उन्हें क्षमा कर दिया: "प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!" अब हम आगे बढ़कर अध्याय 8 के पद 14 में रखी बाधा को देखते हैं। यहाँ एक स्पष्ट रूप में राष्ट्रीयता की बाधा प्रकट होती हुई नज़र आती है। शैतान बड़ी चालाकी से जातीयता की बड़ी बाधा खड़ी कर देता है। हमें भेदभाव करने के प्रति सचेत रहना चाहिए। राष्ट्रवाद के घमण्ड में पड़ें। हमने नियमानुसार काम किया है कि हम परमेश्वर का संदेश अंग्रेज़ी में देंगे और जितने अनुवादकों की भी ज़रूरत होगी, हम उतने अनुवादको को इस्तेमाल करेंगे कि हम एक-साथ रहने और एक साथ काम करने की एकता को बनाए रख सकें।

अप्रैल 30

परमेश्वर की महिमा के रहस्य

"जब मैंने उसे देखा तो मृतक के समान उसके पैरों पर गिर पड़ा। तब उसने अपना दाहिना हाथ मेरे ऊपर रखा और कहा, 'भयभीत न हो; मैं ही प्रथम, अंतिम और जीवित हूँ" (प्रका. 1:17)।

जैसे-जैसे हम अंत का समय पास आता देख रहे हैं, हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना चाहिए। इस पुस्तक का संदेश ख़ास तौर पर उन लोगों के लिए लिखा गया है जो जय पाना चाहते हैं। इस पुस्तक को सात भागों में बाँट लें। तब प्रभु यीशु मसीह आपको उसकी महिमा की सात-स्तरीय झलक दिखाएगा: पहला अध्याय उसके व्यक्ति की महिमा की झलक दिखाता है। अध्याय 2-3 पृथ्वी पर उसकी कलीसिया की महिमा की झलक दिखाते हैं। अध्याय 4-5 में, हम स्वर्गीय कलीसिया की महिमा की झलक पाते हैं। अध्याय 6-9 उसके सिंहासन की महिमा की झलक दिखाते हैं। अध्याय 10-19 उसके न्याय की महिमा की झलक दिखाते हैं। अध्याय 20 का अंतिम भाग श्वेत महासिंहासन की महिमा दर्शाता है। और अध्याय 21,22 में नई सृष्टि की महिमा की सात-गुणी झलक पाते है।

यह पुस्तक महिमा की पुस्तक है - प्रभु यीशु मसीह की महिमा। वह शांति का राजकुमार और परमेश्वर की महिमा भी है। सबसे पहली बात हम यही देखते हैं कि प्रभु ने यूहन्ना को स्वयं अपना प्रकाशन दिया। क्या आपका मन उदास है? क्या आप निराशा में डूबे हुए हैं? क्या आप मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। प्रभु से कहें कि वह आपको उसकी महिमा की एक नई झलक दिखाए।

जब आप प्रभु को आमने-सामने देख लेंगे, तो वह आपके हरेक सवाल का जवाब देगा। इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि आपकी समस्या कितनी जटिल हैं, क्योंकि आप जैसे उसकी और उसकी महिमा की एक नई झलक पाएंगे, तो वे समस्याएं लुप्त हो जाएंगी। तब आप भी यूहन्ना की तरह उसके चरणों में गिर पड़ेंगे।

मई 1

पुनः प्राप्ति के रहस्य

“अत: दाऊद वह सब कुछ छुड़ा लाया जो अमालेकी लूट ले गए थे... उनमें से उनका कुछ न खोया वरन् उनकी हरेक छोटी-बड़ी वस्तु वापिस आ गई” (1 शमू. 30:18,19)।

दाऊद और उसके साथियों का बड़ा नुक़सान हो गया था। उनके घर जला दिए गए थे, और अमालेकी उनकी स्त्रियों, बच्चों और सब माल-सामान ले गए थे। उनकी यह हानि इतनी बड़ी थी कि बड़े दृढ़ पुरुष होने के बावजूद वे सभी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे थे। ये शक्तिशाली योद्धा ऐसा बिलख-बिलख कर रोए थे कि उनके आँखों में आँसू ही नहीं बचे थे (पद 4)।

उनके आँसू सूख गए थे, उनके गले जल रहे थे, उनके सिर दु:ख रहे थे और वे और ज़्यादा रोने लायक़ भी नहीं बचे थे। उनका नुक़सान बहुत बड़ा था, और मानवीय रीति से कहें तो उसकी पुन:प्राप्ति की कोई आशा नहीं थी।

लेकिन परमेश्वर की मदद और कृपा से उन्होंने अपना खोया हुआ सब कुछ पुन:प्राप्त कर लिया बल्कि इतना ज़्यादा पा लिया कि अपने सालों पुराने कर्ज़ भी चुका दिए। उन्हें रहने की जगह और खाना दिया गया था। अब दाऊद ने उन्हें उपहार भेजकर उनकी दया के लिए अपना आभार व्यक्त किया और अपना कर्ज़ चुकाया। हमारी खोई हुई किसी चीज़ को वापिस पा लेने में एक अद्भुत आनन्द होता है, ख़ास तौर पर तक जबकि हमें उसके दोबारा मिलने की कोई आशा नहीं होती।

हमारी कमियों और नाकामियों की वजह से हम बहुत सा आत्मिक नुक़सान उठाते हैं। ऐसे बहुत लोग हैं जिन्होंने अपना आनन्द खो दिया है। और संकट और परीक्षाओं की वजह से कुछ लोगों ने तो अपना विश्वास ही खो दिया है। कुछ ऐसे हैं जिनकी चेतना में से परमेश्वर की उपस्थिति ही खो गई है। कुछ ऐसे हैं जिन्होंने अभी तक परमेश्वर की इच्छा को जानने का रहस्य नहीं जाना है। अनेक ऐसे हैं जिन्होंने अपनी उस सामर्थ्य को खो दिया है जो उन्होंने नया जन्म पाते समय प्राप्त की थी। फिर दूसरे ऐसे हैं जिन्होंने अपना पहला-सा प्रेम छोड़ दिया है।

मई 2

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"प्रभु परमेश्वर ने उसे अदन की वाटिका में से बाहर निकाल दिया कि वह उसी भूमि पर खेती करे जिसमें से उसे निकाला गया था" (उत्पत्ति 3:23,24)।

ऐसे कितने हृदय हैं जिनकी कुछ-न-कुछ आत्मिक हानि हुई है। वे अब पहले की तरह अपनी बाइबल से आनन्दित नहीं होते। उनमें प्रार्थना का अब पहले जैसा बोझ नहीं है। कुछ सबके सामने रोते हैं और कुछ छुप कर रोते हैं लेकिन उनमें उसे पुनःप्राप्त करने का विश्वास नहीं है जो खो गया है। वे उसे पुनःप्राप्त करना चाहते हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि उसे कैसे वापिस हासिल किया जा सकता है, और इससे भी ज़्यादा बुरी बात यह है कि अब उसे पुनःप्राप्त करने की उनमें कोई आशा ही नहीं बची है। वे अपने मन में कहते हैं, "शायद मुझे दोबारा पहले जैसा आनन्द और शान्ति नहीं मिलेंगे।"

यह हो सकता है कि वे यह कह रहे हों: "अब मैं पहले की तरह प्रभु की सेवा दोबारा न कर सकूँगा।" आपने आत्मिक रीति से चाहे जो कुछ भी खो दिया हो, आपके लिए आशा है। आपके नुक़सान की भरपाई हो सकती है। बल्कि आपने जो कुछ खोया है, आप उससे भी ज़्यादा प्राप्त कर सकते हैं।

आरम्भ में आदम ने हालांकि सब कुछ खो दिया था, फिर भी मनुष्य हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपना खोया हुआ सब दोबारा हासिल कर सकता है। उत्पत्ति 1:28 में, परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखा था। उसने उसे पूरी पृथ्वी पर अधिकार दिया था और सारी मछलियों, पक्षियों और पशुओं को उसके वश में रखने की सामर्थ्य दी थी। एक बड़े वास्तविक रूप में वह पूरी पृथ्वी का राजा था। फिर भी अध्याय 3 में हम उसे एक चोर की तरह बाहर निकाले जाते हुए देखते हैं, और परमेश्वर का वचन कहता है कि स्वयं परमेश्वर ने उसे बाहर निकाला था। आरम्भ में वह परमेश्वर से ऐसे बात करता था जैसे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से बात करता है, लेकिन अब वह परमेश्वर की उपस्थिति से निकाला जा रहा था। उसे अदन की वाटिका के उसके घर में से निकाला जा रहा था और उसे अपने सब अधिकार छोड़कर वहाँ से जाना था। यह कितना ज़बरदस्त नुक़सान था! पहले मनुष्य आदम ने जो नुक़सान उठाया था, कोई मनुष्य उसका अनुमान नहीं लगा सकता। लेकिन प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 व 22 में, हम मनुष्य को एक ऐसी नई सृष्टि पर राज करता हुआ पाते हैं जो पुरानी सृष्टि से कहीं बढ़कर महिमामय है।

मई 3

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"अपने वस्त्र नहीं अपने मन ही फाड़कर अपने प्रभु परमेश्वर की ओर फिरो" (योएल 2:13)।

उत्पत्ति 3 में जो कुछ मनुष्य ने खोया था, परमेश्वर ने उसे उससे बहुत बढ़कर दिया है। परमेश्वर ने पुनःप्राप्ति का यह काम सूली की सामर्थ्य द्वारा शुरू किया है। जैसा कि कलवरी की बलि के द्वारा प्रकट किया गया है, हरेक पापी का सारा नुक़सान और हरेक विश्वासी का पूरा नुक़सान परमेश्वर की कृपा और उसकी मदद से पुनःप्राप्त किया जा सकता है।

क्या आप परमेश्वर के किसी काम के हैं? क्या आप यह कह सकते हैं कि परमेश्वर ने आपके जीवन में से कुछ इस्तेमाल किया है? अपने प्रति ईमानदार और सच्चे हों।

या आप यह चाहते हैं कि आपके पाप क्षमा किए जाएं? यीशु मसीह इस जगत में आया, मर गया, और फिर जी उठा, कि हमारा जो भी नुक़सान हुआ है, हम उसे पुनःप्राप्त कर सकें। हालांकि हमने इतने सालों तक अपने जीवन को बर्बाद किया है, अब हम फिर से परमेश्वर के सहकर्मी और भागीदार हो सकते हैं (1 कुरि. 3:9)।

आपके हरेक पाप से हुए नुक़सान की भरपाई की जा सकती है। अपने पाप की वजह से आपने अपने नाम को, अपने परिवार के नाम को, और अपने परमेश्वर के नाम को बदनाम किया है। अपने पापों के द्वारा आपने अपना जीवन, अपना स्वास्थ्य और अपनी देह को बर्बाद किया है। अपने पापों की वजह से आप परमेश्वर से दूर हैं। आपके अन्दर परमेश्वर की बातों की बिलकुल कोई समझ नहीं है। आप परमेश्वर के सम्मुख एक मूर्ख हैं और आप जो कुछ भी कर रहे हैं वह सब व्यर्थ है। आप एक आशा-रहित दशा में ही मर जाएंगे।

क्या आप बदलना चाहते हैं? तो हमारे पास आपके लिए एक संदेश है। प्रभु यीशु मसीह के चरणों में आ जाएं। एक पश्चातापी हृदय के साथ, अपने पापों के लिए लज्जित होते हुए आएं। आज ही के दिन प्रभु आपके पापों को क्षमा कर देगा और आपको बदल देगा। वह जगत में आपको ढूंढने और बचाने के लिए ही आया था।

मई 4

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूँगा, और उनसे खुलकर प्रेम करूँगा।" "अपने प्रभु परमेश्वर के पास लौट आ" (होशे 14:4,1)।

31 साल पहले मेरा जीवन बर्बाद हो रहा था; पूरी तरह से बेकार हो रहा था। उस समय मैं एक लज्जा, पराजय और सूखेपन का जीवन जी रहा था, लेकिन अब मैं साक्षी दे सकता हूँ कि जो कुछ मैं अब बोलता और करता हूँ, उसका एक स्थाई और अनन्त मूल्य है। अगर मैं कुछ ग़लत करता हूँ तो मेरा प्रभु मुझे सुधारने के लिए, नम्र व दीन करने के लिए और मुझे वापिस लौटा ले आने के लिए मौजूद है।

दाऊद ने उसके जीवन-काल में चार बड़े नुक़सान उठाए थे, और विश्वासियों के रूप में हम भी अपने जीवन-काल में बड़े नुक़सान उठाते हैं। परमेश्वर की कृपा और उसकी मदद से दाऊद अपने सभी नुक़सानों की भरपाई कर सका था। और उसने न सिर्फ वह पाया जो उसने खोया था, बल्कि उससे कहीं बढ़कर पाया। प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने वाले होते हुए हम भी शक, भूल, अंधेपन और हारने की वजह से बहुत से नुक़सान उठाते हैं, लेकिन परमेश्वर के वचन में से हम यह देख सकते हैं कि कैसे एक विश्वासी में हरेक आत्मिक नुक़सान की भरपाई हो सकती है।

परमेश्वर के वचन के लिए आपकी भूख खो गई है, प्रार्थना करने के लिए आपका बोझ खो गया है, परमेश्वर के वचन की समझ खो गई है, और अब आप परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्द मनाना नहीं जानते। परमेश्वर के घर में आपने अपने बहुत से विशेषाधिकार खो दिए हैं। आप खुलकर अपने सारे नुक़सान के बारे में परमेश्वर से कह दें और फिर ये प्रार्थना करें: "अब, हे प्रभु, तू मेरे सारे नुक़सान की भारपाई करने में मेरी मदद कर।" परमेश्वर का वचन आपको यह तसल्ली देता है कि जितना आपने खोया है, आप उससे ज़्यादा हासिल कर लेंगे।

आपका जितना नुक़सान हुआ है, प्रभु आपको उससे ज़्यादा देगा। लेकिन आपको सच्चा और ईमानदार होकर उसे अपने सारे नुक़सान के बारे में बताना होगा। परमेश्वर के वचन में से आगे पढ़ते हुए हम यह देखेंगे कि दाऊद ने कैसे अपने नुक़सान की भरपाई की और फिर यह कि कैसे हम भी वह सब पुन:प्राप्त कर सकते हैं जो हम खो चुके हैं।

मई 5

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"आनन्दित और मग्न हो, क्योंकि प्रभु ने महान् काम किए हैं" (योएल 2:21)।

पवित्र-शास्त्र हमें बताता है कि आत्मिक तौर पर हमने जो कुछ खो दिया है, उसे पुनःप्राप्त किया जा सकता है। वह असम्भव लग सकता है, लेकिन परमेश्वर की मदद से, उसकी कृपा और उसके वचन से, यह पुनःप्राप्ति हो सकती है।

यह सहज पाठ हमें *2 राजा 6:1-7* में युवा नबियों की कहानी में सिखाया गया है। वे युवक एलीशा के साथ अध्ययन कर रहे थे, और उन्हें जगह कम पड़ रही थी। उन्हें एक बड़ा भवन बनाना था जिसके लिए उन्हें लकड़ी की ज़रूरत थी। लकड़ी काटने उन्हें यर्दन के पार जाने की ज़रूरत थी, इसलिए वे सब इकट्ठे होकर वहाँ गए। वे सब हालांकि युवा ही थे और नबियों के पुत्र थे, फिर भी उनमें इतनी समझ थी कि वे एलीशा को अपने साथ ले गए थे *(पद 3)।*

आज का युवा वर्ग तो यही समझता है कि वे अपने बुज़ुर्गों से ज़्यादा जानते हैं। इसलिए वे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के हल के लिए वृद्ध पुरुषों व स्त्रियों के पास नहीं जाना चाहते। लेकिन इन युवकों में समझ थी और उन्होंने एलीशा को उनके साथ आने का निवेदन करने द्वारा अपनी इस समझदारी का परिचय दिया। जब वे लकड़ी के लिए वहाँ पेड़ काट रहे थे, तो एक युवक की कुल्हाड़ी की फाल नदी में गिर गई *(पद 5)।* वह कुल्हाड़ी उसकी नहीं थी, और वह उसे उसके मालिक को लौटाना चाहता था। एक समझदार युवक होते हुए, वह अन्य युवाओं के पास न जाकर एलीशा के पास गया जो एक वृद्ध जन था *(पद 6)।*

उसने कहा, "हाय, मेरे स्वामी मेरी लापरवाही की वजह से मेरी कुल्हाड़ी की फाल नदी में गिर गई है। मैं वह किसी से माँग कर लाया था और मुझे वह उसे लौटानी है। हे गुरु, बता मैं अब क्या करूँ?" एलीशा ने कहा, "जहाँ वह गिरी है, मुझे वह जगह दिखा।" तब उस युवक ने उसे वह जगह दिखाई। एलीशा ने एक पेड़ की डाल तोड़कर पानी में डाली और तुरन्त ही कुल्हाड़ी की फाल पानी की सतह पर आकर तैरने लगी। यह एक साधारण कहानी है, लेकिन इसमें एक गहरा अर्थ है जिसमें हम यह सीखते हैं कि हरेक आत्मिक हानि को पुनःप्राप्त किया जा सकता है।

मई 6

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"प्रभु परमेश्वर के नाम की स्तुति करो जिसने अद्भुत काम किए हैं, और तब मेरे लोग कभी लज्जित न होंगे" (योएल 2:26)।

यह ध्यान रखें, कि आप जब भी जाएं और जहाँ भी जाएं, तो प्रभु यीशु मसीह को, सच्चे एलीशा को, अपने साथ लेकर जाएं। दूसरी बात, जब आपकी कुछ हानि हो जाए, तो उसे मान लेने में शर्मिन्दगी महसूस न करें। अपनी ग़लती को फौरन स्वीकार कर लें, और अपनी भूल और शर्म को न छुपाएं। और मदद पाने के लिए दूसरों के पास भी न जाएं बल्कि सीधे प्रभु यीशु मसीह के पास जाएं। आपकी यह प्रार्थना हो: "हाय, मेरे स्वामी, अब मैं क्या करूँ?" जहाँ वह नुक़सान हुआ है, मसीह को आपको उस जगह पर ले जाने दें। आपके अन्दर यह देखने की इच्छा और तैयारी हो कि परमेश्वर आपकी मदद कैसे करता है। एलीशा द्वारा पेड़ में से तोड़ी गई लकड़ी प्रभु यीशु मसीह की सूली के बारे में बताती है। हमारे पापों के लिए वह पेड़ पर लटका और हमारे लिए वह मारा गया, और उसी सूली के द्वारा हमारी हानि की पुनःप्राप्ति होती है।

हम विश्वास से अपने जीवन में सूली को लागू करते हैं, और उसके द्वारा हम अपने सारे नुक़सान की भरपाई होते हुए देखेंगे।

इस सामान्य नियम को याद रखें। सबसे पहले उसे वह जगह दिखाएं जहाँ से आपके जीवन में वह नुक़सान होना शुरू हुआ था, और उस जगह पर जाकर यह कहें: "हाँ, प्रभु, उस दिन और उस जगह मैंने एक मूर्ख जैसा व्यवहार किया था, और इस वजह से ही मेरे जीवन में यह नुक़सान है।" अगर आप इस अंगीकार के साथ प्रभु के पास जाएंगे, तो सूली की सामर्थ्य द्वारा, तो वह हरेक नुक़सान की भरपाई करने में आपकी मदद करेगा। सूली परमेश्वर की सामर्थ्य है, उसमें विश्वास ज़रूरी है – एक सहज और जीवित विश्वास। हमारा प्रभु हमारे साथ है। उसने कहा: "देखो, मैं युग के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।" उसके पास जाने में संकोच न करें। उसे अपनी हानि के बारे में बताएं। यह विश्वास करें कि वह आपकी जगह सूली पर मरा है कि उन नुक़सानों की भरपाई करने में आपकी मदद कर सके।

मई 7

पुनः प्राप्ति के रहस्य

“वे शीघ्र ही उसके कामों को भूल गए; वे उसकी सम्मति के लिए न ठहरे” (भजन. 103:13)।

आपकी हानि चाहे कितनी भी बड़ी हो और उसकी वजह चाहे जो भी हो, उसे पुनःप्राप्त किया जा सकता है, और असल में, पुनःप्राप्ति में हम अपनी हानि से भी बढ़कर प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन यह ज़रूरी कि हम परमेश्वर के वचन और उसके उन ईश्वरीय नियमों का पालन करने के लिए तैयार रहें जिन्हें कोई मनुष्य नहीं बदल सकता। हालांकि दाऊद एक अच्छा, समझदार और दयालु राजा था, और एक ऐसा पुरुष था जो परमेश्वर के मन के अनुसार था, फिर भी चार बार शैतान के धोखे में फँसकर उसकी बड़ी हानि हुई थी। फिर भी परमेश्वर की मदद से, और उसकी कृपा से उसने सब पुनःप्राप्त कर लिया था। पहली बार यह 1 शमूएल 29:1-4 में हुआ था।

दाऊद शाऊल के ख़िलाफ पलिश्तियों की सेना में शामिल होना चाहता था। शाऊल दाऊद का शत्रु था जिसने कई बार दाऊद को इसलिए मार डालना चाहा था क्योंकि परमेश्वर ने शाऊल की जगह दाऊद को राजा होने के लिए चुन लिया था।

पलिश्तियों के प्रधान शाऊल के ख़िलाफ युद्ध करने के लिए इकट्ठे हुए। दाऊद उनके साथ गया लेकिन उन्होंने दाऊद पर भरोसा नहीं किया, और विवश होकर उसे वापिस लौटना पड़ा था। दाऊद भी जानता था कि शाऊल का शमूएल द्वारा राजा होने के लिए अभिषेक किया गया था, और हालांकि शाऊल ने परमेश्वर के वचन को तोड़ा था, फिर भी वह परमेश्वर का अभिषिक्त जन था। इस वजह से ही परमेश्वर ने दाऊद को उसे छूने नहीं दिया था, लेकिन दाऊद अधीर हो गया था। दाऊद यह जानता था कि अनेक अवसरों पर परमेश्वर उसकी मदद करने के लिए उसके साथ रहा था, फिर भी इस बार परमेश्वर के परामर्श बिना ही वह पलिश्तियों के साथ जा मिला था।

मई 8

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, और उसने उससे कहा, 'पीछा कर, क्योंकि तू उन्हें निश्चय जा पकड़ेगा, और निस्संदेह सबको छुड़ा लेगा" *(1 शमू. 30:8)।*

जब दाऊद और उसके साथी सिकलग लौटे, तो उन्होंने अपने घरों को जला हुआ पाया। उन्होंने देखा कि उनके बच्चे व स्त्रियाँ वहाँ नहीं थे, और अमालेकी उनका सब कुछ लूट ले गए थे। यह सब दाऊद की भूल की वजह से हुआ था। पलिश्तियों के साथ मिल जाने से पहले उसे परमेश्वर से परामर्श करना चाहिए था, लेकिन उस समय वह अपनी समझ और ताक़त पर भरोसा कर रहा था। और फिर एकाएक उसे होश आ गया *(पद 6)।* इन शब्दों को रेखांकित कर लें,और एक दिन जब आपके प्रियजन आपको छोड़ देंगे और वे भी आपको त्याग देंगे जिनसे आप प्रेम करते हैं, तो ये शब्द आपकी मदद करेंगे। दाऊद ने स्वयं को प्रभु में उत्साहित किया। उसे बात समझ में आ गई और उसने कहा, "हे परमेश्वर, मेरी भूल को क्षमा कर क्योंकि मैं तेरे परामर्श बिना ही पलिश्तियों के साथ जा मिला था। प्रभु, मुझे क्षमा कर।" तब दाऊद ने एब्यातार याजक को बुलवाया और उससे कहा, "यह पता लगा कि मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है। हम क्या करें? क्या हम अपने शत्रु अमालेकियों का पीछा करें?" परमेश्वर ने कहा, "हाँ, जा।" फिर उसने पूछा, "प्रभु, जो कुछ हमने खोया है, क्या हम उसे पुन:प्राप्त कर सकेंगे?" और परमेश्वर ने कहा *(पद 8 का अंतिम भाग)*, "तू उन्हें निश्चय जा पकड़ेगा, और निस्संदेह सब कुछ छुड़ा लेगा।"

दाऊद उस जगह पर पहुँच गया जहाँ अमालेकियों ने पड़ाव डाला हुआ था। वे खा-पी रहे थे और आनन्द के साथ नाच-गा रहे थे। तब दाऊद और उसके साथी अचानक उन पर टूट पड़े और उन्होंने अपनी पत्नियों, बच्चों, सब माल-सामान अमालेकियों का भी सब कुछ पा लिया है। वह लूट इतनी ज़्यादा थी कि उससे उन्होंने अपने पुराने कर्ज़ भी चुका दिए। दाऊद ने उन सब लोगों को भी उपहार भेजे जिन्होंने उसकी रहने-खाने में मदद की थी।

मई 9

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"अपनी सम्मति के द्वारा तू मेरी अगुवाई करेगा" (भजन. 73:24)।

1 शमूएल 31:3-6 में, हम शाऊल के ख़िलाफ पलिश्तियों के युद्ध के बारे में पढ़ते हैं। उस युद्ध में शाऊल मारा गया था। जब दाऊद ने शाऊल को मारना चाहा, तब परमेश्वर ने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी, क्योंकि शाऊल परमेश्वर का अभिषिक्त जन था। और अब शाऊल और उसके पुत्र युद्ध में मारे गए थे। दाऊद को शाऊल से लड़ने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी।

दाऊद नहीं जानता था लेकिन परमेश्वर उसकी तरफ से काम कर रह था। परमेश्वर ने दाऊद को एक बड़ी और ऊँची सेवकाई के लिए बुलाया था। वह न सिर्फ परमेश्वर का राजा था बल्कि वह परमेश्वर द्वारा एक नबी के रूप में भी चुना गया था। और वह सिर्फ परमेश्वर का नबी ही नहीं था, बल्कि वह परमेश्वर से उसका स्वर्गीय नमूना प्राप्त करने वाला मनुष्य था। इस वजह से ही उसे अनेक प्रकार से आग में परखा गया था। हम भी विश्वासियों के रूप में परमेश्वर के बड़े और ऊँचे उद्देश्य के लिए चुने गए हैं, और इसलिए हमें भी इस बुलाहट की तैयारी के लिए तीव्र पीड़ा में से गुज़रना पड़ता है। यह ज़िम्मेदारी हमारी है कि हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानें।

परमेश्वर स्वयं ही मेरा महायाजक है। मैं उसके पास किसी भी समय जा सकता हूँ। महायाजक को दो मूल्यवान रत्न उरीम और तुम्मीम दिए गए थे, लेकिन अब प्रभु यीशु मसीह ने उन दोनों रत्नों को मुझ में रख दिया है। *भजन 43:3* के अनुसार, जब मैं परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए परमेश्वर के भवन में जाता हूँ, तो उसकी ज्योति और उसका सत्य, मुझमें बसने वाले मसीह के रूप में, मेरी अगुवाई करेंगे।

अब अपने लिए आप स्वयं ही यह प्रमाणित कर सकते हैं कि परमेश्वर न सिर्फ आपके नुकसान की ही भरपाई करेगा, बल्कि प्रभु के पास लौट आने से आपका दु:ख भी आनन्द में बदल जाएगा। पलिश्तियों या अपने मित्रों पर भरोसा न करें, बल्कि सिर्फ मसीह में ही अपना भरोसा रखना सीखें। हरेक बात में परमेश्वर का परामर्श लेना सीखें, उसकी इच्छा जानने की खोज में रहें, उसकी आवाज़ सुनें और उसका पालन करें, और हालांकि बात असम्भव हो सकती है, फिर भी उसकी आज्ञापालन करें।

मई 10

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"परमेश्वर और उसकी सामर्थ्य को खोजो; निरंतर उसके दर्शन के खोजी बने रहो" (भजन. 105:4)।

अब हम दाऊद के दूसरे बड़े नुक़सान को देखेंगे। दाऊद ने कितने उत्साह और परिश्रम के साथ परमेश्वर की वाचा के सन्दूक को उसके मूल स्थान पर लौटाना चाहा था। लेकिन अफसोस! जैसा गिनती के अध्याय 4 व 7 में परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, दाऊद ने इस्राएलियों, हारून के पुत्रों और कहातियों को यह काम सौंपने की जगह, उसने वाचा के सन्दूक को एक नई बैलगाड़ी में रखकर लाने द्वारा अपनी मानवीय बुद्धि और उत्साह को इस्तेमाल किया था। *1 शमूएल 6* में, पलिश्तयों द्वारा भी ऐसा ही किया गया था।

गिनती 4:15 और 7:9 में परमेश्वर ने स्पष्ट रूप में यह आज्ञा दी थी कि परमेश्वर की वाचा का सन्दूक लेवीयों में से सिर्फ कहातियों द्वारा उनके कंधों पर ही उठाया जाना था। उसे कभी एक बैलगाड़ी में रखकर नहीं ले जाना था। लेकिन वाचा के सन्दूक को एक नई बैलगाड़ी में रख दिया गया, और जब रास्ते में बैलों ने ठोकर खाई तो उज्जा ने हाथ बढ़ाकर वाचा के सन्दूक को सम्भालना चाहा। और तब परमेश्वर का क्रोध उज्जा पर भड़का और उसने उज्जा को मार डाला। इसलिए वे वाचा के सन्दूक को उसकी जगह पर न ला सके थे। फिर जब दाऊद ने आज्ञापालन किया और परमेश्वर के वचन में प्रकट किए गए तरीक़े से काम किया, तब बड़े आनन्द के साथ वे और सभी लोग परमेश्वर की वाचा की सन्दूक को उसकी जगह पर ला सके थे *(1 इति. 15:28)।*

उस महान् घटना के बाद, हम दाऊद द्वारा लिखा गया धन्यवाद का वह अद्भुत गीत पाते हैं जो भजन संहिता 105 में लिखा है: "प्रभु का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो, देश-देश के लोगों में उसके कामों की चर्चा करो, आदि" *(पद 1-7, 14,15)।* जब तक हम लगातार परमेश्वर के मुख के दर्शन के खोजी नहीं होंगे, और हमारी सभी गतिविधियों, कर्तव्यों, और योजनाओं में - चाहे वे घर में हों या कलीसियाओं में - लगातार उसके तरीक़े की खोज में नहीं रहेंगे, तो हम अवश्य ही बड़ी हानि उठाएंगे। हमारा मार्गदर्शन हमारे अपने उत्साह, या बुद्धि या समझ द्वारा नहीं हो सकता।

मई 11

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"इसलिए अपने बीच में से ऐसे पुरुष चुन लो जो अच्छे चरित्र वाले हों, और पवित्र-आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों" (प्रेरितों 6:3)।

परमेश्वर के अनुसार चलने में नाकाम रहने की वजह से, आज परमेश्वर के लोगों के बीच बड़ा नुक़सान पाया जा रहा है। ऐसे लोग भी, जो प्रार्थना द्वारा अपने लिए प्राचीन पाना चाहते हैं, इस बड़े ज़रूरी काम में ऐसे लापरवाह हो गए हैं कि इस मामले में परमेश्वर के सेवकों व सहकर्मियों के रूप में मिलकर प्रार्थना करने की बजाय वे मनुष्यों की मानवीय योग्यता, उसकी बोलने की क्षमता, या उसके सांसारिक पद-प्रतिष्ठा या दूसरी बातों द्वारा निर्देशित होते हैं। इसका परिणाम एक सूखापन और आत्मिक बालपन होता है, और ऐसी सभाओं में लोग भूखे आते हैं और वैसे ही लौट जाते हैं।

जब दाऊद ने अपनी भूल का पश्चाताप् किया तो परमेश्वर ने उसे क्षमा किया क्योंकि परमेश्वर दया करने वाला, और कृपा करने वाला है, और अगर हम अपने आपको दीन करेंगे और अपनी नाकामी और ग़लती को मान लेंगे, तो वह हमें क्षमा करता है, हमारी हरेक नुक़सान की भरपाई में हमारी मदद करता है।

परमेश्वर की वाचा का सन्दूक स्वयं प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताता है। जिनका वास्तव में नया जन्म हुआ है, और जिन्हें स्वयं उसने बुलाया है, सिर्फ उन्हें ही उसकी प्रतिज्ञाओं पर विशेषाधिकार मिला है और वही लोगों को उद्धार का मार्ग दिखा सकते हैं। लेकिन अफसोस! इन दिनों में हम ऐसे बहुत से लोग पाते हैं जिन्हें परमेश्वर ने कभी उनकी सेवा में नहीं बुलाया था, लेकिन उन्हें मिशन क्षेत्र में थोप दिया गया है। इसका परिणाम यह है कि पश्चिमी देशों में से जगत में भेजे जाने वाले मिशनरियों में से 65%, उनकी पाँच साल की पहली अवधि पूरी होने के बाद, दोबारा अपने मिशन क्षेत्र में नहीं जाते।

इसी तरह, मसीही दायरों में भी अनेक लोगों को उनके धन और प्रभाव की वजह से पद दे दिए गए हैं, लेकिन उन्हें परमेश्वर ने कभी नहीं बुलाया था, और इस वजह से वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कलीसिया के मामलों की देखभाल करने में नाकाम रहते हैं।

मई 12

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"किसी भी बात की चिंता न करो, बल्कि हरेक बात में तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए" (फिलि. 4:6)।

हमें विवाह के मामले में परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहिए। युवाओं के रूप में, एक लड़का और लड़की एक-दूसरे को पसन्द करने लगते हैं। उस समय उन्हें ऐसा लगता है कि परमेश्वर उन्हें जीवन-साथी के रूप में एक-दूसरे के साथ जोड़ना चाहता है, लेकिन वे इस मामले में कभी प्रभु के मुख के दर्शन के खोजी नहीं होते। वे ऐसे लोगों के साथ मिलकर प्रार्थना नहीं करते जो प्रार्थना द्वारा परमेश्वर की इच्छा जानने में उनकी मदद कर सकते हैं, और यही वजह है कि हम इतने ज़्यादा दुःखी घर देखते हैं। वे बड़ी आशा के साथ अपने वैवाहिक जीवन शुरू करते हैं, लेकिन जल्दी ही उन्हें यह अहसास होने लगता है कि वे एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं। तब परिवार में लगातार संघर्ष होने लगता है, और उनके अपने हृदयों में भी अप्रसन्नता भरी रहती है।

हमारी सेवकाई के लिए क्योंकि हम परमेश्वर की योजना को पूरा करने की खोज में रहते हैं, इसलिए हमें कभी पैसा माँगने की ज़रूरत नहीं पड़ी है। कभी-कभी हमारी ज़रूरत काफी बड़ी थी, लेकिन हमने एक-साथ मिलकर प्रार्थना की है, और प्रभु ने हमेशा उस ज़रूरत को पूरा किया है क्योंकि वह उसका काम है। किसी का पैसा चुकाने में हमें कभी एक दिन की भी देर नहीं हुई है। परमेश्वर की सेवा में हमें चाहे जो भी ज़िम्मेदारी हो, हमेशा ही हमें परमेश्वर के मुख और उसकी योजना की खोज करनी चाहिए। हम यह कहते हुए कभी परमेश्वर के वचन को बदलने की कोशिश न करें कि हम एक नए युग में रह रहे हैं और ये दिन अलग दिन हैं। परमेश्वर का वचन कभी नहीं बदलता, इसलिए यह प्रार्थना करें कि प्रभु आपके हरेक नुक़सान की भरपाई में आपकी मदद करे।

आपके वैवाहिक जीवन में, अगर आप दोनों ही अपनी ग़लती का पश्चाताप् करते हैं और परमेश्वर से क्षमा माँग लेते हैं, तो वह यक़ीनन आपको क्षमा कर देगा और आप न सिर्फ अपनी हानि को पुनःप्राप्त कर लेंगे, बल्कि परमेश्वर आपके जीवनों को दूसरों को आशिष देने के लिए भी इस्तेमाल करेगा।

मई 13

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो" (मत. 26:41)।

2 शमूएल अध्याय 11 में दाऊद द्वारा उठाई गई तीसरी हानि में विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के लिए एक संदेश है। सबसे पहले तो हमें मनुष्य के हृदय की दुष्टता और धोखा दिखाया गया है। हम चाहे कोई भी हों, बाहरी तौर पर हम चाहे कितने भी भले और अच्छे क्यों न नज़र आते हों, लेकिन भीतरी तौर पर हम सभी समान रूप में भ्रष्ट, घिनौने और गंदे हैं। हमारे जीवन में कोई सत्य नहीं है। हम अपनी सही दशा जानना नहीं चाहते। जब हमें उसके बारे में बताया जाता है, तो हमारे घमण्ड को बहुत चोट लगती है। यही वजह है कि परमेश्वर का वचन पढ़ते समय अनेक लोगों को बुरा लगता है। आइए, हम *2 शमूएल 11* में दाऊद की कहानी को देखते हैं।

दाऊद उसकी किशोरावस्था से ही एक परमेश्वर का भय मानने वाला, समझदार, ईमानदार और भला व्यक्ति था। और वह परमेश्वर द्वारा चुना हुआ मनुष्य था। अनेक सालों तक, उसने एक भले मुनष्य के रूप में अच्छा जीवन बिताया था। वह बुराई से घृणा करता और उससे दूर रहता था। लेकिन उसके भीतर कहीं एक छुपा हुआ दुष्टता का स्वभाव था, और जब तक परमेश्वर ही उसे नहीं बदलता, तो वह परमेश्वर द्वारा एक बड़े स्तर पर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। दाऊद के जीवन में *2 शमूएल 11* की घटना इसीलिए हुई कि फिर दाऊद स्वयं को उसी नज़र से देख सके जैसे परमेश्वर उसे देखता था।

दाऊद एक योद्धा, एक शक्तिशाली पुरुष था, लेकिन युद्ध में जाने की बजाय वह यरूशलेम में अपने घर में ही बैठा रहा था। बाहरी तौर पर तो यह एक मामूली नाकामी नज़र आती है, लेकिन परमेश्वर की नज़र में वह एक बड़ी नाकामी थी। दूसरा पद हमें बताता है कि वह संध्या का समय था और दाऊद हालांकि एक सामर्थी पुरुष था फिर भी संध्याकाल तक सोता रहा था। ऐसे कितने लोग हैं जो सोए हुए हैं जबकि उन्हें जागते हुए होना चाहिए। ऐसे दुबोध रूप में, एक शक्तिशाली पुरुष आलसी मनुष्य बन गया था, और अपने महल की छत पर टहलते हुए, उसका प्रलोभन से आमना-सामना हुआ।

मई 14

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"मन तो सब वस्तुओं से ज़्यादा धोखेबाज़ होता है और असाध्य रोग से ग्रस्त है; उसे कौन समझ सकता है" (यिर्म. 17:9)।

बाद में, अपने पाप को ढाँपने के लिए दाऊद को बहुत से तरीक़े, रास्ते और युक्तियाँ अपनानी पड़ीं। उसके द्वारा किए गए पाप को छुपाने के लिए उसे पाप करने के दूसरे और बहुत तरीक़े अपनाने पड़े, और यह करते हुए वह एक पाखण्डी बन गया। जब उसे यह पता चला कि उसका पाप उघाड़ा हो जाएगा, तो उसने उरिय्याह को बुलवा लिया, जो उस स्त्री का पति था। जब उरिय्याह आया तब दाऊद ने उससे युद्ध का समाचार पूछा। फिर उसने उरिय्याह से कहा, " "उरिय्याह, तू थक गया होगा। अब तुझे घर जाकर गर्म पानी से नहाने और आराम करने की ज़रूरत है।"

उरिय्याह महल में से निकला भी नहीं था कि एक व्यक्ति उसके पास राजा की मेज़ के अनेक व्यंजनों का भोजन उसके पास ले आया। उस दिन दाऊद उरिय्याह के प्रति कितना दयालु हो गया था! एक पाप दूसरे पाप की तरफ, दूसरा तीसरे की तरफ, और तीसरा चौथे पाप की तरफ ले जाता है! एक महान् और बुद्धिमान राजा एक पहले दर्जे का व्यभिचारी, फिर एक धोखेबाज़, उसके बाद एक पाखण्डी, और फिर एक झूठा बन गया और यह सब उसने एक पाप को छुपाने के लिए किया था। लेकिन उरिय्याह फिर भी उसके घर नहीं गया। जबकि सेना मैदान में युद्ध कर रही थी, तो उसने स्वयं आराम में रहना न चाहा।

इस तरह, दाऊद की चालाकी काम न कर सकी! अंततः उसे योआब द्वारा उरिय्याह की हत्या करानी पड़ी। यह कितने अफसोस की बात है! एक समझदार राजा अंततः एक हत्यारा बन गया। वह उरिय्याह को मारना नहीं चाहता था। एक व्यभिचारी बन जाने का भी उसमें कोई विचार नहीं था। वह उसके भीतर छुपे उस स्वभाव के बारे में कुछ नहीं जानता था। प्रलोभन के आने के बाद ही उसे यह पता चला कि उसका हृदय कितनी दुष्टता से भरा था।

मई 15

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर तू टूटे और पिसे हुए हृदय को तुच्छ नहीं जानता" (भजन. 51:17)।

हममें से हरेक एक पापमय स्वभाव के साथ जन्म लेता है, लेकिन दाऊद ने इस पाठ को पाप करने के बाद ही सीखा, जैसा कि वह *भजन 51* में कहता है "मैं तो अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ हूँ।" इससे पहले कि परमेश्वर दाऊद को उसके एक चुने हुए पात्र के रूप में इस्तेमाल कर पाता, यह ज़रूरी था कि वह उसे बदलता और परिवर्तित करता, और उसे साफ और स्वच्छ करके धो देता। यह देखें कि *भजन 51* में दाऊद क्या कहता है। उसने यह समझ लिया था कि उसके हृदय की सही दशा क्या थी *(पद 7,9,10)।* वही दाऊद अब एक टूटे हुए हृदय से यह अंगीकार कर रहा था। "हे परमेश्वर, मुझे एक शुद्ध हृदय दे। मुझे एक नया हृदय दे। मुझे धो और पूरी तरह साफ कर, और मेरे सारे अधर्म को मिटा दे।"

आप जो हैं, उसका परमेश्वर के सामने अंगीकार कर लें। अपनी हालत में कुछ सुधार करने की कोशिश न करें। यह कहें, "हाँ प्रभु, मैं एक पापी हूँ," लेकिन यह न कहें: "मैं अपने पड़ौसी से बेहतर हूँ।" परमेश्वर क्योंकि आपसे प्रेम करता है, इसलिए उसके सामने आप अपनी सच्ची दशा का बयान कर सकते हैं और उससे यह कह सकते हैं: "प्रभु, मुझे धो दे। मैं घिनौना और गंदा हूँ। हे परमेश्वर, मुझमें एक नया हृदय उत्पन्न कर। मेरा पुराना स्वभाव दूर कर दे।" इस तरह, आप अपने हरेक नुक़सान की भरपाई कर सकेंगे। आपका नाश होता हुआ जीवन एक भरपूर रूप में फलवंत जीवन बन जाएगा। आपके द्वारा बोला गया हरेक शब्द और आपका हरेक काम हमेशा बना रहने वाला फल लाएगा और आपके पापमय जीवन की याद भी मिट जाएगी। जब परमेश्वर क्षमा करता है, तब वह हमेशा के लिए करता है।

आपके पाप हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएंगे। वे मिटा दिए जाएंगे क्योंकि आपकी जगह प्रभु यीशु मसीह मर गया और उसने आपके पाप का पूरा कर्ज़ चुका दिया है। जब आप उसके सम्मुख खड़े होकर, और नम्र व दीन होकर यह कहेंगे, "हे प्रभु, मुझमें एक शुद्ध और पवित्र हृदय उत्पन्न कर; मुझे धोकर साफ कर और पूरी तरह से स्वच्छ कर," तो वह आपकी प्रार्थना को सुनेगा।

मई 16

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"जिन वर्षों की उपज को दलवाली, रेंगनेवाली, उजाड़ने वाली और कुतरने वाली टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे भेजे हुए दल ने खा लिया था, उनकी हानि मैं तुमको भर दूँगा" (योएल 2:25)।

क्या आप यह जानते हैं कि अगर आपके पाप क्षमा न हुए तो परमेश्वर की नज़र में आपका जीवन एक बर्बादी के अलावा और कुछ नहीं है? *योएल 1:4* में, हम उन कीड़ों के बारे में पढ़ते हैं जो एक किसान की उपज को खा जाते हैं – कुतरने वाली टिड्डी, दलवाली टिड्डी, रेंगनेवाली टिड्डी और उजाड़ने वाली टिड्डी। किसान ज़मीन को जोतते हैं, बीज बोते हैं, और बड़ी आशा रखते हुए रात-दिन कड़ी मेहनत करते हैं। बीज फल भी लाता है लेकिन जब फसल की कटनी का समय आता है, तब वे यह पाते हैं कि किसी कीड़े ने आकर उनकी फसल को नष्ट कर दिया है। यह हो सकता है कि फसल के एक भाग को कुतरने वाली टिड्डी ने, दूसरे भाग को दलवाली टिड्डी ने, तीसरे भाग को रेंगने वाली टिड्डी ने और चौथे भाग को उजाड़ने वाली टिड्डी ने खा लिया हो। तब क्या बचा रहेगा? कुछ नहीं! सब ख़त्म हो गया है! और परमश्वेर क्या कहता है, "अरे पापियों, तुम अपना जीवन क्यों बर्बाद करते हो?" आपका जीवन उस खेत की तरह है जिसे कुतरने वाली टिड्डी, दलवाली टिड्डी, रेंगने वाली टिड्डी और उजाड़ने वाली टिड्डी ने खा लिया हो।

आज वास्तव में आपकी यही हालत हो सकती है। आपको यह अहसास भी है कि आपका जीवन बर्बाद हो चुका है या हो रहा है। लेकिन आपके लिए भी आशा है। आप हरेक हानि की भरपाई कर सकते हैं। आपका नुक़सान चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, कितना भी नीचा गिराने वाला क्यों न हो, फिर भी आपकी हानि का पुनःप्राप्त किया जा सकता है। आपका जीवन भरपूरी से फलवंत हो सकता है, और आपकी पुनःप्राप्ति के हरेक मिनट में आप अनन्त फल पैदा कर रहे होंगे। प्रभु यीशु मसीह में बने रहने से हम बना रहने वाला फल लाते हैं। यह उद्धार का बड़ा अद्भुत चमत्कार है। हालांकि हमने अपने जीवन कितने पापमय और लज्जाजनक तरीक़ों से बर्बाद किया है, फिर भी प्रभु यीशु मसीह में आने से, और उसके साथ जुड़ जाने से, हम एक भरपूर रूप में फलवंत हो सकते हैं।

मई 17

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"क्योंकि पाप की मज़दूरी मौत है" (रोम. 6:23) "जो मनुष्य पाप करेगा, वह मरेगा" (यहेज़. 18:41)।

कभी-कभी हमें अचानक ही बड़ी हानि उठानी पड़ जाती है। *2 राजा 4:38* में, अचानक एक बड़ा अकाल आ गया। कहीं खाने के लिए दाना नहीं था क्योंकि कोई वर्षा नहीं हुई थी। चारों तरफ सूखा पड़ गया था और कोई फसल नहीं थी, और लोगों को खाने के कुछ-कुछ बटोरने के लिए यहाँ-वहाँ भागना पड़ रहा था। उनके पास कोई चावल नहीं था, गेहूँ नहीं था और कोई सब्ज़ी भी नहीं थी। वे कंद-मूल पर जी रहे थे।

आज के संसार की भी यही दशा है। एक तरफ तो लोग सांसारिक ज्ञान, धन-सम्पत्ति और प्रगति पर घमण्ड कर रहे हैं, दूसरी तरफ वे पापमय जगहों की गंदगी और दूषण में सड़ रहे हैं। वे अपना कितना समय सिनेमा और दुष्टता से भरी जगहों में बिताते हैं। वे अपना कितना समय ऐसी अश्लील पत्रिकाएं पढ़ने में बिताते हैं जिन्हें वे साथ लेकर घूमते हैं।

2 राजा 4:39 में, जब ये लोग जंगल में कंद-मूल इकट्ठे करने गए थे, तो वहाँ उन्होंने कुछ जंगली पौधे देखे। "यह तो अनोखे पौधे हैं," वे बोले, "आज हम कुछ अच्छा भोजन कर सकेंगे।" उन्होंने वह पकाया और सबको परोस दिया। लेकिन जब वे उसे खाने लगे तो किसी समझदार व्यक्ति को यह नज़र आया कि खाने में कुछ ख़राबी है। तब उसने पुकार कर कहा, "हे परमेश्वर के जन, हण्डे में मौत है!"

"हम मरने वाले हैं क्योंकि हमने ज़हर खा लिया है। कुछ ही देर में हम मर जाएंगे।" तब नबी की आज्ञानुसार हण्डे में थोड़ा आटा डाला गया और ज़हर का असर ख़त्म हो गया। प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ, और मुझे खाने वाला हमेशा जीवित रहेगा।" सिर्फ यही वह रोटी है जो आपके जीवन में पाप द्वारा घोले गए ज़हर को दूर कर सकती है।

मई 18

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"जीवन की रोटी मैं हूँ ... जो इस रोटी को खाता है, वह सर्वदा जीवित रहेगा" (यूह. 6:57)।

अब ये लोग तो भूखे थे, और यह सोच रहे थे, "अपनी भूख मिटाने के लिए हम रोटी कहाँ से पा सकते हैं?" तब एक व्यक्ति परमेश्वर के जन के पास जौ की 20 रोटियाँ लाया और नबी ने कहा, "इन्हें लोगों को बाट दे" *(पद 43)*। लोग बहुत थे, और सिर्फ बीस रोटियाँ थीं। उनके बीच में बाँटने के लिए सिर्फ 20 रोटियाँ थीं। इसलिए बाँटने वाले का यह सवाल स्वाभाविक ही था, "क्या यह बीस रोटियाँ सौ लोगों को तृप्त कर सकेंगी?" परमेश्वर के जन ने कहा, "इन्हें लोगों को दे कि वे खाएं, क्योंकि प्रभु यूँ कहता है: 'वे खाएंगे और बचा भी देंगे'।" तब उन्होंने खाया और तब तक खाते रहे जब तक कि वे और न खा सकते थे; उन्होंने गले तक भर लिया लेकिन फिर भी काफी खाना बचा रहा था।

एक ऐसा ज़हर है जो आपके पेट, नसों और मस्तिष्क को प्रभावित करता है। वह बहुत धीरे-धीरे काम करता है। पाप भी यही करता है! पाप में रहते हुए आप प्रतिदिन ज़हर पीते हैं और अपने जीवन को बर्बाद करते हैं। इसलिए हम आज आपसे यह आग्रह करते हैं कि आप विश्वास से जीवन की यह रोटी खाएं। वह आपके स्वभाव में से पाप के ज़हर के असर को दूर कर देगी जिससे कि आपके अन्दर हुए हरेक नुक़सान की भरपाई शुरू हो जाएगी। वह आपको अनन्त रूप से बुद्धिमान, अनन्त रूप में भरपूर, अनन्त रूप से शक्तिशाली और अनन्त रूप से तृप्त, और हरेक हानि की पूरी तरह से भरपाई हो जाएगी। इस तरह, भूल, पाप और भ्रष्टता से हुए सारे नुक़सान की भरपाई हो सकती है। सिर्फ यीशु मसीह के हाथ से जीवन की रोटी ही खाएं। प्रभु यीशु मसीह एलीशा से बड़ा है; वह सब नबियों से और सब मनुष्यों से बड़ा है। आज वह आपके सामने जीवन की ये रोटी पेश कर रहा है।

मई 19

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"विश्वास ही से जब अब्राहम को बुलाया गया तो वह आज्ञा मानकर ऐसे स्थान को चला गया ... वह नहीं जानता था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ फिर भी चला गया" (इब्रा. 11:8)।

परमेश्वर ने बाइबल में दाऊद की कहानी को इसलिए दर्ज किया है कि वह हमें युद्ध और युद्ध के हथियार दोनों ही दिखा सके। दाऊद ने दो तरह की हानि उठाई थी: व्यक्तिगत हानि, और राष्ट्रीय हानि। हमने दाऊद की व्यक्तिगत हानि के बारे में जो कुछ देखा है, उसकी वजह उसकी अपनी नाकामी और लापरवाही थी, फिर भी परमेश्वर ने यह चाहा कि वह सब कुछ पुनःप्राप्त कर सके। इसके साथ ही, परमेश्वर वह सब कुछ भी पुनः प्राप्त करना चाहता था जो दाऊद की नाकामी और भूल से एक राष्ट्रीय स्तर पर खो गया था।

हमने उस उत्तम और उपजाऊ देश के बारे में पढ़ा है जो प्रभु परमेश्वर ने उसके लोगों को, इस्राएल को दिया था। यह कहानी उत्पत्ति अध्याय 12 में शुरू होती है। कसदियों के ऊर नगर में अब्राहम नाम का एक पुरुष रहता था। यह बात पुरातत्व ज्ञानियों ने प्रमाणित कर दी है कसदिया एक बहुत विकसित देश था। अब्राहम एक धनवान व्यक्ति था जिसके पास बहुत सा सोना, चाँदी, दास-दासियाँ, सम्पत्ति और भूमि थी। एक दिन प्रभु ने अचानक अपने आपको उस पर प्रकट किया, और उसने परमेश्वर की आवाज़ को साफ तौर पर यह कहते सुना, "अब्राहम, अपने देश, अपने कुटुम्बियों और अपने पिता के घर से उस देश को चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।" अब्राहम ने उस शब्द पर विश्वास किया। वह जानता था कि उसने परमेश्वर की आवाज़ सुनी है, और इस वजह से ही उसने उसका पालन किया है। *उत्पत्ति 12:2,3* में परमेश्वर ने अब्राहम से एक महान् प्रतिज्ञा की थी: "मैं तुझ में से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और मैं तुझे आशिष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, इसलिए तू आशिष का कारण होगा। जो तुझे आशिष देंगे उन्हें मैं आशिष दूँगा, और जो तुझे श्राप देंगे उन्हें मैं श्राप दूँगा, और पृथ्वी के सब घराने तुझ में आशिष पाएंगे।"

जब एक पुरुष परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है, तो परमेश्वर उसे आशिष देता है।

मई 20

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"प्रभु में मग्न रह, और वह तेरे सारे मनोरथों को पूरा करेगा।" भजन 37:4

जब अब्राहम के वंशज मिस्र में से निकल कर कनान की ओर चले, तो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा व्यवस्था विवरण में उनसे यह कहा कि उस भूमि में सात जातियाँ रह रही थीं। साढ़े चार सौ साल पहले परमेश्वर ने उस भूमि को अब्राहम और उसके वंशजों को देने की प्रतिज्ञा की थी। परमेश्वर भूला नहीं था। परमेश्वर कभी नहीं भूलता। जो कुछ परमेश्वर कहता है, वह उसे याद रखता है, और वह उसे पूरा करेगा। वह जो भी प्रतिज्ञाएं करता है, उन्हें वह पूरा करता है। लेकिन उस विरासत को पाने के लिए उसे अपने लोगों को तैयार करने में अनेक शताब्दियों का समय लगा था।

व्यवस्था विवरण के इसी अध्याय में, परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा कि वे सातों जातियाँ उस भूमि में से पूरी तरह निकाल दी जाएंगी। फिर परमेश्वर ने यह भी कहा, "तू उनसे कोई वाचा न बाँधना और न कोई समझौता करना। न तू अपनी पुत्रियाँ उनके पुत्रों को देना और न उनकी पुत्रियों को अपने पुत्रों के लिए लेना। उनकी वेदियों को ढा देना और उनके स्तम्भों को चूर-चूर कर देना।" परमेश्वर ने ऐसे स्पष्ट शब्दों में उनसे बात की थी, लेकिन उन्होंने फिर भी पूरी तरह से उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया था। यह उनकी पहली नाकामी थी। अक्सर ऐसा ही होता है, कि हालांकि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहते हैं, फिर भी हम उसका पूरा आज्ञापालन नहीं करते। यह हो सकता है कि हम सिर्फ कुछ बातों में ही उसकी आज्ञा का पालन न करते हों।

यहोशू 1:12 यह दिखाता है: "उन्होंने कहा, 'अब ये पुरुष हमारे दास हैं। हम इन्हें अपना पानी भरने वाला बना लेंगे।'" इस तरह शैतान को पाँव रखने की जगह मिल गई। फिर परस्पर विवाह की भी ग़लतियाँ हुईं, और बाद में, परमेश्वर के लोग मूर्तियों की पूजा भी करने लगे। हालांकि उन्हें वह भूमि प्राप्त कर ली थी, लेकिन वे उस भूमि का आनन्द नहीं मना सके।

मई 21

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"अगर तू अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे और उसके मार्गों में चले, तो प्रभु तुझे अपने लिए एक पवित्र प्रजा करके सुदृढ़ करेगा" (व्य.वि. 28:9)।

बिन्यामीन के पुरुषों ने कुछ यबूसियों को यरूशलेम में रहने दिया था। वे पहले वहाँ दासों की तरह रह रहे थे। बाद में वे एक सशक्त जाति बन गए थे। जब दाऊद और उसके साथी यरूशलेम में आए थे, तब यबूसी उसका ठट्ठा उड़ाने लगे थे। वे कह रहे थे, "दाऊद कौन है? उससे तो एक अंधा व्यक्ति भी लड़ सकता है।" उन्होंने यरूशलेम में अपने लिए इतनी जगह हासिल कर ली थी कि अब वे परमेश्वर के चुने हुए जन दाऊद का ठट्ठा उड़ा रहे थे।

यह कितनी दु:खद बात है कि विश्वासियों के रूप में हमें भी कितनी हानि उठानी पड़ रही है। मैं अब उन लोगों से बात कर रहा हूँ जो यह कहते हैं कि उनका नया जन्म हो चुका है। इसमें कोई शक नहीं कि कुछ समय के लिए उन्होंने भरपूर आनन्द, बड़े उत्साह, बड़ी शांति, और परमेश्वर के वचन के लिए बड़ी भूख होने का आनन्द मनाया था। लेकिन अब हम उन्हें अंधकार, हार, नाकामी, ईर्ष्या, और सूखेपन में पाते हैं, और इसकी वजह यह है कि न सिर्फ एक बल्कि अनेक यबूसियों ने उनके हृदयों में, उनके घरों में और उनके परिवारों में जगह बना ली है।

दाऊद के लिए उन यबूसियों को निकालना आसान काम नहीं था। इसमें परमेश्वर को अपने तरीक़े से उसे तैयार करने की ज़रूरत थी। सबसे पहले परमेश्वर को उसे शाऊल, अबशालोम और दूसरे लोगों द्वारा बड़ी दु:खद पीड़ाओं में से लेकर गुज़रना पड़ा था। फिर वह उसे हेब्रोन में लाया था। उसने उसे वहाँ साढ़े सात साल तक रखा और उसके बाद वह उसे सिय्योन में लाया था। उसके बाद ही वह यबूसियों को निकाल सका था। अंततः यबूसी यरूशलेम में से निकाले गए। उसके बाद स्वर्गीय नमूना नज़र आया, फिर मन्दिर बना, और फिर महिमा आई।

मई 22

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"जिन बातों को किसी आँख ने नहीं देखा और न कान ने सुना, और जो मनुष्यों के हृदयों में नहीं समाई, उन्हीं को परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया है" (1 कुरि. 2:9)।

दो तरह की हानि होती है: व्यक्तिगत हानि और सामूहिक हानि। पहली हानि वह है जिसमें स्वयं हमारा नुक़सान होता है, और दूसरी हानि वह है जिसमें सारी मण्डली का नुक़सान होता है। परमेश्वर का वचन कहता है कि विश्वासियों के रूप में हम प्रभु यीशु मसीह की देह हैं। देह का हरेक अंग बहुत महत्वपूर्ण और मूल्यवान है। जब एक अंग पीड़ा में होता है तो सब अंगों को पीड़ा होती है। जब विश्वासियों के रूप में हम एक हानि और सूखेपन का जीवन बिताते हैं, तब पूरी देह, प्रभु यीशु मसीह की पूरी कलीसिया पीड़ा सहती है। हमारा नुक़सान पूरी कलीसिया का नुक़सान होता है। वैसे ही, हमारी पुन:प्राप्ति सबके लिए आनन्द और आशिष होगी।

हम जानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह में हमारे पास एक बड़ी आत्मिक विरासत है। यह एक स्वर्गीय विरासत है, और यह निष्कलंक है, और यह कभी नहीं मिटेगी। लेकिन हम फिर भी एक पराजय और निष्फलता का जीवन बिताते हैं, क्योंकि हम अपनी स्वर्गीय विरासत का आनन्द मनाना नहीं जानते। परमेश्वर ने प्रकट होकर अब्राहम से स्पष्ट कहा था, "अपना देश, अपनी धन-सम्पत्ति, और अपने कुटुम्ब को छोड़ कर उस देश को चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।" उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। लेकिन एक मामूली सी ग़लती की वजह से उसने अपने जीवन में बड़ा नुक़सान उठाया। यह नुक़सान एक ग़लत सहभागिता की वजह से हुआ था।

लूत की वजह से, परमेश्वर अब्राहम के साथ स्पष्ट बात नहीं कर पा रहा था। परमेश्वर शुरू से ही उसकी अगुवाई कर रहा था, लेकिन फिर उसे रुक जाना पड़ा। यह इसलिए हुआ क्योंकि लूत की वजह से अब्राहम के अन्दर से परमेश्वर की उपस्थिति का अहसास ख़त्म हो गया था। अब अगर पुन:प्राप्ति हो सकती थी, तो वह सिर्फ उनके अलग होने के बाद ही हासिल की जा सकती थी।

मई 23

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"लूत के अलग हो जाने के बाद परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'अब अपनी आँख उठा..." (उत्पत्ति 13:14)।

परमेश्वर अब्राहम से फिर से मिला, लेकिन तभी जब वह लूत से अलग हो गया। बाइबल के इस वाक्यांश के रेखांकित कर लें: *'लूत के अलग हो जाने के बाद...।'* अब परमेश्वर अब्राहम को यह दिखा सकता था कि वह उसे और उसके वंश को एक कितनी बड़ी सनातन विरासत दे रहा था।

आपके जीवन में भी किसी लूत की मौजूदगी की वजह से आप परमेश्वर के साथ सच्ची संगति नहीं कर पा रहे हैं। जब अब्राहम ने अपने आपको लूत से अलग किया, तब परमेश्वर उसके लिए एक वास्तविकता बन गया, और अब परमेश्वर से ऐसे बात कर सकता था जैसे एक पुरुष दूसरे पुरुष से करता है, और यही वजह थी फिर परमेश्वर के लिए वह अपनी जगह, पशु और सब मूल्यवान वस्तुओं को छोड़ सका था। अब परमेश्वर उसके लिए एक सच्चाई था।

जब लूत उसके साथ था, तब परमेश्वर चुप था। अब्राहम ने शायद अनेक बार ऐसा सोचा होगा, "अब मैं क्या करूँ?" लेकिन जब तक लूत उसे छोड़कर चला न गया तब तक परमेश्वर ने उसे कोई जवाब नहीं दिया था।

जहाँ तक हेब्रोन की बात है तो सबसे पहले वह सहभागिता की बात करता है। *यहोशू 14:11-13* में हम कालेब नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं। वह यहोशू के पास आया और उसने उससे कहा, "तूने मुझे हेब्रोन दिया है, और हालांकि वहाँ बहुत से अनाक-वंशी रहते हैं, मैं उन पर जय पा सकता हूँ। मैंने इतने वर्षों में यह जान लिया है कि परमेश्वर विश्वास योग्य है।" इसलिए हेब्रोन विश्वास की बात करता है। दैत्यों से भयभीत न हों, बल्कि उनके साथ संघर्ष करने के लिए तैयार रहें। आपके जीवित विश्वास के द्वारा आप हरेक दैत्य, बाधा और रुकावट पर जय पा सकते हैं।

मई 24

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"परमेश्वर तलवार और भाले से छुटकारा नहीं देता; क्योंकि युद्ध तो परमेश्वर का ही है" (1शमू. 17:47)।

अरौना के खलिहान की कहानी दाऊद की चौथी हानि की कहानी है। परमेश्वर को दो बार दाऊद को एक खलिहान में लाना पड़ा था *(1 इति. 13 व 2 शमू. 24)*।एक खलिहान वह जगह होती है जहाँ गेहूँ का दाँवना होता है कि गेहूँ के दाने को भूसे से अलग किया जा सके। फिर फटकने द्वारा हवा से गेहूँ भूसे से अलग हो जाता है।

2 शमूएल 24 में, हम यह पढ़ते हैं कि दाऊद ने कैसे अपने सेनापति योआब को आदेश दिया था: "जा, और राज्य के सारे योद्धाओं की गिनती कर।" दाऊद भली-भांति जानता था कि उसने कोई भी लड़ाई स्वयं अपनी शक्ति या उसकी सेना की शक्ति से नहीं जीती थी। फिर भी अब वह उसके राज्य में उन लोगों की संख्या का प्रदर्शन करना चाह रहा था जो उसके राज्य में युद्ध करने के लिए उपलब्ध थे। वह घमण्डी हो गया था, और अब अपनी जीत के लिए वह अपनी सेना पर निर्भर हो गया था।

योआब ने उससे कहा: "हे राजा, तूने कोई युद्ध अपने आप नहीं जीता है। परमेश्वर तेरी तरफ से लड़ता रहा है। तू इन पुरुषों की गिनती क्यों करना चाहता है? लोगों की संख्या अभी जितनी है तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे जीते-जी उसमें सौ गुणा और बढ़ा दे, पर मेरा स्वामी राजा ऐसा क्यों करना चाहता है?" लेकिन दाऊद गर्व से भरा था और उसने फिर भी लोगों की गिनती करने पर ज़ोर दिया। इस तरह, राजा की आज्ञा प्रबल हुई। यह सच है कि बाद में दाऊद ने पश्चाताप् किया और प्रभु को पुकारा था: "मैंने यह जो किया है, बड़ा पाप किया है। अब हे प्रभु, अपने दास का अधर्म दूर कर क्योंकि मैंने बड़ी मूर्खता की है।" लेकिन दाऊद के पाप की वजह से परमेश्वर ने इस्राएल में तीन दिन की महामारी भेजी और 70 हज़ार पुरुष मर गए। यह बड़ा नुक़सान था! यह बहुत बड़ी हानि हुई थी!

अंततः परमेश्वर ने अरौना के खलिहान में नाश करने वाले स्वर्गदूत के हाथ को रोक दिया था।

मई 25

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"'यह सब लिखित रूप में है', दाऊद ने कहा, 'क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे नमूने के सब विस्तृत विवरण को समझने के लिए बुद्धि दी'" (1 इति. 28:19)।

2 इतिहास 3:1 में, हम यह पढ़ते हैं कि यह वही जगह थी जो बाद में मन्दिर का निर्माण स्थल बनी, और दाऊद और देश की उस बड़ी हानि में से परमेश्वर ने न सिर्फ क्षमा और पूरी पुन:प्राप्ति दी, बल्कि उससे भी बढ़कर किया। परमेश्वर ने दाऊद को मन्दिर का एक स्वर्गीय नमूना दिया जिसे बाद में दाऊद के पुत्र सुलैमान को बनाना था। उसने अपने पिता दाऊद द्वारा दिए गए सारे निर्देशों का पालन किया था।

उसने मन्दिर का निर्माण किया था, और जब काम पूरा हो गया और मन्दिर बन कर तैयार हो गया, तब सुलैमान ने मन्दिर में भेंट चढ़ाई थीं। वह पूरे देश के लिए सबसे आनन्द का दिन था। बीती सदियों की सारी हानि को पुन:प्राप्त कर लिया गया था। उन्होंने परमेश्वर की महिमा को देखा, और परमेश्वर आकर उनके बीच में रहने लगा था। वह मन्दिर के करूबों के बीच में से उनसे बात कर सकता था, और सारी जातियों के लोग आकर सुलैमान को दण्डवत् करने लगे थे। एक देश के रूप में उन्होंने बड़ी हानि, बहुत बुरे नुक़सान उठाए थे। लेकिन अब कहानी बदल गई थी। अब वे परमेश्वर के लोग थे और परमेश्वर उसकी महिमा में उनके बीच में था। अब वास्तव में पुन:प्राप्ति हो गई थी, और अब वे वास्तव में परमेश्वर के लोग कहला सकते थे।

सिय्योन (यरूशलेम) में परमेश्वर दाऊद को मन्दिर की जगह में लाया था। परमेश्वर दाऊद को उस जगह लाया जहाँ वह पूरी तरह से मानवीय बुद्धि से मुक्त हो गया, और जहाँ वह पूरी तरह टूटा हुआ और सारे भूसे से ख़ाली हो चुका था। और तब उस पर मन्दिर की जगह प्रकट की गई। जब काम पूरा हो गया, तो उसके ऊपर परमेश्वर की आग गिरी और वह जगह परमेश्वर की महिमा से भर गई। परमेश्वर ने बात करनी शुरू की और स्पष्ट रूप में बात की। यह सिय्योन है, असली सिय्योन जहाँ परमेश्वर उसके स्वर्गीय नमूने के अनुसार हरेक हृदय और हरेक कलीसिया में राज करता है। सिय्योन के द्वारा ही वह उसकी बुद्धि और सामर्थ्य को दिखाता है, और सिर्फ वहीं हम परमेश्वर की भरपूरी और महिमा को देख सकते हैं।

मई 26

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"वास्तव में हमारी यह सहभागिता पिता के और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है" (1यूह. 1:3)। "अगर हम ज्योति में चलें जैसा वह ज्योति में है, तो हमारी एक-दूसरे केसाथ सहभागिता है"(1 यूह. 1:7)।

हम मनुष्यों को दो तरह की हानि उठानी पड़ती है। पहले प्रकार की हानि उद्धार का अनुभव न होने की वजह से होती है, और तब हम चाहे जो भी करें, वह सब एक नाकामी और नुक़सान ही होता है। दूसरे प्रकार की हानि वे लोग भी उठाते हैं जिनका नया जन्म हुआ है; यह शायद उनके ज्ञान की कमी की वजह से, या शायद उनकी अपनी भूल और पाप से होता है।

अब हम उन अस्त्र-शस्त्रों और संसाधनों का अध्ययन करेंगे जिनके द्वारा हम हरेक हानि की पुन:प्राप्ति कर सकते हैं, अर्थात् हेब्रोन और सिय्योन। इन दोनों संसाधनों द्वारा परमेश्वर ने उसके लोगों द्वारा उठाई गई हरेक हानि को पुन:प्राप्त किया था। हेब्रोन का अर्थ है सहभागिता: पहली परमेश्वर के साथ सहभागिता, अर्थात् पिता और पुत्र के साथ सहभागिता, और दूसरी हमारी एक-दूसरे के साथ सहभागिता जैसा कि *1 यूहन्ना 1:3,4,7.* एक पापी परमेश्वर से बात नहीं कर सकता, और न ही परमेश्वर उसमें वास कर सकता है। एक पापी परमेश्वर की इच्छा नहीं जान सकता, और न ही वह परमेश्वर की योजना या उद्देश्य या रहस्य को जान सकता है।

जब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं और हमारे हृदय शुद्ध हो जाते हैं, तब हमारे हृदय में यह लालसा पैदा होती है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में रहें। परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता हमें इस योग्य बनाती है कि हम उसके लोगों के साथ सच्ची आत्मिक संगति कर सकें। हम परमेश्वर के साथ जितना ज़्यादा चलेंगे, और उसके जितना पास रहेंगे, हम परमेश्वर और उसके लोगों के साथ सहभागिता का उतना ही आनन्द मना सकेंगे। ये दोनों साथ-साथ चलते हैं, इन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

मई 27

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"अगर तू विश्वास करे, तो विश्वास करने वाले के लिए" (मरकुस 9:23)।

मत्ती 17:20 के अनुसार, विश्वास से पहाड़ों को भी हटाया जा सकता है। हेब्रोन का अर्थ यह विश्वास है। और हेब्रोन शरण-स्थान भी था *(यहो. 21:10,11,27)।* हेब्रोन का तीसरा अर्थ क्या है? यह कि जो आत्मिक रूप से कमज़ोर हैं - जब वे गिरते हैं या ख़तरे में होते हैं, जब वे विलाप करते हैं या धीरज से प्रार्थना करते हैं, तो हमें उनका बोझ उठाना है और उन्हें प्रेम और दया के साथ उठाना है।

चौथी बात, कि हेब्रोन पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भरता को दर्शाता है। अनेक विश्वासी और परमेश्वर के सेवक जब यह नहीं जानते कि वे उनकी योजनाओं के लिए परमेश्वर के साथ कैसे परामर्श करें, तो वे बड़ी हानि उठाते हैं। *2 शमूएल 2:2-1* में जब दाऊद हेब्रोन आया था, तो वह ख़ाली, नम्र व दीन और टूटा हुआ था। हर बात में वह परमेश्वर से पूछता था, "क्या मैं ऊपर जाऊँ? क्या मैं ऊपर जाऊँ? मैं कहाँ जाऊँ? मैं कब ऊपर जाऊँ?" हमारी हानि की भरपाई करने का यह चौथा तरीक़ा है। अपने आपको हरेक आत्म-निर्भरता से ख़ाली कर लें, और हर बात के लिए परमेश्वर के पास जाने के लिए तैयार रहें। उससे यह भी पूछें कि आप अपना पैसा कैसे ख़र्च करें!

इसी तरह हरेक कलीसियाई मामले में भी परमेश्वर से परामर्श किया जाना चाहिए। हेब्रोन में आप व्यक्तिगत और सामूहिक तौर अपने हरेक काम और हरेक बात के लिए परमेश्वर से यह कहते हुए पूछना सीखते हैं: "हम क्या करें? हम कहाँ जाएं?" फिर से, जैसा कि हमने देखा है, अनेक लोगों को विवाह के मामले में परमेश्वर की इच्छा का पता लगाना नहीं आता।

इस तरह अनेक विश्वासी बर्बाद हो जाते हैं, और उनके घर अप्रसन्न और बिखरे हुए होते हैं क्योंकि उन्होंने कभी प्रभु से पूछने का पाठ नहीं सीखा है। दाऊद ने भी बहुत सालों तक पीड़ा में रहने के बाद यह पाठ सीखा था कि "प्रभु, क्या मैं जाऊँ? क्या मैं जा सकता हूँ?"

मई 28

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"दाऊद और भी महान् होता गया क्योंकि सेनाओं का प्रभु परमेश्वर उसके साथ था" (2 शमू. 5:10)।

हमने देखा कि परमेश्वर कैसे दाऊद को हेब्रोन और सिय्योन में लाया था कि वह उसे इस योग्य बना सके कि कुछ ईश्वरीय सिद्धान्तों का पालन करने द्वारा वह सभी व्यक्तिगत और राष्ट्रीय हानि को पुनःप्राप्त कर सके। दाऊद हेब्रोन में साढ़े सात साल रहने के बाद सिय्योन में आया था। परमेश्वर को पहले दाऊद को हेब्रोन में रखकर तैयार करना पड़ा जहाँ उसने सहभागिता का पूरा अर्थ सीखा। हब्रोन के बाद दाऊद सिय्योन में लाया गया था। व्यवस्था विवरण 7 के अनुसार इस्राएलियों को देश में रह रही सातों जातियों को बाहर निकाल देना था और उनमें से किसी के साथ कोई वाचा या समझौता नहीं करना था, और न ही उनके साथ वैवाहिक सम्बंध बनाने थे।

लेकिन उन्होंने अपनी मानवीय सोच-समझ चलाने द्वारा परमेश्वर को निराश किया था; सभी सातों जातियों के लोग वही बने रहे थे और उनकी वजह से पूरी इस्राएल प्रजा को बड़ी हानि उठानी पड़ी थी। 2 शमूएल 5 में हम पढ़ते हैं कि कैसे दाऊद ने यबूसियों से सिय्योन लिया था और उस नगर में अपना सिंहासन लगाया था। लेकिन अफसोस! अपने पापमय घमण्ड ने उसने जनगणना करने का आग्रह किया जिसके लिए परमेश्वर को उसे सज़ा देनी पड़ी थी। तब नबी के कहने पर दाऊद अरौना के खलिहान में गया और उसने वहाँ परमेश्वर के लिए वेदी बनाई, और ऐसा करते हुए परमेश्वर के मन्दिर की जगह पा ली। सिय्योन का यह सबसे पहला ईश्वरीय सिद्धान्त है: वह परमेश्वर के मन्दिर का स्थान है।

सबसे पहले तो हमें परमेश्वर के तरीक़े में लाए जाने की ज़रूरत होती है, और फिर, यह ज़रूरी होता है कि उसकी सेवा में हम अपने ज्ञान, चतुराई और योग्यताओं पर निर्भर न रहें। परमेश्वर ने दाऊद पर अपने मन्दिर के निर्माण की जगह प्रकट करने के बाद, परमेश्वर ने उसे लिखित में मन्दिर का नमूना दिया। यह सिय्योन का दूसरा ईश्वरीय सिद्धान्त है: हमारे व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन और कलीसियाई जीवन के लिए एक स्वर्गीय नमूना *(1 इति. 28:11)।*

मई 29

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"मैंने एक कुशल राज-मिस्त्री की तरह नींव डाली... क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है- और वह यीशु मसीह है- कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।" 1 कुरि. 3:10-11

"युद्ध की लूट में से उन्होंने परमेश्वर के भवन के लिए दिया।" तीसरा ईश्वरीय सिद्धान्त यह है कि हम योजना को पूरा करने के लिए सामग्री जमा करें। परमेश्वर हमारे जीवन में युद्ध होने देता है, कि हमें परमेश्वर के भवन के लिए ज़रूरी सामग्री लाने का सुअवसर मिल सके।

जब दाऊद ने मन्दिर के निर्माण की जगह पा ली और उसे मन्दिर का नमूना मिल गया और उसने उसके निर्माण के लिए सारी सामग्री इकट्ठी कर ली, तो उसके बाद उसे एक समझदार राज-मिस्त्री की ज़रूरत पड़ी। जब परमेश्वर ने सुलेमान को चुना *(1 राजा 2:13; 3:11)* तो उसने प्रभु से बुद्धि माँगी *(1 राजा 3:5,9)*। वह इस तरह से एक कुशल राज-मिस्त्री बन सका था। अगर परमेश्वर के काम को शांतिपूर्वक आगे बढ़ते रहना है, तो ऐसे पुरुषों की ज़रूरत होती है जिनके पास प्रेरिताई का दर्शन और अनुभव है। परमेश्वर के काम के लिए उसे हर तरह के काम करने वाले लोग चाहिए। परमेश्वर को पृथ्वी के हरेक छोर से कुशल कारीगरों की ज़रूरत होती है। सिर्फ तभी निर्माण का काम आगे बढ़ सकता है।

हालांकि वे निमार्ण-कार्य में भारी पत्थर और लकड़ियों के बड़े-बड़े लट्ठे इस्तेमाल कर रहे थे, फिर भी मन्दिर में किसी तरह के औज़ारों के इस्तेमाल किए जाने का कोई शोर नहीं था। परमेश्वर की योजना को जानना बहुत ज़रूरी होता है कि फिर परमेश्वर पूरी एकता और शांति में आगे बढ़ सके।

जब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की तब स्वर्ग से परमेश्वर की आग ने गिरकर सारी होमबलियों और दूसरी बलियों को भस्म कर दिया और पूरे भवन में परमेश्वर की महिमा भर गई। परमेश्वर की महिमा सिर्फ तभी नीचे आई जब सारा काम पूरा हो गया, और हम भी परमेश्वर की महिमा को सिर्फ तभी देखेंगे जब परमेश्वर का काम पूरा हो जाएगा। अधूरे काम में परमेश्वर की महिमा प्रकट नहीं हो सकती। परमेश्वर अपने उद्देश्य के लिए दाऊद को सिय्योन में लाया था कि वहाँ वह अपने आपको अपने लोगों पर प्रकट कर सके।

मई 30

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय में महिमा की बातें की जाती हैं" (भज. 87:3)।

हम *भजन संहिता 87:2* में सिय्योन के बारे में कुछ और सीखते हैं: "प्रभु याकूब के अन्य सब निवास स्थानों से बढ़कर सिय्योन के फाटकों से प्रेम करता है।" इससे पहले कि याकूब उसके लिए ठहराए गए परमेश्वर के उद्देश्यों को समझ पाता, उसे बहुत से अनुभवों में से गुज़रना पड़ा था। *भजन 87:2* में याकूब के निवास स्थान याकूब की उन सारी कोशिशों, संघर्षों, लड़ाइयों और मानवीय कामों के बारे में बात करता है जिनके द्वारा उसने परमेश्वर की आशिषें प्राप्त करनी चाही थीं। वह मानवीय प्रयासों से पहलौठे का अधिकार पाना चाह रहा था।

"सिय्योन के फाटक" *(पद 1)।* परमेश्वर का प्रेम सिय्योन के लिए है। पवित्र शास्त्र कहता है, "परमेश्वर सिय्योन के फाटकों से प्रीति रखता है।" अगर हमें परमेश्वर के प्रेम की परिपूर्णता का आनन्द मनाना है, तो हमें एक आवश्यक रूप में सिय्योन का हिस्सा होना है। हम सिर्फ सिय्योन में ही हरेक हानि को पुनःप्राप्त कर सकते हैं, इसलिए प्रभु हमारे ध्यान को लगातार सिय्योन की तरफ खींचता रहता है।

उत्पत्ति 14:18,19 परमेश्वर के वचन में सिय्योन का पहला उल्लेख है। "सालेम" शब्द का अर्थ शांति है, और सालेम या यरूशलेम शांति का नगर है। इससे पहले कि सदोम का राजा अब्राहम को धोखा दे पाता, परमेश्वर ने सालेम के राजा, परमप्रधान परमेश्वर के याजक मलिकिसिदक को उसे आशिष देने के लिए भेजा *(पद 19)।* फिर जब सदोम के राजा ने अब्राहम को सारी सम्पत्ति देनी चाही तो अब्राहम ने उसमें से न तो एक डोरा और न ही जूती का एक बंध भी लेना चाहा।

अब्राहम में ऐसा विश्वास कहाँ से आ गया था? क्योंकि अब्राहम ने सिय्योन से आए परमप्रधान परमेश्वर के याजक मलिकिसिदक से स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी परमप्रधान परमेश्वर के नाम में एक सच्ची आशिष पा ली थी।

मई 31

पुनः प्राप्ति के रहस्य

"परमेश्वर ने शपथ खाई है, और वह उससे न बदलेगा; 'तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है'" (भजन. 110:4; इब्रा. 7:4,12)।

मलिकिसिदक ने न सिर्फ अब्राहम को आशिष दी बल्कि वह उसके लिए रोटी और दाखरस भी लाया था *(उत्पत्ति 14:18)।* अब्राहम ने यह माना कि हरेक आशिष परमेश्वर की तरफ से आती है और इस वजह से ही उसने उसे दसवांश दिया था *(उत्पत्ति 14:20)।*

दसवांश उसके विश्वास को दर्शाता है और वह धन्यवाद की एक अभिव्यक्ति भी है। *2 इतिहास 3:1* के अनुसार मोरिय्याह पर्वत अब्राहम की अंतिम परीक्षा की जगह थी *(उत्पत्ति 22)।* परमेश्वर ने अपने आपको अब्राहम पर दस बार प्रकट किया था, और दसवीं बार वह मोरिय्याह पर्वत पर प्रकट हुआ था। परमेश्वर का मित्र बनने के लिए उसे इन दस परीक्षाओं में से गुज़रना पड़ा था। उसकी अंतिम परीक्षा के लिए परमेश्वर उसे सिय्योन में लाया था।

इसके बाद परमेश्वर पूरी तरह अब्राहम के साथ जुड़ गया था। अब्राहम ने परमेश्वर द्वारा दी गई हरेक आज्ञा का पालन किया था, और जो कुछ परमेश्वर ने उससे कहा था, उसने वह पूरा किया था। इसी तरह आप भी किसी भय या संदेह बिना सिय्योन में आते हैं तो परमेश्वर आपके साथ भी इसी तरह जुड़ जाता है। आप परमेश्वर से कुछ भी माँग कर सकते हैं और वह उसे पूरी करेगा। क्या कोई मनुष्य हमें इतना दे सकता है? परमेश्वर के घर से दूर न रहें और उसे तुच्छ न जानें। परमेश्वर के संतों की संगति को तुच्छ न जानें बल्कि परमेश्वर के घर में से अपना पूरा हिस्सा ले लें और फिर आप अपनी हरेक हानि को पुन:प्राप्त कर सकते हैं।

अब्राहम के जीवन से सीखे जाने वाले ये दो बहुत महत्वपूर्ण पाठ है। अपनी सम्पत्ति से परमेश्वर का सम्मान करें और यह स्वीकार करें कि सिर्फ परमेश्वर ही आपको आशिष दे सकता है; यह पहला पाठ है। दूसरा पाठ यह है कि परमेश्वर के घर में एक दृढ़ लेकिन सहज विश्वास के साथ आएं जिससे कि आप पूरी तरह से परमेश्वर के उद्देश्य के साथ जुड़ सकें।

जून 1

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"तब स्वर्ग से एक वाणी हुई: 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ'" (मत्ती 3:17)।

यूहन्ना बपतिस्मा जगत में प्रभु यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार करने के लिए आया था। उसने जंगल में मन-फिराव के संदेश का प्रचार करना शुरु किया लेकिन उस संदेश को स्वीकार करना लोगों के लिए आसान नहीं था। लोग दूर-दूर से उससे जो संदेश सुनने के लिए आते थे, वह उन्हें प्रसन्न करने वाला संदेश नहीं था, बल्कि वह जीवित परमेश्वर के अधिकार से भरा संदेश था। उसने निष्पक्ष होकर यह कहा: "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"

जिन्होंने उसके संदेश को सुना उन्होंने अपने पापों से मन फिराया, उनका अंगीकार किया, और बपतिस्मा पाया। उनमें से कुछ ने यह भी सोचा होगा कि एक ऐसे महान् नबी के हाथ से बपतिस्मा पाने के द्वारा शायद उन्हें किसी तरह की कोई आशिष मिल जाएगी। उसके पास आने वालों में इस्राएली लोगों के अगुवे भी थे, और उन्हें देखकर यूहन्ना ने कहा, "हे साँप के बच्चों, तुम्हें किसने सचेत कर दिया कि आने वाले प्रकोप से भागो? इसलिए, अपने पश्चाताप् के योग्य फल भी लाओ।"

एक दिन स्वयं प्रभु यीशु मसीह बपतिस्मा लेने के लिए आया। पवित्र-शास्त्र कहता है कि उस दिन तक यूहन्ना बपतिस्मा स्वयं नहीं जानता था कि प्रभु यीशु वास्तव में कौन था (यूह. 1:31)। हमारा प्रभु यीशु मसीह लोगों की भीड़ में शामिल होकर ख़ामोशी के साथ आया और उसने यूहन्ना से उसे बपतिस्मा देने के लिए कहा। एक प्राकृतिक रूप में यूहन्ना को यीशु के बारे में कुछ जानकारी तो थी क्योंकि वह उसका कौटुम्बिक सम्बंधी था, लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वही मसीह है। जब यूहन्ना ने स्वर्ग को खुलते और पवित्र-आत्मा को यीशु मसीह पर एक कबूतर के रूप में उतरते हुए देखा, तो उसने एक निश्चित रूप में जान लिया कि वह कौन था। अगले दिन उसने यह घोषणा कर दी: "देखो, परमेश्वर का मेमना जो जगत का पाप उठा लिए जाता है।"

जून 2

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"मार्ग यही है, इसी पर चल" (यशा. 30:21)।

जब परमेश्वर की वाणी हुई, सिर्फ तभी यूहन्ना ने जाना कि यीशु कौन है। जब तक आप भी परमेश्वर की वाणी नहीं सुनेंगे, आप भी यह न जान सकेंगे कि परमेश्वर कौन है।

आप अनेक सभाओं में गए होंगे, आपको बाइबल का भी अच्छा ज्ञान होगा, और आपने बहुत से बलिदान भी चढ़ाए होंगे, लेकिन जब तक आप परमेश्वर की आवाज़ नहीं सुनेंगे, तब तक आपके लिए इन बातों का कोई आत्मिक मूल्य न होगा। प्रभु ने अपनी सेवकाई का आरम्भ चमत्कारों द्वारा नहीं किया था। उस दिन तक उसने एक भी चमत्कार नहीं किया था, और न ही एक भी प्रचार किया था। लेकिन जब परमेश्वर की वाणी ने उसकी असली पहचान की घोषणा की, उसके बाद ही यूहन्ना ने यह समझा और घोषित किया कि यीशु कौन था।

अगर आप परमेश्वर की कृपा का आनन्द मनाना चाहते हैं, और उसकी सामर्थ्य को उसकी परिपूर्णता में समझना चाहते हैं, और प्रतिदिन परमेश्वर के मन की बात जानना चाहते हैं, तो प्रतिदिन उसकी धीमी आवाज़ को सुनने का रहस्य सीखें और उसे दिन में अनेक बार सुनें। परमेश्वर, जो जीवित और सामर्थी परमेश्वर है, बात करता है, और वह यह चाहता है कि हम उसकी आवाज़ को सुनें और उसकी बात मानें। ऐसा हो कि हम सभी यह रहस्य जान लें। हमें परमेश्वर की वाणी को प्रतिदिन हमसे यह कहते हुए सुनना है: "मार्ग यही है, इसी पर चल" (यशा. 30:21)।

ये शब्द कितने सहज हैं! आप जैसे ही एक ग़लत मोड़ मुड़ने वाले होंगे – चाहे दाएं या बाएं – तो यह धीमी आवाज़ यह कहती हुई आएगी: "इस तरफ मत जा, उस तरफ मत जा; वहाँ कुछ ख़तरा है।" इस तरह एक सही मार्ग में प्रतिदिन हम सभी की अगुवाई की जा सकती है।

जून 3

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"परमेश्वर ने गर्जन में से उसे उत्तर दिया।" (निर्ग. 19:19)।

जब तक हम संसार में हैं, हम परीक्षा/प्रलोभन का सामना करेंगे। इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि आप कौन हैं, कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं। मनुष्य होते हुए हमें बहुत सी परीक्षाओं, मुश्किल हालातों और तरह-तरह की परेशानियों का सामना करना ही पड़ता है।

लेकिन जब हम परमेश्वर की आवाज़ को साफ तौर पर सुनने वाले बन जाते हैं, तब हम इन हालातों पर जय पाने वाले बन सकते हैं। परमेश्वर उसके वचन में से हमें दिखाता है कि कैसे हमारे आत्मिक जीवन के आरम्भ से ही हमें उसकी आवाज़ को सुनना सीख लेना चाहिए।

1 राजा 19 के आरम्भ में, दुष्ट रानी ईज़ेबेल ने एलिय्याह को मार डालने की धमकी दी, तो एलिय्याह ने ज़रूर ऐसा सोचा होगा कि परमेश्वर ईज़ेबेल को सज़ा देगा। और जब परमेश्वर ने उसे सज़ा नहीं दी तो वह क्रोधित होकर एक झाऊ के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। हम भी कई बार ऐसा ही करते हैं। हम भी इसी तरह परमेश्वर को ग़लत समझ लेते हैं और उस पर संदेह करने लगते हैं। लेकिन परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं; उसके मार्ग हमारे मार्गों से ऊँचे हैं। वह हमारे तरीक़े से काम नहीं करेगा।

एलिय्याह ने शायद यह सोचा होगा कि परमेश्वर अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर रहा है क्योंकि उसने ईज़ेबेल को सज़ा नहीं दी थी। तब उसने परमेश्वर से यह कह दिया: "प्रभु, आज से मैं तेरा सेवक नहीं हूँ।" अगर आप सरकारी नौकरी करते हों, तो उसमें से निवृत्त होने के लिए भी आपको तीन महीने पहले सूचना देनी पड़ती है, लेकिन एलिय्याह ने सिर्फ एक ही दिन में सेवा में से निवृत्ति ले ली थी! असल में उसकी बातों का अर्थ यही था: "आज ही मेरी नबूवत की सेवकाई मुझसे वापिस ले ले। आज से मैं तेरे नाम में नहीं बोलूँगा। तू सो गया है और अपना काम नहीं कर रहा है!"

जून 4

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"फिर आग के बाद एक धीमी आवाज़ सुनाई दी" (1 राजा 19:12)।

बहुत बार हम भी ऐसा ही सोच लेते हैं। हम परमेश्वर को हमारे तरीक़े से काम करता हुआ देखना चाहते हैं। लेकिन परमेश्वर सोया हुआ नहीं था! वह एलिय्याह को पहाड़ की चोटी पर ले गया, और वहाँ उसने एलिय्याह के साथ अद्‌भुत रीति से व्यवहार किया।

पहले एक प्रचण्ड आँधी आई, लेकिन परमेश्वर उस आँधी में नहीं था। फिर एक भूकम्प आया जिसने पूरे पहाड़ को हिला दिया! लेकिन पवित्र शास्त्र कहता है कि परमेश्वर भूकम्प में नहीं था। फिर आग आई, और परमेश्वर आग में भी नहीं था। और फिर एक धीमी आवाज़ ने आकर एलिय्याह को बताया कि कहाँ, कब और कैसे ईज़ेबेल को दण्ड देगा। इसके साथ ही उसने आने वाले दिनों में होने वाली दूसरी बहुत सी बातों के बारें में उसे बताया।

हम परमेश्वर को बाइबल में बात करता हुआ पाते हैं। परमेश्वर बात करता है और अगर परमेश्वर में विश्वास करते हैं, तो जब वह बोले तो आपको उसकी बात सुननी चाहिए। वह निराकार नहीं है। वह एक व्यक्ति है। हम उसे जान सकते हैं, और उसकी अगुवाई में चल सकते हैं, और उसे एक ऐसी आत्मीय रूप में जान सकते हैं जैसे हम और किसी को भी नहीं जान सकते। आप अनेक सालों से अपने मित्रों के साथ रह रहे होंगे लेकिन फिर भी आप उन्हें पूरी तरह नही जानते होंगे।

आप अपनी पत्नी और बच्चों के साथ बहुत सालों तक रहने के बाद भी आप उन्हें सब कुछ नहीं बता सकते। हमारे कुछ विचार ऐसे होते हैं जो हम किसी के साथ नहीं बाँट सकते, लेकिन हम परमेश्वर के साथ खुलकर बात कर सकते हैं और उसके साथ अपना हरेक विचार बाँट सकते हैं। हम उसके पास कभी भी और कहीं भी जा सकते हैं और उसकी आवाज़ सुन सकते हैं।

जून 5

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बोलने की आवाज़..." *(यहेज़. 10:5)।*

पहले, सिर्फ नबी या महायाजक ही परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकते थे। और अगर दूसरे यह सुनना चाहते थे कि परमेश्वर क्या कह रहा है, तो उन्हें या तो नबी के पास और या महायाजक के पास जाना पड़ता था। दाऊद जब भी किसी संकट में पड़ जाता था तो वह परमेश्वर की आवाज़ सुनने में मदद करने के लिए महायाजक सदोक को बुलवा लेता था। यीशु मसीह जगत में इसलिए आया कि वह परमेश्वर की आवाज़ सुनने में मनुष्यों की मदद कर सके और इस वजह से उसकी सेवकाई के आरम्भ में ही पवित्र-आत्मा उस पर उतर आया और परमेश्वर ने स्वर्ग से बात की।

उसके बपतिस्मे में हमारा प्रभु यह बोल रहा था कि उसे कैसे मरना है, दफन होना है और फिर जी उठना है। उसने अपनी सेवकाई के आरम्भ में ही एक प्रतीकात्मक रूप में इस बात की घोषणा कर दी थी। मरकुस 8:31 व 9:31 में वह इस बारे में एक ज़्यादा साफ और ख़ास तरह से बात करता है, और उसके सूली पर चढ़ाए जाने से पहले ही अपनी मृत्यु की नबूवत करता है। बपतिस्मे द्वारा उसने एक प्रतीकात्मक रूप में यह कहा कि यह ज़रूरी है कि वह पापियों के लिए अपनी जान दे और मृत्यु पर जय पाए। और तब स्वर्ग खुल गया था और परमेश्वर की आवाज़ सुनाई दी थी। जिन लोगों को उनके जीवन में प्रभु यीशु मसीह का अनुभव होता है, वे प्रतिदिन स्वर्ग को खुलता हुआ देखते हैं; वे प्रतिदिन परमेश्वर की कृपा, दया, प्रेम और सामर्थ्य पर उनके अधिकार का दावा करते हैं; और उनके पास उनकी अगुवाई और मदद के लिए पवित्र-आत्मा है क्योंकि सामान्य ज्ञान द्वारा रहस्यों और आत्मिक सत्यों को नहीं समझा जा सकता।

आप भी अपनी ज़रूरत के अनुसार प्रतिदिन परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकते हैं, और उस भीतरी आवाज़ द्वारा एक अचूक रूप में यह जान सकते हैं कि परमेश्वर आपसे क्या अपेक्षा रखता है और आपसे क्या काम चाहता है।

जून 6

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

“मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य तुम्हारे बीच में आ गया है” (मत्ती 3:2)।

अगला सवाल यह है कि हममें से कोई प्रतिदिन परमेश्वर की आवाज़ को एक स्पष्ट और निश्चित तौर पर कैसे सुन सकता है? इसका जवाब इसी अध्याय में है: “मन फिराओ!” (मत्ती 3:2)। यूहन्ना बपतिस्मा द्वारा यह पहला संदेश बड़े साहस और अधिकार के साथ दिया गया था। यही संदेश प्रभु यीशु मसीह ने भी उसके बपतिस्मे के दिन दिया था (मत्ती 4:17)। यूनानी भाषा में “मन फिराओ” का अर्थ “पूरा घूम जाना” है। पहले मैं आगे देखता हूँ, फिर उधर से अपनी पीठ घुमा कर विपरीत दिशा में देखता हूँ। यह मन-फिराव होता है।

पापियों के रूप में हमारा मुख शैतान की तरफ और पीठ परमेश्वर की तरफ होती है क्योंकि हमें परमेश्वर से ज़्यादा शैतान की बात मानने में मज़ा आता है। फिर परमेश्वर का वचन सुनने और पाप के परिणाम जान लेने के बाद, हम मन फिराते और शैतान की तरफ अपनी पीठ फेर कर अपने मुख परमेश्वर की तरफ कर लेते हैं। लेकिन ज़्यादातर मामलों में यह मन-फिराव आधा या दो-तिहाई ही होता है! मनुष्यों को दोनों स्वामी चाहिए! जब वे तकलीफ में होते हैं तब वे परमेश्वर को चाहते हैं, वर्ना वे शैतान की सेवा करना चाहते हैं। मन-फिराव तब तक मन-फिराव नहीं है जब तक वह पूरा और भरपूर न हो। हमें मन फिराने और शैतान की तरफ अपनी पीठ फेर देने के लिए परमेश्वर की कृपा और मदद की ज़रूरत होती है।

इसी अध्याय में हमें यह बताया गया है (पद 13 व 14) कि यीशु को अपनी तरफ आते देख यूहन्ना हैरान हो गया था। जब तक आप अपने आपको नम्र व दीन नहीं करेंगे, आप परमेश्वर के राज्य का अर्थ नहीं समझ सकेंगे। हालांकि जो अधिकार और सामर्थ्य यीशु के पास था, वह यूहन्ना बपतिस्मा के अधिकार और सामर्थ्य से बहुत बढ़कर था, फिर भी उसने आपकी और मेरी ख़ातिर अपने आपको नम्र व दीन किया और यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने के लिए गया। एक प्रतीकात्मक रूप में, यीशु यह कह रहा था कि नम्रता ईश्वरीय कृपा का रहस्य है।

जून 7

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"हम बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में सहभागी हुए हैं" (रोमियों. 6:4)।

अपने बपतिस्मे द्वारा हमारे प्रभु ने तीन बातों की नबूवत की थी। रोमियो अध्याय 6 में, बपतिस्मा मृत्यु, दफन और जी-उठने की बात करता है; यह वह तीन-गुणा भीतरी बदलाव है जो बाहरी तौर पर व्यक्त होता है। बपतिस्मा एक औपचारिक धार्मिक विधि नहीं बल्कि साक्षी है। अनेक मामलों में वह सिर्फ एक धार्मिक रीति और एक आनुष्ठानिक विधि ही होती है। जब तक हमें यह नहीं सिखाया जाता, तब तक हम एक बहुत निष्फल मसीही जीवन जीते हैं। जब तक हमारे पाप दफन होकर भुला नहीं दिए जाते, तब तक हममें सच्ची शांति नहीं हो सकती। वर्ना ऐसा होगा कि हमारे द्वारा किए पापों की स्मृति पीछे से आकर हमें डराती रहेगी। आज आप पाप की हरेक स्मृति से मुक्ति पा सकते हैं। वह हमारे पाप के दण्ड को मिटाने के लिए मरा। वह इसलिए मरा कि हम अपने पापमय स्वभाव की तरफ से मर जाएं।

जैसे कैंसर को उसके आसपास के ऊतक (टिशू) और माँसपेशियों के साथ निकालना पड़ता है, इसी तरह हमें भी विश्वास से मृत्यु की शक्ति को अपने अन्दर लेना होता है कि हम अपनी अभिलाषाओं और विचारों के प्रति मर सकें। इस तरह से मरना सिर्फ कह देने से नहीं होता। हम सुबह उठकर यह कह सकते हैं, "मैं यह नहीं करूँगा; मैं ऐसा नहीं करूँगा।" लेकिन मस्तिष्क अपना काम करने लगता है: वह कहता है, "कोई बात नहीं; कोई बात नहीं!" तब हम आगे बढ़ते हैं और दोबारा गिरते हैं।

हम अपनी शक्ति से जय नहीं पा सकते। जैसे-जैसे हम मृत्यु की शक्ति को अपने अन्दर ग्रहण करते हैं, वैसे-वैसे हम उस नए जीवन को ग्रहण करते हैं जिसे उसकी जी-उठने की शक्ति कहा जाता है, और जो हममें अनन्त की बातों के लिए एक भूख और प्यास जगाती है। फिर समय गुज़रने के साथ-साथ, हमारे कान भी परमेश्वर की आवाज़ को सुनने वाले हो जाते हैं।

जून 8

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"मेरे आगे-आगे अपना मार्ग सीधा कर" (भजन. 5:8)।

6 दिन के बाद, प्रभु यीशु मसीह उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया और वहाँ उनके देखते हुए उसका रूपान्तर हो गया। फिर स्वर्ग से एक आवाज़ यह कहती हुई सुनाई दी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।" इस तरह परमेश्वर हमें बताता है कि अगर हम यह चाहते हैं कि हमारे पास एक ईश्वरीय जीवन हो, तो हमें अपने पुराने स्वभाव में मरना होगा। हम उसकी कृपा के बिना अपनी ख़ुदी में नहीं मर सकते। प्रभु इसलिए मरा कि हमारी ख़ुदी में मरने के लिए वह हमारी मदद कर सके। इसका प्रमाण यह होता है कि हम जितना ज़्यादा आज्ञापालन करते हैं, उतनी ही ज़्यादा ईश्वरीय ज्योति हमारे मुख पर नज़र आती है। यह परमेश्वर की उस महिमा का प्रतिबिम्ब है और जैसे-जैसे हमारा आज्ञापालन बढ़ता है, वैसे-वैसे यह ज्योति और ज़्यादा जगमगाती है।

प्रभु यीशु मसीह इसलिए जी उठा कि हममें नया जीवन - उसके जी-उठने की सामर्थ्य उण्डेल सके। सिर्फ उस जीवन के द्वारा ही हम वह अति धीमी आवाज़ सुन सकते हैं। वह वास्तव में अति धीमी आवाज़ होती है। वह किसी मनुष की आवाज़ नहीं होती, और सिर्फ अनुभव के द्वारा ही हम उसे सुनना और उसके पीछे चलना सीखते हैं। सामर्थ्य पाने के लिए उस ईश्वरीय मार्ग में चलें जो सहज है, और फिर दिन प्रतिदिन आपके सवालों के जवाब मिलने लगेंगे।

इस सहज मार्ग में चलने के लिए, सबसे पहले आपको पूरी ईमानदारी से अपना मन फिराना होगा। कोई संकोच किए बिना अपने हरेक पाप का अंगीकार करें। हृदय से विश्वास करें और एक सहज भरोसे के साथ यह कहें: "प्रभु यीशु मसीह मेरे पापों के लिए मेरी जगह मरा, कि वह मेरे दण्ड को मेरे ऊपर से हटा दे।" आपकी जगह मरने के लिए प्रभु को धन्यवाद दें। उससे कहें, "मुझे अपने वचन में से तेरे गुप्त रहस्य, और तेरी वह योजना दिखा जो आज के लिए और भविष्य के लिए है।" तब आप प्रतिदिन अपने कानों में परमेश्वर की आवाज़ सुन सकेंगे।

जून 9

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"देह का जीव उसके लहू में है" (लैव्य. 17:11)।

हमारी एक आत्मा, एक जीव, और एक देह है (उत्पत्ति 2:7)। जब परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की, तब उसने अपनी आत्मा को उसमें फूँका। देह हड्डियाँ, लहू और माँस है; बौद्धिक तर्क, भावना और इच्छा-शक्ति जीव है; विवेक, अंतर्ज्ञान और आराधना आत्मा की क्षमताएं हैं।

यह मनुष्य के तीन मुख्य भाग हैं: देह, जीव और आत्मा। हमारा हरेक विचार, शब्द और काम जो हमारे परमेश्वर के ख़िलाफ होता है, वह हमारे द्वारा हमारे विवेक को मारने द्वारा ही होता है। अगर मैं एक झूठ बोलना चाहता हूँ, तो मेरा विवेक मुझे चेतावनी देगा, इसलिए, झूठ बोलने के लिए, मुझे अपने विवेक को मारना पड़ेगा। हम अपने विचारों, शब्दों और कामों द्वारा अनजाने ही अपनी आत्मा में मृत्यु को ले आते हैं। हमारी आत्मा की मृतक दशा की वजह से, हम इस लायक़ नहीं रहते कि हम परमेश्वर की आवाज़ सुन सकें, या उसकी उपस्थिति को महसूस कर सकें, या उसे छू सकें।

जब हम अपने अन्दर यीशु मसीह के जीवन को ग्रहण करते हैं, तब हममें फिर से एक तीन-स्तरीय बदलाव आता है। परमेश्वर का प्रेम सिर्फ उसी आत्मा में उण्डेला जा सकता है। वह मेरी हड्डियों, लहू या माँस-पेशियों में नहीं उण्डेला जा सकता। परमेश्वर एक आत्मा है, और इससे पहले कि वह शुद्ध जीवन मेरी आत्मा में आ सके, परमेश्वर को मुझे पूरी तरह से शुद्ध करने, स्वच्छ करने और धोने की ज़रूरत होती है। हमें शुद्ध करने के लिए हम विश्वास से उसके मूल्यवान लहू पर अपना आधिकारिक दावा करते हैं क्योंकि सिर्फ उसके लहू में ही अनन्त जीवन है। हमारे लहू में शारीरिक जीवन है। हम तब तक ही जीवित रहते हैं जब तक हमारे हृदय धड़कते रहते हैं। परमेश्वर ने बहुत पहले लैव्य-व्यवस्था में यह घोषित कर दिया था। "देह का जीवन लहू में है।"

जून 10

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"तू मेरे जीव को अधोलोक में न छोड़ेगा; तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा" (भजन. 16:10)।

प्रभु यीशु मसीह ने कभी कोई पाप नहीं किया था और क्योंकि वह पवित्र-आत्मा द्वारा गर्भ में आया था, इसलिए वह पूरी तरह पवित्र था, और इसलिए वह अपने शत्रुओं को यह चुनौती दे सका था: "तुममें से कौन मुझे पापी ठहराता है?" (यूह. 8:46)। किसी ने उसकी चुनौती को स्वीकार करने का साहस नहीं किया। यही वजह है कि उसके लहू ने हमारे लिए अनन्त जीवन ख़रीद लिया है, और वह सड़ने भी नहीं पाया (भजन. 16:10)।

हमारे प्रभु की देह नहीं सड़ी, और अपनी उसी देह में वह जी उठा। "जो भी मेरा माँस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसका है।" हम इस सत्य को विश्वास से ग्रहण करते हैं, क्योंकि हम उसके लहू के द्वारा शुद्ध होते और उसके अनन्त जीवन से भरे जाते हैं, और तभी, सिर्फ तभी, हम परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस कर पाते हैं। इस नए जीवन में, जब परमेश्वर का आत्मा हममें वास करने लगता है, तो हम देह, जीव और आत्मा में, एक संतुलित काम को होता हुआ देखते हैं। और तब हम प्रतिदिन उसकी आवाज़ को सुन सकते हैं: "मार्ग यही है, इसी पर चल। मेरे पुत्र, सचेत हो, और ध्यान से सुन। मेरे बच्चे, मेरे पास आ; मुझे तुझे कुछ सिखाने दे; मुझे तुझे कुछ दिखाने दे।"

कभी-कभी हम गहरी नींद में सोए होते हैं और हम अचानक उठ जाते हैं, मानो हमने किसी आवाज़ को हमें पुकारते हुए सुना हो। मैं गहरी नींद में होता हूँ, और मैं किसी को एक स्पष्ट रूप में मेरा नाम लेकर मुझे पुकारते हुए सुनता हूँ। पहले मैंने सोचा कि वह कोई सपना या मेरी कल्पना है। और जब मैं दोबारा सो गया, तो मैंने उस आवाज़ को दोबारा सुना, और जाग उठा। कभी-कभी ऐसा तीन बार होता है, और वह आवाज़ फिर से यह कहती हुई आती है, "मेरे बच्चे, उठ, मैं तुझसे बात करना चाहता हूँ।" यह कितना बड़ा विशेषाधिकार है कि हमें दिन प्रतिदिन हमारी ज़रूरत के अनुसार परमेश्वर का वचन मिलता रहे।

जून 11

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"मूर्ख ने अपने मन में कहा, 'परमेश्वर है ही नहीं'" (भजन. 14:1)।

यीशु मसीह के मेरे जीवन में आने से पहले मैं एक निरीश्वरवादी था। मैं कहता था: "कोई परमेश्वर नहीं है।" मैं परमेश्वर में भरोसा रखने वाले सभी लोगों का मज़ाक उड़ाता था। फिर मैंने 16 दिसम्बर 1929 को परमेश्वर की आवाज़ को एक स्पष्ट रूप में सुना: "मेरे बेटे, तेरे पाप क्षमा हुए।" मैंने यहाँ से परमेश्वर के साथ चलना शुरू किया था। परमेश्वर का जीवन मुझमें आ गया था, और जब ऐसा हो गया, तब मुझमें आत्मा, जीव और देह का तीन स्तरीय बदलाव हुआ। मुझे एक संजीवित आत्मा मिली, एक प्रबुद्ध जीव मिला, और एक शुद्ध देह मिली। फिर कुछ ही समय बाद, मैंने जनवरी 1930 से उत्पत्ति की पुस्तक पढ़नी शुरू कर दी। मैंने पहले ही अध्याय में बार-बार यह वाक्यांश पाया, "परमेश्वर ने कहा।" और फिर मैंने इस वाक्यांश को 500 बार से ज़्यादा दोहराए जाते हुए देखा, और यह वाक्यांश को पढ़ने का समय मेरे लिए एक आशिष का समय रहा: "परमेश्वर बोलता है, परमेश्वर बोलता है।"

तब मैंने कहा, "हे परमेश्वर, मुझसे बोल। मैं तेरी आवाज़ सुनना चाहता हूँ। इसके अलावा मैं दूसरा कोई अनुभव नहीं चाहता। मेरे जीव की यह लालसा है कि तू मुझसे बात करे और दिन प्रतिदिन मुझे अपना मार्ग दिखाए।" मैंने एक बच्चे की तरह भरोसा किया। हालांकि या पाठ सीखने में कुछ समय लग सकता है कि यह ज़रूरी है कि परमेश्वर बोले, लेकिन यह एक सच्चाई है कि जब वह हमारे लिए एक वास्तविकता बन जाता है, तब वह अवश्य ही बोलता है। और एक ऐसा दिन आया जब मैं उसे रोज़ बोलते हुए सुनने लगा। इस वजह से ही मैं यह चाहता हूँ कि आप भी उसकी आवाज़ को सुनें और जो वे पाठ सीखें जो वह सिखाना चाहता है।

जून 12

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि जब तक कोई नया जन्म न ले, तब तक वह परमेश्वर का राज्य देख भी नहीं सकता" (यूह. 3:3)।

अब हम उसकी आवाज़ सुनने का दूसरा तरीक़ा देखेंगे। हमने पहले देखा था कि मसीह के बपतिस्मा लेते समय कैसे स्वर्ग खुल गया था। शाऊल परमेश्वर की आवाज़ सुनने के बाद पौलुस बन गया था (प्रेरितों. 9:3)। उसने सूर्य का प्रकाश नहीं ईश्वरीय ज्योति देखी थी। वह अचानक ही उसके चारों तरफ चमक उठी थी। आप शायद वैसी ज्योति न देखेंगे जैसी शाऊल ने देखी थी, लेकिन वही ज्योति नज़र आए बिना ही हम सभी के अन्दर आ सकती है।

प्रभु यीशु मसीह जगत की ज्योति है, और वही वह ईश्वरीय ज्योति है जो हमें हमारी भीतरी दशा दिखा सकती है। और वह पाप जो सालों से छुपे हुए थे, अब इस ज्योति में प्रकट हो जाते हैं। यह मेरे साथ हुआ है, हालांकि मैंने अपनी इन मामूली दैहिक आँखों से उस ज्योति को नहीं देखा था। लेकिन यूहन्ना 3:3 के उस छोटे से भाग को पढ़ने से यह हुआ था। "मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ, कि मेरी आँखें खुल गई थीं।" ये शब्द मेरे कानों में गूँजने लगे थे, "मैं तुझसे कहता हूँ, मैं तुझसे कहता हूँ, मैं तुझसे कहता हूँ।" मैंने जवाब दिया, "प्रभु, इन बातों में पापी हूँ। मैंने तेरे ख़िलाफ बातें की हैं। और मैंने 1919 में बाइबल को भी फाड़ डाला था।" फिर मैं घुटनों पर आ गया और तब मैंने अपने बीते जीवन की ऐसी बहुत सी बातें देखीं जिन्हें मैं पूरी तरह से भूल चुका था।

शाऊल के साथ भी ऐसा ही हुआ था। वह एक बौद्धिक तौर पर परमेश्वर के पीछे चलना चाह रहा था, लेकिन उसने उसकी भीतरी दशा नहीं देखी थी। फिर जब उसने एक भरपूर ज्योति को उसके भीतर देखा, तो वह रोमियों 7:18 में पुकार कर बोला: "इच्छा तो मुझमें है, लेकिन मुझसे भला काम हो नहीं पाता।" लेकिन प्रभु यीशु मसीह ने थोड़े से ही शब्दों में यह कह दिया है: "तुम अनजाने ही मेरे काम की हानि करते रहे हो।" हममें आने वाली ज्योति ही हमें यह दिखा सकती है कि हम परमेश्वर के काम की और अपनी कितनी हानि करते रहे हैं। परमेश्वर की ज्योति ही हमें हमारी सही दशा दिखा सकती है।

जून 13

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"उसने पूछा, 'प्रभु, तू कौन है?' और प्रभु ने कहा, 'मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है। काँटों पर लात मारना तेरे लिए अच्छा नहीं है" (प्रेरितों. 9:5)।

परमेश्वर की ज्योति को अपने अन्दर पूर्ण रूप में आने दें। उसे न रोकें। शुरू में यह एक बहुत ही नम्र व दीन करने वाला अनुभव होगा। शाऊल को अपने ज्ञान और चतुराई पर बहुत घमण्ड था, लेकिन परमेश्वर की ज्योति ने उसे मुँह के बल ज़मीन पर पटक दिया था। यह पुरुष के दोनों हाथों में बहुत से दस्तावेज़ थे जिनमें उसके पास यह अधिकार था कि उसे जो भी विश्वासी मिले वह उसे पकड़ कर कारागार में डाल दे।

उसके मस्तिष्क में बहुत से विचार थे और उसके हाथों में गिरफ्तारी के बहुत से वॉरण्ट थे। वह विश्वासियों को गिरफ्तार करने के लिए बड़ी तेज़ी के साथ दमिश्क के रास्ते में आगे बढ़ रहा था, और फिर उसके विचार और दस्तावेज़ दोनों ही हवा में उड़ गए। अब वह धूल में पड़ा था और प्रभु उससे कह रहा था, "तू अपना समय, पैसा और ताक़त बर्बाद कर रहा है। तू काँटों पर लात मार रहा है। तू ख़ुद को ही घायल कर रहा है। शाऊल, तू क्या सोच रहा है कि तू मेरा काम रोक सकता है? तू नहीं जानता कि तू अपना कितना नुक़सान कर रहा है?"

शाऊल तीन दिन के लिए अंधा हो गया कि परमेश्वर के सामने वह अपने आत्मिक अंधेपन को मान ले। "प्रभु, तू कौन है?" उसने पूछा। प्रभु ने जवाब दिया: "मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है।" "जब तू मेरे लोगों से घृणा करता और उन्हें सताता है, तो वह तू मेरे साथ करता है। लेकिन मैं बचाने वाला हूँ। शाऊल, हालांकि तू मेरे नाम से घृणा करता है और उसकी निन्दा करता है, लेकिन मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। मैंने तेरे लिए भी अपना लहू बहाया है और अपनी जान दी है।"

जून 14

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"जब उसने यह दर्शन देखा तो यह समझते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों में सुसमाचार सुनाने के लिए हमें बुलाया है, हमने शीघ्र ही मैसीडोनिया जाने का विचार किया।" प्रेरितों. 16:10

शाऊल ने उस आवाज़ को यह जवाब दिया, "प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूँ?" प्रभु ने उससे दमिश्क जाने के लिए कहा जहाँ उसे यह बताया जाना था कि उसे क्या करना है। हालांकि वह एक जाना-माना व्यक्ति था, लेकिन उसे सबसे पहले परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था और ठीक वैसा ही करना था जैसा परमेश्वर ने उससे कहा गया था। प्रभु ने उसे व्यक्तिगत तौर पर ज़्यादा बातें नहीं बताई (*प्रेरितों.* 9:6)। उसके पास हनन्याह नाम के एक अनजान व्यक्ति को भेजा गया। वह कोई प्रेरित नहीं बल्कि एक सामान्य व्यक्ति था। हम उसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानते।

अगर प्रभु चाहता, तो वह स्वयं ही पौलुस को उद्धार का पूरा मार्ग समझा देता, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया था। उसने वह बताने के लिए हनन्याह को भेजा था। उसके लिए वह परमेश्वर की आवाज़ थी, और शाऊल ने अपने आपको दीन किया और हनन्याह द्वारा कही गई बातों पर विश्वास किया। "अब मैं इस अद्‌भुत मार्ग को जान गया हूँ," उसने अपने मन में सोचा, "मेरे पाप क्षमा हो गए हैं। मैं अभी तक उसे ही सता रहा था जिसने मेरे लिए अपनी जान दी है।" तब हनन्याह के द्वारा उसका बपतिस्मा हुआ। उसके बाद, उसने बहुत बार परमेश्वर की आवाज़ को सुना।

परमेश्वर की आवाज़ को सुनने द्वारा, शाऊल उसके पूरे जीवन और सेवकाई में परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सका था (प्रेरितों के काम 16)। प्रभु सामर्थ्य के साथ गलातिया और मूसिया में काम करने लगा था, और जब पौलुस ने बितूनिया जाना चाहा, तो आत्मा ने उसे जाने न दिया। तब उसने पूछा, "प्रभु, क्या हम गलातिया में ही रहें?" तब प्रभु ने कहा, "नहीं।" उसे मूसिया जाने से भी रोक दिया गया। तब परमेश्वर की आवाज़ आई: "मैसीडोनिया में आ।" हालाकि वह दूसरे महाद्वीप में था, फिर भी उसने आज्ञापालन किया। इस तरह प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार ने यूरोप में प्रवेश किया। शाऊल और जो उसके साथ थे, उन्होंने आज्ञा का पालन किया, और जब प्रेरितों के काम 18:9 का संकट आया, तो उनके लिए यह कितने सौभाग्य की बात थी कि उन्हें उसके नाम के लिए पीड़ा सहने का मौक़ा मिला।

जून 15

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

“परमेश्वर, जिसका मैं हूँ और जिसकी मैं सेवा करता हूँ, उसका एक स्वर्गदूत आज रात मेरे पास आकर खड़ा हुआ और उसने कहा, ‘पौलुस, तू मत डर। तुझे अवश्य कैसर के सामने खड़ा होना है। देख, परमेश्वर ने इन सबको जो तेरे साथ यात्रा कर रहे हैं, तुझे दे दिया है” (प्रेरितों. 27:23-24)।

प्रेरितों के काम अध्याय 27 में, जहाज़ बड़े ख़तरे में पड़ गया था, और जहाज़ में सवार 276 लोगों को यह आशा नहीं रही थी कि वे जीवित बचेंगे। वे उस भयानक तूफान से डर रहे थे। जहाज़ को हल्का करने के लिए उन्होंने रस्से और पाल भी काट कर फेंक दिए थे, और मल्लाहों ने जहाज़ में से भागने की भी कोशिश की, लेकिन पौलुस ने उन्हें रोक दिया। उस रात परमेश्वर ने पौलुस से बात की थी: “पौलुस, तू मत डर। तेरा कैसर के सामने खड़ा होना ज़रूरी है, और देख, परमेश्वर ने तेरे साथ यात्रा करने वालों को भी तुझे दे दिया है!” परमेश्वर की इस आवाज़ में से भरोसा आया। बाहरी हालातों को देखते हुए यह असम्भव था कि वे बच पाते, और उन्हें अपने बचने की अब कोई आशा भी नहीं रही थी। लेकिन परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया कि वह और उसके साथ के सभी 276 लोग सुरक्षित थे। पौलुस ने खाया-पिया और एक अच्छी नींद सो गया। वह भयभीत नहीं था, और उसने दूसरों को भी खाने के लिए उत्साहित किया।

परमेश्वर के उपस्थित होने का अहसास ही हमें यह तसल्ली देता है कि यह किसी मनुष्य की नहीं बल्कि परमेश्वर की आवाज़ है। सबसे पहले, परमेश्वर के मौजूद होने का अहसास उसकी स्तुति करने और उसका वचन पढ़ने से होता है, और फिर हम उसकी आवाज़ सुनते हैं। अगर मैं अपने विश्वास को बढ़ता हुआ पाता हूँ, तो मैं जान लेता हूँ कि वह किसी मनुष्य की आवाज़ नहीं है, और बाद में अपने अनुभव द्वारा उसकी वाणी को ज़्यादा आसानी से सुनने/समझने वाले हो जाते हैं।

अगर आप परमेश्वर की आवाज़ सुनना चाहते हैं, तो प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में आने और राज करने दें। उसकी ईश्वरीय ज्योति को ग्रहण करें और अपने पाप का अंगीकार करने से न डरें। यह याद रखें कि वह आपके पापों के लिए ही मरा है। उसे अपने प्रेम करने वाले मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करें, और फिर दिन-प्रतिदिन उससे अपने मित्र की बात करें, क्योंकि आप उससे कहीं भी और किसी भी मामले पर बात कर सकते हैं, और वह यक़ीनन आपसे बात करेगा। सिर्फ एक बात याद रखें: जैसे ही आप उसकी आवाज़ सुनें, फौरन उसका आज्ञापालन करें।

जून 16

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"परमेश्वर की वाणी बहुत से जल के ऊपर है... महिमामय परमेश्वर गरजता है" (भजन. 29:4)।

एक दिन, मैं न तो किसी सभा में गया था और न ही कोई मुझसे बात करने मेरे पास आया था, फिर भी मेरे कक्ष में ही मैंने परमेश्वर की वाणी को मुझसे बात करते सुना। मैंने यह जान लिया कि वह परमेश्वर है जो मुझसे बात कर रहा है। उसने 40 साल पहले मेरे जीवन को बदल दिया था। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मेरे जैसे पापी को बचाया, और अब प्रतिदिन उसकी वाणी को सुनना मेरा विशेषाधिकार हो गया है। मैं उसकी महिमा के लिए यह साक्षी दे सकता हूँ कि वह दिन-प्रतिदिन मेरे सवालों का जवाब देता है, और मेरी समस्याएं, चाहे वे कितनी भी मुश्किल क्यों न हों, उन्हें हल करता है।

जैसे-जैसे हम पवित्र शास्त्र के विभिन्न् भागों का अध्ययन करते हैं, तो हम यह देख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर बीते समय में अनेक पुरुषों व स्त्रियों के जीवनों में आया था और उन्हें इस योग्य बनाया था कि वे उसकी वाणी सुन सकें। हमें उसके मार्गों की शिक्षा देने के लिए परमेश्वर बहुत से अलग-अलग तरीक़ों और हालातों को इस्तेमाल करता है। ऐसा हो कि वह हममें से हरेक को परमेश्वर की बहुत ही धीमी आवाज़ सुनने का रहस्य सीखा दे। यह भेद मत्ती 17:5 के उस भाग में से हम पर प्रकट किया गया है, जिसमें हम स्वर्ग से आने वाले ये शब्द सुनते हैं: "ये मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ, इसकी सुनों।" उस समय शिष्यों को समझ नहीं आया था। उस समय तो उनके लिए वह सिर्फ प्रभु और बहुत से स्वर थे। जो परमेश्वर ने कहा था, वे उसमें आनन्द न मना सके थे।

दूसरी ओर, जब शाऊल ने परमेश्वर की आवाज़ सुनी तो कुछ हुआ था। जब शाऊल और उसके साथी दमिश्क के मार्ग में जा रहे थे (प्रेरितों. 9), तो उसके पास ये शब्द एक स्पष्ट रूप में आए थे, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" इस बार शाऊल के साथियों ने वाणी तो सुनीं, लेकिन शब्द नहीं सुनें। उन्हें वह गर्जन जैसे सुनाई दिए।

जून 17

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"धर्मियों का पथ भोर के प्रकाश के समान होता है, जो दिन की पूर्णता तक अधिकाधिक बढ़ता जाता है" (नीति. 4:18)।

मत्ती 17 में उन लोगों की दशा ऐसी ही थी। उन्होंने बहुत से उपदेश सुने थे जो काफी सहज थे, लेकिन वे यह नहीं समझ सके थे कि उनके असली अर्थ क्या थे।

एक बार हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "फरीसियों के ख़मीर से सावधान रहो," और उसी दिन ऐसा हुआ कि वे अपने साथ रोटी लेना भूल गए थे। तब चेलों ने ऐसा सोच लिया कि क्योंकि वे रोटी लाना भूल गए हैं, इसलिए प्रभु उन्हें चिता रहा था। बहुत बार ऐसा होता था कि वे उसकी बात का अर्थ नहीं समझ पाते थे। इसी तरह, यह हो सकता है कि आप भी बहुत से संदेश सुन रहे हों, लेकिन फिर भी वे शब्द आपके प्रतिदिन के अनुभव का हिस्सा न बने हों। ज़्यादातर तो यही होता है कि वे एक कान में जाते हैं और दूसरे से निकल जाते हैं।

लेकिन हमारा आपसे यह निवेदन है कि जब प्रभु आपसे बात करे, तो आप तब तक हार न मानें जब तक कि आप उस बात को सुनना और समझना न सीख लें। जब आप यह सीख लेंगे, सिर्फ तभी आपका जीवन बदलना शुरू होगा। तब आपको आपके बोझ उतरते हुए महसूस होंगे, आपकी आँखें खुल जाएंगी, आपके भय और आशंकाएं मिट जाएंगे, और शत्रु की सारी युक्तियाँ नाकाम हो जाएंगी। प्रभु की वाणी सुनना एक अद्‌भुत बात होती है।

यह याद रखें कि ईश्वरीय ज्योति के बिना आप परमेश्वर की आवाज़ नहीं सुन सकते। अगर आप एक स्पष्ट और निश्चित तौर पर परमेश्वर की आवाज़ सुनना चाहते हैं, तो यह पहला क़दम है। तब परमेश्वर की ज्योति आपके अन्दर आएगी और उसका प्रकाश दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ता जाएगा (नीति. 4:18)। आपके अन्दर वह ज्योति एक मामूली सी किरण बन कर आ सकती है, लेकिन जब आप उसका आज्ञापालन करेंगे, तो उसकी जगमगाहट बढ़ती ही जाएगी। ईश्वरीय ज्योति के बिना आप परमेश्वर को न जान सकते, न देख सकते हैं, और न सुन सकते हैं।

जून 18

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"जब हम उसके साथ पवित्र पर्वत पर थे, तब हमने स्वर्ग से यही वाणी सुनी थी" (2 पत. 2:18)।

2 पतरस 1:16-21 में, पतरस ने फिर से इस बात की साक्षी दी थी कि कैसे हमारा प्रभु यीशु मसीह उसके लिए ऐसा वास्तविक बन गया था। पतरस अपनी पत्री में यह साक्षी देता है वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं ले रहा था। पहाड़ की चोटी पर उन्होंने प्रभु यीशु मसीह की महिमा को देखा था और परमेश्वर की वाणी को सुना था, और उस वाणी ने उन्हें पूरी तरह बदल दिया था (2 पत. 1:18)।

पतरस कहता है कि ऐसा न सोचो कि सिर्फ हम ही वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर की वाणी सुनने का सौभाग्य मिला है। आप अपने मन में यह कह सकते हैं: "पतरस यह तेरा सौभाग्य था कि तू पर्वत की चोटी पर था और तूने उसकी महिमा और रूपान्तर को देखा था। लेकिन हमारे जैसे लोग क्या करें? हम कैसे उसकी वाणी को सुन सकते हैं और उसकी महिमा को देख सकते हैं। उस समयकाल के लिए तो यह बात सही हो सकती है, लेकिन इस समयकाल में हमारे जैसे पुरुष उसकी वाणी को नहीं सुन सकते।" इसका जवाब अगले पद (2 पत. 1:19) में है। "अत: नबियों का जो वचन हमारे पास है, वह और भी ज़्यादा प्रमाणित हुआ। इस पर ध्यान देकर तुम अच्छा ही करोगे, मानो यह अंधेरे में चमकता हुआ एक दीपक है, जो उस समय तक चमकता है जब तक पौ न फटे और तुम्हारे हृदय में भोर का तारा उदय न हो।"

पतरस वहाँ कहता है कि अगर आप वास्तव में विश्वास से परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में ग्रहण करेंगे, तो आपके अन्दर आने वाला वचन चमकने वाली वह ज्योति बन जाएगा जिसमें आप स्वयं यह देख सकेंगे कि परमेश्वर ज्योति है। यह पवित्र-आत्मा की सेवकाई है। परमेश्वर के वचन में हम पहले अपने आपको वैसा देखते हैं जैसे हम हैं, और फिर हम परमेश्वर को उसकी सच्ची महिमा और प्रेम में देखते हैं।

जून 19

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"परमेश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं" (1 यूह. 1:5)।

प्रभु की नज़र में, किसी भी तरह का कोई भी पाप एक समान रूप में बुरा है। एक घाव में एक अशुद्ध स्पर्श मृत्यु ला सकता है। एक मामूली सा कीटाणु पूरे परिवार में मृत्यु ला सकता है। किसी भी तरह का पाप एक स्पष्ट रूप में विनाशक, भयजनक और बुरा होता है। हममें आने वाली परमेश्वर की ज्योति ही सिर्फ हमें उस नुक़सान से छुटकारा दिला सकती है जो हमारे एक विचार, शब्द या काम द्वारा होता है, और वही ज्योति हमें हमारे जीवित मुक्तिदाता की महिमा, सौन्दर्य और गौरव दिखाती है। जब मनुष्य हमारे पाप उघाड़ करते हैं, तो यह वे हमें लज्जित करने के लिए करते हैं, लेकिन जब परमेश्वर की ज्योति हमारे पापों को इसलिए प्रकट करती है कि वह उनका अंगीकार करने में और उन्हें धोकर शुद्ध करने में हमारी मदद करे। हमारे पास नबूवत का यह आश्वासन है कि हमें उसकी महिमा देखने के लिए पहाड़ की चोटी पर जाने की ज़रूरत नहीं है। कहीं भी, हम जहाँ भी हों, हम वहीं उसकी महिमा और सुन्दरता को देख सकते हैं। यह तभी सम्भव होता है जब ईश्वरीय ज्योति हममें आती है, और हम अपनी आत्मा में परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं।

अगर आप परमेश्वर की ज्योति ग्रहण करना चाहते हैं, तो सबसे पहले अपने पूरे हृदय से यह विश्वास करें कि बाइबल उत्पत्तिसे लेकर प्रकाशितवाक्य तक परमेश्वर का सच्चा वचन है। हालांकि कई बार जो हम पढ़ते हैं उसे समझ नहीं पाते, लेकिन फिर भी वह परमेश्वर के वचन के रूप में बना रहता है। वह कभी नहीं बदल सकता। वह किसी की निजी व्याख्या का मामला है, बल्कि परमेश्वर के पवित्र जन पवित्र-आत्मा की प्रेरणा से बोले हैं। परमेश्वर के वचन को आदर, भक्ति और विश्वास से सुनें और पढ़ें, और हर क़दम पर यह कहते रहें, "प्रभु, अपने वचन में से मुझसे बात कर।" आप इसी तरह परमेश्वर की आवाज़ को सुनना सीख सकते हैं।

जून 20
परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"मुझे अपने सत्य में ले चल और मुझे सिखा" (भजन. 25:5)।

पहली बार पढ़ने के बाद ही मुझे यह यक़ीन हो गया था कि यह परमेश्वर का वचन है। तब मैंने कहा, "प्रभु, मैं इस पुस्तक का आदर करूँगा, यह तेरा वचन है। मुझे यह सिखा और इसके पृष्ठों में से मुझ से बात कर। प्रभु, हालांकि मुझे शुरू में सब कुछ समझ नहीं आएगा, लेकिन मैं तेरे वचन पर कभी शक नहीं करूँगा। अपने समय से तू मुझे अपने वचन का अर्थ सिखा, या तो अभी या चाहे एक दो साल में। मैं तुझे शोकित नहीं करूँगा। मैं चाहता हूँ कि तू मेरी ज़रूरत के अनुसार मुझसे रोज़ बात करे।" तब मैंने परमेश्वर की ज्योति को दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ते हुए देखा। एक तरफ तो मुझे अपनी भीतरी भ्रष्टता नज़र आई, और दूसरी तरफ मुझे क्षमा करने और धो देने के लिए उसकी कृपा की भरपूरी नज़र आई, और यह कि उसने मेरी प्रतिदिन की ज़रूरत को पूरा करने के लिए किस तरह हरेक इंतज़ाम कर रखा है।

मैंने पहले यह सोचा था कि बाइबल का ज्ञान होने से मैं ज़्यादा धर्मी बन जाऊँगा, लेकिन फिर मैंने जाना कि न तो ज्ञान और न ही चिन्ह् और चमत्कार मुझे धर्मी बना सकते हैं। धार्मिकता सिर्फ परमेश्वर की वाणी सुनने से आती है। सोने से पहले मैं यह प्रार्थना करता था, "प्रभु कृपा करके मुझे बता कि क्या आज मेरे जीवन से तू प्रसन्न हुआ है? मुझे बता कि क्या मैंने कोई ग़लती की है और अपने किसी विचार, शब्द या काम से तुझे शोकित किया है? प्रभु कृपा करके मुझे वह दिखा दे।" उसने मुझे दिखाया, और मैंने उसका अंगीकार किया, और मेरे प्रभु ने मुझे क्षमा किया और मुझसे कहा, "मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ। अब जा।" और मैं तुरन्त बिस्तर में जाकर एक अच्छी नींद सो जाता था।

लेकिन अगर मैंने कुछ ग़लत किया होता था और मैं उसका अंगीकार नहीं करता था, तो मैं सो नहीं पाता था। मैं इधर-उधर करवटें बदलता रहता था, जब तक कि मैं उठकर कर फिर से अपने घुटने पर आकर यह नहीं कहता था: "हाँ, प्रभु, मैं लज्जित हूँ। वह मेरी ग़लती थी। मैंने तुझे शोकित किया है। दया कर, और मुझे क्षमा कर। मैं तेरे मूल्यवान लहू की प्रभावोत्पादकता में विश्वास करता हूँ। प्रभु, मुझे क्षमा कर।" फिर वह मुझसे कहता था, "मेरे बच्चे, जा अब सो जा। मैं तुझसे अति प्रसन्न हूँ।" अब मैं प्रतिदिन आनन्दित रहता हूँ।

जून 21

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"हे प्रभु, अपने मार्ग मुझे दिखा, और अपने पथ मुझे सिखा दे" (भजन. 25:4)।

अगर आपके हालात भी इसी तरह के होंगे, तो आपके साथ भी इसी तरह से होगा। मैं दिन प्रतिदिन यह कहना सीख लिया था, "प्रभु, क्या तू दया करके मुझे आज के लिए अपना मार्ग दिखाएगा। मैं असहाय हूँ, मुझे साफ-साफ यह दिखा कि तेरी मुझसे क्या अपेक्षा है। मुझे बता कि मुझे कहाँ जाना है और क्या कहना है।" और उसका नमूना पाकर मैं उसका तुरन्त पालन करता था। फिर रात आने पर मैं घुटने पर होकर फिर वही सवाल करता था, "प्रभु, क्या मेरे प्रेम से तुझे पूरा संतोष मिला है? क्या तू संतुष्ट है? मुझसे बात कर और मुझे बता, क्या तू पूरी तरह संतुष्ट है?"

मसीह चमकता हुआ भोर का तारा है? क्या आप कभी गाँवों में रहे हैं? वहाँ आप यह पाएंगे कि ज़्यादातर किसानों की दिनचर्या घड़ी के अनुसार नहीं चलती। जब भी वे सुबह खेत में जल्दी जाना चाहते हैं, या अपनी कोई यात्रा जल्दी शुरू करना चाहते हैं, तो वे भोर के तारे अनुसार चलते हैं और कहते हैं, "अब समय हो गया है, अब मुझे उठकर चलना चाहिए।" वे उसी भोर के द्वारा अपनी दिशा भी तय करते हैं।

प्रभु यीशु मसीह हमारे पास एक चमकते हुए भोर के तारे की तरह आता है, और शुरू में हालांकि हमें कुछ अंधेरा महसूस होगा, लेकिन यह याद रखें कि नया जन्म पाते ही कोई सिद्ध नहीं हो जाता। हमें अपने आसपास अंधेरा महसूस होगा लेकिन भोर का तारा मुझे कहता है, "मेरे बच्चे, अंधेरे को मत देख। एक-दो घड़ी में ही सूर्योदय हो जाएगा।" और वास्तव में हम कुछ घण्टों में सूर्य को जगमगाता हुआ पाते हैं। भोर का तारा हमें इस योग्य बनाता है कि हम किसी भी तरह की मानवीय मदद बिना ही अपनी चिंताओं और शंकाओं पर प्रबल हो सकें, और उनमें से अपना मार्ग पा सकें। हम जितना ज़्यादा आज्ञापालन करेंगे, हम उतनी ही ज़्यादा ज्योति पाएंगे।

जून 22

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"दानिय्येल... दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेक कर प्रार्थना और धन्यवाद करता था" (दानि. 6:10)।

शुरू में ऐसी बहुत सी बातें होती हैं जिन्हें आप नहीं समझ पाते। मैं बाइबल को एक सौ बार से भी ज़्यादा पढ़ चुका था, और उसके बाद, अंततः, मुझे उसमें कुछ अर्थ नज़र आना शुरू हुआ था। लेकिन अब मैं यह जानता हूँ कि इन शब्दों का क्या अर्थ है: "आदि में" (उत्पत्ति 1)।

पहले मै इनका अर्थ नहीं जानता था, और अक्सर पढ़ते-पढ़ते सो जाता था। और अब बहुत सालों के बाद यही अध्याय या पद या वाक्यांश मेरे लिए नए हो गए हैं। यह परमेश्वर की ज्योति है जो अब मेरे मार्ग में ज़्यादा जगमगाहट के साथ चमकने लगी है, लेकिन यह तभी होता है जब हम परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं और तब तक घुटनों पर रहने की आदत डाल लेते हैं जब तक परमेश्वर हमसे बात नहीं करता।

प्रभु ने मत्ती 16:21 में अपने चेलों से कहा कि यह ज़रूरी था कि वह प्राचीनों, मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथों बहुत दु:ख उठाए, मारा जाए, और तीसरे दिन फिर जी उठे। और यह सब उसने उन्हें रूपान्तर के पहाड़ पर ले जाने और उनके देखते हुए रूपान्तरित होने से पहले कहा था। उसने उन्हें स्पष्ट शब्दों में यह बताया था कि उसका दु:ख उठाना, मारा जाना और फिर जी उठना उनके पापों के लिए होना था। पतरस ने तो उसे अलग ले जाकर इस बात के लिए झिड़का भी था। फिर 6 दिन के बाद प्रभु उसे एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया था, और फिर यह शब्द आया, "इसकी सुनो!" उसकी आवाज़ को प्रतिदिन सुनें, पूरी तरह सुनें, और फिर आपको उसकी पीड़ा, मृत्यु, दफनाए जाने, जी उठने, और महिमान्वित होने का पूरा अर्थ समझ आएगा। इसलिए अपना दिन शुरू करते समय उसकी आवाज़ को सुनें। सब्र और ख़ामोशी के साथ इंतज़ार करें और कहें, "प्रभु, मुझसे सुबह, दोपहर और रात को बात कर। अपने ही वचन में से मुझसे बात कर।" तब तक इंतज़ार करें जब तक वह यह न कहे, "हाँ, मेरे पुत्र, मैं अति प्रसन्न हूँ। अब जा।"

जून 23

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"तुम्हारे कान पीछे से एक शब्द को यह कहते हुए सुनेंगे, 'मार्ग यही है, इसी पर चलो...'" (यशा. 30:21)।

यह पद यक़ीनन परमेश्वर की आवाज़ की ही बात करता है। हमारी प्रार्थना लगातार यह हो कि हम प्रतिदिन उस आवाज़ को एक सहज और स्पष्ट रूप में सुनना सीख सकें, क्योंकि सिर्फ तभी हमें दिन-प्रतिदिन हमारे सारे सवालों का जवाब और हमारी सारी समस्याओं का हल मिल सकता है। परमेश्वर की आवाज़ को सुनने के लिए विश्वास और धीरज की ज़रूरत होती है। परमेश्वर बोलता है, लेकिन ऐसे विश्वासी बहुत ही कम हैं जो उसकी वाणी को प्रतिदिन और स्पष्ट रूप में सुनने के विशेषाधिकार का आनन्द उठा पाते हैं। भजन 29 साफ तौर पर यह दर्शाता है कि जब परमेश्वर की वाणी उसका काम करती है तब परमेश्वर की पूरी सामर्थ्य प्रकट होती है। परमेश्वर की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है (पद 5)। परमेश्वर की वाणी आग की लपटों को चीरती है (पद 7)। वह जंगलों को थरथरा देती है। ये शब्द इसलिए दोहराए गए हैं कि इनके द्वारा हम परमेश्वर की उस महान् सामर्थ्य को देख सकें जो आपके और मेरे जीवन के लिए उपलब्ध है।

हमने पहले यह देखा है कि कैसे यह पाठ एलिय्याह नबी को सिखाया गया था। 1राजा 19:12 में, उसने परमेश्वर की धीमी आवाज़ को सुना। 1राजा 18:38-46 में उसने परमेश्वर की महान् सामर्थ्य को देखा था। फिर भी, यहाँ पद 4 में वह मानो यह कह रहा है कि वह अब जीवित रहना नहीं चाहता। हम सभी कभी-न-कभी खुद को एक निराश, दबी हुई, और गिरी हुई हालत में पाते हैं। हम सभी कभी-कभी अपने बोझ बहुत भारी महसूस होने लगते हैं, और हम कभी-न-कभी झाऊ के पेड़ के नीचे जा बैठते हैं। लेकिन जब एलिय्याह ने 1राजा 19:12 में उस धीमी आवाज़ को सुना, तो उसका बोझ उतर गया था। उसकी मर जाने की इच्छा भी ख़त्म हो गई, और परमेश्वर के बारे में उसके सवाल भी मिट गए। उसने एक नया रहस्य जान लिया था। उसने यह सीखा कि परमेश्वर के मार्ग मनुष्य के मार्ग नहीं हैं। जब आप एक बार यह रहस्य जान लेते हैं, तब आपका जो भी बोझ या समस्या होगी, आप उस पर जय पा सकेंगे। हमें परमेश्वर की आवाज़ को सुनने का रहस्य, और उसके मार्गों को जानना सीखना चाहिए।

जून 24

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"जिसके पास मेरी आज्ञाएं हैं, और वह उनका पालन करता है, वही मुझसे प्रेम करता है..." (यूह. 14:21)।

ऐसा कैसे होगा कि परमेश्वर को सुनने के ये अनुभव हमारे भी अनुभव बन जाएं? प्रेरित पौलुस ने उसके मन-फिराव के समय ही इस पाठ को सीख लिया था। पहला क़दम यही था कि शाऊल पौलुस बन गया था। अगर उसे परमेश्वर की आवाज़ को बाद में भी सुनना जारी रखना था, तो उसे आज्ञापालन करना था। उसे दमिश्क नगर में जाने के लिए कहा गया जहाँ उसे यह बताया जाना था कि अब उसे आगे क्या करना है। परमेश्वर ने आपको जो कुछ भी दिखाया हो, उसमें आज्ञाकारी हों। मैं आपसे फिर कहता हूँ कि जब तक आपका नया जन्म न हुआ होगा, आप परमेश्वर की आवाज़ को न सुन सकेंगे। जिन्होंने अनन्त जीवन का दान पाया है, उन्होंने कभी-न-कभी और कहीं-न-कहीं उसकी वाणी को ज़रूर सुना होगा? क्या आपने उस वाणी का पालन किया था, या आपने परमेश्वर से तर्क-वितर्क किया था?

शुरू में परमेश्वर हमें ज़्यादा-कुछ नहीं बताता। वह बहुत छोटे-छोटे वाक्य बोलता है। लेकिन हम जैसे-जैसे हर क़दम पर उसकी आज्ञापालन करने लगते हैं, तो वह हमें बहुत सी बातें बताने लगता है। जब परमेश्वर बोले तो एक लम्बा संदेश पाने का इंतज़ार न करें। जितना उसने आपसे बोला है, बस उतना ही आज्ञापालन करें। जब शाऊल ने स्वर्गीय वाणी का आज्ञापालन किया और दमिश्क आ गया, तब वह यह नहीं जानता था कि परमेश्वर ने उसके पास भेजने के लिए एक दूसरा सेवक तैयार कर रखा था। हनन्याह शाऊल के पास आया और उससे बात करने लगा (प्रेरितों. 22:12)। ऐसा लग रहा था जैसे शाऊल से बात करने वाली आवाज़ हनन्याह की थी, लेकिन असल में वह परमेश्वर की आवाज़ थी। हनन्याह ने उससे कहा कि वह परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया गया था, और उसने हनन्याह के शब्द पर विश्वास किया। "मेरे पाप क्षमा हुए," वह यह कहने योग्य हो गया। "मेरे प्रभु ने, जिसे मैं सता रहा था, मुझे चुन लिया है, ग्रहण कर लिया है, और स्वीकार कर लिया है। उसने न सिर्फ मुझे क्षमा किया है, बल्कि मुझे अपना साक्षी भी बनाया है। वह चाहता है कि मैं प्रतिदिन उसकी महिमा देखूँ और उसकी वाणी सुनूँ।"

जून 25

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है" (यूह. 5:24)।

प्रभु को जैसा सही लगता है, वह हममें से हरेक के साथ बोलता है। इसलिए अगर किसी सभा में आपको बेचैनी महसूस हो, तो प्रचारक के आपकी तरफ अंगुली उठाने से पहले ही, प्रार्थना में यह कहे, "क्या यह तेरी वाणी है या मनुष्य की? अगर यह तेरी आवाज़ है तो मैं इसे स्वीकार करता हूँ और अपने आपको नम्र व दीन करता हूँ। मुझ पर दया कर।" आप यह पाएंगे कि बहुत बार प्रभु आपसे बात करने के लिए किसी दूसरे मनुष्य को इस्तेमाल करेगा, इसलिए हमेशा ही यह अपेक्षा न रखें कि वह आपके साथ सीधे तौर पर बात करेगा।

पौलुस के पास परमेश्वर की वाणी तब आई जब पौलुस एक निराशा की दशा में था और शैतान का बड़ा हमला हो रहा था। तब उस वाणी ने उससे कहा, "मत डर, बोल और चुप न रह। मैं तेरे साथ हूँ और कोई मनुष्य तुझे हानि न पहुँचा सकेगा; इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं।" जब हम उसके प्रवक्ता और साक्षी बन जाते हैं, सिर्फ तभी हम अलग-अलग समयों में उसकी आवाज़ को सुन पाते हैं।

चाहे आपके मित्र आपका ठट्ठा उड़ा रहे हों, तब भी आप सच्चाई से यह कह सकते हैं, "मैं एक बात जानता हूँ, कि मैं एक पापी था, और प्रभु यीशु मसीह ने मेरे पाप क्षमा कर दिए हैं। एक ख़ास जगह और एक ख़ास दिन में मेरे साथ यह हुआ था। मैं यह जानता हूँ, अब मैंने शांति पा ली है।" हालांकि वे आपकी बात को स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन आप शांति और आनन्द के साथ अपनी साक्षी देते रहें। फिर एक दिन जब आप शत्रु के घेरे में होंगे, तो आपके पास परमेश्वर की आवाज़ आएगी: "मत डर, मैं तेरे साथ हूँ। मेरे नाम बोलना जारी रख।" सिर्फ ऐसी ही साक्षी हमें परमेश्वर की वाणी को सुनने की योग्यता प्रदान करती है।

जून 26

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"हम यीशु को देखना चाहते हैं" (यूह. 12:21)।

जब आप परमेश्वर की इच्छा में बने रहते हैं, सिर्फ तभी आप बार-बार परमेश्वर की वाणी को आपसे बात करता हुआ पाते हैं। परमेश्वर की वाणी एक पुष्टि के रूप में आती है। क्या आप परमेश्वर की वाणी को स्पष्ट सुनना चाहते हैं? तो आपको प्रतिदिन छोटी से छोटी बात में भी परमेश्वर की इच्छा को खोजना और उसका पालन करना सीखना होगा। अगर कोई मुझसे पूछे, "एक मसीही के रूप में आपका सबसे बड़ा विशेषाधिकार क्या है?", तो मेरा जवाब यही होगा कि मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य परमेश्वर की इच्छा को जानना और उसे पूरा करना है। जो परमेश्वर की इच्छा को जानते हैं और उसे पूरा करते हैं, वे उस इच्छा को परमेश्वर के वचन में, उसके संदेशवाहकों में, और दूसरे हालातों में पाते हैं।

यूहन्ना 12:21 के यूनानी लोग बहुत दूर से आए थे, और हमारे प्रभु यीशु से मिलना चाहते थे। ये पुरुष बड़ी निष्ठा से यीशु को देखना चाहते थे। हमारे प्रभु ने उनसे कहा, "तुम मुझसे कुछ देर के लिए मिलना चाहते हो। लेकिन अगर तुम मेरी मृत्यु में अपनी मृत्यु को देख सको और मेरे जी-उठे जीवन में अपना नया जीवन जी सको तो तुम्हारे लिए यह सम्भव हो जाएगा कि तुम मुझे हमेशा देखते रहो और मेरी वाणी को सुनते रहो।"

यूहन्ना 12:28 में हमारे प्रभु ने प्रार्थना की, " पिता, अपने पुत्र की महिमा कर कि बहुत से लोग मुझे तेरी महिमा में देख सकें और मेरे जैसे बन सकें।" फिर आकाश में से वाणी हुई। जब हम अपने सब कामों द्वारा उसकी महिमा करते हैं, सिर्फ तभी हम उसकी आवाज़ सुन सकते हैं। विश्वास से यह प्रार्थना करें: "मुझे वहाँ रख जहाँ मैं तेरे नाम की महिमा कर सकूँ। मैं और कुछ नहीं चाहता और ही मेरी कोई दूसरी अभिलाषा है।" मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि तब आप परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकेंगे। तब स्वर्ग से एक आवाज़ आकर आपको बताएगी कि आपको क्या करना है। परमेश्वर बोलता है, लेकिन इससे पहले कि आप उसकी वाणी सुन सकें, आपको उसकी शर्तों को पूरा करना होगा।

जून 27

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"जब मूसा परमेश्वर से बातें करने के लिए मिलाप वाले तम्बू में गया, तब उसने प्रायश्चित् के ढक्कन पर से उसकी आवाज़ सुनीं जो उससे बातें कर रहा था" (गिनती. 7:89)।

क्या हम अपने पूरे हृदय से यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की वाणी को सुनने और परखने का रहस्य जान लेने द्वारा हमारे सारे सवालों का जवाब मिल जाएगा और हमारी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी?

गिनती 7:89 में हम यह पढ़ते हैं कि परमेश्वर की वाणी तब सुनाई दी जब मूसा ने मिलाप वाले तम्बू का सारा काम उस नमूने के अनुसार पूरा कर दिया था जो प्रभु ने उसे पर्वत पर दिखाया था। निर्गमन 40:34 में हम पढ़ते हैं कि निवास-स्थान परमेश्वर की महिमा से भर गया था, और महापवित्र स्थान में करूबों के बीच में से उसकी वाणी सुनाई देने लगी। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा जानना चाहता था तो उसे महायाजक के पास आना पड़ता था, और महायाजक को महापवित्र स्थान में से परमेश्वर की वाणी को बोलते हुए सुनना होता था। अब प्रभु यीशु मसीह हमेशा के लिए हमारा स्वर्गीय महायाजक है, और जो उसे अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करते हैं, वह उनमें रहता है। उनकी देह पवित्र-आत्मा का मन्दिर बन जाती है।

अब किसी को किसी पार्थिव महायाजक के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। अब मनुष्य प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जो महायाजक है, स्वयं परमेश्वर से बात कर सकता है, जवाब पा सकता है, परमेश्वर की वाणी को प्रतिदिन सुन सकता है। लेकिन एक बात ज़रूरी है। हममें से जो भी परमेश्वर की वाणी सुनना चाहते हैं, उन्हें एक निश्चित रूप में यह जानना होगा कि परमेश्वर का पवित्र उनमें वास करता है। परमेश्वर पवित्र है, और इससे पहले कि वह हममें आए, उसे हमें मसीह के मूल्यवान लहू से शुद्ध करना पड़ता है। पाप ही सिर्फ एक ऐसी बात है जो हमें उसकी उपस्थिति का अहसास होने से रोक सकता है, लेकिन पाप को बार-बार क्षमा किया जा सकता है, और हम उसके मूल्यवान लहू से शुद्ध किये जा सकते हैं।

जून 28

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"पवित्रता, जिसके बिना कोई प्रभु को नहीं देख सकेगा" (इब्रा. 12:14)।

जब हमारे प्रभु यीशु मसीह ने उसकी सार्वजनिक सेवा शुरू की थी, तब स्वर्ग खुल गया था, पवित्र-आत्मा कबूतर के रूप में नीचे उतर आया था, स्वर्ग से वाणी सुनाई दी थी। वह इस जगत में इसलिए आया था कि हमारे लिए स्वर्ग खुल जाए, और सब बातों में हमारा मार्गदर्शन करने, और प्रतिदिन हमें परमेश्वर की आवाज़ को सुनने लायक़ बनाने के लिए पवित्र-आत्मा हम पर उतर आए। परमेश्वर एक आत्मा है, और उसकी वाणी भी आत्मिक है। हमारी आत्मा दिन-प्रतिदिन एक स्पष्ट रूप में परमेश्वर की वाणी सुन सकती है, लेकिन उस वाणी को सुनने के लिए हमें एक यक़ीनी तौर पर अपनी आत्मा को शुद्ध रखना चाहिए (मत्ती 5:8; प्रेरितों. 10:14)।

हमने यह देखा है कि कैसे प्रभु ने विभिन्न् साक्षियों द्वारा बोलने का चुनाव किया है। प्रेरितों के काम 8 में, परमेश्वर के साक्षी का नाम स्तिफनुस था। परमेश्वर ने उसे सामरिया नाम की जगह में बड़े सामर्थी रूप में इस्तेमाल किया था। तब अचानक परमेश्वर की यह आज्ञा आई, "उठ, और दक्षिण की ओर जा।" और उसने तुरन्त परमेश्वर का आज्ञापालन किया। वह अपने मन में यह सोच सकता था, "मैं जो काम कर रहा हूँ, वह बड़ा काम है, और यह परमेश्वर का काम है। इन सभी नए विश्वासियों को प्रभु में सशक्त और निर्मित करना होगा। मैं ऐसा महत्वपूर्ण काम छोड़ कर एक वीरान जंगल में कैसे जा सकता हूँ?"

परमेश्वर ने उसे यह नहीं बताया कि उसे सामरिया छोड़ कर रेगिस्तानी क्षेत्र में क्यों जाना था। जैसा कि हमने पहले देखा है, कि परमेश्वर हमें एक समय में ज़्यादा बात नहीं बताता। वह हमारी शुरूआत किसी बड़े कार्यक्रम से नहीं करता। परमेश्वर ने फिलिप्पुस से कहा, "उठ, और गाज़ा के मार्ग में चला जा," और उसे वहाँ जाने की ज़रूरत की कोई वजह भी नहीं बताई। लेकिन जब उसने आज्ञापालन किया, तो उसे वजह भी मालूम हो गई।

जून 29

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"क्योंकि पवित्र-आत्मा तुम्हें उसी घड़ी सिखाएगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिए" (लूका 12:12)।

फिलिप्पुस यह सोच सकता था, "ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक चोर की तरह इस रथ के पीछे भाग रहा हूँ!" लेकिन उसने परमेश्वर से कोई सवाल नहीं किया। प्रेरितों के काम 8:30 में, फिलिप्पुस रथ के साथ-साथ दौड़ने लगा और उसमें बैठे व्यक्ति को यशायाह के 53 अध्याय में से पढ़ते हुए सुना।

वह प्रभु यीशु मसीह के बारे में की गई एक अद्भुत नबूवत थी। यह नबूवत एक बहुत विस्तृत रूप में मसीह के समयकाल से 750 साल पहले की गई थी। जब उसने उस इथीयोपियावासी को वह भाग पढ़ते सुना, तो वह जान गया कि परमेश्वर ने क्यों उसे गाज़ा के मार्ग में जाने के लिए कहा था। उसी पल उसकी आत्मा ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया और उसने इथीयोपिया से यह सवाल पूछा, "जो तू पढ़ रहा है, क्या उसे समझता भी है?" प्रभु ऐसे ही ख़ामोश तरीक़े से उसके विचार और शब्द हमारे अन्दर रख देता है, और अक्सर जब हम बोलना शुरू करते हैं तो हमारे अन्दर से शब्द एक धारा-प्रवाह रूप में निकलने लगते हैं। उसे सवाल के जवाब में, इथीयोपियावासी ने जवाब दिया, "जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ सकता हूँ?" (पद 31)। उसने फिलिप्पुस को उसके साथ रथ में बैठने की अनुमति दी।

फिर फिलिप्पुस ने पवित्र शास्त्र के उस भाग ऐसी स्पष्ट व्याख्या की कि वह व्यक्ति पापियों के लिए यीशु मसीह की मृत्यु के अर्थ के बारे में पूरी तरह आश्वस्त हो गया। आप यह पाएंगे कि जब आप परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, तो वह मत्ती 10:20, लूका 12:12 और 21:15 की अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने शब्दों को आपके मुख में रखता है। आप न सिर्फ परमेश्वर की आवाज़ को एक-एक क़दम पर आपका मार्गदर्शन करता हुआ पाएंगे, बल्कि आप पवित्र-आत्मा को आपके होठों को छूते हुए, और जिस व्यक्ति से आप मिलते हैं उसकी ज़रूरत के अनुसार अपने शब्दों को आपके अन्दर रखता हुआ पाएंगे।

जून 30

परमेश्वर की वाणी को सुनने के रहस्य

"तेरी आँखें राजा की शोभा को निहारेंगी, वे एक विस्तृत देश पर दृष्टि करेंगी" (यशायाह 33:17)।

इन शब्दों के द्वारा प्रभु ने मुझे एक दूर-देश में जाने के लिए तैयार होने के लिए कहा था। तब मैंने तुरन्त ही पासपोर्ट हासिल करने के लिए आवेदन दे दिया था। यह मेरा विश्वास था परमेश्वर ने मुझे तैयार होने के लिए कहा था हालांकि मुझे कहीं से कोई आमंत्रण नहीं मिला था। सामान्यतः पासपोर्ट मिलने में एक महीने का समय लग जाता है। मैंने परमेश्वर को मेरी तरफ से काम करते देखा और मुझे एक सप्ताह में ही पासपोर्ट मिल गया।

मेरे एकांत के समय में, मुझे एज़्रा 8:1 में से यह वचन मिला: "छठे साल में, छठे महीने में, महीने के पाँचवें दिन में।" मेरे एकान्त वास में ये शब्द बड़े बलपूर्वक रूप में मेरे पास आए थे। मैंने फिर प्रार्थना की, "इन शब्दों का मेरे लिए क्या अर्थ है?" प्रभु ने मुझसे कहा, "मैं चाहता हूँ कि तू 5 जून 1946 को लंदन में हो।" तब मैं मुम्बई गया और जहाज़ की कम्पनी में जाकर यह पूछा, "क्या कोई ऐसा जहाज़ है जो 5 जून को लंदन पहुँचता है?" उन्होंने कहा, "जी हाँ, लेकिन उसमें कोई जगह नहीं है।" मैंने वहाँ जाकर दो बार पूछा, "क्या किसी ने अपना टिकट रद्द कराया है?" उन्होंने कहा, "नहीं। लेकिन अगले सप्ताह एक और जहाज़ जाएगा और हम आपको उसमें जगह दे सकते हैं।"

परमेश्वर ने मुझे स्पष्ट कहा था कि मुझे 5 जून को लंदन में होना था, और यह निश्चित नहीं था कि वह जहाज़ उस तारीख़ को वहाँ पहुँच ही जाएगा। फिर भी मैंने दूसरे जहाज़ में अपना टिकिट बुक कर लिया, और हमारा यह जहाज़ 5 जून को लंदन पहुँच गया जबकि दूसरा जहाज़ हमारे 4 दिन बाद पहुँचा क्योंकि उसके इंजन में ख़राबी हो गई थी। दूसरा जहाज़ एक तेज़ गति वाला जहाज़ था, और क्योंकि मैंने आज्ञापालन किया था, इसलिए मैं सही समय पर पहुँच सका था।

जुलाई 1

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"मैं तुझे पृथ्वी के ऊँचे-ऊँचे स्थानों में ले चलूँगा" (यशायाह 58:14)।

जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, तो पूरे पवित्र-शास्त्र में हम यह देख पाते हैं कि प्रभु ने मनुष्यों पर अपने आपको प्रकट करने के लिए किस तरह पहाड़ों को इस्तेमाल किया है। अब्राहम के विश्वास को परखने के लिए परमेश्वर उसे मोरिय्याह पर्वत पर ले गया था। मूसा को मिलाप वाले तम्बू का नमूना देने के लिए पर्वत पर बुलाया गया था। एलिय्याह को पहाड़ की चोटी पर ले जाया गया कि परमेश्वर की धीमी आवाज़ को सुनना सीख सके। स्वयं हमारा प्रभु भी अपने शिष्यों के सामने एक पर्वत पर रूपान्तरित हुआ था कि वे उसकी पूरी महिमा में उसे देख सकें।

सबसे अच्छा शहद जैसा कश्मीरी शहद ऊँची पर्वतीय चट्टानों में से ही मिलता है। चकमक के पत्थरों का तेल सर्वोत्तम तेल होता है। यह पैट्रोल की नहीं बल्कि उस तेल की बात हो रही है जिसकी खाना बनाने के लिए ज़रूरत होती है, और वचन के इस भाग में प्रतिज्ञा-देश के पर्वतों की जननक्षमता की भी प्रशंसा है। इसी तरह सबसे अच्छी भेड़ें भी ऊँचे पहाड़ों में ही मिलती हैं (पद 14)। सबसे अच्छे बछड़े स्विट्ज़रलैण्ड के पहाड़ों में मिलते हैं, और सबसे अच्छा दूध और मक्खन भी स्विट्ज़रलैण्ड में से ही आता है।

नबी यशायाह हमें प्रभु यीशु मसीह के जन्म, मरण और जी-उठने की विस्तृत जानकारी देता है। यशायाह की पुस्तक अनेक दृष्टिकोणों से उद्धार का बयान करती है। परमेश्वर का वचन पढ़ते हुए हमें चोटी से चोटी तक जाना होता है। जब हम यशायाह के अध्याय 24-66 पढ़ते हैं - अर्थात् 40 अध्याय, तो उनमें हम उद्धार के महान् पर्वतीय शिखर पाते हैं, और यहाँ अगर हमें एक चोटी से दूसरी चोटी पर कूदना हो, या इन 40 अध्यायों के एक अध्याय से दूसरे अध्याय में जाना हो, तो हमें ऊँचे स्थानों में उठाया, जाएगा और हमें यह दिखाया जाएगा कि प्रभु यीशु मसीह में हमारा उद्धार कितना महान् और महिमामय है।

जुलाई 2

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"हे प्रभु, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे ऊँचा उठाऊँगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा, क्योंकि तूने अद्‌भुत काम किए हैं; तूने प्राचीनकाल की योजनाएं सच्चाई से पूरी की हैं" (यशा. 24:1-3; 25:1)।

पहली चोटी

एक निश्चित रूप में, पृथ्वी का न्याय होना है, और आने वाले प्रकोप और न्याय से हमें बचाने के लिए प्रभु यीशु मसीह ने हमारे दण्ड को अपने ऊपर ले लिया था। उसने कीलें ठुकवाने के लिए अपने पाँव दिए, थूके जाने के लिए अपना मुख दिया, और तोड़े जाने के लिए अपनी देह दी। हालांकि हम बार-बार प्रभु यीशु मसीह की पीड़ाओं की बात करते हैं, फिर भी हम कभी पूरी तरह यह नहीं समझ पाएंगे कि हमें छुड़ाने के लिए, और हमें क्षमा करने के लिए, उसने कितनी पीड़ा सही थी और कैसा दाम चुकाया था। यह सबसे पहली महान् पर्वतीय चोटी है।

दूसरी चोटी

"वह मृत्यु को सदा के लिए निगल लेगा, और प्रभु परमेश्वर सबके चेहरे से आँसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की निंदा सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा, क्योंकि प्रभु ने ऐसा ही कहा है" (यशा. 25:8)।

सिर्फ एक सच्चा विश्वासी ही यह कह सकता है: "हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ, हे कब्र, तेरी जय कहाँ?" पूरी शांति के साथ वह मृत्यु का सामना कर सकता है। जब हमारे प्रियजन मृत्यु की वजह से हमसे दूर हो जाते है, तो बार-बार यह विचार आता है कि हम उन्हें एक महिमामय अमर देह में दोबारा मिलेंगे, और फिर उनसे कभी दूर नहीं होंगे।

पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली पुरुष भी मृत्यु के भय से मुक्ति नहीं पा सकता। लेकिन अपने अनुभव द्वारा एक विश्वासी यह जानता है कि यह सिर्फ एक अस्थाई अलगाव है, और यह कि हम दोबारा मिलेंगे। प्रभु यीशु मसीह ने हमें मृत्यु पर पूरी जय दी है, और अब हम यह कह सकते हैं, "हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ, हे कब्र, तेरी जय कहाँ?"

जुलाई 3

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"जिसका मन तुझमें लगा है, उसकी शांति तेरे द्वारा पूरी बनी रहेगी, क्योंकि उसका भरोसा तुझमें है" (यशा. 26:3)।

तीसरी चोटी

यह पहाड़ी चोटी *भीतरी* शांति की चोटी है। "जिसका मन तुझमें लगा है, उसकी शांति तेरे द्वारा पूरी बनी रहेगी।" जब तक आप परमेश्वर की इच्छा पूरी करेंगे और करने की कोशिश करेंगे जो वह आपसे कहता है, तो इस पृथ्वी पर ऐसा कुछ नहीं है जो आपको उस शांति से दूर कर सके – न बीमारी, न पीड़ा, न कष्ट। शत्रु भी इस शांति को नहीं ले सकता। यह सिद्ध शांति है (यशा. 26:3)। यह शांति सिर्फ उन्हीं लोगों का भाग है जो अपने अनुभव में प्रभु यीशु मसीह को जानते हैं। यह शांति एक नदी की तरह होती है। जैसे एक नदी में पानी बढ़ता रहता है, वैसे ही यह शांति दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहती है।

चौथी चोटी

"मैं परमेश्वर उसका रखवाला हूँ, मैं हर पल उसे जल से सींचता हूँ। मैं दिन रात उसकी रक्षा करता हूँ, कि कोई उसे हानि न पहुँचाए" (यशा. 27:3)।

यह पहाड़ी चोटी यह *भीतरी आश्वासन है कि मेरा प्रभु मेरा देखभाल करेगा।* परमेश्वर की प्रतिज्ञा यह है: "मैं इसकी रक्षा करूँगा।" चाहें भूकम्प आएं, अकाल पड़ जाएं, बड़े सताव हों, या युद्ध छिड़ जाएं, प्रभु रक्षा करेगा। प्रभु स्वयं कहता है, "मैं परमेश्वर इसकी रक्षा करूँगा और हर पल उसे सींचता रहूँगा।" अर्थात् वह उसकी कृपा और प्रेम के कारण तरो-ताज़ा, हरा-भरा, और फलता-फूलता रखेगा।

पाँचवीं चोटी

"यह भी सेनाओं के प्रभु की ओर से ठहराया गया है जो अद्‌भुत युक्ति करने वाला और अत्यंत बुद्धिमान है" (यशा. 28:29)।

हम सभी को कभी-न-कभी सलाह की ज़रूरत पड़ती है। हमें बहुत से मामलों में, और बहुत सी योजनाओं के बारे में, बहुत से फैसले करने होते हैं। ऐसे समय में हम किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह करना चाहते हैं और परामर्श के लिए उसके पास जाते हैं; लेकिन विश्वासियों के लिए प्रभु यीशु मसीह उनका सलाहकार है। प्रभु यीशु हमारा परामर्शदाता है। हमारी व्यक्तिगत समस्याओं, भावी समस्याओं, वैवाहिक समस्याओं, या किसी भी तरह की समस्याओं के लिए हमें सिर्फ उसके पास जाना है और उसके साथ परामर्श करना है, और जो सलाह वह देगा, वह सबसे अच्छा परामर्श होगा।

जुलाई 4

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"और जिनके मन भटके हों वे समझ प्राप्त करेंगे, और कुड़कुड़ाने वाले शिक्षा प्राप्त करेंगे" (यशा. 29:24)।

छठी चोटी

हालांकि आप सांसारिक बातों में बहुत ज्ञानवान हो सकते हैं, फिर भी मत्ती 13:17 के अनुसार आपको अनेक गहरे स्वर्गीय रहस्य सिखाए जा सकते हैं। जब आप प्रभु की राह तकते हैं और विश्वास से यह कहते हुए उसके नाम को पुकारते हैं: "प्रभु, मुझे अपने मार्ग सिखा", तो *वह आपको पूरे सत्य में ले चलेगा।*

सातवीं चोटी

"जब कभी तुम दाएं या बाएं मुड़ने लगोगे, तो अपने कान के पीछे से यह वचन सुनोगे, 'मार्ग यही है, इसी पर चलो" (यशा. 30:21)।

यह एक महान् पहाड़ी चोटी है जिस पर हमें दिन-प्रतिदिन चढ़ने की, और हर क़दम पर पीछे से आती हुई परमेश्वर की आवाज़ को यह कहते हुए सुनने की ज़रूरत होती है, "मार्ग यही है, इसी पर चल।" हम बड़ी आसानी से एक ग़लत क़दम उठा सकते हैं, लेकिन इस तरीक़े द्वारा प्रभु हमें ऐसे बहुत से ख़तरों से बचाता है जिनसे हम अनजान होते हैं। जब तक हम अपने कान सुनने वाले बनाए रखते हैं, और यह कहते रहते हैं, "प्रभु, मुझे सही मार्ग सिखा", तो *वह हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।* इस तरह हम ऊँचे स्थानों में चलते हैं, और इस महान् उद्धार में आनन्दित रहते हुए हम एक पहाड़ी चोटी से दूसरी पहाड़ी चोटी पर कूदते-फाँदते गुज़रते जाते हैं।

आठवीं चोटी

"मण्डराते हुए पक्षियों के समान सेनाओं का प्रभु यरूशलेम की रक्षा करेगा। वह उसकी रक्षा करके उसे छुड़ाएगा। वह उसके ऊपर से लांघते हुए उसका उद्धार करेगा" (यशा. 31:5)।

प्रभु हमें अनदेखे ख़तरे से बचाएगा। मुझे हॉलैण्ड में मेरे एक मित्र ने बताया कि एक बार वह रात को एक बजे अपनी कार चला रहा था तो अचानक उसके सामने से उसे दूसरी कार आती नज़र आई। दूसरे व्यक्ति को दुर्घटना से बचाने के लिए उसने अपनी कार को घुमा दिया और ऐसा करते हुए उसकी कार पेड़ में जाकर टकरा गई। उसकी पूरी गाड़ी ख़त्म हो गई लेकिन वह उसमें से सुरक्षित बाहर फेंक दिया गया। हम लगातार हमारे आसपास के अनेक देखे-अनदेखे कष्टों और ख़तरों से बचाए जाते हैं।

जुलाई 5

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"उनमें से प्रत्येक व्यक्ति मानो आंधी में छुपने तथा तूफान से बचने का स्थान होगा, निर्जल प्रदेश में जल-धाराएं या तपती हुई भूमि में एक चट्टान की आड़ होगा" (यशा. 32:2)।

नौवीं चोटी

प्रभु कहता है, 'तुझे बचा लेने के बाद, *मैं तेरी छुपने की जगह बन जाऊँगा।'* यह कितना बड़ा विशेषाधिकार है! ख़तरे में पड़े अनेक लोग आपके पास आएंगे, आपसे मदद माँगेंगे और कहेंगे: 'कृपया, मेरे लिए प्रार्थना करें'! मुसीबत और तकलीफ में पड़े बहुत से लोग आपके पास आएंगे, और यह आपका विशेषाधिकार होगा कि आप बड़ी ज़रूरत में पड़े इन लोगों के लिए सान्त्वना और शक्ति का एक स्रोत् बनें। जब आप उसकी कृपा द्वारा बचा लिए जाते हैं, तो वह आपका शरण-स्थान बन जाता है, और वह आपको दूसरों के लिए एक शरण-स्थान बना देता है।

दसवीं चोटी

"तेरी आँखें राजा की शोभा को निहारेंगी, वे एक विस्तृत देश पर दृष्टि करेंगी" (यशा. 33:17)।

हमारी आशा यह है कि हम अपने प्रभु को उसकी महिमा में देखेंगे - कि हमारी आँखें महिमा के राजा को निहारेंगी। तीन जगहों में हमारे प्रभु यीशु मसीह को 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु' कहा गया है। जब वह दूसरी बार उसके सामर्थी स्वर्गदूतों और संतों के साथ आएगा, तब हम उसकी पूरी महिमा को देखेंगे।

ग्यारहवीं चोटी

"आकाश के समस्त तारागण जीर्ण हो जाएंगे, आकाश खर्रे के समान लपेटा जाएगा, और जैसे दाखलता के पत्ते मुर्झा जाते हैं या अंजीर के पत्ते झड़ जाते हैं, वैसे ही समस्त तारागण जाते रहेंगे" (यशा. 34:4)।

हमें यहाँ याद दिलाया गया है कि कैसे प्रभु ने हमें अपना निज भाग बना लिया है। सूरज, चाँद और सितारे सब उसके हैं, लेकिन उसने उन्हें उसका निज भाग नहीं बनाया है। परमेश्वर के सम्मुख हम बहुत मूल्यवान हैं। प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करने द्वारा हम सच्चाई के साथ, ख़ुशी के साथ, और साहस के साथ यह कह सकते हैं कि हम एक महिमान्वित, अमर देह में एक ऐसे अनन्त स्वर्ग-राज्य में रहेंगे जो कभी नहीं टलेगा।

जुलाई 6

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"जंगल और निर्जन प्रदेश उनके लिए आनन्दित और मग्न होंगे, और रेगिस्तान मग्न होकर गुलाब की तरह फलेगा-फूलेगा। वह आनन्द और ऊँचे स्वर से हर्षित होगा और आनन्द मनाएगा" (यशा. 35:1,2)।

बारहवीं चोटी

परमेश्वर कहता है, "निर्जन प्रदेश और जंगल ... गुलाब खिलाएंगे।" प्रभु यीशु मसीह के पास आने से पहले हम रेगिस्तान की तरह थे जिसमें हमारे फलवंत होने की कोई आशा नहीं थी। रेगिस्तान में कोई फूल नहीं होते, सामान्य फूल भी नहीं होते। प्रभु यहाँ यह कह रहा है हालांकि तुम ऐसे बंजर और बेकार हो गए हो, फिर भी मैं तुम्हें गुलाब के बाग़ की तरह खिलने वाला बनाऊँगा। जैसा कि हमने यशायाह 27:3 में देखा है, प्रभु यीशु मसीह ही स्वयं हमारा माली है, जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, "मैं स्वयं तुम्हारा रखवाला हूँ और अपने हाथों से तुम्हें सींचता हूँ और तुम्हारी रक्षा करता हूँ।"

गुलाब के फूल को दिन में कम-से-कम तीन बार पानी देना पड़ता है, लेकिन अपने लोगों के लिए प्रभु कहता है: "मैं उसे *पल-प्रतिपल* जल से सींचता हूँ" दिन में तीन बार नहीं, लेकिन हर पल। प्रभु हमारे निजी जीवन को जानता है, और यह कि हमने उसे हमारे विचार, शब्द और काम से कितना शोकित किया है। लेकिन हम बार-बार उसके पास आने द्वारा मूल्यवान लहू से शुद्ध हो सकते हैं। स्वर्ग में इनमें से कोई बात याद नहीं की जाएगी, लेकिन वहाँ सिर्फ परमेश्वर की महिमा रह जाएगी। अब भी निर्बल विश्वासी हमारे प्रभु यीशु मसीह के जीवन से भरने द्वारा सशक्त किए जा सकते हैं। उसके आने के लिए अपने आपको तैयार रखने के लिए सिर्फ यशायाह 35:4 ही हमारी एकमात्र आशा है। हमारा प्रभु यीशु मसीह, वह जीवित व्यक्ति जो मर कर जी-उठा है, और जिसे हमने अपने मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण किया है, सिर्फ उसका जीवन ही है जो हमें पवित्र बना सकता है। वह हमारी पवित्रता है।

जुलाई 7

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"लेकिन उन्होंने चुप रहकर उसके जवाब में एक भी शब्द नहीं कहा, क्योंकि राजा की आज्ञा थी कि उसको उत्तर न देना" (यशा. 36:21)।

तेरहवीं चोटी

शत्रु हमारी तरफ एक डरावनी बाढ़ की तरह आता है। हम यह सोच लेते हैं कि जय की कोई आशा नहीं है और हम गिर जाते हैं। लेकिन राजा हिज़किय्याह ने कहा, "एक शब्द भी न कहना" (36:21)। हमारा राजा कहता है: "उसे जवाब न देना।" यह हमारा हथियार है! हमें अपने शत्रु को हराने के लिए सांसारिक हथियारों की ज़रूरत नहीं है। अनेक लोग सांसारिक हथियारों द्वारा शत्रु को हराने की कोशिश में धोखा खाते हैं (2कुरि. 10:4)। इसकी बजाय, हमें ख़ामोशी से प्रभु की बाट जोहना है, और अपना जवाब पाना है।

यहाँ प्रभु हमें यह बता रहा है, "शैतान को हराने के लिए सांसारिक हथियारों का इस्तेमाल न करो। लेकिन जब तुम परमेश्वर की वाणी सुनकर घुटने पर आ जाओगे, तब तुम दिन-प्रतिदिन शत्रु को हरा सकोगे।" चाहे शत्रु आपके सामने किसी भी रूप में क्यों न आए, आप विश्वास से प्रार्थना करें और कहें: "प्रभु, मैं तेरी सामर्थ्य और जय पर निर्भर हूँ। हे प्रभु, अब मुझे बता कि मैं अपने हथियारों का कैसे इस्तेमाल करूँ।" तब प्रभु आपको उत्साहित और सशक्त करने के लिए कहीं से भी पवित्र शास्त्र के वचन देगा, और यह एक अद्‌भुत बात होती है कि कैसे कुछ ही पदों द्वारा शैतान को हराया जा सकता है।

जब आप किसी गंभीर परीक्षा में से गुज़र रहे होते हैं , तो आपको एक छोटा सा पद याद आ जाता है, या जब आप बाइबल पढ़ रहे होते हैं, तो वह आपसे बात करता है। ध्यान दें, क्योंकि सांसारिक हथियार इस्तेमाल न करने की वजह से शैतान आपको धोखा दे सकता है। शांत रहें, क्योंकि शांति ही शैतान को हरा सकती है (रोम. 16:20)। भीतरी शांति परमेश्वर की आवाज़ सुनने द्वारा ही आएगी और तब, चाहे शैतान हम पर एक बाढ़ की तरह आए, या एक दहाड़ने वाले शेर की तरह आए, या एक ज्योतिर्मय स्वर्गदूत की तरह आए, हम उसे हरा सकेंगे।

जुलाई 8

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"तब हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर उस पत्र को पढ़ा, और परमेश्वर के भवन में जाकर उसे परमेश्वर के सामने फैला दिया" (यशा. 37:14)।

चौदहवीं चोटी

यहाँ अश्शूर का राजा परमेश्वर के लोगों को धमकी और चेतावनी दे रहा था। इसके साथ ही उसने हिजकिय्याह को एक पत्र भी भेजा। पत्र पढ़ने के बाद, हिजकिय्याह परमेश्वर के भवन में गया (पद 17)। यहाँ राजा और उसकी प्रजा बहुत बड़े संकट में थे, लेकिन वे यह जानते थे कि परमेश्वर उन्हें जवाब देगा। हालांकि मानवीय रीति से देखते हुए उनके बचने की कोई आशा नहीं थी क्योंकि अश्शूर का राजा एक शक्तिशाली सेना लेकर उन्हें उसी तरह डराने और हराने के लिए आया था जैसे उसने दूसरे देशों को हराया था। हिजकिय्याह को प्रभु में भरोसा था, और वह मन्दिर में गया, और प्रभु ने उसे जवाब दिया और उसे छुटकारा मिल गया।

हिजकिय्याह ने प्रार्थना की, और हालांकि वह यह नहीं जानता था कि क्या होने वाला है, लेकिन परमेश्वर जानता था (देखें यशा. 37:36)। सुबह वह विशाल अश्शूरी सेना मरी पड़ी थी। इससे हम यह सीखते हैं कि जब शत्रु अलग-अलग तरीक़े से हम पर हमला करता है, तो हमारे पास एक हथियार होता है, और वह यह है, *हम अपने घुटने पर हो जाएं।* अगर हम सिर्फ एक पर्याप्त रूप में अपने घुटनों का इस्तेमाल करना सीख लेंगे, तो हम स्वर्ग को खुलता हुआ देखेंगे, और शत्रु के जो भी तूफान हमारी तरफ आ रहे होंगे, वे नाकाम हो जाएंगे।

पंद्रहवीं चोटी

"तब हिजकिय्याह ने दीवार की ओर मुँह फेरकर प्रार्थना" (यशा. 38:2)।

मुझे ऐसे बहुत से मौक़े याद हैं जब प्रभु उसकी चंगाई के स्पर्श के साथ आया था। उसकी अपनी एक सामर्थ्य है, लेकिन हमें उसे ऐसे ही सहज विश्वास से पुकारना होता है जैसे हिज़किय्याह ने पुकारा था, और प्रभु ने उसकी आवाज़ को सुना। *जब हम एक बच्चे-जैसे विश्वास के साथ उसे पुकारते हैं, तो वह जवाब देता है।* हमारा हरेक अनुभव जिसमें से हम गुज़रते हैं, वह हमारे विश्वास को और ज़्यादा दृढ़ करता है। परमेश्वर हमें तभी सिखा सकता है जब हम उसका हाथ थाम लेते हैं।

जुलाई 9

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

“वह चरवाहे के समान अपने झुण्ड को चराएगा, वह मेमनों को अपनी बाहों में समेट लेगा और गोद में लिए फिरेगा, और दूध पिलाने वाली भेड़ों को धीरे-धीरे ले चलेगा” (यशा. 40:11)।

सोलहवीं चोटी

एक चरवाहा अपने झुण्ड के साथ रात-दिन रहता है। प्रभु यीशु मसीह के जन्म के समय, बैतलहम में अनेक चरवाहे रात को अपने झुण्ड की रखवाली कर रहे थे, और उसी समय उनके सामने एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ था। प्रभु यीशु मसीह कहता है: “मैं एक चरवाहे की तरह रात-दिन तुम्हारी देखभाल करूँगा। हरेक सुबह चरवाहा अपनी भेड़ों को नई-नई चारागाहों में ले जाता है। भेड़ें गंदी, या सूखी घास नहीं खातीं। वह कोमल घास चाहती हैं (भजन. 23)।

और भेड़ों को निर्मल जल की ज़रूरत होती है। वे सुअरों की तरह गंदा पानी नहीं पीतीं। प्रभु यीशु को यह पूरी तरह से मालूम है कि हमारी भूख और प्यास मिटाने के लिए हमें कैसे खाने की ज़रूरत है; उसका वचन हमारी चारागाह है। हर सुबह, दोपहर और शाम वह हमें उसका वचन देता है। सुबह हमें दिन-भर के लिए स्वर्गीय नमूना दे दिया जाता है। दोपहर को हमें बाक़ी बचे दिन के लिए पोषण दिया जाता है। शाम को हमारे सोने के समय परमेश्वर हमारी छानबीन करता है। इस तरह हम प्रतिदिन तरोताज़ा किए जाते हैं, और हरेक जाने-अनजाने ख़तरे से बचाए जाते हैं।वह हमारा प्रेम करने वाला विश्वासयोग्य चरवाहा है और वह हर समय हमारे साथ रहता है। भेड़ों में यह योग्यता होती है कि वे अपने चरवाहे की आवाज़ को पहचान सकती हैं। हालांकि वे बहुत सी दूसरी बातों में बिलकुल निर्बुद्धि होती हैं, फिर भी वे अपने स्वामी की आवाज़ को पहचान सकती है।

प्रभु यीशु मसीह कहता है, “वे किसी अजनबी के पीछे नहीं जातीं”, क्योंकि उनके कान अपने स्वामी की वाणी के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। प्रभु यीशु मसीह की आवाज़ को सुनना और उसके पीछे चलना एक विश्वासी का विशेषाधिकार है। वह जहाँ भी जाए, हमें कोई सवाल किए बिना उसके पीछे-पीछे चले जाना चाहिए। *पहाड़ की एक ऊँची चोटी प्रतिदिन चरवाहे की आवाज़ को सुनना और उसके पीछे चलना है।* और यह उसमें पूरा भरोसा रखते हुए करना है।

जुलाई 10

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"देख जो तुझ से क्रोधित हैं, वे सब लज्जित और अपमानित होंगे। वे नाश हो जाएंगे, हाँ, मिट जाएंगे" (यशा. 41:11)।

सतरहवीं चोटी

मनुष्य होते हुए हमारे अन्दर बहुत से डर भरे रहते हैं, और हमारे मसीही विश्वास में हमें अनेक मुश्किल बाधाओं का सामना करना पड़ता है। हरेक डर और मुश्किल, चाहे वह प्रलोभन की तरह आए, या एक परीक्षा और पीड़ा की तरह आए, वह एक पहाड़ जैसी लगती है, लेकिन पद 16 में हमारे लिए एक प्रतिज्ञा है। "तू उन्हें फटकेगा और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगी।" *हरेक रुकावट, वह चाहे कितनी भी कठोर क्यों न हो,* प्रभु यीशु मसीह में विश्वास द्वारा उस पर पूरी जय पाई जा सकती है। कमज़ोर विश्वासी शक्तिशाली बन जाते हैं, और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर उनके अधिकार का दावा करने द्वारा वे उनके जीवन की हरेक बाधा पर जय पाते जाते हैं।

शिष्यों को मुख्य याजकों और अधिकारियों ने धमकी दी थी, लेकिन जब उन्होंने प्रार्थना की तो वह स्थान हिल गया (प्रेरितों. 4:31, 33)। वे संख्या में थोड़े ही थे, लेकिन जब वे मदद पाने के लिए परमेश्वर पर निर्भर हुए, और उन्होंने प्रार्थना की, तो उस प्रार्थना ने सारे जगत को हिला दिया। एक ऐसे विश्वासी में, जो अपने आपको परमेश्वर के हाथों में सौंपने के लिए तैयार हो जाता है, यीशु की सारी सुन्दरता और महिमा को देखा जा सकता है।

यशायाह 42:16. हालांकि अंधे अपना रास्ता नहीं ढूंढ पाते, लेकिन प्रभु यहाँ उनसे बात कर रहा है जो आत्मिक तौर पर अंधे हैं, "मैं अंधों को एक ऐसे मार्ग में से ले जाऊँगा जिसे वे नहीं जानते; मुझे तुम्हारी अगुवाई करने दो, और तब तुम्हें रास्ता मिल जाएगा।" यह एक अद्‌भुत अनुभव होता कि हम परमेश्वर का हाथ पकड़ सकें और सभी जगहों में एक सुरक्षित रूप में आ-जा सकें। जीवन में ऐसे बहुत से अनुभव होते हैं जिनमें परमेश्वर एक अद्‌भुत रीति से आपको मार्ग दिखाता है। आपके जीवन में ऐसे बहुत से मुश्किल हालात हो सकते हैं जो आपको एक उलझन में डाल देते हैं। आप यह नहीं समझ पाते कि आप क्या फैसला करें। प्रभु को पुकारें और कहें, "प्रभु, तूने मेरी अगुवाई करने का वादा किया है; मुझे मार्ग दिखा" और तब अचानक आपके मार्ग में आपको ज्योति चमकती हुई नज़र आएगी। एक सहज विश्वास से उसका हाथ पकड़ लें।

जुलाई 11

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"लेकिन अब, हे याकूब, तेरा सृष्टिकर्ता – हे इस्राएल, तेरा सृजनहार प्रभु यूँ कहता है, 'मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है। मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है" (यशा. 43:1)।

अट्ठारहवीं चोटी

जब हम प्रभु यीशु को अपने मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करते हैं, तब उसका हम पर दोहरा दावा हो जाता है। पहले, तो प्रभु हमारा सृष्टिकर्ता है, दूसरे, वह हमारा मुक्तिदाता है। हालांकि हमें बहुत सी कठिनाइयों, पीड़ाओं, प्रलोभनों और कष्टों में से गुज़रना पड़ता है, और यह ज़रूरी है कि हममें से हरेक किसी-न-किसी तरह के कष्ट, परीक्षा और पीड़ा में से गुज़रे, प्रभु हमें हर नुक्सान और ख़तरे से बचाने की ज़िम्मेदारी लेता है। जब इस्राएल मिस्र में से निकला, तो उसे लाल सागर में से गुज़रना पड़ा था। निर्गमन 14:6-29 हमें बताता है कि कैसे प्रभु उन्हें सुरक्षित निकाल ले आया था। एक दिन आप भी शत्रु को स्वयं परमेश्वर की सामर्थ्य द्वारा ख़त्म किए जाते हुए देखेंगे।

हालांकि हमें आत्मिक तौर पर भरमाने के लिए अनेक शत्रु आते हैं, वे हमें कोई हानि पहुँचाने में सफल न हो सकेंगे। वे कभी-कभी हमारा कुछ भौतिक नुक्सान कर सकते हैं, लेकिन वे विश्वासियों को किसी भी तरह का आत्मिक नुक्सान नहीं पहुँचा सकते। प्रभु यीशु मसीह ने हमारे छुटकारे की बहुत बड़ी क़ीमत चुकाई है। मत्ती 13:44-46 में, हमें अपने खज़ाने के रूप में पाने के लिए उसने अपना सब कुछ बेच दिया। हम अपनी नासमझी की वजह से ग़लतियाँ करते रहेंगे, लेकिन प्रभु हमसे कह रहा है, "तुम मेरे लिए बहुत मूल्यवान हो," और वह ऐसा हरेक इंतज़ाम कर देगा जिसमें हम अपनी ग़लतियों पर जय पा सकें।

यह एक अद्भुत बात है कि वह हमारे पास पृथ्वी के छोर से अपने संदेशवाहक भेजता है। सभी जगह परमेश्वर के लोग हमें प्रार्थना में ऊँचा उठाते हैं, और इस तरह हम बहुत से ख़तरों से बचाए जाते हैं क्योंकि हम उसके लिए बहुत मूल्यवान हैं।

जुलाई 12

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

“क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल उण्डेलूँगा और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊँगा। मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरे वंशजों पर अपनी आशिष उण्डेलूँगा। वे घास के बीच ऐसे बढ़ेंगे जैसे धाराओं के बीच मजनू” (यशा. 44:3,4)।

उन्नीसवीं चोटी

प्रभु पद 3 व 4 में यह कह रहा है कि वह पवित्र-आत्मा को हमें एक बाढ़ की तरह देना चाहता है। यह हमारे जीवनों को भरपूर रूप से फलवंत बनाने की परमेश्वर की अभिलाषा है। हमने यह देखा है कि कैसे चोर और हत्यारे भी नया जन्म पाने के बाद परमेश्वर के सामर्थी जन बन जाते हैं। सहज विश्वास द्वारा, हमारे अन्दर से दूसरे लोगों की तरफ जीवन के जल की धाराएं बह सकती हैं, और हमारे बदले हुए जीवन द्वारा बहुत से जीवन आशिष पा सकते हैं। प्रभु आज भी जगत के अनेक कोनों में अपना आत्मा इसी तरह उण्डेल रहा है। एक सहज व्यक्ति द्वारा, वह महान् काम कर सकता है (1 कुरि. 1:26-28,29)।

उत्तर भारत के एक छोटे से गाँव में एक ग़रीब अनपढ़ व्यक्ति था, जिसने सुसमाचार सुना और उसका नया जन्म हुआ। गाँव के सभी लोग उससे घृणा करने लगे और उसकी सारी चीज़ें उठाकर ले गए, और उसे गाँव के कुएं में से पानी भी लेने की अनुमति नहीं दे रहे थे। उसे पास के दूसरे गाँव में जाकर गंदा पानी पीना पड़ता था। लेकिन उसने उनके लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और एक-एक कर गाँव के लोग उसके पास आने लगे, और उनके कष्टों के लिए उससे प्रार्थना करने के लिए कहने लगे। उन्होंने जान लिया कि वह परमेश्वर का जन था, और उन्होंने उससे क्षमा-याचना की, और उससे उनके गाँव में लौट आने का निवेदन किया। परमेश्वर मूर्ख, अनपढ़ और तुच्छ लोगों को बदल कर अपने आत्मा से भर सकता है, कि फिर उनकी सेवकाई के द्वारा अन्य बहुत से लोगों के जीवन बदल जाएं।

जुलाई 13

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"मैं तेरे आगे-आगे चलूँगा और ऊबड़-खाबड़ स्थानों को चौरस करूँगा। मैं कांसे के फाटकों के टुकड़े- टुकड़े करूँगा और लोहे के बेंड़ों को तोड़ डालूँगा। मैं तुझे अंधकार में छुपा हुआ खज़ाना और गुप्त स्थानों में का गड़ा हुआ धन दूँगा, जिससे कि तू जान ले कि मैं प्रभु, इस्राएल का परमेश्वर हूँ, जो तुझे नाम लेकर बुलाता हूँ" (यशा. 45:2,3)।

बीसवीं चोटी

परमेश्वर हमसे आगे जाने का वादा करता है। वह जब भी हमें उसके नाम में कहीं जाने की आज्ञा देता है, तो वह कहता है, "मैं तेरे आगे-आगे चलूँगा और ऊबड़-खाबड़ रास्तों को चौरस करूँगा।" अनेक मामलों में, हमारे सामर्थी परमश्वेर ने उसके सेवकों के आगे से बहुत सी बाधाओं को तोड़ा है। आज जगत में 1055 भाषा बोलने वालों के पास सुसमाचार पहुँच चुका है। हम सिर्फ विश्वास द्वारा ही पहाड़ों को अपने सामने से हटता हुआ देख सकते हैं। उदाहरण के तौर पर उत्पत्ति 22:17 देखें जहाँ परमेश्वर में अब्राहम के विश्वास को परखा गया था। परमेश्वर की आज्ञापालन करते हुए उसने एकलौते पुत्र को मोरिय्याह पर्वत पर अर्पित करने के लिए दे दिया था। जब वह अपने पुत्र को मारने ही वाला था, तब परमेश्वर ने उससे बात की थी। पद 12 में लिखा है, "अब्राहम ने मुड़कर देखा तो एक मेंढ़ा सींगों से झाड़ी में फंसा हुआ था," और प्रभु उसके पुत्र के स्थान पर उस मेंढ़े की भेंट चढ़ाने के लिए कहा।

इस तरह परमेश्वर यह कह रहा था, "अब्राहम, तूने मेरा पूरा आज्ञापालन किया है। तूने अपने पुत्र को भी मुझसे नहीं रख छोड़ा। अब मैं तेरे साथ प्रतिज्ञाबद्ध हो गया हूँ। *अब तू मुझे आज्ञा दे और मैं तेरा पालन करूँगा। अब तू होने वाली बातों को मुझसे माँग।*" अगर आप पूरे हृदय से, बिना कोई सवाल किए, बिना कुड़कुड़ाए, और बिना शक किए परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे, तो आप परमेश्वर को आज्ञा दे सकेंगे और आपकी प्रार्थना का पूरा जवाब दिया जाएगा। यूहन्ना 14:13,14 में, यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगोगे, वही करूँगा।" हम उसे किसी भी बात के लिए कह सकते हैं। यह एक रहस्य है! हमारे पास परमेश्वर को आज्ञा देने का अधिकार है, लेकिन पहले हमें उसको पूरे हृदय से उसको वह अर्पित करना सीखना होगा जो वह चाहता है।

जुलाई 14

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा, और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा। मैंने ही तुम्हें बनाया और मैं तुम्हें लिए फिरूँगा। मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता रहूँगा" (यशा. 46:4)।

इक्कीसवीं चोटी

यह उद्धार की एक और चोटी है जिसमें प्रभु हमें नबी यशायाह द्वारा बड़ा दृढ़ आश्वासन दे रहा है कि *वह हमारे पूरे जीवन-भर हमें उठाए रहेगा*। मनुष्यों के रूप में हम डर से भरे रहते हैं। हालांकि हमने सालों तक परमेश्वर की भलाई का भरपूर आनन्द उठाया होता है, और अनेक अवसरों पर हमारी तरफ से बड़े सामर्थ्य के साथ काम करते देखा है, और अपनी प्रार्थना के जवाब पाए हैं, फिर भी हम अपने आपको डर से भरा हुआ पाते हैं, और यह कहते रहते हैं: "इसके बारे में क्या, और उस बात का क्या?" "कल, या अगले महीने, या अगले साल क्या होगा?" हमारे मनों में डर और आशंका भरे रहते हैं, और हम हमेशा अपने भविष्य के बारे में, अपने स्वास्थ्य के बारे में, अपने बुढ़ापे के बारे में, अपने बच्चों के बारे में, या किसी मामूली बात के बारे में चिंता करते रहते हैं। लेकिन यह एक पद हमारी हर तरह की चिंता और आशंका को दूर करने के लिए काफी है। ये किसी मनुष्य के शब्द नहीं हैं, बल्कि जीवित और प्रेम करने वाले प्रभु के हैं जो हमसे, जो उसकी स्वर्गीय धरोहर बन चुके हैं: "तेरे बुढ़ापे में भी मैं तुझे उठाए रहूँगा।" दूसरे शब्दों में, "तेरे मरने तक मैं तेरी ज़िम्मेदारी उठाए रहूँगा।" वह कहता है कि वह हमें सात विपत्तियों से बचाए रहेगा (अय. 5:19)।

पवित्र शास्त्र में अंक 7 पूर्णता दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि हमारी मुश्किलें, परीक्षाएं, पीड़ाएं या तकलीफें चाहें जो भी हों, वह हमें उनसे पूरी तरह छुड़ा लेगा। जब प्रभु के लोग उनके खाने के लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं, तो वे यह पाते हैं कि रूखा-सूखा खाना भी स्वादिष्ट हो जाता है। जब प्रभु यीशु मसीह ने एक बड़ी भीड़ को खिलाया था, तब उसने उन्हें कोई शानदार भोज नहीं खिलाया था, बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने जौ की रोटियाँ खिलाई थीं। यह ग़रीब लोगों का खाना होता है। प्रभु यीशु मसीह ने जौ को चुना, और जब उसने आशिष देकर उसे कई गुणा बढ़ा दिया तब वह बहुत स्वादिष्ट हो गई थी। हमने भी अपने अनुभव में इस बात के सत्य को जाना है।

जुलाई 15

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"देख, मैंने तुझे शुद्ध तो किया है लेकिन चाँदी के समान नहीं, मैंने दु:ख की भट्ठी में तुझे परख लिया है" (यशा. 48:10)।

बाईसवीं चोटी

इस पद से शुरु करना किसी के लिए ख़ुशी की बात नहीं हो सकती क्योंकि किसी को पीड़ा में से गुज़रना अच्छा नहीं लगता। प्रभु कहता है, "मैं तुझे शुद्ध करूँगा" क्योंकि वह चाहता है कि जैसा वह पवित्र है, वैसे ही हम भी पवित्र हों। परमेश्वर का सबसे बड़ा लक्ष्य हमें स्वयं उसकी पवित्रता में सहभागी बनाना है। इस वजह से ही हमें शुद्ध करने वाली अनेक अग्नियों में से गुज़रना पड़ता है। सोना सिर्फ आग द्वारा ही शुद्ध हो सकता है। और इससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात यह है, कि आग उसके ऊपर और नीचे दोनों तरफ होनी चाहिए। इसी तरह रेशम, मोती और हीरा, इन सभी को वह होने के लिए जो वे हैं, बड़े दबाव में से गुज़रना पड़ता है। जब परमेश्वर हमें चुनता है, तो वह हमारे लिए ऊँचे मानक तय करता है क्योंकि वह चाहता है कि हम पवित्र हों, और हममें न कोई दाग़ हो और न ही कोई धब्बा है। वह चाहता है कि हमारी महिमा स्वर्गदूतों से भी बढ़कर हो, इसलिए वह हमें दु:ख की भट्ठी में से लेकर गुज़रता है।

हम अपने ऊँचे कर्तव्य को पूरा कर सकें उसके लिए हमें तैयार करने का परमेश्वर का यही तरीक़ा है। हममें से हरेक को शुद्ध करने के लिए परमेश्वर अलग-अलग तरीक़ों और अलग-अलग समयों को इस्तेमाल करता है, लेकिन यह ज़रूरी है कि हम सभी सिर्फ परमेश्वर के तरीक़े से ही शुद्ध किए जाएं, और सिर्फ इसी तरह हम परमेश्वर की पवित्रता का स्तर हासिल कर सकते हैं। पीड़ाओं के द्वारा ही पौलुस ऐसा सामर्थी पात्र बन सका था। मेरा विचार है कि परमेश्वर ने जिस तरह से उसके इस जन को इस्तेमाल किया था, ऐसा उसने किसी और को इस्तेमाल नहीं किया था। प्रभु ने पौलुस में एक बहुत ही गहरा काम हासिल किया था, और यह शुद्ध करने वाली उन अग्नियों के द्वारा ही हो सका था कि प्रभु ने उसे शुद्ध किया था और बहुत से गहरे सत्य सिखाए थे। प्रभु पहले उसे एक रेगिस्तान में ले गया था और फिर शुद्ध करने वाली अग्नियों द्वारा, और उन सभी बातों द्वारा वह उसमें ईश्वरीय प्रकाशन और रहस्य उण्डेल सका था।

जुलाई 16

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"उसने मेरे मुख को तेज़ तलवार के समान बनाया, अपने हाथ की आड़ में मुझे छिपा रखा है, और मुझे विशेष तीर बनाकर अपने तरकश में छिपा लिया है। उसने मुझ से कहा, 'तू मेरा दास इस्राएल है, मैं तुझमें अपनी महिमा प्रकट करूँगा'" (यशा. 49:2,3)।

तेईसवीं चोटी

प्रभु ने आपको और मुझे हमारी माता के गर्भ से ही बुलाया है और हम उसके चुने हुए हैं (पद 1; यिर्म. 1:5; गला. 1:4)। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि हम एक अमीर परिवार में पैदा हुए हैं या ग़रीब परिवार में पैदा हुए हैं। परमेश्वर की संतान होते हुए, हमारे पैदा होने से पहले ही हम चुने हुए हैं। *प्रभु की कोई भी योजना एक सिद्ध योजना होती है; परमेश्वर हमें उसके सेवकों के रूप में चाहता है,* और ये शब्द सिर्फ प्रचारकों के लिए नहीं बल्कि हरेक विश्वासी के लिए हैं। हरेक पुरुष और स्त्री को परमेश्वर का सेवक होना चाहिए, क्योंकि हमें इसीलिए चुना गया है कि हम उसके लिए कुछ काम करें।

अगर हम यह विश्वास करें कि मुश्किल में पड़े किसी व्यक्ति की मदद करने, उसे उत्साहित करने, या उसे बचाने के लिए परमेश्वर हमें उसके प्रवक्ता के रूप में इस्तेमाल कर सकता है, तो हममें से हरेक परमेश्वर का वचन देने के लिए इस्तेमाल हो सकता है। अगर हम स्वयं कुछ नहीं बोल सकते तो हम प्रार्थना में परमेश्वर का वचन इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके मित्रों के बीच में आप बाइबल के कुछ वचन देने द्वारा इस्तेमाल हो सकते हैं, कि आपके शब्दों के द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति की मदद हो सके जो दुःखों, आँसुओं और तकलीफ़ में पड़ा है। प्रभु से कहें कि वह किसी की मदद के लिए आपको कोई शब्द दे और उससे कहें कि वह आपको अपने प्रवक्ता के रूप में इस्तेमाल कर सके। परमेश्वर के हाथों में, एक व्यक्ति के शब्द एक पैने तीर की तरह होते हैं जो लक्ष्य पर निशाना लगाते हैं। हमारे शब्द ऐसे ही हों; हम व्यर्थ शब्द न बोलें। हम जब भी यहाँ-वहाँ जाएं, तो हम एक साक्षी के रूप में परमेश्वर के वचन को देते रहें। जब भी हम परमेश्वर की उपस्थिति में जाएं, तो हम यह कहें: "प्रभु मैं तेरा सेवक हूँ, मुझे सिखा कि मैं तेरे लिए प्रार्थना करने और तेरी साक्षी देने के लिए इस्तेमाल हो सकूँ, और दूसरों को उत्साहित और सशक्त करने के लिए उनकी मदद कर सकूँ।"

जुलाई 17

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"प्रभु परमेश्वर ने मुझे एक शिष्य की जीभ दी है कि मैं थकितों को अपने वचन से संभालना जानूँ। प्रतिभोर वह मुझे जगाता है और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूँ" (यशा. 50:4)।

चौबीसवीं चोटी

क्या यह सम्भव है कि हम चाहे कितने भी मूर्ख क्यों न हों, फिर भी हमारी जीभ एक शिष्य की जीभ हो? जब आप यह प्रार्थना करते हैं, "प्रभु, मुझे एक शिष्य की जीभ दे", तो वह ऐसा करेगा। उससे कहें, "प्रभु मुझे किसी के लिए कोई संदेश दे" (मत. 10:20; लूका. 12:12; प्रे. 6:10)।

विश्वास से इन प्रतिज्ञाओं पर अपने अधिकार का दावा करें और वह आपके मित्रों और शत्रुओं दोनों के लिए आपको एक सही शब्द देगा (यशा. 50:4)। "वह दिन-प्रतिदिन भोर को मुझे जगाता है" - किसी अलार्म घड़ी के बिना ही प्रभु हमें उठाता है। उससे कहें, "प्रभु, मुझे पाँच बजे उठाकर दिन के लिए एक संदेश देना।" आपको यह देखकर हैरानी हो जाएगी कि प्रभु हमें कैसे जगाता और पूरे दिन के दिन-भर के लिए तैयार करता है। यह हमारा विशेषाधिकार है। आप उससे कह सकते हैं: "प्रभु, सुबह उठने के लिए मेरे पास कोई अलार्म-घड़ी नहीं है कि मैं समय से उठकर पूरे दिन के लिए अपने आपको तैयार कर सकूँ।"

हममें से हरेक को *भोर के समय प्रभु से बात करनी चाहिए, उसकी उपस्थिति का आनन्द मनाना चाहिए, और इससे हम पूरे दिन तरोताज़ा रहेंगे*। अनेक लोग सुबह की प्रार्थना में नहीं आते। वे अपना समय बर्बाद करते हैं। प्रति भोर अपने घुटनों पर आ जाएं, प्रभु से संदेश प्राप्त करें और कहें, "प्रभु, मुझे सिखा और मुझसे बात कर, और मेरे शत्रुओं, मित्रों, शिक्षकों और सह-कर्मियों के लिए मुझे अपना शब्द दे।" हम इस तरह ही अपने उद्धार का आनन्द मनाते हैं, और परमेश्वर के लिए ज़्यादा उपयोगी बन पाते हैं।

जुलाई 18

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"हे धार्मिकता पर चलने वालो, तुम जो परमेश्वर के खोजी हो, मेरी सुनो: जिस चट्टान में से तुम निकाले गए और जिस खदान से खोदे गए, उस पर दृष्टि करो।

पच्चीसवीं चोटी

निश्चय ही परमेश्वर सिय्योन को शांति देगा, और वह सब खण्डहरों को शांति देगा। वह उसकी उजाड़ भूमि को अदन के समान और उसके रेगिस्तान को परमेश्वर की वाटिका के समान बनाएगा। उसमें हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और मधुर गीतों की ध्वनि सुनाई देगी" (यशा. 53:1-3)।

वह चट्टान प्रभु यीशु मसीह है (1 कुरि. 10:4)। जब हम अपने पापों से मन फिरा लेते हैं और प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण कर लेते हैं, तो *हम उसके स्वभाव में सहभागी हो जाते हैं* (2 पत. 1:4)। हम अपने स्वभाव में पापी थे, और जैसे पौलुस ने रोमियों 7:18 में साक्षी दी है कि परमेश्वर को हममें कुछ भी भला नज़र नहीं आता था। मनुष्यों के रूप में हमारे स्वभाव में "कुछ भी भला वास नहीं करता है", और परमेश्वर की नज़र में आत्मिक तौर पर हममें कुछ भी भला नहीं है। हमारे जीवन में ऐसा कुछ नहीं है जिसे परमेश्वर उसके उपयोग के लिए स्वीकार कर सकता हो।

लेकिन जिस पल हम प्रभु यीशु मसीह को अपने मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करते हैं और यह विश्वास करते हैं कि वह हमारी मौत मरा है, और हमें धर्मी ठहराने के लिए तीसरे दिन जी उठा है, तो उसी पल उसका जीवन मुझमें उण्डेला जाता है, और मैं उसके स्वभाव में सहभागी हो जाता हूँ। नबी हमें बताता है: "हम अपनी तरफ नहीं बल्कि उस चट्टान की तरफ देखें जिसमें से हम तराशे गए हैं, क्योंकि वह स्वयं हमारी धार्मिकता बन गया है।" जब हम यीशु की तरफ देखते रहते हैं, तो प्रभु यीशु मसीह के सारे गुण और उसकी योग्यता दिन-प्रतिदिन हममें उण्डेले जाते हैं। वह हमारा नमूना और हमारा जीवन है। अगर आप नम्र व दीन होना चाहते हैं, तो उससे कहें, "प्रभु, मुझे अपने जैसा नम्र व दीन बना दे।" अगर आप अपने शत्रुओं से प्रेम करना चाहते हैं तो उससे कहें "प्रभु, मुझे वही प्रेम दे जिससे तूने अपने शत्रुओं से प्रेम किया था, जब तूने यह कहा था कि इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या करते हैं।" हम उससे यह कह सकते हैं कि वह हमें उसका प्रेम, धीरज-से-सहना, धैर्य और आनन्द दे। फिर एक दिन हम उसके समान हो जाएंगे। उस जीवन में हमें वह अमर, महिमामयी देह दी जाएगी (1यूह. 3:2)। "हे प्रभु, मुझे अपने जीवन में और ज़्यादा सहभागी बना कि मैं अपनी नाकामियों और कमियों पर जय पा सकूँ।" इस तरह हम जय पाने वाले बन जाएंगे।

जुलाई 19

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"पर्वतों पर उसके पैर क्या ही सुहावने हैं जो भली बातों का समाचार लाता है; जो शांति की बातें सुनाता है"

छब्बीसवीं चोटी

सुहावने पैर होना कितना बड़ा सौभाग्य है! हमारी देह के सभी अंगों में हमारे पाँव ही सबसे कम सुन्दर होते हैं। लेकिन अपने मित्रों और पड़ौसियों के बीच में उद्धार का संदेश पहुँचाने से हम सुहावने पाँव पा सकते हैं। हरेक विश्वासी को प्रभु यीशु मसीह का साक्षी होना चाहिए। परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए हमें एक प्रचारक या शिक्षक के रूप में प्रशिक्षण पाने की ज़रूरत नहीं होती। प्रभु की मदद से किसी से बोले गए थोड़े से शब्द उद्धार ला सकते हैं। अनेक जगहों में अनेक लोगों के बीच में सुसमाचार पहुँचाना वास्तव में एक गौरव की बात है, और प्रभु आत्माओं को बचाने के लिए अक्सर मूर्ख और निर्बल पात्रों को ही इस्तेमाल करता है।

क्या आपके पाँव सुहावने हैं? तो प्रभु से कहें कि वह आपको ऐसे पाँव दे। हम अपने आसपास के सभी लोगों को, जो परीक्षाओं, पीड़ाओं और कठिनाइयों में से गुज़रते हैं, सच्चे और जीवित परमेश्वर का संदेश दे सकते हैं। पीड़ाओं में से गुज़रने वाले लोगों के आँसू कोई नहीं पोंछ सकता, लेकिन हम उनके पास जाकर यह कह सकते हैं, "प्रभु यीशु मसीह में भरोसा रखो, वह आपके आँसू पोंछ डालेगा। अगर आप बीमार हैं तो वह आपको चंगा करेगा। जो आप चाहते हैं वह आपको देगा और आपकी रक्षा करेगा।" आपको ऐसे बहुत लोग मिलेंगे जो इस तरह प्रभु यीशु मसीह के पाँव बने हैं। हम सभी लोगों को पूरी सामर्थ्य के साथ उनकी ज़रूरतों के लिए जीवित परमेश्वर का संदेश दे सकते हैं। यह करने के लिए ज़्यादा ज्ञान और बुद्धि की ज़रूरत नहीं होती। आप अपने बारे में क्या कहते हैं? क्या आपके पाँव ख़ूबसूरत हैं या बदसूरत हैं? क्या आप अपने पाँवों पर शर्मिन्दा हैं? परमेश्वर कहता है कि दूसरों को उद्धार का वचन देने द्वारा हमारे बदसूरत पाँव ख़ूबसूरत बन सकते हैं।

जुलाई 20

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"निश्चय उसने हमारी पीड़ाओं को आप सह लिया और हमारे दु:खों को उठा लिया, फिर भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। लेकिन वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे ही अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए" (यशा. 53:4,5)।

सत्ताईसवीं चोटी

यशायाह नबी में एक विस्तृत रूप में यह नबूवत की थी कि प्रभु यीशु मसीह कैसे हमारे दण्ड और पाप को उसके ऊपर उठाने वाला था (पद 4)। उसने हमारे पापमय विचारों, शब्दों और कामों में से पैदा होने वाली पीड़ाओं को सहा। उसे पूरी क़ीमत चुकानी पड़ी थी। हमारे पापमय विचारों की वजह से प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए पीड़ाओं को सहा।

हमारे विचारों, शब्दों और कामों के लिए पीड़ा सहने की ज़िम्मेदारी उसने अपने ऊपर ले ली थी क्योंकि हम विचार, शब्द और कृत्य के त्रिगुणे क्षेत्र में पाप करते हैं। प्रभु यीशु मसीह ने हमारे त्रिगुणे पाप के लिए दण्ड सहा है।

हमारे पापमय विचारों के लिए उस पर थूका गया था; हमारे पापमय शब्दों के लिए उसकी ताड़ना हुई; और हमारे पापमय कामों के लिए उसके हाथों और पैरों में कील ठोंके गए, उसकी देह पर कोड़े मारे गए। यह सब उसने हमारी ख़ातिर सहा कि हम परमेश्वर के सामने पूरी तरह से धर्मी (सही) और न्यायसंगत ठहराए जा सकें। यह बात हमें परमेश्वर के सामने एक आज़ादी और साहस देती है, और हमारे बीते हुए जीवन के पापों की स्मृति को मिटा देती है। शैतान हमें बीते पाप याद दिलाना चाहता है, लेकिन हम यह कह सकते हैं, "प्रभु, शैतान मुझे पिछले पाप याद दिला रहा है, लेकिन प्रभु, तुझे मेरी ख़ातिर कोड़े मारे गए, तेरे हाथ-पैरों में कीलें ठोंकी गई, और तुझ पर थूका गया, और इस तरह तूने मेरे दोष को मिटा दिया है, और अपनी धार्मिकता में मुझे धर्मी बना दिया है।" यह बात हमें एक सिद्ध रूप में उसकी उपस्थिति में जानेकी आज़ादी और साहस देती है और जब हम गिरें तो हमें बार-बार उठने के लिए प्रोत्साहन देती हैं (भजन. 37:24; मीका 7:8; 2 कुरि. 4:9)।

इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि हमारा पाप कितना लज्जाजनक और गिराने वाला है हम एक सहज विश्वास से उससे धोए और शुद्ध किए जाने के लिए प्रायश्चित् के लहू पर अपने अधिकार का दावा कर सकते हैं, और परमेश्वर की उपस्थिति में पूरी आज़ादी का आनन्द मना सकते हैं।

जुलाई 21

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

“तेरी हानि के लिए बनाया गया कोई भी हथियार सफल न होगा, और जितनी भी जीभें तुझ पर दोष लगाएं, तू उन्हें दोषी ठहराएगी। परमेश्वर के लोगों का यही भाग है, और वे मेरे कारण निर्दोष ठहराए जाएंगे। परमेश्वर की यही वाणी है” (यशा. 54:17)।

अट्ठाईसवीं चोटी

परमेश्वर के वचन के इस भाग में हमें कितनी मूल्यवान वस्तु दी गई है, और यह उद्धार की कितनी भव्य चोटी है। हममें से कितने ऐसे हैं जो इसलिए पीड़ित और अप्रसन्न हैं क्योंकि कोई हमारे विरोध में खड़ा हुआ है? कई बार हमारे ख़िलाफ इस्तेमाल हो रहे हथियार हमारे अपने परिवार, अपनी माता, भाई, बहन, या पड़ौसी होते हैं। वे बहुत सी बातों में हमारे ख़िलाफ काम करते हैं।

जो लोग आत्मिकता में बढ़ना और परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहते हैं, दूसरे उनकी बुराई और नुक़सान करते हैं, लेकिन यशायाह 54:17 में हमें एक प्रतिज्ञा दी गई है। इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि शत्रु कैसे हथियार इस्तेमाल करता है – वे चाहे पत्र हों, झूठी कहानियाँ हों, अफवाहें हों (जो कुछ लोगों की एक ख़ास सेवकाई है और उन्हें बहुत आनन्दित करती है), परमेश्वर उसके वचन में कहता है, “तेरी हानि के लिए बनाया गया कोई भी हथियार सफल नहीं होगा।” हाँ, जीभ के हथियार को भी दोषी ठहराया जाएगा। प्रभु के जो सेवक परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए जा चुके हैं, यह उनकी विरासत है। यह अंगीकार करते रहें, “मैं यशायाह 54:17 में विश्वास करता हूँ।” विश्वास से कहें, क्योंकि यह प्रभु की तरफ से आपकी सुरक्षा है; वह जीवित परमेश्वर है और वह जो कुछ कहता है उसे पूरा करता है (गिन. 11:23; 23:19)। *हमें अपना बचाव करने की कोई ज़रूरत नहीं होती, सिर्फ यशायाह 54:17 की प्रतिज्ञा में अपना भरोसा बनाए रखना होता है*

हम यशायाह 54:17 की प्रतिज्ञा में पूरा विश्वास करते हैं। जब तक हम उसमें हैं, वह हमारा बचाव करेगा। परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा। *अगर हम परमेश्वर की स्तुति करते रहेंगे, उसमें भरोसा बनाए रखेंगे, और उसकी प्रतिज्ञाओं पर हमारा अधिकार होने का दावा करते रहेंगे, तो वह किसी भी हथियार को हमारे ख़िलाफ सफल नहीं होने देगा।*

जुलाई 22

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"उसी प्रकार मेरे मुँह से निकलने वाला वचन होगा। वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास नहीं लौटेगा, वरन् मेरी इच्छा पूरी करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसे भेजा है वह उसे पूरा करके ही लौटेगा।

उन्नत्तीसवीं चोटी

क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे और शांति के साथ तुम्हारी अगुवाई की जाएगी। तुम्हारे आगे पर्वत और पहाड़ियाँ गला खोलकर जय-जयकार करेंगी, और सब वृक्ष आनन्दित होकर ताली बजाएंगे।

कंटीली झाड़ियों के स्थान पर सनौवर उगेंगे, बिच्छू-पौधों के स्थान पर मेंहदी उगेगी, और इस काम से परमेश्वर का नाम होगा। क्योंकि यह अनन्त का चिन्ह् होगा जो कभी न मिटेगा" (यशा. 55:11-13)।

"मेरा वचन व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा" (पद 11)। परमेश्वर ने हममें से किसी से जो कुछ भी बोला है, वह एक दिन ज़रूर पूरा होगा। अगर आपने विश्वास से परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है, और हालांकि उसके पूरा होने में कई साल लग सकते हैं, फिर भी एक दिन आएगा जब वह शब्द फलवंत होगा।

(पद 12) "क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे।" जब हम परमेश्वर के वचन को विश्वास से ग्रहण करते हैं, तो न सिर्फ हम आनन्द मनाते हैं बल्कि हम उस आनन्द को दूसरों के साथ भी बाँट सकते हैं। जो वचन हमने ग्रहण किया है, उसकी वजह से हम आनन्द के साथ निकल सकते हैं। हम उसी शब्द को लेकर उनके पास जाते हैं जो तिरस्कृत और निराश हैं और उनसे कहते हैं, "जब मैं निराश था, तब प्रभु ने मुझसे इस शब्द के द्वारा बात की थी और मैंने बल और उत्साह पाया था।" इस तरह, हम जहाँ भी जाएंगे, हम उस आनन्द और प्रसन्नता को फैलाएंगे जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं, और अन्य आत्माएं भी प्रभु के पास लाई जाएंगी।

प्रभु की प्रतिज्ञा के अनुसार, हाल ही में लगभग 90 विभिन्न् देशों में से यहूदियों ने फिलिस्तीन लौटना शुरू कर दिया है। दूसरे विश्व-युद्ध में हिटलर ने जर्मनी में लगभग 60 लाख यहूदियों को मार डाला था। आज फिलिस्तीन में उन 60 लाख यहूदियों की स्मृति में हज़ारों पेड़ लगाए जा रहे

हैं। इस तरह, पद 13 की प्रतिज्ञा अक्षरशः पूरी हो रही है। फिलिस्तीनी भूमि बंजर थी और सिर्फ कंटीली झाड़ियाँ और ऊँट-कटारे ही थे, लेकिन दूसरे देशों में तितर-बितर हुए और वहाँ से फिलिस्तीन में लौटने वाले यहूदियों ने अब तक वहाँ विदेशी मेंहदी और अंजीर के पेड़ों के अलावा 40 लाख पेड़ लगा दिए हैं। आत्मिक तौर पर हम भी हमारे विचारों और कामों में कंटीली झाड़ियों और ऊँट-कटारों से ही भरे हुए होते हैं। लेकिन यहाँ परमेश्वर यह प्रतिज्ञा करता है कि इन सभी को दूर किया जा सकता है और उनकी जगह प्रभु यीशु यीशु मसीह की कृपा और गुणों को आरोपित किया जा सकता है कि फिर एक दिन हम उसके जैसे बन सकें।

जुलाई 23

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"जो परदेसी परमेश्वर का भक्त हो गया है, वह यह न कहे, 'परमेश्वर मुझे निश्चय ही अपनी प्रजा से अलग करेगा', और न ही खोजा यह कहे, 'देखो, मैं तो एक सूखा वृक्ष हूँ।' प्रभु यूँ कहता है, 'जो खोजे मेरे सब्तों को मानते हैं और वही करते हैं जो मुझे भाता है, तथा मेरी वाचा का दृढ़ता से पालन करते हैं, मैं उन्हें अपने भवन और अपनी शहरपनाह में एक स्मारक बनाऊँगा, और उन्हें एक ऐसा नाम दूँगा जो पुत्र और पुत्रियों से उत्तम होगा। मैं उनको सदा का एक ऐसा नाम दूँगा जो मिटाया न जाएगा" (यशा. 56:3-5)।

तीसवीं चोटी

हरेक वर्ग/श्रेणी के लोग, चाहे उनमें कोई भी कमज़ोरी हो, परमेश्वर के घर में आमंत्रित हैं। पद 3 में हम पढ़ते हैं कि खोजे भी परमेश्वर के घर में आमंत्रित हैं। पुराने समय में, उन्हें यहूदियों के मन्दिर में प्रवेश करने की भी अनुमति नहीं थी। लेकिन इस भाग में परमेश्वर कहता है कि *वहाँ सभी लोग होंगे* (पद 3,5-7), कोई भेदभाव किए बिना सभी का परमेश्वर के घर में स्वागत किया जाएगा। वे भी उनके पाप क्षमा किए जाने का विशेषाधिकार पा सकते हैं और परमेश्वर के घर के सदस्य बन सकते हैं।

हम उनेसिमुस के बारे में पढ़ते हैं जो पौलुस के लिए एक बड़ा उपयोगी पात्र बन गया था (फिलेमोन पद 10,13)। यक़ीनन उनेसिमुस ने अपने स्वामी के घर में से एक बड़ी धनराशि या कुछ और मूल्यवान वस्तु चुरा ली थी, और इस वजह से ही वह वहाँ से भाग कर रोम आ गया था। जब उनेसिमुस ने चोरी का सारा धन ख़र्च कर दिया तब उसे प्रेरित पौलुस याद आया।

अन्य लोगों की तरह, उसका नया जन्म भी बड़ी पीड़ाओं और परीक्षाओं द्वारा हुआ था ऐसे ही लोगों की तरह हुआ था जो पीड़ा में होने पर प्रभु के पास जाते हैं। पौलुस किसी को फिलेमोन के पास एक पत्री देकर भेजना चाहता था। और उनेसिमुस को फिलेमोन के पास भेजने की पौलुस की सबसे पहली वजह तो यही थी कि वह उनेसिमुस फिलेमोन से क्षमा माँगे क्योंकि उसने उसकी चोरी की थी। इसके अलावा, पौलुस यह चाहता था कि फिलेमोन उनेसिमुस को ऐसे ही ग्रहण करे जैसे वह पौलुस को ग्रहण करता। ऐसे अनेक लोग जो उनेसिमुस की तरह पाप और लज्जा का जीवन बिता रहे हैं, परमेश्वर के घर में आकर उसकी इच्छा और उद्देश्य की गहरी समझ पाने के बाद बदल जाएंगे। पूरे जगत में, परमेश्वर ने तुच्छ मनुष्यों को, हत्यारों और चोरों को चुना है जो बाद में परमेश्वर के महान् जन बन गए थे। परमेश्वर ऐसे लोगों को लेकर उन्हें परमेश्वर के संत बना सकता है।

जुलाई 24

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"क्योंकि जो अति महान् और महिमामय है और जो अनन्तकाल तक बना रहता है, जिसका नाम पवित्र है, वह यूँ कहता है, 'मैं " "ऊँचे और पवित्र स्थान में रहता हूँ, और उसके संग भी रहता हूँ जो आत्मा में नम्र व दीन है जिससे कि दीन की आत्मा और नम्र हृदय को पुनर्जीवित करूँ" (यशायाह 57:15)।

इकत्तीसवीं चोटी

हरेक तरह के लोगों ने अनेक कठिनाइयों और पीड़ाओं को सहने द्वारा परमेश्वर को खोजना चाहा है, लेकिन उन्होंने उसे नहीं पाया, क्योंकि कोई मनुष्य ज्ञान, विधि या धार्मिक परम्पराओं द्वारा परमेश्वर को नहीं खोज सकता। अनेक मठवासिनियों और तपस्वियों ने एकांत स्थानों में अपने पूरे जीवन बिता दिए हैं। उन्होंने ज़मीन पर भी सोने और रूखा-सूखा खाना खाने द्वारा भी परमेश्वर को पाना चाहा, लेकिन अंत में वे निराश ही हुए। इस तरह कोई परमेश्वर को नहीं देख सकता। सिर्फ वे लोग जो नम्र व दीन हैं और जिनके हृदय टूटे हुए हैं, वे ही परमेश्वर को देख सकते हैं या उसे ग्रहण कर सकते हैं। *परमेश्वर एक ऊँचे और पवित्र स्थान में रहता है, और उसके साथ भी रहता है जो आत्मा में नम्र व दीन है। यही रहस्य है। इसे जानने के लिए बहुत ज्ञान की ज़रूरत नहीं है, बल्कि एक सच्ची भीतरी नम्र आत्मा की ज़रूरत है।*

परमेश्वर भीतरी नम्रता चाहता है। ध्यान दें कि पौलुस गलातियों 2:20 में स्वयं अपने बारे में क्या कहता है: "मैं मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया गया हूँ फिर भी मैं जीवित हूँ।" यह सच्ची नम्रता है। हरेक हालात में हम यह कह सकते हैं: "प्रभु मेरी नहीं तेरी इच्छा; मेरी नहीं तेरी अभिलाषा; मेरा नहीं तेरा तरीक़ा।" छोटी-छोटी बातों के लिए भी वे इस तरह ही प्रार्थना करेंगे। नम्रता प्रतिदिन मरने द्वारा आती है। तब आप ईमानदारी और सच्चाई के साथ यह कह सकते हैं: " मेरा तरीक़ा नहीं बल्कि तेरा तरीक़ा; मेरी इच्छा नहीं बल्कि तेरी इच्छा।" ऐसा होने के लिए हमें मसीह की सामर्थ्य लेनी होगी, क्यों अपने आप में कोई अपनी ख़ुदी में नहीं मर सकता। पौलुस यह कह सका था, "मैं मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया गया हूँ" क्योंकि उसने रोज़ मरना सीख लिया था (1 कुरि. 15:31; 2कुर. 4:10, 12)। हम इसी तरह अपने उद्धार का आनन्द उठा सकते हैं, जैसा कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है: "मैं तुम्हें पृथ्वी के ऊँचे स्थानों में ले चलूँगा।" एक सूखा और हारा हुआ जीवन न बिताएं।

जुलाई 25

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"तब परमेश्वर निरंतर तेरी अगुवाई करेगा, और अकाल के समय में तुझे तृप्त करेगा और तेरी हड्डियों को बल प्रदान करेगा, और तू सींची हुई वाटिका और ऐसे सोते के समान हो जाएगा जिसका जल कभी नहीं सूखता" (यशा. 58:11)।

बत्तीसवीं चोटी

हमारे प्रेमी और जीवित परमेश्वर की यह एक बहुत ही मूल्यवान प्रतिज्ञा है। हालांकि हम गिरते और बहुत सी ग़लतियाँ करते हैं, लेकिन जब हम अपनी मुश्किलों और कामों के लिए दिशा-निर्देश पाने के लिए उसके चेहरे की तरफ देखते हैं, तो वह हमारी मदद करता है और हमारा मार्गदर्शन करता है। जब हम अपने ज़ोर में कुछ करने के लिए आगे बढ़ते हैं तो हम नाकाम होते हैं, लेकिन यहाँ हम परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा पाते हैं: "प्रभु निरंतर तेरी अगुवाई करेगा" (यशा. 58:11)। *वह हरेक क़दम पर, मामूली से मामूली बातों में भी, हमारी अगुवाई करता है। परमेश्वर की प्रतिज्ञा यह है कि वह हमारी निरंतर अगुवाई करेगा, और अकाल के समय में भी हमें तृप्त करेगा।* हालांकि अकाल की वजह से खाने की कमी होगी, लेकिन परमेश्वर के लोगों को भूखे मरने की ज़रूरत नहीं होगी। वह आपको जो भी खाना देगा, उसे वह आशिष देगा। जो कुछ भी आपको मिलता है, उसके लिए आभारी होना सीखें। "तू एक सींची हुई वाटिका के समान हो जाएगा।" अगर एक बाग़ को हमेशा सुन्दर नज़र आना है, तो उसे प्रतिदिन पूरे साल भर पानी देते रहना होगा।

बंजर रेगिस्तानों में विश्वासी वाटिका जैसे नज़र आ सकते हैं। आपके पास आने वाले लोगों को आप वचन दे सकते हैं, और इसके द्वारा आप स्वयं आत्मिक तौर पर तरोताज़ा और स्वस्थ रह सकते हैं। अपने जीवित वचन के द्वारा परमेश्वर स्वयं हमें पानी देता है, और फिर उस वचन पर प्रार्थना और मनन करने द्वारा हम अपने आसपास के लोगों को तसल्ली देना सीखते हैं। इसी पद में "ऐसे पुराने सोते के समान हो जाएगा जिसका जल कभी सूखता नहीं है।" हमारा आत्मिक जीवन एक ऐसे सोते की तरह बन सकता है जिसका जल कभी सूखता नहीं है। इसका रहस्य यह है कि हमें प्रभु में आनन्दित रहना होता है। इस तरह उजाड़ स्थान निर्मित हो सकता है और हम लोगों को यह दिखा सकते हैं कि जीवित कलीसिया क्या होती है।

जुलाई 26

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"परमेश्वर ने कहा है, 'जो वाचा मैंने उनसे बांधी है, वह यह है: मेरा आत्मा जो तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं, वे तेरे मुँह से, तेरे पोते-परपोते के मुँह से आज से लेकर सदा तक कभी नहीं हटेंगे।' परमेश्वर की यही वाणी है" (यशा. 59:21)।

तैंतीसवीं चोटी

प्रभु ने जो कुछ हमें दिया है, वह अनन्त के लिए है, और वह उसे हमसे कभी वापिस नहीं लेगा। वह हमें डाँटेगा, ताड़ना देगा, और उसे निराश करने पर हमें सज़ा भी देगा, लेकिन उसने जो हमें दिया है, उसे वह हमसे वापिस नहीं लेगा, और वह कहता है: "मैंने अपने आत्मा तुझे दिया है जो तुझ पर रहता है।" पवित्र-आत्मा आपसे कितनी बार बात की है? जिनका वास्तव में नया जन्म हुआ है, वे अक्सर सांसारिक मित्रताओं और आकर्षणों द्वारा विश्वास से भटकने लगते हैं, लेकिन फिर भी लगातार एक आवाज़ को यह कहते हुए सुनते हैं, "आ, मेरी बेटी, आ, मेरे बेटे, मेरे पास लौट आ।" पवित्र-आत्मा हमारे साथ इस तरह संघर्ष करता रहता है। याद रखें, कि यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। "मेरा आत्मा तुझसे कभी दूर न होगा।" आप एक सभा में या आराधना के अपने एकांत समय में जो कुछ सीखते हैं, वह हमेशा के लिए आपकी धरोहर हो जाता है। जब हमें महिमामय देह दी जाएंगी, तब हमें सिद्ध ज्ञान भी दिया जाएगा, और जब हम प्रभु को अपने-सामने देखेंगे, तब हम भी वैसे ही जान लेंगे जैसे हम जाने गए हैं (1कुर. 13:12)। उस सिद्ध ज्ञान की वजह से, हम यह समझ सकेंगे कि पूरे स्वर्ग में क्या हो रहा है, लेकिन जब तक हम पृथ्वी पर हैं, तब तक हमारा ज्ञान अधूरा ही रहेगा।

स्वर्ग में हमारा ज्ञान सिद्ध होगा, और हम सभी को उनके नाम से जानेंगे। हम स्वर्ग के हरेक भाग को जानेंगे और हम जहाँ भी जाना चाहेंगे, वहाँ जा सकेंगे। यह कोई सवाल न होगा कि हमें रास्ता कैसे मिलेगा। आपको रास्ता मालूम होगा क्योंकि आपका ज्ञान सिद्ध होगा। इस पृथ्वी पर पीड़ाओं और परीक्षाओं द्वारा आप जो कुछ भी सीखते हैं, उसके द्वारा आप अपनी स्वर्गीय सेवा के लिए तैयार हो रहे हैं। तब हमारा ज्ञान सिद्ध हो जाएगा।

जुलाई 27

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"छोटे से छोटा तो एक गोत्र, और सबसे तुच्छ एक महान् जाति बन जाएगा। मैं परमेश्वर, यह सब ठीक समय पर पूरा करूँगा" (यशा. 60:22)।

चौंतीसवीं चोटी

इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि हम शारीरिक या बौद्धिक रूप में कितने कमज़ोर हैं, हम स्वर्ग में आत्मिक रूप में शक्तिशाली बन सकेंगे। परमेश्वर मूर्ख लोगों को भी इस्तेमाल कर सकता है। प्रभु हमारी ताड़ना कर सकता है और हमें डाँट सकता है, लेकिन वह फिर भी हमें इस्तेमाल कर सकता है चाहे हम कितने भी मूर्ख क्यों न हों। *वह हमेशा ही महान् या शिक्षित लोगों को ही इस्तेमाल नहीं करता, लेकिन अक्सर मूर्ख और निर्बल पात्रों द्वारा वह महान् काम करता है* (1 कुरि. 1:31)। *तुच्छ पात्रों द्वारा वह संसार को उलट-पलट करता है।*

बहुत साल पहले उत्तर भारत में हमारी एक सभा थी। उस जगह के पास लड़कियों का एक बोर्डिन्ग स्कूल था और वहाँ की लड़कियाँ भी सभाओं में भाग ले रही थीं। लेकिन मैंने वहाँ अगुवाई करने वाली एक महिला से कहा कि सभा में लड़कियाँ ज़्यादा देर तक नहीं बैठ सकेंगी क्योंकि सभाएं पाँच घण्टे से भी ज़्यादा समय तक चलती हैं। इसलिए बच्चों को बाहर भेज दिया गया। सभा के बाद श्रीमति लाल ने आकर मुझसे कहा: "मुझे आपसे कुछ कहना है, मुझे थोड़ा समय दीजिए। मैं स्कूल की प्राध्यापिका हूँ, और कुछ देर पहले मैंने हॉस्टेल का दौरा किया था। और मुझे देख कर बहुत हैरानी हुई कि 13-14 साल वाली लड़कियाँ अपने घुटनों पर रोते हुए एक-एक कर ये प्रार्थना कर रही थीं: 'प्रभु, मुझे क्षमा कर, मैं बहुत बड़ी पापी हूँ।' मैंने उनसे पूछा कि तुम क्यों रो रही हो, तो उन्होंने कहा: 'पाप की वजह से।' बहन लाल ने यह साक्षी दी कि कैसे उसने सभा में आकर प्रभु से यह कहा था: 'प्रभु, मैं एक प्राध्यापिका हूँ, स्नातक हूँ, और फिर भी मेरा नया जन्म नहीं हुआ है।" और उसका नया जन्म हुआ, और उसने सभा में साक्षी दी, और एक-एक उस बहन के सारे सहकर्मियों ने नया जन्म पाया।

इसकी शुरूआत बच्चों के सामान्य ज्ञान से शुरू हुआ था। यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। यह एक अद्भुत पहाड़ी चोटी है।

जुलाई 28

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"तुम परमेश्वर के याजक कहलाओगे, तुम हमारे परमेश्वर के सेवक कहलाओगे। तुम जाति-जाति की धन-सम्पत्ति खाओगे, और उनके धन पर डींग मारोगे" (यशा. 41-4:6)।

पैंतीसवीं चोटी

आप परमेश्वर के याजक कहलाएंगे। एक याजक का दोहरा विशेषाधिकार होता है। किसी भी ज़रूरत में परमेश्वर को पुकारने की आज़ादी; और फिर, परमेश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाने की आज़ादी। याजक परमेश्वर की उपस्थिति में आकर दूसरे लोगों की ज़रूरत के अनुसार संदेश पा सकता था। अब विश्वासी परमेश्वर के याजक हैं। हरेक विश्वासी का यह विशेषाधिकार और सौभाग्य है कि वह किसी भी समय किसी भी ज़रूरत के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता है। हमें किसी दूसरे मध्यस्थ की ज़रूरत नहीं है क्योंकि प्रभु यीशु मसीह हमारा मध्यस्थ है। हमें परमेश्वर के याजकों के रूप में यह आज़ादी मिली है। हम हर समय परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकते हैं (इब्रा. 10:10)। परमेश्वर के याजकों के पास यह आज़ादी और अधिकार है कि वे किसी भी समय, किसी भी मामले में, और किसी भी समस्या के लिए उसकी पवित्र उपस्थिति में जा सकते हैं। आत्मिक रूप में, परमेश्वर के याजकों के रूप में, हम उनके प्रतिनिधि बन सकते हैं जो पाप में पड़े हैं। पहले, हम परमेश्वर की कृपा द्वारा बचाए जाते हैं, और फिर हम अपने मन-न-फिराए हुए सम्बंधियों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं - चाहे वे हमारे पिता, माता, भाई, बहन, पति, पत्नी या बच्चे हों - और परमेश्वर अद्‌भुत रीति से उनके जीवन बदल देगा।

याद रखें, कि कहीं आपकी माता या और कोई, आपके लिए प्रार्थना कर रहा है। मैं एक सभा में कैनाडा गया था। मेरे पास कोई संदेश नहीं था, इसलिए मैं एक लम्बे समय तक प्रार्थना करता रहा था। फिर जब मैंने अपनी बाइबल खोली तो मेरे सामने ये शब्द थे: "मैं ग़रीब और ज़रूरतमंद हूँ।" सभा के बाद मैंने लोगों को आमंत्रित किया। एक व्यक्ति मेरे पास आया और बोला, "आज शाम मैं नया जन्म पाना चाहता हूँ।" जब मैं उसके लिए प्रार्थना कर चुका, तो उसकी बहन ने मेरे पास आकर कहा, "आप नहीं जानते लेकिन मैं अपने भाई के मन-फिराव के लिए सालों से प्रार्थना कर रही थी।" आग्रहपूर्ण प्रार्थना से बहुत से बर्बाद जीवन बदल गए हैं।

जुलाई 29

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा।" यशायाह 61:46

छत्तीसवीं चोटी

यह उद्धार की कितनी अद्भुत चोटी है! हमारी पापमय दशा में, हम सिर्फ अपमान और लज्जा के ही पात्र थे, और फिर भी परमेश्वर कहता है, "तुम प्रभु के हाथों में महिमा का मुकुट होगे।" एक मुकुट अधिकार दर्शाता है। स्वर्ग में हमारा अधिकार इस बात में से प्रकट होगा कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे।

हमारा प्रभु यह चाहता है कि हम एक दूल्हन और दूल्हे की तरह हों। अगर वे प्रभु के द्वारा जोड़े जाते हैं, तो उन्हें पूरी तरह प्रभु पर निर्भर होना चाहिए, और हरेक परिस्थिति में उन्हें एक-दूसरे से प्रेम करने वाला होना चाहिए; और जब वे ऐसा करेंगे, तो वे एक-दूसरे को पसन्द भी करने लगेंगे। परमेश्वर हमसे कह रहा है, "मैं तुझे अपने हाथ में एक मुकुट बनाऊँगा।" वह हमें उसका मुकुट बनाना चाहता है, और हमें उसकी स्वर्गीय योजना के अनुकूल बनाना चाहता है।

एक राजमुकुट ऐसा ताज होता है जो सौन्दर्य के लिए भी होता है। यहाँ यह विचार है कि यीशु की जो महिमा और सुन्दरता अब तक स्वर्गदूतों ने नहीं देखी है, वे उस दिन देख पाएंगे। हम उस महिमा के लिए प्रभु यीशु द्वारा पूरी तरह तैयार किए जा रहे हैं। हमें प्रभु यीशु की अंगूठी भी कहा गया है। जैसे एक मुकुट राजा की महानता प्रकट करने के लिए एक राजा द्वारा पहना जाता है, वैसे ही महान् शासकों के हाथों में अंगूठी होती है। अंततः परमेश्वर का अधिकार स्वर्गदूतों द्वारा नहीं बल्कि उनके ऊपर प्रकट होगा जो आज उसके द्वारा उद्धार पा रहे हैं। हम उसका मुकुट, उसका ताज और उसकी अंगूठी बन जाएंगे; उसकी महिमा के लिए उसका मुकुट, उसकी सुन्दरता के लिए उसका ताज, और उसके अधिकार के लिए उसकी अंगूठी।

जुलाई 30

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

“उनके सब दु:खों में उसने भी दु:ख उठाया, और उसकी उपस्थिति के स्वर्गदूत ने उनका उद्धार किया। अपने प्रेम और अपनी दया में उसने उन्हें छुड़ाया, और वह प्राचीनकाल से उन्हें लिए फिरा” (यशा. 63:9)।

सैंतीसवीं चोटी

“उनके सब दु:खों में उसने भी दु:ख उठाया।” उद्धार की यह एक और ऊँची चोटी है। हमारी तकलीफें, मुश्किलें, दु:ख और दर्द चाहे जो भी हों, हमारा प्रभु हमारे साथ पीड़ा सहता है। विश्वासियों के रूप में, अगर हम उसके साथ पीड़ा सहेंगे, तो हम उसके साथ राज भी करेंगे और वह हमारे सारे बोझ भी बाँटता और उठाता है। इस वजह से ही वह कहता है, “मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो” (मत्ती 11:29)। “मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो।”

सामान्य तौर पर एक बैलगाड़ी को खींचने के लिए दो बैलों की ज़रूरत पड़ती है, और अक्सर दाएं हाथ पर रहने वाले बैल को ही ज़्यादा बोझ ढोना पड़ता है, ज़्यादा ज़ोर लगाना पड़ता, और वही ज़्यादा तकलीफ सहता है। खेत में हल चलाते समय भी जिस बैल को ज़्यादा ज़ोर लगाना पड़ता है, उसे दाएं हाथ पर ही रखा जाता है। वैसे ही, जब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के साथ जुए में जोते जाते हैं, तो वह हमारे वज़न को ढोता है। जब भी हमें पीड़ा होती है, तो प्रभु को पीड़ा होती है। जब भी आपको दु:ख होता है, तो वह आपके दु:ख का बोझ ढोता है। जब आप रोते है, तो वह रोता है। जब आप भूखे होते हैं, तो वह भूखा होता है। यह कितनी अद्‌भुत सेवकाई है!

हमारा प्रभु कहता है, “उनके सब दु:खों में उसने भी दु:ख उठाया।” इस वजह से ही प्रभु यीशु मसीह ने, जब तक हम उसके साथ नहीं होंगे, स्वर्गीय भोज में सहभागी होने से इनकार कर दिया (मत. 26:29)। यहाँ प्रभु कहता है, “मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा और तुम्हारे साथ दु:ख उठाऊँगा; यह न सोचो कि तुम अकेले ही दु:ख सह रहे हो।” इन सब बातों की वजह से हम इस पृथ्वी पर किसी भी तरह की दु:ख और तकलीफ को आनन्द के साथ सह सकते हैं। उसके अदृश्य दूत हमें शत्रु के अनेक अदृश्य हमलों से बचाते हैं। यह उद्धार की एक अनोखी चोटी है।

जुलाई 31

रूपान्तर की पर्वतीय चोटी के अनुभव के रहस्य

"क्योंकि प्राचीनकाल से ही न किसी ने सुना, न ही कानों तक इसकी चर्चा पहुँची, और न आँखों ने तुझे छोड़ किसी ऐसे परमेश्वर को देखा जो अपनी बाट जोहने वालों के लिए ऐसी बातों को तैयार करता हो" (यशा. 64:4)।

अड़तीसवीं चोटी

यह उद्धार की एक और चोटी है। इन "तैयार की हुई बातों" में आपकी कल्पना के वे सारे स्वर्गीय रहस्य भी शामिल हैं जो समय के साथ आप पर प्रकट किए जाएंगे, कुछ पृथ्वी पर, और कुछ स्वर्ग में। पृथ्वी पर प्रभु हमें कुछ ज्ञान दे रहा है, लेकिन जब पृथ्वी पर हममें होने वाला परमेश्वर का काम पूरा हो जाएगा, और जब हम स्वर्ग जाएंगे, तब अनेक स्वर्गीय रहस्य जानने के लिए हमें सिद्ध ज्ञान दिया जाएगा।

उन्तालीसवीं चोटी

"भेड़िया और मेमना एक-साथ चरेंगे, और सिंह बैल के समान भूसा खाएगा, और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सम्पूर्ण पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दु:ख देगा और न ही हानि पहुँचाएगा, प्रभु की यही वाणी है" (यशा. 65:24,25)।

यह प्रभु यीशु मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य के बारे में है, जब काँटे, झाड़ियाँ और ज़हर हटा दिया जाएगा। तब न कोई बीमारी होगी, न कोई दु:ख होगा। वहाँ कहीं भी श्राप का कोई चिन्ह् नहीं होगा। इस समय हम उस राज्य के लिए तैयार किए जा रहे हैं।

चालीसवीं चोटी

"क्योंकि प्रभु यूँ कहता है, 'देखो, मैं उसकी तरफ शांति को नदी के समान, और जाति-जाति का वैभव उमड़ती धारा के समान बहाऊँगा ... और प्रभु का हाथ उसके दासों पर प्रकट हो जाएगा, लेकिन उसके शत्रुओं पर उसका क्रोध भड़केगा" (यशा. 66:12-14)।

अंत में, आख़िरी पहाड़ी चोटी पर हमारी *शांति और आनन्द पूरा हो जाएगा, हमारी सारी पीड़ाएं भुला दी जाएंगी,* और बीते समय की हमारी सारी पीड़ाओं और कष्टों के लिए हमें भरपूर रूप में पुरस्कृत किया जाएगा। हमारी शांति एक नदी के समान होगी, और परमेश्वर की महिमा एक बहती हुई धारा की तरह होगी। अवश्य ही, हम पृथ्वी पर भी हम स्वर्गीय स्थानों में चल सकेंगे, क्योंकि हम उसकी अनन्त सम्पत्ति होने के लिए रचे गए हैं, और जैसे-जैसे हम प्रभु को ग्रहण करते और उसका आज्ञापालन करते जाएंगे, ये सारे महिमामय उद्देश्य पूरी तरह प्राप्त होते जाएंगे।

अगस्त 1

जय के रहस्य

"जो जय पाए, वह इन बातों का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा" (प्रका. 21:7)।

परमेश्वर एक ऐसे लोगों का समूह तैयार कर रहा है जिन्हें जय पाने वाले कहा जाता है। उन्हें बहुत भारी परीक्षाएं सहनी पड़ती हैं, और अनेक पीड़ादायक बोझ ढोने पड़ते हैं, लेकिन परमेश्वर यह योजना बना रहा है कि अंततः उन्हें अपने राज्य में बड़ी कृपा में पहुँचाए और उन्हें वह प्रदान करे जिसकी अपेक्षा या कल्पना कोई मनुष्य नहीं कर सकता। वह चाहता है कि हम जय पाने वाले हों। यह बिलकुल स्पष्ट है कि प्रकाशितवाक्य 21:7 की प्रतिज्ञा उन्हीं के लिए हैं जो जय पाते हैं। परमेश्वर उन्हें न सिर्फ पुरानी सृष्टि की बल्कि नई सृष्टि की भी वस्तुएं देना चाहता है।

अनेक लोग यह नहीं जानते कि वास्तव में उद्धार क्या है, और इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं है कि परमेश्वर ने स्वर्ग में पहुँचने वालों के लिए क्या कुछ तैयार कर रखा है। जो जय पाते हैं, उनके लिए कितनी महान्, अनन्त, आत्मिक और महिमामयी विरासत रखी हुई है। इसके अलावा, पृथ्वी पर भी वे ऐसे पात्र होंगे जिन्हें परमेश्वर शैतान को हराने और उसे लज्जित करने के लिए इस्तेमाल करेगा। प्रभु के हाथ में ऐसे पात्र होना वास्तव में एक बड़ा सौभाग्य और सम्मान है।

परमेश्वर ने यह योजना बनाई है कि हम उसके अनन्त उद्देश्यों को पूरा करने में उसके सहभागी और सहयोगी हों। कुछ लोग यह पूछते हैं कि परमेश्वर ने शैतान के विद्रोह के पहले ही दिन उसे दण्ड क्यों नहीं दे दिया था। अगर वह ऐसा कर देता तो इस जगत में कोई पाप ही न होता। इसका जवाब है, मनुष्य के प्रति परमेश्वर का प्रेम ऐसा महान् है कि उसने अनादि से ही मनुष्य को अपना सहभागी और सहकर्मी बनाना चाहा था।

अगस्त 2

जय के रहस्य

"जो पवित्र-आत्मा के चलाए चलते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं" (रोमियों 8:14)।

मान लें कि आप अपने छोटे से बेटे से यह कहें कि आप उसे आपकी सारी सम्पत्ति का वारिस बनाना चाहते हैं, तो क्या वह यह समझ सकेगा? नहीं, वह नहीं समझेगा। एक बच्चा एक समय में सिर्फ कुछ बातों को ही ग्रहण कर सकता है, तो वह यह कैसे समझ सकेगा कि आप उसे अपना सब कुछ दे देने वाले हैं? वह ऐसी बड़ी बात को ग्रहण नहीं कर पाएगा। वह तो एक पैसे की भी क़ीमत नहीं जानता तो वह सारी विरासत के मूल्य को कैसे समझ सकेगा। बच्चे को पहले बड़ा होकर परिपक्व होना पड़ेगा। इसी तरह, जब तक आप आत्मिक रूप में परिपक्व नहीं हो जाते, तब तक आप यह नहीं समझ पाएंगे कि परमेश्वर उसके महान्, अनन्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आपको उसका सहभागी और सहयोगी बनाना चाहता है।

दानिय्येल की पुस्तक में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर ने कैसे कुछ युवाओं को चुना और उनके द्वारा बड़े अधिकारियों को लज्जित किया, और इसके साथ ही अपने ठहराई हुए व्यवस्था और न्याय को भी बनाए रखा। इस्राएल के लोग लगातार परमेश्वर के वचन के ख़िलाफ विद्रोह कर रहे थे। अंततः परमेश्वर को उन्हें बेबीलोन में बंधुवाई में भेजने द्वारा दण्डित करना पड़ा था। लेकिन फिर भी अपने लोगों के लिए उसके महान् उद्देश्य नहीं बदले थे। हालांकि वे बंधुवाई में थे, लेकिन फिर भी वे परमेश्वर के लोग थे। परमेश्वर फिर भी उनसे प्रेम करता था। लेकिन परमेश्वर सिर्फ उन्हें ही इस्तेमाल कर सका था जिन्होंने उसके प्रेम का प्रत्युत्तर दिया था। ऐसे लोग बहुत ही कम थे जिनमें परमेश्वर के वचन और उसकी आज्ञाओं का पालन करने की लालसा थी। ये ही बचे हुए लोग थे।

अगस्त 3

जय के रहस्य

"राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है।"
नीतिवचन 16:15

राजा ने यह आज्ञा दी कि सभी समझदार और योग्य युवाओं को इकट्ठा किया जाए (दान. 1:3,4)। वह जानता था कि इन बंधकों में ऐसे पुरुष थे जिनमें उसके अपने लोगों से बहुत बढ़कर बुद्धि और समझ थी। यह सभी जानते हैं कि परमेश्वर ने यहूदियों को असाधारण बुद्धि और योग्यता दी है। यहूदी हमेशा से एक विशिष्ट रूप में चतुर जाति रही है। बेबीलोन का राजा इन यहूदी युवाओं को प्रशिक्षित करके अपने राज्य में ऊँचे पदों पर नियुक्त करना, और उनके द्वारा बेबीलोन को और समृद्ध करना चाह रहा था।

लेकिन इन्हीं युवाओं को बेबीलोन के इरादों को नाकाम करने, और बंधुवे यहूदियों को रिहा करवाने के लिए इस्तेमाल किया गया। परमेश्वर इस तरह काम करता है। वह शैतान की युक्तियों द्वारा ही शैतान को हराता है। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। फरीसी व सदूकी हमेशा प्रभु यीशु मसीह में और उसके शब्दों में कोई-न-कोई कमी ढूँढते रहते थे। लेकिन जो फन्दे वे प्रभु के लिए लगाते थे, वही उनके गिरने के गड्ढे बन जाते थे। एक बार ये लोग व्यभिचार पाप में रंगे हाथों पकड़ी गई एक स्त्री को प्रभु के पास लाए (यूह. 8:4)। व्यवस्था के अनुसार, उसे पत्थरों द्वारा मार डाला जाना था। प्रभु ने कहा, "जिसने पाप न किया हो, वह इसे पहला पत्थर मारे।" प्रभु इसी तरह उन्हें बार-बार विस्मित कर देता था।

अगस्त 4

जय के रहस्य

"जो जय पाए, मैं उसे खाने के लिए छुपा हुआ मन्ना दूँगा" (प्रका. 2:17)।

दानिय्येल ने अपने मन में यह ठान लिया था कि वह स्वयं को अशुद्ध नहीं करेगा (पद 8)। एक जयवंत जीवन जीने का यह रहस्य है। हमें अपने जीवन में हरेक प्रकार की अशुद्धता का इनकार कर देना चाहिए। अशुद्धता से परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता टूट जाती है। हम अशुद्धता पर अपनी कोशिशों से जय नहीं पा सकते। यह सिर्फ मसीह के लहू की क्षमता में एक सहज विश्वास से ही हो सकता है। हालांकि शत्रु हमें दिन में हज़ार बार अशुद्ध करना चाहेगा, फिर भी लगातार लहू से शुद्ध हो सकते हैं और अशुद्ध होने से बचे रह सकते हैं। विश्वास से हमें यह कहना चाहिए: "मैं अशुद्ध होने से इनकार करता हूँ। मैं शुद्ध होना चाहता हूँ। हे प्रभु, मैं चाहता हूँ कि तेरा लहू मुझे ढाँप ले और मुझे शुद्ध कर दे।" इस तरह हम हरेक प्रलोभन पर जय पा सकेंगे।

दानिय्येल को स्वयं उसके जीवन में होने वाली सारी बातों का पूर्वज्ञान नहीं था, लेकिन वह यह जानता था कि परमेश्वर उसे एक महान् उद्देश्य के लिए तैयार कर रहा था। याद रखें कि आप भी परमेश्वर द्वारा एक महान् उद्देश्य को पूरा करने के लिए तैयार किए जा रहे हैं, इसलिए आप भी अपने मन में अशुद्ध न होने का निश्चय कर लें। जब लोग हमारे संकल्प को और इस बात को देखते हैं कि परमेश्वर हमें कैसे आशिष दे रहा है, तो उन्हें भी साहस होगा और वे भी प्रभु के लिए खड़े हो सकेंगे। हम देखते हैं कि दानिय्येल सिर्फ दाल खाने के लिए तैयार हो गया था (पद 12)। वह और उसके तीनों मित्र विश्वास से यह जानते थे कि कि वे दूसरे युवाओं से ज़्यादा स्वस्थ, उजले और सशक्त नज़र आएंगे। जैसे दानिय्येल और उसके मित्रों ने माँगा और विश्वास किया कि उन्हें बाक़ी सभी युवाओं से ज़्यादा शक्ति, ज्ञान और बुद्धि मिलेंगे, वैसे ही विश्वास से हमें भी माँगना चाहिए।

अगस्त 5

जय के रहस्य

“तब वह स्त्री जंगल में भाग गई जहाँ परमेश्वर ने उसके लिए एक स्थान तैयार किया था कि एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक वहाँ उसका पोषण किया जाए” (प्रका. 12:6)।

अंत के दिनों में ऐसा होगा कि सिर्फ वे लोग, जिनके मस्तकों या दाहिने हाथ पर पशु का चिन्ह् या उसके नाम की संख्या होगी, सिर्फ उन्हें ही ख़रीदने और बेचने की अनुमति होगी। उन दिनों में, परमेश्वर अपने लोगों को जंगल में खिलाएगा, वैसे ही जैसे उसने एलिय्याह को खिलाया था (प्रका. 12:6)। एलिय्याह इसलिए सशक्त बना रहा क्योंकि उसने परमेश्वर का दिया हुआ खाना खाया था। इसलिए, अंत के दिनों में परमेश्वर अपने बच्चों को जो भी खाना देगा, चाहे वे पेड़ों की कंद-मूल ही क्यों न हों, वे उन्हें स्वस्थ और सशक्त रखने के लिए काफी होंगे। वे शैतान के सामने झुकने से, झूठ बोलने से, और हर तरह के दबाव के बावजूद झूठी साक्षी देने से इनकार करेंगे। अगर आप भी जय पाने वाले होना चाहते हैं, तो आपको भी शैतान से किसी भी तरह का लाभ लेने से इनकार करने वाला होना पड़ेगा। आपके सारे लाभ सिर्फ स्वर्ग से ही आने चाहिए (दानि. 1:13-15)।

इन युवाओं ने अधिकारी से कहा कि वह उन्हें दस दिनों तक परख कर देखे। बाइबल में दस की संख्या जाँच-परख दर्शाती है। दस दिन के बाद दानिय्येल और उसके साथियों के चेहरे ज़्यादा गोरे, तरोताज़ा और परमेश्वर की महिमा में जगमगाते हुए नज़र आए थे।। आप जो कुछ भी खाते-पीते हैं, अगर आप उसमें विश्वास से परमेश्वर की आशिष माँगेंगे, तो उसमें से आपको दूसरे लोगों के खाने-पीने की तुलना में ज़्यादा आनन्द, ऊर्जा और शक्ति मिलेगी। यह विश्वास करें कि परमेश्वर आपको सामान्य खाने में से भरपूर आशिष देगा तो आपके चेहरे चमकने लगेंगे।

अगस्त 6

जय के रहस्य

"हम परमेश्वर के उस ज्ञान के रहस्य का बयान करते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारी महिमा के लिए ठहराया है" (1 कुरि. 2:7)।

बेबीलोन के राजा की यह योजना थी कि ये युवा यहूदी ऐसे योग्य इंजीनियर, वैज्ञानिक और चिकित्सक बनें कि वे उसके राज्य को और ज़्यादा समृद्ध कर सकें, लेकिन परमेश्वर का उद्देश्य कुछ और ही था। उसने उन्हें ईश्वरीय बुद्धि से भरा था, जिसके द्वारा वे स्वर्गीय ज्ञान की बातों को समझ सके थे। सांसारिक ज्ञान वाले मनुष्य कभी उस महान् आदर को न समझ सकेंगे जो परमेश्वर की सेवा में निहित होता है। परमेश्वर के सेवक एक बड़े मूल्यवान रूप में उसके सहभागी और सहकर्मी हैं। "निस्संदेह, प्रभु-परमेश्वर जब तक अपने दास नबियों पर अपना भेद प्रकट नहीं करता तब तक वह कुछ भी नहीं करता" (आमोस 3:7)।

अनेक लोगों को स्वर्गीय बुद्धि के मूल्य का अहसास नहीं होता, लेकिन वे पार्थिव बुद्धि को बहुत मूल्यवान समझते हैं। सिर्फ परमेश्वर ही बुद्धि दे सकता है। इन युवाओं ने तो उसके लिए प्रार्थना भी नहीं की थी। उन्होंने सिर्फ यह संकल्प किया था कि वे अपने आपको अशुद्ध नहीं करेंगे, और इसलिए वे सामान्य दाल-रोटी खाकर ही संतुष्ट थे। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें बुद्धि दी (दानि. 1:17)।

ये चारों युवक - दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेद-नगो - सभी यहूदा के गोत्र से थे। 'यहूदा' का अर्थ है 'स्तुति'। इस नाम के अर्थ के अनुरूप, ये चारों युवा उन्हें दिए जाने वाले रूखे-सूखे भोजन के लिए परमेश्वर की स्तुति करते रहे और उसे धन्यवाद देते रहे थे। इन चारों युवाओं की तरह हमें भी संतुष्ट और आभारी रहना सीखना चाहिए। हमें अपनी परीक्षाओं और पीड़ाओं के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमें ईश्वरीय बुद्धि देगा।

अगस्त 7

जय के रहस्य

"बुद्धि मुख्य बात है; जो कुछ भी तू प्राप्त करे, बुद्धि ज़रूर प्राप्त कर" (नीति. 4:7)।

निश्चित समय पूरा होने पर, वे चारों युवक ऐसे प्रशिक्षित पाए गए कि वे राजा के हरेक सवाल का जवाब दे सके। परमेश्वर ने उन्हें योग्यता और बुद्धि दी। दानिय्येल को स्वप्नों और दर्शनों का भेद बताने की भी समझ दी गई। इस समय हममें से हरेक हमारी भावी सेवकाई के लिए तैयार किया जा रहा है। अगर हम उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, तो हम यह जान सकेंगे कि अंत के कठिन समयों में हमारी क्या सेवकाई होगी।

परमेश्वर से कहें कि वह आपको दानिय्येल की तरह जय पाने वाला बना दे। शैतान द्वारा आपकी तरफ भेजे जाने वाले हरेक प्रलोभन से अशुद्ध होने से इनकार करते रहें। ऐसी हरेक परिस्थिति जिसमें प्रभु आपको रखता है, यह विश्वास करें कि परमेश्वर ने उसकी अनुमति इसलिए दी है कि उसमें वह आपकी भावी सेवकाई के लिए तैयार कर सके। ऐसा विश्वास तैयार और सचेत रहने में आपकी मदद करेगा, और आपको भविष्य के लिए तैयार करेगा।

हमारी तैयारी के इस काम में ऐसी बहुत सी छननियाँ होती हैं जो हमें उन ज़िम्मेदारियों के लिए तैयार करती हैं जिन्हें हमें भविष्य में उठाना होता है। अध्याय 2 में हम यह देखते हैं कि कैसे परमेश्वर ने बेबीलोन के जादूगरों, ज्योतिषियों और तांत्रिकों के सामने यह साबित किया कि ईश्वरीय बुद्धि पृथ्वी की बुद्धि से बहुत बढ़कर होती है। परमेश्वर सभी सांसारिक लोगों को इसी तरह परखता है। जब उनका मृत्यु या किसी दूसरी भयानक स्थिति से सामना होता है, तो उनमें भय समा जाता है और वे रात दिन यातना सहते रहते हैं। सिर्फ सच्चा उद्धार पाने के बाद ही आप भय से मुक्त हो सकते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीक़ा नहीं है।

अगस्त 8

जय के रहस्य

“राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान है, परंतु बुद्धिमान मनुष्य उसको ठंडा करता है” (नीति. 16:14)।

सर्वशक्तिमान और पवित्र परमेश्वर अपने लोगों के बीच में रह सकता है, और रहता है! प्रभु यीशु के धरती पर मनुष्य का पुत्र बनकर आने के द्वारा, यह सच समझने में बहुत साधारण और आसान हो गया है! एक दिन जब आप एक आवश्यकता को झेल रहे थे, अचानक परमेश्वर की ज्योति आपके हृदय में आती है और आप छिपे हुए विचारों को समझने लगते हैं और आपके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उसे इस्तेमाल करता है! परमेश्वर उत्तर देगा जब हमारा सही समय होगा! राजा ने हुक्म दे दिया कि अगर बेबीलोन के ज्ञानियों (पण्डितों) ने स्वप्न और उसका अर्थ नहीं बताया तो उन्हें मार दिया जाएगा (पद 12,23)।

जल्लाद दानियेल और उसके मित्रों को ढूंढ रहे थे कि वे घात किए जाएं, और इन चार जवान लोगों ने डर का कोई चिन्ह नहीं दिखाया- यह जीतने वालों का एक लक्षण होता है, उन्हें कोई भय न होगा। अपने हृदयों में विश्वास के साथ उन्होंने प्रार्थना करनी शुरु कर दी (पद 16-18)।

दानिएल परमेश्वर के द्वारा चुना गया एक साधन था जिसके द्वारा स्वप्न प्रकट किया जाता, परन्तु चारों लोगों को प्रार्थना करनी थी, उन सबका इसमें भाग था। दानिएल के पास दर्शनों और स्वप्नों को समझने का विशेष वरदान था (अध्याय 1:17)। परन्तु जब उन चारों ने एक मन होकर प्रार्थना की, परमेश्वर ने दानिएल को प्रकाशन दिया। एक जीतने वाला बनाने के लिए आपको अपने संगी विश्वासियों के साथ रहकर बढ़ना सीखना होगा, और अकेले रहकर और अकेले खड़े होकर नहीं!

अगस्त 9

जय के रहस्य

"...बहुत लोग एकत्रित होकर प्रार्थना कर रहे थे" (प्रेरितों. 12:12)।

आत्मिक मामलों में हमें मिलकर बोझ उठाने चाहिए। हमें अपने बोझ एक-दूसरे के साथ बाँटने चाहिए, और मिलकर प्रभु को थाम लेना चाहिए। अनेक सेवकों ने स्वतंत्र-विचार वाले बन जाने की वजह अपनी सेवकाई और आशिष दोनों ही खो दिए हैं। इस वजह से ही हम दानिय्येल को उसके मित्रों की मदद लेता हुआ पाते हैं। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे स्वप्नों और दर्शनों को समझने और उनकी व्याख्या करने का दान दिया था (1:17), लेकिन इस मामले में उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसे प्रार्थना में अपने तीनों मित्रों के साथ सहभागिता करनी चाहिए। उन्होंने एक-साथ प्रार्थना की और इस सेवकाई में वे सहभागी थे। उनके दान-वरदान भिन्न् थे, लेकिन परमेश्वर के काम में उनकी सहभागिता बराबर थी।

अगर आप एक जय पाने वाले होना चाहते हैं, तो प्रार्थना में अपने साथी-विश्वासियों की सहभागिता चाहने से न झिझकें। उन्हें अपनी समस्याएं बताएं और उनसे कहें कि वे आपके लिए प्रार्थना करें और आपके साथ प्रार्थना करें। और फिर आप यह जान पाएंगे कि इससे आपको कितनी आशिष मिलती है। हमने पहले ही देखा है कि इन युवकों का विश्वास कितना दृढ़ था। राज्य के सारे लोग शोक और विलाप कर रहे थे, लेकिन इनका जीवित परमेश्वर में यह विश्वास था कि वह उन्हें इस तरह नाश नहीं होने देगा। हममें भी ऐसा ही विश्वास होना चाहिए कि चाहे हमारे जीवनों में कितनी भी बड़ी मुसीबतें भी क्यों न आ जाएं, प्रभु हमें निगरानी और देखभाल करना जानता है।

अगस्त 10

जय के रहस्य

"हे प्रभु, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा कर।"
भजन. 115:1

परमेश्वर ने युवकों के विश्वास का सम्मान किया और रात में एक दर्शन द्वारा उस पर रहस्य को प्रकट कर दिया गया (पद 19)। अब दानिय्येल राजा के सामने जाकर उसे स्वप्न और स्वप्न का अर्थ बताने के लिए तैयार था, लेकिन ऐसा करने के लिए उसमें कोई उत्तेजना-भरी जल्दबाज़ी नहीं थी। वह परमेश्वर के लिए स्तुति और धन्यवाद से भरा हुआ था, जैसा कि हम पद 20-23 की प्रार्थना में से देख सकते हैं। हम इस मामले में अक्सर चूक जाते हैं। जब परमेश्वर हम पर कुछ प्रकट करता है, तो हम उसे पर्याप्त रूप में धन्यवाद देने में नाकाम हो जाते हैं।

यह ध्यान दें कि दानिय्येल ने कैसे अपनी प्रार्थना में इन शब्दों को दोहराया है, "जो कुछ हमने तुझसे माँगा" (पद 23)। इस तरह उसने यह स्वीकार किया कि उनके सामूहिक रूप में प्रार्थना करने की वजह से ही परमेश्वर ने उसे स्वप्न और उसका अर्थ बताया था। उसने अपने लिए कोई श्रेय लेना न चाहा था। और राजा के सामने भी दानिय्येल ने अपने लिए कोई सम्मान न चाहा था। उसने कहा: "मुझ पर यह भेद इसलिए नहीं खोला गया क्योंकि मैं दूसरे लोगों से ज़्यादा बुद्धिमान हूँ" (पद 30)। "स्वर्ग में एक ऐसा परमेश्वर है जो भेदों का प्रकट करता है" (पद 26,28)। अगर आप जय पाने वाले होना चाहते हैं, तो कभी परमेश्वर से उसकी महिमा को न चुराएं।

प्रेरित पौलुस ने कहा, "परमेश्वर की कृपा से मैं अब जो हूँ सो हूँ" (1 कुरि. 15:10)। उसने परमेश्वर से बहुत प्रकाशन पाया था, लेकिन उसमें उसने अपने लिए कोई सम्मान न चाहा था। बार-बार उसने यह साक्षी दी कि वह सिर्फ कृपा के द्वारा सब कर सका था। आपको हमेशा अपने आपको छुपाए रखते हुए यही कहना चाहिए: "यह करने वाला मैं नहीं परमेश्वर हैं।"

अगस्त 11

जय के रहस्य

"परमेश्वर उस नगरी में है, वह कभी नहीं टलेगी; परमेश्वर उसकी सहायता करेगा" (भजन. 46:5)।

परमेश्वर ऐसे लोग चाहता है जो उन बातों की खोज में रहते हैं जिन्हें कभी हिलाया या हटाया नहीं जा सकता। अगर हम उस राज्य में होना चाहते हैं, तो हम इस तरह से जीवन बिताएं कि हम जो कुछ भी करें या कहें, उसका अनन्त फल हो, और इस तरह से जीने और सेवा करने द्वारा हम उस राज्य में स्वीकार किए जाएंगे। अगर हमें जय पाने वाले होना है, तो परमेश्वर हमें इसी तरह परखेगा। अपने स्वप्न में राजा ने एक विशाल मूर्ति देखी थी। उसका सिर सोने का था, उसकी छाती और बाहें चाँदी की थीं, पेट और जाँघें काँसे की, और पैर लोहे के, और पाँव मिट्टी और लोहे के थे। उस विशाल मूर्ति की तुलना में वह पत्थर छोटा ही था जो उसके सशक्त पाँवों पर गिरा था। उस मूर्ति पर आकर गिरने वाला वह छोटा सा पत्थर फिर बड़ा होकर इतना बड़ा पर्वत बन गया जिसने सारी पृथ्वी को ढाँप लिया (पद 35)। ऐसे सहज रूप में परमेश्वर यह बता रहा था कि हरेक मनुष्य-निर्मित वस्तु का एकाएक अंत हो जाएगा।

सिर्फ वही जो परमेश्वर का है, हिलाया व हटाया नहीं जाएगा। परमेश्वर का काम एक सहज रूप में शुरू हो सकता है, लेकिन वह हमेशा बना रहेगा। परमेश्वर सुसमाचार सुनाने के लिए स्वर्गदूतों को इस्तेमाल नहीं कर रहा है। अगर वह चाहता तो ऐसा कर सकता था। ऐसा करने की बजाय, वह सुसमाचार प्रचार करने के लिए वह निर्बल और तुच्छ पात्रों की तरह नम्र व दीन पुरुषों व स्त्रियों को इस्तेमाल कर रहा है। इस तरह, वह शैतान के दृढ़ गढ़ों को तोड़ता है और अपना राज्य स्थापित करता है।

अगस्त 12

जय के रहस्य

"मनुष्य के रूप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया" (फिलि. 2:8)।

प्रभु यीशु स्वयं एक छोटे से पत्थर की तरह पृथ्वी पर आया था। वह पृथ्वी के एक राजा की तरह शान से सज-धज कर नहीं आया था। वह एक मनुष्य के रूप में आया, लेकिन वह निष्पाप था। आज भी, उसके शिष्य संख्या में थोड़े ही हैं, लेकिन वह उनके द्वारा उसका राज्य स्थापित कर रहा है। जिन लोगों ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया है, हालांकि वे बिलकुल सामान्य लोग होंगे, लेकिन उनमें कोई डर नहीं होगा बल्कि उनके हृदयों में एक सिद्ध शांति और आनन्द होगा।

सोना सांसारिक वैभव दर्शाता है; चाँदी पृथ्वी की धन-सम्पत्ति दर्शाती है; कांसा सांसारिक ज्ञान का प्रतीक है और लोहा मानवीय शक्ति प्रदर्शित करता है। इन चारों बातों को हम हरेक मानवीय हृदय में पाते हैं - सांसरिक वैभव, ज्ञान, धन और शक्ति का प्रेम। लेकिन इनमें से कुछ भी हमेशा बना रहने वाला नहीं है। एक दिन ये पूरी तरह से नाश हो जाएंगे।

अगर आप परमेश्वर के राज्य में जय पाने वाले होना चाहते हैं, तो आपके जीवन को सारे सांसारिक वैभव, ज्ञान, धन और शक्ति के प्रेम से शुद्ध होना चाहिए। तब सभी मसीह को, जो बिना हाथ लगाए काटा हुआ पत्थर है, उसे आपके अन्दर फैलता और बढ़ता हुआ देखेंगे। आप इस बात के लिए तैयार होंगे कि मसीह का जीवन आपको भर दे, और आपकी आँखें सदा अनन्त की बातों पर ही लगी रहेंगी। आप यह चाहेंगे कि आपके परिश्रम के अनन्त परिणाम आएं।

अगस्त 13

जय के रहस्य

"अगर ऐसा हुआ भी, तो हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं, हमें उस धधकती हुई आग के भट्ठे से बचा सकता है, और हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है" (दानिएल. 3:17)।

राजा नबूकदनेस्सर ने यह मान लिया था कि दानिय्येल का परमेश्वर सारे देवताओं का परमेश्वर और सारे राजाओं का प्रभु था (पद 47)। फिर भी जीवित परमेश्वर को अपने परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहता था। परमेश्वर ने उसे अद्भुत बातें दिखाई थीं, फिर भी राजा ने पूरे हृदय से परमेश्वर की तरफ मन नहीं फिराया था।

इसलिए, अपने अंधेपन में, राजा ने उसका प्रतिनिधित्व करने वाली एक विशाल और भव्य मूर्ति बनवाई, और लोगों को यह आज्ञा दी कि वे उसकी आराधना करें। तीन युवाओं ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने यह फैसला किया कि वे किसी भी क़ीमत पर एक मूर्ति के आगे नहीं झुकेंगे। परमेश्वर ने सभी युगों में जय पाने वाले और उसके सहकर्मी होने वाले पुरुष तैयार किए हैं। ऐसे पुरुष हमेशा थोड़े ही होते हैं, लेकिन जब उन्हें पूरी तरह तैयार कर दिया जाता है, तब परमेश्वर उन्हें शैतान को हराने और उसकी सारी युक्तियों को नाकाम करने के लिए इस्तेमाल करता है।

राजा नबूकदनेस्सर के घमण्ड से भरे शब्दों को सुनें, "फिर ऐसा कौन सा देवता है जो तुम्हें मेरे हाथ से बचा सके?" वह कितना मूर्ख और अंधा था! वे तीनों युवक एक निश्चल रूप में शांत थे, हालांकि उन्हें धधकते हुए आग के भट्ठे में झोंकने की धमकी दी गई थी। यह देखें कि उन्होंने कितना समझदारी भरा जवाब दिया था। उन्होंने कहा, "हे नबूकदनेस्सर, हमें इस बारे में तुझे कोई जवाब देने की ज़रूरत नज़र नहीं आती।"

अगस्त 14

जय के रहस्य

"लेकिन अगर वह ऐसा न भी करे, फिर भी हे राजा, तुझे यह मालूम हो कि हम न तो तेरे देवताओं की, और न तेरी स्थापित की हुई मूर्ति की आराधना करेंगे" (दानिएल 3:18)।

राजा की धमकी युवकों के विश्वास को न हिला सकी थी। वे जानते थे कि उनका परमेश्वर जीवित परमेश्वर था और उसकी सामर्थ्य शैतान की और उनके सामने बैठे राजा की सारी शक्ति से कहीं ज़्यादा बढ़कर थी। अपने दिलों में किसी तरह का कोई शक या सवाल किए बिना, इन युवकों ने राजा से कह दिया, "हे राजा, हालांकि हम आग के धधकते भट्ठे में झोंके जाएंगे, फिर भी हम तेरी मूर्ति के आगे झुकने से इनकार करते हैं। अगर परमेश्वर ऐसा होने देता है कि हम आग में भस्म हो जाएं, तो भी हम उसके फैसले पर कोई सवाल नहीं उठाएंगे।"

अगर आप जय पाने वाले होना चाहते हैं, तो कभी परमेश्वर पर संदेह न करें। चाहे वह आपको अग्निमय परीक्षाओं में से भी लेकर क्यों न चले, आपको उससे सवाल करने का कोई अधिकार नहीं है। यह भरोसा रखें कि आपके लिए उसका मार्ग सिद्ध और सबसे श्रेष्ठ है, और यह कि वह आपके जीवन में जो कुछ भी कर रहा है, वह आपके भले के लिए ही है। यह सच्चा विश्वास है।

हम इन तीन युवा भद्र पुरुषों के नमूने से प्रेरणा पाते हैं। हालांकि उन्हें जान से मार डालने की धमकी दी गई थी, फिर भी उन्होंने मूर्ति के आगे झुकने से इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा, "हमारा परमेश्वर, जिसकी हम आराधना करते हैं, वह हमें धधकती हुई आग के भट्ठे से भी छुड़ा सकता है" (पद 17)। हमें भी यह भरोसा रखना चाहिए कि प्रभु हमें कभी नहीं त्यागेगा, क्योंकि वह कहता है, "स्वर्ग और पृथ्वी की सारी सामर्थ्य मुझे दी गई है ... देखो, मैं युग के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ" (मत्ती 28:18,20)। प्रभु हमारी देखभाल करने के लिए उस सामर्थ्य का इस्तेमाल करेगा, इसलिए हम साहस के साथ खड़े होने से कभी न डरें।

अगस्त 15

जय के रहस्य

"देखो, मैं चार पुरुषों को आग में खुला हुआ, और बिना किसी हानि के चलता-फिरता हुआ देखता हूँ, और चौथे का रूप परमेश्वर के पुत्र के समान है" (दानिएल 3:25)।

तीनों युवाओं के जवाब से नबूकदनेस्सर बहुत क्रोधित हो गया और उसने यह आज्ञा दी कि भट्ठे को सात गुणा और धधकाया जाए। और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे पूरी तरह जलकर भस्म हो जाएं, इसलिए उसने उनके पायजामों, अंगरखों, बागों और अन्य वस्त्रों के साथ बंधवाया (पद 21)। फिर उन्हें उस आग के धधकते हुए भट्ठे में फेंक दिया गया। लेकिन आग ने सिर्फ उनके बंधनों को जलाया और उन्हें खोल दिया। और वे उस आग में इस तरह घूम रहे थे मानो बाग़ में टहल रहे हों। जब हम जय पाने वाले होना सीख लेते हैं, तब परमेश्वर हमें मामूली से नुक़सान से भी बचाकर रखेगा। राजा विस्मय से भर गया। वह और भी ज़्यादा विस्मित था क्योंकि आग के धधकते हुए कड़ाहे में तीन नहीं बल्कि चार लोग चल-फिर रहे थे। प्रभु अपने लोगों को बचाना जानता है।

जब हम परमेश्वर के वचन के लिए और हमारे प्रभु की साक्षी के लिए खड़े हो जाते हैं, तब वह यह सुनिश्चित करता है कि हमें कोई नुक़सान न हो। तब राजा ने शद्रक, मेशक और अबेद-नगो को बेबीलोन के प्रान्त में और भी ऊँचा पद दिया (पद 30)। इन विश्वासयोग्य युवकों के ख़िलाफ जो भी सताव आया, वह सिर्फ उनके पदोन्नत होने का, और बेबीलोन के राजा और प्रधानों के विस्मित करने का ही माध्यम बना। ये युवक अपने परमेश्वर को जानते थे, और इस वजह से ही वे सारे मामले में से जयवंत होते हुए निकले थे। प्रभु हमें भी उनकी तरह सच्ची जय पाने वाले लोग बनाए।

अगस्त 16

जय के रहस्य

"ऐसा कभी न हो कि मैं प्रभु यीशु मसीह की सूली के अलावा किसी दूसरी बात पर गर्व करूँ..." (गलातियों 6:14)।

ऐसा लगता है कि यह परमेश्वर की ही योजना है कि वह सिर्फ कुछ लोगों को ही बुलाए, और फिर उन्हें शैतान की सारी युक्तियों को नाकाम करने और हराने के लिए उन्हें इस्तेमाल करे। परमेश्वर उसके उद्देश्य पूरे करने के लिए बड़े जनसमूहों पर निर्भर नहीं रहता। यह सच है अनन्त जीवन परमेश्वर द्वारा सबको, चाहे वे किसी वर्ग या जाति के हों, दी जाने वाली मुफ्त भेंट है। अगर वे उनके पापों से मन फिराने और प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करने को तैयार हों, तो वे क्षमा पाएंगे और उसकी नज़र में धर्मी ठहराए जाएंगे। लेकिन अगर आप जय पाने वाले बनना चाहते हैं, तो आपको पूरी तरह से उसकी निज सम्पत्ति बनना होगा, और अपने जीवन और सेवकाई की हरेक छोटी से छोटी बात में उसके प्रभुत्व और राज्याधिकार के अधीन रहना होगा।

अपने हृदयों में हम बार-बार परमेश्वर के ख़िलाफ विद्रोह करते हैं, और हमारे जीवनों को उसके पूरे अधिकार में नहीं सौंपते। फिर इसका यही नतीजा होता है कि हम अक्सर ग़लतियाँ करते हैं और बड़ी हानि उठाते हैं। लेकिन हम फिर भी हठीले और विद्रोही बने रहते हैं और पवित्र-आत्मा के काम का लगातार विरोध करते रहते हैं।

यह हो सकता है कि परमेश्वर हमें सुसमाचार के प्रचार और आत्माओं को बचाने के लिए उसकी सेवा में इस्तेमाल कर रहा हो। हम जानते हैं कि हम अपने आप में कुछ नहीं कर सकते, फिर भी परमेश्वर को महिमा देने की बजाय हम घमण्ड से भर जाते हैं और अपने आप में महिमान्वित होने लगते हैं। कभी-कभी यह आत्म-गौरव अनजाने ही आ जाता है, और हम अपने किए हुए कामों में घमण्ड करने लगते हैं, और यह लालसा करने लगते हैं कि लोग हमारी प्रशंसा और सम्मान करें।

अगस्त 17

जय के रहस्य

“परमेश्वर के योग्य चाल चलो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है” (1 थिस्स. 2:12)।

जब तीनों युवक आग के धधकते हुए भट्ठे में से सुरक्षित निकल आए, तब दूसरी बार ऐसा हुआ कि राजा ने यह कहा, “शद्रक, मेशक और अबेद-नगो का परमेश्वर धन्य हो जिसने अपना दूत भेजकर अपने दासों को बचाया, जिन्होंने उस पर अपना भरोसा बनाए रखा ... क्योंकि ऐसा दूसरा कोई देवता नहीं है जो इस प्रकार छुटकारा दे सके” (दानि. 3:28,29)। उन्होंने सिर्फ एक अस्थाई रूप में परमेश्वर की महिमा की थी।

अनेक मामलों में, लोग घमण्डी होने की वजह से धनवान हो जाते हैं। ज़्यादा धनवान होने से ज़्यादा घमण्ड आता है। लोग सम्पन्नता के दास बन जाते हैं, और उसमें बने रहने की इच्छा की वजह से, वे परमेश्वर की बजाय मनुष्यों को प्रसन्न करने और उन्हें सम्मानित करने के लिए तैयार हो जाते हैं। विश्वासी भी मनुष्यों को प्रसन्न करने के फंदे में फँस जाते हैं, और फिर वे परमेश्वर के पूरे परामर्श का पालन करने के लिए तैयार नहीं होते।

जब हम परमेश्वर का आदर करने से चूक जाते हैं, तो हम आत्मिक तौर पर भी अंधे हो जाते हैं। आराधना में बिताए जाने वाले समय हमें इस दशा से बचने में मदद करते हैं। जब हम आराधना के समय को कम कर देते हैं और उसे पर्याप्त रूप में उस सब कामों के लिए धन्यवाद देने में नाकाम हो जाते हैं जो उसने हमारे लिए किए हैं, तब हम उसके साथ सहभागिता करने का पूरा आनन्द भी नहीं उठा पाते। कुछ लोग, जिन्हें उनके जीवन के आत्मिक सूखेपन का अहसास हो जाता है, प्रचारकों पर दोष लगाते हैं। लेकिन यह हो सकता है कि आप उसकी उपस्थिति का इसलिए आनन्द न मना पा रहे हों क्योंकि आप पर्याप्त रूप में परमेश्वर को धन्यवाद देने और उसकी आराधना करने में नाकाम रहे हैं।

अगस्त 18

जय के रहस्य

“जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा वह नीचा किया जाएगा, और जो स्वयं को नीचा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा” (मत्ती 23:12)।

दानिय्येल ने राजा नबूकदनेस्सर से स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि अगर उसने पश्चाताप् नहीं किया तो उसे मनुष्यों के बीच में से हांक दिया जाएगा। इन सब बातों के होने के बाद भी नबूकदनेस्सर ने उसका मन नहीं फिराया। उसने घमण्ड से भर कर यह कहा था, “मेरे राज्य, मेरे महलों, और मेरे कामों को देखो”, लेकिन उसे यह बात समझ नहीं आई थी कि परमेश्वर की नज़र में वह सिर्फ एक पशु के समान ही था जिसमें कोई बुद्धि और समझ नहीं थी। शक्ति और शिक्षा परमेश्वर के सामने कुछ भी नहीं हैं और उसकी नज़र में मनुष्य पशु जैसे ही हैं। आपके अन्दर भी जब तक पुराना स्वभाव हैं तब तक आप भी एक पशु के समान ही हैं।

हमारा नया जन्म होने के बाद भी शैतान हमें उस जगह से दूर ले जाने की कोशिश करेगा जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा होगा। जिनका नया जन्म हो गया है उन सबके लिए प्रभु की ये इच्छा है कि वे उसके सहकर्मी और सहयोगी हों। अगर हम जय पाने वाले होंगे तो यह बात हममें पूरी होगी, और तब हम परमेश्वर के हाथ में एक ऐसे पात्र होंगे जिनके द्वारा वह अपने न्याय के काम पूरे कर सकेगा। हम स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे (1 कुरि. 6:3)। जब परमेश्वर राजाओं और दूसरी शक्तियों का न्याय करना शुरू करेगा, तब उस न्याय में भी वह हमें उसका सहकर्मी बनाएगा।

स्वाभाविक रूप में, हमें ऐसा लगता है कि अपने आपको ऊँचा उठाने से हमें और ज़्यादा महिमा मिलेगी। लेकिन एक सहज ईश्वरीय नियम यह है: “जो अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह नीचा किया जाएगा, और जो अपने आपको नीचा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा” (मत्ती 23:12)। हालांकि हम यह जानते हैं, और हमने बाइबल में यह बहुत बार पढ़ा है, फिर भी हमें अपने आपको ऊँचा उठाना बहुत अच्छा लगता है। हम जहाँ भी जाते हैं, अगर हमें वहाँ सम्मानित नहीं किया जाता, और हमारी प्रशंसा नहीं होती, तो हमें बहुत चोट लगती है। ईश्वरीय नियम यह है कि हम सिर्फ अपने आपको नीचा करने द्वारा ही ऊँचे हो सकते हैं।

अगस्त 19

जय के रहस्य

"उसके सब काम सच्चे और उसके मार्ग न्यायोचित हैं, और वह अभिमानियों को दीन करने में समर्थ है" (दानिएल 4:37)।

अगर हम जय पाने वाले हैं, तो हम यह जान लेंगे कि हमें एक अनिवार्य तौर पर अपने आपको नम्र व दीन करना है। नबूकदनेस्सर को अपने आपको नम्र व दीन करने का पाठ सीखनेसे पहले एक पशु के समान बनना पड़ा था। उसे सच्चे परमेश्वर को ऊँचा उठाने की बात सीखने के लिए इतने सालों का समय लगा था। आप नबूकदनेस्सर की तरह न बनें। तब तक इंतज़ार न करें जब तक कि आपको एक पशु के समान न बनना पड़े। यही अच्छा है कि हरेक मौक़े पर प्रभु को महिमा दी जाए और उसे ऊँचा उठाया जाए। यह एक जय पाने वाले जीवन का रहस्य है। आप अपने मुख के वचन द्वारा, अपने जीवन की साक्षी द्वारा, और अपनी सेवकाई द्वारा परमेश्वर को ऊँचा उठाने वाले होने चाहिए।

अब हम नबूकदनेस्सर द्वारा दानिय्येल को कहे गए शब्दों पर ध्यान देंगे: "कोई भेद तेरे लिए कठिन नहीं है" (4:8-9)। दानिय्येल एक जय पाने का प्रतीकात्मक स्वरूप है। वे चिंतित नहीं होंगे, न आशंकित होंगे, और न ही किसी नई बात से परेशान हो जाएंगे, चाहे वह ऐसी कोई बात भी क्यों न हो जो उस समय उन्हें समझ न आ रही हो। यह हो सकता है कि इन दिनों में हम अपने आसपास कुछ ऐसी बातों को होता हुआ देखें जो हमारी समझ से बाहर हों। ख़ास तौर पर अंत के दिनों में हम अनेक चिन्ह् और अद्‌भुत बातें देखेंगे जो प्रभु की तरफ से नहीं होंगी, और जिनका हम कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे सकेंगे। लेकिन अगर हम जय पाने वाले होंगे तो हम डरेंगे नहीं क्योंकि हमारा यह पूरा भरोसा होगा कि परमेश्वर अपने तरीक़े से, अपने समय में हमें उन सब बातों का अर्थ और उनकी व्याख्या बता देगा (आम. 3:7)।

जो कुछ हम परमेश्वर के लिए करते हैं, उसे वह कभी नहीं भूलता है। हमारे सारे परिश्रम का हमें पूरा प्रतिफल मिलेगा। लेकिन जब एक व्यक्ति प्रभु द्वारा बार-बार मौक़ा दिए जाने पर भी अपने आपको नीचा करने से इनकार करता रहता है, सिर्फ तभी ऐसा होगा कि उसे अलग कर दिया जाएगा।

अगस्त 20

जय के रहस्य

“प्रेम में कोई भय नहीं होता, बल्कि सिद्ध प्रेम भय को मिटा देता है”
(1 यूहन्ना 4:18)।

बेलशस्सर राजा ने उसके एक हज़ार प्रधानों को एक बड़ा भोज दिया। जब वे दाखमधु पी रहे थे, तब राजा ने उसके सेवकों को आज्ञा दी कि सोने-चाँदी के वे पात्र जिन्हें उसका पिता नबूकदनेस्सर यरूशलेम के मन्दिर में से निकाल कर बेबीलोन ले आया था, वे लाए जाएं। फिर उन्होंने उन पात्रों में दाखमधु पीना शुरु कर दिया, और सोने, चाँदी, कांसे, लोहे, लकड़ी और पत्थर के देवताओं की स्तुति करना शुरू कर दिया।

सभी युगों में ऐसा होता रहा है कि धनवान पुरुषों ने उनके गौरव के शिखर पर पहुँचने के बाद, परमेश्वर की निंदा की है। यह एक हैरान करने वाली बात है कि पापी मनुष्य जीवित परमेश्वर की निंदा करने में, और उसके वचन और उसके लोगों के ख़िलाफ बोलने में बड़ा गौरव और आनन्द महसूस करते हैं। मैं आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताता हूँ। हालांकि बाइबल और कुरान में बहुत सी बातों में समानता है, फिर भी हम हिन्दुओं को मुसलमानों के और कुरान के ख़िलाफ बोलता हुआ नहीं पाते, लेकिन वे मसीह और बाइबल की निन्दा करते हैं।

जब वे सभी दाखमधु पी रहे थे, तभी एकाएक राजा ने उसके सामने दीवार पर एक हाथ को कुछ ऐसे शब्द लिखते हुए देखा जिन्हें वह पढ़ न सका क्योंकि वे अनजान भाषा में लिखे थे। यह देखकर राजा डर के मारे थरथराने लगा और उसके घुटने आपस में टकराने लगे। हमने बहुत बार ऐसा होते देखा है कि जब धन, ज्ञान, पद और शक्ति वाले पुरुष उनके बीच में ऐसी रहस्यमयी बातों को होता हुआ देखते हैं जिनका उनके पास कोई जवाब नहीं होता, तो वे थरथराने लगते हैं। हमारे हृदयों में सिद्ध प्रेम ही हमें हरेक भय से मुक्त कर सकता है। प्रेम में कोई भय नहीं होता (1 यूह. 4:18)।

अगस्त 21

जय के रहस्य

"मैंने तुझसे सनातन प्रेम से प्रेम किया है।"
यिर्म. 31:3

हमारे परमेश्वर का प्रेम सिद्ध और अपरिवर्तनशील है। हालांकि हमारी ग़लतियों की वजह से परमेश्वर हमारी ताड़ना करेगा और हमें डाँटेगा, लेकिन उसका प्रेम कभी नहीं बदलेगा। परमेश्वर हमसे थोड़ा प्रेम नहीं करता, वह हमें उसकी परिपूर्णता में प्रेम करता है। इस वजह से ही वह हमें उसका सब कुछ दे देता है। वह हमारे लिए अपनी सारी महिमा छोड़कर आया था। हमारी ख़ातिर उसने अपने लहू की आख़िरी बूँद भी बहा दी है। सिर्फ ऐसा प्रेम ही सिद्ध प्रेम होता है, और सिर्फ ऐसा प्रेम ही हमारे भय दूर कर सकता है।

कभी-कभी हम बड़ी अजीब परीक्षाओं और पीड़ाओं में से गुज़रते हैं, और ऐसे समय में, हमारी माँ भी, चाहे वह कितनी भी ईमानदार और प्रेम करने वाली हो, उन बातों में हमारे साथ सहभागी नहीं हो सकती। लेकिन मसीह का प्रेम सिद्ध है, और वह हमारे साथ हमारे सारे बोझ, मुश्किलें, दु:ख, और पीड़ाएं सह सकता है।

जो लोग प्रभु यीशु को अपने मुक्तिदाता के रूप में नहीं जानते, वे उनके जीवन में अनेक प्रकार के भय के वश में रहेंगे। उनके सारे ज्ञान, सम्पत्ति और शक्ति के बावजूद, आप महान् पुरुषों के मुख पर भय के चिन्ह् देख सकेंगे। प्रभु यीशु ने कहा कि अंतिम दिनों में अनेक भयानक चिन्ह् होंगे - आकाश से तारे गिरेंगे, भूकम्प आएंगे, महामारियाँ फैलेंगी और युद्ध होंगे। तब मनुष्यों के हृदय डर के मारे कच्चे हो जाएंगे (लूका 21:26)। उस समय परमेश्वर के लोगों को भी परीक्षाओं में से गुज़रना पड़ेगा। लेकिन प्रभु उन्हें भयभीत नहीं होने देगा।

अगस्त 22

जय के रहस्य

"मसीह यीशु जो हमारे लिए बुद्धि ठहरा।"1 कुरि. 1:30

सभी प्रधान दीवार पर लिखावट को देख रहे थे, लेकिन लिखने वाले हाथ को सिर्फ राजा ने ही देखा था। मुख्य तौर पर वही दोषी था, इसलिए सबसे पहले उसका ही न्याय होना था। वैसे ही जैसे पापी का न्याय करने से पहले परमेश्वर शैतान का न्याय करेगा जो मनुष्य के पतन, पाप और भ्रष्टता के लिए ज़िम्मेदार है। सबसे पहले उसे आग की झील में डाला जाएगा।

परमेश्वर अब आप से बात कर रहा है। अगर आप अभी भी पाप की दशा में हैं, तो परमेश्वर आपसे कह रहा है, "हे पापी, अगर तू अपने पापों से मन फिराना नहीं चाहता, तो अपने न्याय के दिन के लिए तैयार रह।" परमेश्वर, अपने महान् प्रेम और दया में, आपको बार-बार और अनेक प्रकार से चेतावनी देता रहता है। बीमारियों और मुसीबतों के द्वारा वह आपको बुलाता है कि आप उसका उद्धार पा सको।

अगर आप उसे अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीाकर करेंगे, तो प्रभु यीशु मसीह आपकी बुद्धि बन जाएगा। जब सारा जगत भयभीत होकर विलाप कर रहा होगा, उस समय भी परमेश्वर के बच्चे अपने घुटनों पर झुक कर प्रार्थना करेंगे। तब वे सब कुछ समझ जाएंगे, और वे उन सब बातों का अर्थ भी बता सकेंगे।

अगस्त 23

जय के रहस्य

"उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले मसीह में चुन लिया" (इफि. 1:4)।

फ्राँस में वॉल्टेयर नाम का एक व्यक्ति था। वह बड़ा विद्वान था, लेकिन वह नरीश्वरवादी और ईशनिन्दक भी था। उसकी मृत्यु से कुछ दिन पहले, वह बहुत बीमार हो गया था और भय से भर गया था। रात के समय वह इतना ज़ोर से चीख़ता-चिल्लाता था कि कोई नर्स उसके पास एक रात से ज़्यादा नहीं रह पाती थी। उसका चेहरा डर से ऐसा विकृत हो गया था कि कोई उसकी तरफ देख भी नहीं पाता था।

मैंने ऐसे लोगों को डर से मरते हुए देखा है जिन्होंने अपने परमेश्वर को नहीं जाना था। लेकिन जो अपने परमेश्वर को जानते हैं, वे निर्भय होकर मृत्यु की घाटी के अंधकार में उतर सकते हैं। मेरी जान-पहचान का एक युवक, जो विश्वासी था, अचानक अपनी नौकरी की जगह पर हृदय के आघात की वजह से मर गया। उसके कार्यालय का प्रबन्धक इस दु:खद समाचार के साथ उसके घर गया और मुश्किल से वह उसकी पत्नी को यह ख़बर सुना सका। लेकिन उसे यह सुनकर बहुत हैरानी हुई जब उसकी पत्नी ने कहा, "अब हम स्वर्ग में एक-दूसरे से मिलेंगे," और उस स्त्री ने प्रबन्धक को हमारी उस अद्‌भुत आशा के बारे में बताया जो हमने मसीह में पाई है। प्रबन्धक ने यह सोचा था कि वह बहन दु:ख और निराशा से टूट जाएगी, लेकिन वह विस्मित होता हुआ वहाँ से लौटा। प्रभु अपने लोगों को कभी निराश नहीं होने देता।

क्या आप आज भी प्रभु के पास नहीं आए हैं? वह आपको सारे दोष से मुक्त कर देगा। वह आपके सारे सवालों का जवाब देगा। वह अपने रहस्यों को आपके ऊपर भी उसी तरह प्रकट करेगा जैसे उसने दानिय्येल के ऊपर प्रकट किए थे, और वह आपको हरेक स्थिति में जयवंत करेगा। परमेश्वर ने यह चाहा है कि उसकी महान् जय में उसके लोग उसके सहभागी हों। उसने हमसे अपने अनन्त प्रेम में प्रेम किया है, और उसने हमें एक ऐसे उच्च और श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए चुना है जो सारी सृष्टि की रचना से पहले ही उसके मन में था। हमें इफिसियों 1:4-23 में यह दिखाया गया है।

अगस्त 24

जय के रहस्य

"तीन अधिपति थे, जिनमें दानिय्येल सबसे अधिक प्रतिष्ठित था, क्योंकि उसमें श्रेष्ठ आत्मा थी।"
दानिएल 6:2,3

दानिय्येल के पहले 6 अध्यायों में हम यह देखते हैं कि कैसे परमेश्वर अपने सेवकों को तैयारी के लम्बे समय में से लेकर चला जिसमें लगभग 43 साल लग गए थे। हालांकि वह उन्हें पहले ही अध्याय से एक सामर्थी रूप में इस्तेमाल कर रहा था, लेकिन वह हर समय उन्हें एक और बड़ी सेवकाई के लिए तैयार कर रहा था। फिर अध्याय 7 के बाद, हम यह देखते हैं कि कैसे परमेश्वर ने दानिय्येल के द्वारा भविष्य में होने वाली घटनाओं को प्रकट करना शुरू किया था। आने वाली सदियों की योजनाओं को मसीह के आने, उसके मरने, जी-उठने, और दोबारा पृथ्वी पर लौटने तक प्रकट कर दिया गया। हमारे जीवनों में भी ऐसा ही है।

हमारा बाइबल पढ़ना, बाइबल के बारे में दूसरी पुस्तकें पढ़ना, और अनेक अच्छे संदेश सुनना, असल में परमेश्वर के उन गहरे सत्यों को जानने के लिए हमारी तैयारी होती है जो प्रशिक्षित होने के बाद, हम परमेश्वर के वचन में एक छुपे हुए रूप में पाते हैं। वर्षों तक अध्ययन करने के बाद, हमारी आराधना के समयों में हम यह कह सकेंगे, "मैंने इस पद को पहले कभी इस तरह नहीं जाना था! यह वाक्यांश मुझे बिलकुल नया लग रहा है!" प्रभु दानिय्येल को उसके प्रार्थना के जीवन में भी तैयार कर रहा था। दानिय्येल अध्याय 6 में, हम यह पढ़ते हैं कि कैसे राजा दारा इतने बड़े राज्य पर राज करता था कि उसे चलाने के लिए उसे 120 अधिपतियों की ज़रूरत पड़ती थी। इनके ऊपर तीन अध्यक्ष ठहराए गए थे जिनमें से दानिय्येल एक था। लेकिन दानिय्येल इन सबमें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित था। जैसा कि हम आज की राजनीति में देखते हैं कि लोग अपने लिए सम्मान चाहते हैं, दानिय्येल उस तरह से अपने आपको प्रतिष्ठित करने की खोज में नहीं रहता था। उसने न तो अपने मित्रों व सम्बंधियों के प्रभाव को इस्तेमाल किया, और न ही चापलूसी और रिश्वत का इस्तेमाल किया। फिर भी उसे एक दिन राजा की आज्ञा मिली की उसे अध्यक्षों में प्रधान अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

अगस्त 25

जय के रहस्य

"जो कुछ तुम करते हो, उस काम को मनुष्यों का नहीं प्रभु का जानकर तन-मन से करो" (कुलु. 3:23)।

एक बार अमेरिका में, मैं बेरोज़गारी के एक लम्बे दौर से गुज़रा। जब नौकरी ढूँढते हुए काफी दिन बीत गए, तब एक आदमी ने मुझसे कहा, "क्या तुम्हें भारतीय खाना बनाना आता है? यहाँ भारतीय खाना बनाने वाले रसोईए बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। कुछ दिनों में भारतीय डॉक्टरों का एक सम्मेलन होने वाला है, और यहाँ सात दिनों के लिए बहुत से डॉक्टर आने वाले हैं। अगर तुम उनके लिए भारतीय खाना बना दोगे तो मैं तुम्हारी मेहनत की क़ीमत दूँगा।"

मैंने कहा, "मैं कुछ लोगों का खाना तो बना सकता हूँ, लेकिन एक बड़ी संख्या के लिए मैंने कभी खाना नहीं बनाया है।" "कोई बात नहीं," उसने कहा, "तुम कोशिश करके देखो, अगर नहीं हो पाएगा तो मैं तुम्हें हटा दूँगा।" मैंने पूरी रात प्रार्थना की और अगले दिन मैंने वहाँ खाना बनाया। खाना बनाते समय मैं प्रार्थना करता रहा, और हर बार प्रभु ने मुझे यह दिखाया कि मुझे कितने अनुपात में कौन-कौन सा मसाला और दूसरी चीज़ें डालनी थीं।

खाने के बाद एक महिला रसोई में आई, और उसने मुझे रसाईए का लम्बा कोट और टोपी पहने हुए देखा। "मिस्टर कुक," वह बोली, "मैं भारत का प्रवास कर चुकी हूँ और मैंने वहाँ बहुत से अच्छे होटलों में खाना खाया है, लेकिन मैंने ऐसा स्वादिष्ट खाना कहीं नहीं खाया! तुम्हें खाना बनाना किसने सिखाया है?" "मेरे प्रभु ने सिखाया है," मैंने जवाब दिया। मेरी रसोईए की नौकरी दस महीने तक रही, और मैं प्रतिदिन एक नया स्वाद प्रदान करता था। वे मुझे एक अच्छा रसोईया कहते थे, लेकिन वे नहीं जानते थे कि मैं सिर्फ उस बुद्धि के द्वारा पका रहा था जो मेरी प्रार्थना के जवाब में परमेश्वर ने मुझे दी थी। मैं सिर्फ यह बताना चाह रहा हूँ कि परमेश्वर हमारे प्रतिदिन के कामों के लिए हमें बुद्धि देता है। यह वही ईश्वरीय सिद्धान्त है; विश्वास से हरेक बात के लिए प्रार्थना करने द्वारा हम भी दानिय्येल और उसके मित्रों जैसे अनुभव पा सकते हैं।

अगस्त 26

जय के रहस्य

"उसकी विश्वासयोग्यता के कारण, उन्हें न तो दोष लगाने का कोई आधार और न ही भ्रष्टता का कोई प्रमाण मिला" (दानि. 6:4)।

जिन लोगों पर दानिय्येल को अध्यक्ष नियुक्त किया गया था, वे उससे घृणा करने लगे; वे ईर्ष्या से भरे गए थे। "यह हमारे ऊपर अध्यक्ष क्यों हो?" उन्होंने उपहास उड़ाते हुए कहा, और उसके ख़िलाफ युक्तियाँ करने लगे। अगर हम भी प्रार्थना और विश्वासयोग्यता द्वारा सफलता या पदोन्नति पाएंगे, तब हम भी पाएंगे कि दूसरे लोग हमसे ईर्ष्या करने लगे हैं।

हालांकि राजा दारा एक अच्छा राजा था, लेकिन ज़्यादातर शासकों की तरह उसे भी चापलूसी पसन्द थी, और उसकी इस कमज़ोरी में से दानिय्येल के शत्रुओं को उनका मौक़ा मिल गया। लेकिन दानिय्येल में वे ऐसी कौन सी कमी पा सकते थे जिसमें वे उसे दोषी ठहराते? उन्होंने हालांकि उसके आसपास जासूस लगाकर उसके हरेक काम और मिलने-जुलने वाले लोगों की भी छानबीन कर ली, लेकिन आख़िर में उन्हें यही कहना पड़ा, "हम इस दानिय्येल में उसके परमेश्वर की व्यवस्था के अलावा और किसी बात में दोष लगाने का कोई आधार न पा सकेंगे" (पद 5)। उन्होंने उसके प्रार्थना के जीवन की विश्वासयोग्यता को देखा। वह हालांकि बहुत व्यस्त व्यक्ति था और उसे अनेक महत्वपूर्ण मामलों को निपटाना होता था, फिर भी वह अपने प्रार्थना के समय में कोई कटौती नहीं करता था। जब उसकी प्रार्थना का समय हो जाता था, तो दिन में तीन बार वह परमेश्वर के साथ संगति करने से नहीं चूकता था।

अगर आप जय पाने वाले होना चाहते हैं, तो आपको भी घर और बाहर दोनों जगहों के कर्तव्यों में विश्वासयोग्य रहना होगा। मनुष्यों को नहीं बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए काम करें। याद रखें, कि प्रभु हर पल आपको देख रहा है।

अगस्त 27

जय के रहस्य

"खरे मनुष्यों के लिए प्रभु का मार्ग दृढ़ गढ़ है।"
नीति. 10:29

तब दानिय्येल के शत्रुओं ने राजा के सामने जाकर कहा, "हमने तेरे जैसा अद्‌भुत राजा नहीं देखा है, इसलिए हमने सर्वसम्मति से यह चाहा है कि तीस दिन तक सभी लोग तेरे अलावा और किसी देवता या मनुष्य से प्रार्थना न करें। इसलिए हे राजा, इस निषेधाज्ञा को लागू कर और इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर।"

राजा इस चापलूसी से बहुत प्रसन्न हो गया। "मैं कितना अच्छा राजा हूँ" उसने सोचा, "कि लोग मुझसे इतना प्रेम करते हैं और वे सिर्फ मुझसे ही प्रार्थना करना चाहते हैं।" और इस मामले पर ज़्यादा सोच-विचार किए बिना उसने राजाज्ञा पर हस्ताक्षर कर दिए। वह दानिय्येल के साथ कोई बुराई नहीं करना चाहता था, लेकिन वह चापलूसी से प्रेम करता था, और इसलिए उसके चतुर और धूर्त सलाहकारों ने उसे अंधा कर दिया था। हमारे समयकाल में भी ऐसा ही है। ऐसे अनेक शासक हैं जो चापलूसी से अंधे होकर ऐसे दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करते और ऐसे क़ानून बना देते हैं जो उनके देश के हित में नहीं होते। दानिय्येल यह कह सकता था, "अब मुझे खुलकर प्रार्थना नहीं करनी चाहिए," और वह उसके सेवकों को सारे खिड़की-दरवाज़े बंद करने के लिए कह सकता था। इसकी बजाय, कोई डर या शिकायत बिना, उसने अपनी खिड़कियों को खुला रखा और पहले की तरह ही घुटनों के बल झुक कर वह परमेश्वर को धन्यवाद देता रहा। उसका विश्वास कितना ज़बरदस्त था!

43 साल के ईश्वरीय प्रशिक्षण के बाद, दानिय्येल अब उसकी अंतिम परीक्षा का सामना कर रहा था। दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर हो चुके थे; अगले तीस दिन तक राजा दारा के अलावा किसी दूसरे से प्रार्थना का अर्थ शेरों की माँद में डाला जाना था। यहाँ हम पूरे राज्य को दानिय्येल के ख़िलाफ खड़ा हुआ पाते हैं। दानिय्येल अकेला ही खड़ा रहा, और उसकी मदद करने वाला दूसरा कोई नहीं था। उसने किसी मनुष्य की मदद न चाही, लेकिन सिर्फ परमेश्वर में अपना भरोसा बनाए रखा।

अगस्त 28

जय के रहस्य

"अपनी रीति के अनुसार, वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टिका कर प्रार्थना और धन्यवाद करता रहा।"
दानिएल 6:10

दानिय्येल दिन में तीन बार खुली हुई खिड़की के सामने परमेश्वर को धन्यवाद देता रहा। यह जय पाने एक सहज तरीक़ा है। परमेश्वर की स्तुति करना और उसे धन्यवाद देना सीख लें। यह मालूम होने पर भी कि शत्रु आपके ख़िलाफ काम कर रहा है, अपने मन में किसी तरह का डर या संदेह न आने दें।

हममें से बहुत लोगों को शुरू में प्रार्थना करना बहुत मुश्किल लगता है। यह मेरी भी समस्या थी। मेरे मन-फिराव के बाद, मैं बिना थके सारा दिन बाइबल सकता था, और अक्सर एक साथ अनेक अध्याय पढ़ लेता था। लेकिन मैं दस मिनट से ज़्यादा प्रार्थना नहीं कर पाता था। मैं अपने घुटनों के बल बैठ तो जाता था, लेकिन फिर कुछ ही देर में सो जाता था। मैं प्रार्थना करना चाहता था, लेकिन मैं एक लम्बे समय तक प्रार्थना नहीं कर पाता था। कभी-कभी तो यह वास्तव में एक बड़ा संघर्ष और एक युद्ध होता था।

लेकिन अब मैं यह पाता हूँ कि हालांकि मैं प्रार्थना में अनेक घण्टे बिताता हूँ, फिर भी वे काफी नहीं होते। अपने एकान्त का समय पूरा करने के बाद मुझे यह अफसोस होता है कि मैंने प्रभु के साथ कुछ घण्टे और क्यों नहीं बिताए। परमेश्वर ने दानिय्येल को जिस तरह प्रार्थना करना सिखाया था, जब आप भी उसी तरह प्रार्थना करना सीख जाएंगे, तब आपका भी यही अनुभव होगा। दानिय्येल ने प्रार्थना करना सीख लिया था, और वे उसमें सिर्फ एक यही दोष ढूँढ सके। दानिय्येल ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उसकी प्रार्थना में कोई कुड़कुड़ाहट और शिकायत नहीं थी। इसका रहस्य परमेश्वर को धन्यवाद देने, उसकी स्तुति करने, और उसकी आराधना करने में है।

अगस्त 29

जय के रहस्य

"दुष्ट एक धोखे के काम की कमाई कमाता है" (नीति. 11:18)।

जब अधिपतियों ने दानिय्येल के ख़िलाफ आरोप लगाया, तब राजा को एकाएक यह अहसास हुआ कि उन्होंने उसे मूर्ख बनाकर धोखा दिया था। उसने बिना सोच-विचार किए दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दिए थे। अनेक अधिकारी इसी तरह मुश्किल में फँस जाते हैं। वे हस्ताक्षर करने से पहले दस्तावेज़ों को ध्यान से नहीं पढ़ते हैं। हमें भी यह ध्यान रखना चाहिए कि हम दस्तवेज़ों को सही तरह पढ़े बिना उन पर हस्ताक्षर न करें। दारा हालांकि एक भला राजा था, लेकिन वह एक मूर्ख राजा था। कई बार हम भले और मूर्ख दोनों हो सकते हैं, और इस वजह से ही मानवीय अच्छाई असल में कोई अच्छाई ही नहीं होती। अगर हम परमेश्वर में भरोसा रखेंगे, तो वह हमें सच्ची बुद्धि देगा और इस तरह हमें दुष्टता की युक्तियों से बचा लेगा।

राजा को यह पता चल गया कि वह असहाय हो गया है। वह दानिय्येल को शेरों की माँद से बचाना चाहता था, लेकिन उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। उसने पूरा दिन प्रयास किया लेकिन वह सफल न हो सका क्योंकि उसने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दिया था जिसे "मादियों और फारसियों की व्यवस्था के अनुसार बदला नहीं जा सकता था।" राजा अब उस बात को बदलना चाहता था जिस पर वह हस्ताक्षर कर चुका था, लेकिन अधिपतियों ने कहा, "नहीं, तू मादियों और फारसियों की व्यवस्था को नहीं बदल सकता।" तब राजा ने यह जान लिया कि वह उस क़ानून को नहीं बदल सकता था, और यह कि उन धूर्त और चतुर लोगों ने उसे धोखा दिया था। अब वह अपने मुख के वचन साथ प्रतिबद्ध हो चुका था, और उसे मजबूर होकर स्वयं यह आज्ञा देनी पड़ी कि दानिय्येल को शेरों की माँद में फेंक दिया जाए (6:16)।

अगस्त 30

जय के रहस्य

"लेकिन जो धार्मिकता बोता है, वह सच्चा प्रतिफल पाता है" (नीति. 11:18)।

राजा ने दानिय्येल से कहा, "तेरा परमेश्वर जिसकी तू सदा उपासना करता है, वही तुझे छुड़ाएगा।" हालांकि राजा को स्वयं परमेश्वर का कोई अनुभव नहीं था, लेकिन वह यह एक बात जानता था कि दानिय्येल परमेश्वर का जन था, और वह विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा करता था, और इसलिए परमेश्वर को उसे छुड़ाना चाहिए।

राजा सारी रात जागता और उपवास करता रहा। भोर को पौ फटते ही राजा उठा और शीघ्रता से शेरों की माँद की तरफ देखने के लिए गया। उसने दुःखी आवाज़ के साथ पुकारा, "हे दानिय्येल, हे जीवित परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू हमेशा आराधना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है?" (पद 20)। उसकी आवाज़ में दुःख था क्योंकि उसे परमेश्वर का कोई अनुभव नहीं था। "किसे पता है," उसने सोचा, "हो सकता है शेरों ने दानिय्येल को खा लिया होगा।" जब जीवित परमेश्वर हमारे साथ होता है, सिर्फ तभी हमारे अन्दर सच्चा विश्वास पाया जा सकता है। वर्ना हममें संदेह और भय ही होते हैं।

दानिय्येल ने जवाब दिया, "हे राजा, मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर शेरों के मुँह बंद कर दिए हैं, और उन्होंने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई है" (पद 22,23)। तब राजा बहुत हर्षित हुआ कि उसका मित्र दानिय्येल सुरक्षित था। और फिर उसने उन दुष्ट और धोखेबाज़ अधिकारियों को, जिन्होंने उसे मूर्ख बनाया था, दानिय्येल की जगह शेरों की माँद में फेंकने का आदेश दिया। परमेश्वर अक्सर कुछ देर के लिए हमारे शत्रुओं को फलने-फूलने देता है, और वे भी ऐसा सोचने लगते हैं कि वे फल-फूल रहे हैं। लेकिन उन्हें यह अहसास नहीं होता कि वे दण्डित किए जाएंगे।

अगस्त 31

जय के रहस्य

"जो जय पाए और जो अंत तक मेरे कामों को करता रहे, उसे मैं जाति-जाति पर अधिकार दूँगा।"
प्रकाशित. 2:26

दानिय्येल को उसकी साक्षी की वजह से पीड़ा सहनी पड़ी लेकिन परमेश्वर ने उसकी विश्वासयोग्यता की वजह से उसे बचाया। जब दानिय्येल की तरह हम भी विश्वासयोग्य पाए जाएंगे, तब हम भी परमेश्वर द्वारा बचाए जाएंगे। हम अपने कर्तव्य में विश्वासयोग्य और अपनी साक्षी में सच्चे हों, रात-दिन परमेश्वर का आदर करें, बिना भयभीत और लज्जित हुए तीन बार उसके सामने अपने घुटने टिकाएं, और सब बातों के लिए लगातार उसकी स्तुति करें और उसे धन्यवाद देते रहें, और तब हम यह पाएंगे कि हमारी तरफ से काम करने के लिए वह अपने दूतों को भेजेगा, और हमारे ख़िलाफ तैयार की गई शत्रु की सारी युक्तियाँ और योजनाएं नाकाम हो जाएंगी।

इन सब बातों के द्वारा परमेश्वर दानिय्येल को एक ऊँची सेवकाई के लिए तैयार कर रहा था, और यह दानिय्येल को प्रशिक्षित करने का उसका एक तरीक़ा था। अब परमेश्वर दानिय्येल को वे अद्‌भुत प्रकाशन दे सकता था जो उसे पहले नहीं दिए जा सकते थे। परमेश्वर शायद हमें भी एक तैयारी के दौर में से लेकर चल रहा है, और हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। यह हो सकता है कि हमें बड़े दुःख, परीक्षाओं, पीड़ाओं और निराशाओं में से गुज़ारा जाए। लेकिन इनके द्वारा हमें एक मज़बूत ईश्वरीय विश्वास, ईश्वरीय दर्शन, और परमेश्वर की श्रेष्ठ आत्मा मिलेगी, और फिर हमें स्वर्गीय रहस्यों के वे प्रकाशन दिए जाएंगे जो इस समय हमसे छुपे हुए हैं।

शुरू में तो हमारे सांसारिक मन ऐसी उलझन और असमंजस में पड़े रहते हैं कि हम आत्मिक बातों को एक स्पष्ट रूप में देख नहीं पाते। लेकिन जब हम अपने ईश्वरीय प्रशिक्षण में से गुज़र जाते हैं, तब परमेश्वर सब बातों को हमारे सामने स्पष्ट कर देता है और हमारी तरफ से काम करने लगता है। प्रभु हमारी मदद करे कि हम वास्तव में जय पाने वाले हो जाएं। ऐसा हो कि वह हमारे हृदयों में से कुड़कुड़ाना और शिकायत करना दूर हटा दे और हमें एक सच्चा और सशक्त विश्वास दे।

सितम्बर 1

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"मैंने तुम्हें चुना है।"
यूह. 15:16

हममें से हरेक की प्रतिदिन यह प्रार्थना हो: "प्रभु मैं चाहता हूँ कि ये शब्द मेरे जीवन में एक वास्तविकता बन जाएं, सिर्फ आज के लिए ही नहीं, बल्कि प्रतिदिन के लिए।"

अगर हम वास्तव में परमेश्वर के चुने हुए हैं, तो हमारी मुश्किल या परेशानी जो भी हो, परमेश्वर अवश्य ही उसे दूर करेगा। हम सभी, चाहें हमारा उद्धार हुआ हो या न हुआ हो, विश्वास में नए हों या पुराने हों, आत्मिक रूप में बढ़ रहे हों या न बढ़ रहे हों, आत्मिक तौर पर परिपक्व हों या न हों, पृथ्वी पर हमारे अंतिम दिन तक किसी-न-किसी समस्या से घिरे रहेंगे। बल्कि हमारी मुश्किलें ज़्यादा और परेशानियाँ बड़ी होती जाएंगी। फिर भी, मेरा यह विश्वास है कि इन शब्दों में हममें से हरेक के लिए परमेश्वर का जवाब रखा हुआ है: *"मैंने तुम्हें चुना है।"* यह जानकर हमें कितना चैन और तसल्ली मिल जाती है कि हम अपने प्रभु द्वारा चुने हुए हैं।

हालांकि वह हमें हमारे पड़ोसियों से भी ज़्यादा अच्छी तरह जानता है – हमारी सारी भीतरी भ्रष्टता, सड़ाव, नाकामियाँ और कमियाँ, और यह कि हमने उसे कितना निराश और दु:खी किया है, फिर भी जिन्हें उसने अपने लहू से ख़रीदा है, मोल लिया है, और शुद्ध किया है, उनसे वह ये शब्द कहता है।

सितम्बर 2

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"मैंने तुम्हें संसार में से चुनकर अलग कर लिया है" (यूह. 15:19)।

ये शब्द उन्हीं लोगों से बोले गए हैं जिन्हें एक निश्चित रूप में प्रभु ने चुन लिया है। इफिसियों को लिखी पत्री में, पौलुस ने परमेश्वर के लोगों का बयान करने के लिए 7 नामों का इस्तेमाल किया है। उन्हें कलीसिया, मसीह की देह, नया मनुष्य, परमेश्वर का परिवार या परमेश्वर का घराना, परमेश्वर के हाथ की कारीगरी, एक पवित्र मन्दिर और मसीह की दुल्हन कहा है। वह परमेश्वर के लोगों को "कलीसिया" क्यों कहता है (इफि. 1:22)? यूनानी भाषा में, यह शब्द *एक्लीज़िया* है, जिसका एक विशेष अर्थ है।

जब प्रभु ने यूहन्ना 15:16,19 में ये शब्द कहे: "मैंने तुम्हें संसार में से चुन कर अलग कर लिया है", तो असल में इन शब्दों में यह विचार है: "मैंने तुम्हें संसार में से इकट्ठा किया है।" यहाँ इस्तेमाल हुआ शब्द बहुत सशक्त है। उसका अर्थ सिर्फ यह नहीं है: ऐसे चुनना जैसे कोई अपने लिए एक मित्र चुन लेता है। प्रभु ने यहाँ जो शब्द इस्तेमाल किया है उसका अर्थ है: "मैंने तुम्हें बड़ी सामर्थ्य से खींच निकाला है।" दूसरे शब्दों में, हमारे प्रभु को संसार में से हमें खींच निकालने में बड़ी सामर्थ्य का इस्तेमाल करना पड़ा है। एक्लीज़िया शब्द का यही अर्थ है।

प्रभु यीशु मसीह के पास ही यह सामर्थ्य है कि वह मनुष्यों को पाप के दलदल में से खींच कर निकाल सके, और वह पृथ्वी पर इसी उद्देश्य से आया था। वह इस भावार्थ के साथ ही "कलीसिया" शब्द का इस्तेमाल करते हुए उन लोगों का बयान करता है जिन्हें खींच कर निकाला गया है, जिन्हें चुना गया है। इससे पहले कि हमारे जीवनों में उसके चुनाव के प्रमाण नज़र आएं, उसके खींच निकालने वाली सामर्थ्य का काम होना ज़रूरी है। क्या प्रभु ने आपको चुना है? क्या आपके अन्दर वह भीतरी आश्वासन है जो आपको यह कहने योग्य बनाता है: "प्रभु ने मुझे चुना है।" क्या आप यह कह सकते हैं कि आपके जीवन में इसका प्रमाण है?

सितम्बर 3

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

“आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, लेकिन मेरे शब्द नहीं टलेंगे” (मत्ती 24:35)।

इससे पहले कि आपको यह समझ आ सके कि उसके द्वारा चुना जाना क्या होता है, यह ज़रूरी है कि पहले आपको “संसार” शब्द का अर्थ मालूम हो। आप पृथ्वी पर जो कुछ भी देखते हैं, वह जल्दी ही गुज़र जाएगा। “आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, लेकिन मेरा शब्द नहीं टलेगा” (मत्ती 24:35)। और वह जो टलेगा नहीं, वह बना रहेगा। जो टल जाएगा, उसे बाइबल में “संसार” कहा गया है। सूरज, चाँद और सितारे भी टल जाएंगे, लेकिन ऐसी बातें हैं जो नहीं टलेंगी। हमारे प्रभु ने हमें एक ऐसे राज्य में ले जाने के लिए चुना है “जो एक अटल राज्य है” (इब्रा. 12:28)।

अगर आप प्रभु यीशु मसीह द्वारा चुने गए हैं, तो वह कितना है जो टलेगा नहीं और वह कितना है जो टल जाएगा? हम यह नहीं जानना चाहते कि आपके बैंक में कितने पैसे हैं, या आपकी कितनी सम्पत्ति है, या ऐसे दूसरी बातें। हम यह भी जानना नहीं चाहते कि आपको बाइबल का कितना ज्ञान है। बाइबल का ज्ञान, चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों न हो, जल्दी ही भुला दिया जाएगा। हमारे भले काम भी हमेशा नहीं रहेंगे, और न ही हम हमेशा अच्छे बने रह सकते हैं क्योंकि हमारे जीवनों के आगे बढ़ने के साथ-साथ हमारे स्वभाव भी बदलते हैं, और हम सभी कमज़ोरियों से भरे रहते हैं, और अपना समय ऐसी बातों में गँवाते रहते हैं जो टल जाने वाली हैं।

जब हमें यह अहसास होता है कि प्रभु ने हमें चुना है, तो हमें यह भी समझ आ जाता है कि जिस संसार में हम रहते हैं वह गुज़रता जा रहा है, और इसमें ऐसा कुछ नहीं है जो हमें सच्ची ख़ुशी दे सकता हो। इस संसार की बातें हमें ऐसी दलदल की तरह ही लगेंगी जिस में सिर्फ गहराई में ही डूबते जाते हैं। प्रभु यीशु मसीह कहता है: “मैंने तुम्हें संसार मे से चुन कर निकाल लिया है।” वह हमें पृथ्वी की आकर्षक बातों से छुड़ाने आया, उन बातों में से खींच कर निकालने आया जो हमें नीचे ले जाती हैं, और हमें हमेशा की भरपूरी देने के लिए आया। उसे ऐसा करने से न रोकें, और न ही उन बातों से लिपटे रहें जो गुज़र जाने वाली हैं।

सितम्बर 4

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहूँगा... मैंने तुम्हें मित्र कहा है" (यूहन्ना 15:15)।

प्रभु आगे कहता है, "मैंने तुम्हें संसार में से चुन कर अलग किया है, कि मैं तुम्हें अपना मित्र बनाऊँ।" ये शब्द सिर्फ उन प्रेरितों के लिए ही नहीं थे जिनसे वह बात कर रहा था। ये आपके और मेरे लिए भी हैं। "मैंने तुम्हें चुना है, कि तुम्हें अपना मित्र बनाऊँ," वह कहता है। जिनमें ईश्वरीय जीवन है, सिर्फ वे लोग ही इन शब्दों को समझ सकते हैं, क्योंकि एक पापी जो पाप और अंधकार में रहता हो, वह परमेश्वर का मित्र कैसे हो सकता है? उसने कहा, "वे सब बातें जो मैंने अपने पिता से सुनी हैं, मैंने तुम्हें बता दी हैं," और हम सारे संसार के सामने यह साबित कर सकते हैं कि हम प्रभु यीशु मसीह के मित्र हैं क्योंकि जो बातें स्वर्ग के दूतों से भी छुपी रही हैं, वे हम पर प्रकट की गई हैं।

जब हम परमेश्वर के संग-संग चलने लगते हैं, उसके साथ बात करने का रहस्य सीखने लगते हैं, और प्रतिदिन उससे कुछ नया ग्रहण करने वाले बन जाते हैं, तब प्रभु यीशु मसीह हमें वे बातें सिखाता है। मत्ती 11:25-27 में और 16:17 में, हम एक ऐसे मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं जो तीन साल तक प्रभु यीशु मसीह के साथ रहा था, जिसने उसके द्वारा किए गए बहुत से चमत्कार देखे थे, और उसे प्रचार करते हुए भी सुना था, और इसलिए वह प्रभु यीशु मसीह से ईमानदारी से यह कह सकता था: "मैं तेरे बारे में सब कुछ जानता हूँ क्योंकि मैं तेरे साथ रहा हूँ, तेरे साथ बात की है, साथ में खाया है, तेरे साथ में सोया हूँ।" लेकिन प्रभु यीशु मसीह ने उससे कहा, "शमौन, माँस और लहू की वजह से तूने मुझे नहीं जाना है, बल्कि मेरे स्वर्गीय पिता ने यह तुझ पर प्रकट किया है।"

सितम्बर 5

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"तू मेरा दास इस्राएल है, मैं तुझमें अपनी महिमा प्रकट करूँगा" (यशा. 49:3)।

जब स्वयं परमेश्वर का जीवन आपके अन्दर आ जाएगा, तब आप यह कह सकेंगे: "अब मैं प्रभु को जानता हूँ क्योंकि स्वयं उसका जीवन लगातार और भरपूरी के साथ मुझमें प्रवाहित होता है, और वही जीवन उसकी इच्छा और उसके उद्देश्य के प्रकाशन को लेकर मेरे पास आता है। वह चाहे मुझे सज़ा दे या डाँटे, फिर भी मैं यह जानता हूँ कि उसने मुझे चुना है। और उसने मुझे इस तरह नहीं चुना है जैसे संसार अपने पसन्द किए हुओं को सिर्फ कुछ ही दिनों के लिए चुनता है।"

परमेश्वर ने हमें चुना है। उसने हमें एक उद्देश्य के लिए चुना है, और वह जानता है कि हमें उस उद्देश्य के अनुकूल कैसे बनाना है (यशा. 49:3)। परमेश्वर को याकूब को बहुत बार डाँटना पड़ा, फिर भी, याकूब को उसने ही चुना था, और उसका चुनाव कभी नहीं बदला। याकूब को एक चुना हुआ पात्र बनाने के लिए परमेश्वर को बहुत साल लगे और यह उसे बहुत धीरज के साथ करना पड़ा था। परमेश्वर यह कह सकता था: "याकूब, तू किसी काम का नहीं है। मुझसे बड़ी ग़लती हो गई है, और तुझसे अब मुझे कोई आशा नहीं है। तू इतना कमज़ोर और निकम्मा है।" लेकिन परमेश्वर ने ऐसा कुछ नहीं कहा। वह तब तक याकूब को डाँटता रहा और उसकी ताड़ना करता रहा, जब तक कि वह इस्राएल न बन गया। परमेश्वर ने उसके जन्म से पहले उसे चुना था, और उसका चुनाव कभी नहीं बदलता। आप चाहे जो भी हों, और हालांकि आपके पड़ोसियों के सामने आपकी साक्षी बिलकुल निकम्मी हो सकती है, हाँ, आपके मित्रों के सामने आपके पिता और माता भी यह कहने वाले हो सकते हैं कि अब आपसे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती, और वे यह सोच सकते हैं कि आप पूरी तरह से निकम्मे और नालायक़ हैं, फिर भी परमेश्वर आपको कभी नहीं फेंकेगा। अगर आप एक सच्चे विश्वासी हैं, तो वह फिर भी आपसे यही कहेगा, "मेरे बच्चे, मैंने तुझे चुना है। हांलाकि तू अभी मुझे शोकित और निराश कर रहा है, फिर भी मैंने तुझे चुना है।" प्रभु अब भी आपसे यही कह रहा है, "तू मुझे त्याग सकता है, लेकिन मैं तुझे नहीं त्याग सकता। मैंने तुझे अनन्त के लिए चुना है।" वाह, यह कैसा प्रेम है! कैसी कृपा है! कैसा उद्धार है!

सितम्बर 6

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हे परमेश्वर, उस कृपा के अनुसार जो तू अपनी प्रजा पर करता है, मुझे स्मरण कर। आ, और मेरा उद्धार कर, कि मैं तेरे चुने हुओं की समृद्धि देखूँ, तेरी प्रजा के आनन्द में मग्न हो जाऊँ, और तेरी मीरास के लोगों के साथ महिमा करूँ" (भजन. 106:4,5)।

मेरा मानना है कि परमेश्वर इन शब्दों द्वारा हम सभी से कुछ कहना चाह रहा है। अपने घुटनों पर होकर आप स्वयं इन शब्दों को पढ़ें। आप इन्हें बार-बार पढ़ें, और आपको अपने हृदय में कुछ परिवर्तन होता हुआ महसूस होगा। हमारी आत्मिक लालसाओं को जगाने के लिए, परमेश्वर अनेक दशाओं और परिस्थितियों को इस्तेमाल करता है। हममें ऐसे लोग कम ही होते हैं जिनमें एक स्वाभाविक रूप में परमेश्वर के लिए सच्ची लालसा और भूख होती है।

हममें से ज़्यादातर उसके बारे में सिर्फ तभी सोचते हैं जब हम कुछ चाहते हैं, या जब जब किसी, तकलीफ़, परेशानी, बीमारी या ज़रूरत में होते हैं। हममें से बहुत कम परमेश्वर के पास परमेश्वर की ख़ातिर जाते हैं। हम उसके पास सिर्फ किसी पार्थिव या नश्वर वस्तु के लिए ही जाते हैं, और यह अफसोस की बात है, कि हममें से ज़्यादातर के हृदयों में उन बातों की लालसाएं होती हैं जो मिट जाने वाली हैं, और असल में जिनका कोई मूल्य नहीं है।

शुरू में, शायद हम यह नहीं जान पाते कि हम क्या कर रहे हैं, क्योंकि तब हम अपनी ख़ुद की बच्चे-जैसी सोच के वश में होते हैं। फिर हम यह पाते हैं कि जो परमेश्वर की बातों की परख करना नहीं जानते, बल्कि वे बाहरी बातों से प्रभावित होते हैं, और अफसोस की बात यह है कि वे यह नहीं जानते। वे अपना समय, धन और ऊर्जा सांसारिक बातों पर बर्बाद कर रहे हैं।

आप अपने बारे में क्या कहेंगे? क्या परमेश्वर की बातों में आपको वास्तव में कोई दिलचस्पी है? क्या आप सच्चाई के साथ यह कह सकते हैं कि आपके अन्दर परमेश्वर की बातों के लिए जो भूख और प्यास है वह नाश होने वाली बातों से कहीं बढ़कर है? अफसोस! हरेक हृदय में ऐसी एक अभिलाषा, या एक लालसा, या एक निर्बलता ज़रूर होती है जो उस हृदय को परमेश्वर से दूर ले जाती है।

सितम्बर 7

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हे परमेश्वर, तू जो सब जानता है, मुझे स्मरण कर और मुझ पर ध्यान दे" (यिर्मयाह 15:15)।

हमें लगातार यह प्रार्थना करने की ज़रूरत है कि हमारा प्रेमी पिता हमें वह आत्मिक अभिलाषा दे जिन्हें भजनकार ने इन शब्दों में फूँका है: "हे प्रभु, मुझे स्मरण कर।" परमेश्वर को जानने की अभिलाषा व्यक्त करने के लिए हमें कोई बहुत लम्बी प्रार्थना करने की ज़रूरत नहीं होती। इसमें सिर्फ एक सहज विश्वास की ज़रूरत है।

एक बार एक स्कूल में एक बच्चा अंग्रेज़ी पढ़ रहा था। वह ए, बी, सी..., के रूप में अक्षर-ज्ञान सीख रहा था। फिर उसने एक दिन प्रार्थना करना शुरू किया। उसने कहा, "प्रभु, ए, बी, सी, डी।" एक पल ख़ामोश रहने के बाद, उसने फिर प्रार्थना की, "ई, एफ, जी, एच, आई, जे, के, ऐल, ऐम, ऐन, ओ, पी, क्यू..." "बेटा, तुम क्या कर रहे हो?" उसकी माँ ने उसे रोक कर पूछा। "मैं प्रार्थना कर रहा हूँ," बच्चे ने जवाब दिया। "तुम क्या प्रार्थना कर रहे हो?" "माँ, मुझे अक्षर के शब्द बनाने नहीं आते, लेकिन परमेश्वर को आते हैं। तुम कहती हो बी ए टी *बैट*, सी ए टी *कैट*, और एफ ए टी *फैट* होता है। लेकिन मुझे तो ऐसे आसान शब्दों का भी अक्षरज्ञान (वर्तनी) नहीं है। इसलिए मैं सारे अक्षर परमेश्वर को दे रहा हूँ कि वह इनसे मेरे लिए शब्द बना दे।" उस बच्चे का मनोभाव बिलकुल सही था। वह विश्वास से प्रार्थना कर रहा था। इस बात से कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि आप प्रार्थना में सही शब्द इस्तेमाल करते हैं या नहीं। सवाल यह है कि आप विश्वास से प्रार्थना कर रहे हैं या नहीं? क्या आप सच्चाई से यह कह सकते हैं: "हाँ, प्रभु, मेरा विश्वास है कि तू मुझे स्मरण रखता है। मुझे स्मरण रख, हे प्रभु, मुझे स्मरण रख!" ये बहुत सहज शब्द हैं, लेकिन ये आपके हृदय की गहराई में से आने चाहिए। आप अपनी तरफ या अपने हालातों की तरफ न देखें, और न ही अपने पापों और नाकामियों को देखें। इन सबके ऊपर से अपनी नज़र हटाकर उसे देखें, अपने प्रेमी और जीवित मुक्तिदाता की तरफ देखें जो आपको सबसे ज़्यादा प्रेम करता है - आपके पिता, माता, पत्नी, भाई, बहन, बच्चे या मित्र से भी ज़्यादा।

सितम्बर 8

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हे परमेश्वर, अपनी भलाई के कारण, अपनी करुणा के कारण तू मुझे स्मरण कर" (भजन. 25:7)।

भजन 27:10 में भजनकार कहता है: "जब मेरे माता-पिता मुझे त्याग देंगे, तब प्रभु मुझे संभाल लेगा।" इस बात की पूरी सम्भावना है कि आपके जीवन में एक ऐसा दिन आ सकता है जब आपके पिता, माता, भाई, बहन, या दूसरे प्रियजन आपके ख़िलाफ हो जाएंगे। अनेक माता और पिता अपने भटके हुए बच्चों के ख़िलाफ हो जाते हैं, लेकिन परमेश्वर कहता है कि आपके माता और पिता आपको त्याग देंगे, लेकिन वह आपको कभी नहीं त्यागेगा। अपनी तरफ न देखें। इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि आप कौन हैं, या आपके पाप कितने लज्जाजनक और बड़े हैं, या यह कि आपका नया जन्म होने के बाद आपने प्रभु को कितनी बार निराश किया है, लेकिन क्या आप परमेश्वर के सामने ये शब्द बोलने के लिए तैयार हैं: "प्रभु, मुझे, हाँ मुझे याद कर। मैं किसके पास जाऊँ? मेरी सारी आशा सिर्फ तुझ में है। हे प्रभु, मुझे स्मरण कर।" आप यह पाएंगे कि यह सहज प्रार्थना आपको प्रभु के पास और प्रभु को आपके पास ले आएगी।

भजन 106:4 के उसी पद को दोबारा से देखें। भजनकार शुरू में कहता है, "हे परमेश्वर, मुझे स्मरण कर।" फिर वह आगे कहता है, "मुझे उस कृपा के अनुसार स्मरण कर जो तू अपनी प्रजा पर करता है।" यूहन्ना 8:40, 41 व 44 में, लोग ये कह रहे थे, "हम परमेश्वर के हैं; अब्राहम हमारा पिता है।" लेकिन प्रभु यीशु ने उन्हें स्मरण दिलाया, "नहीं, तुम परमेश्वर के लोग नहीं हो; तुम्हारा पिता तो शैतान है।" ये बहुत कठोर शब्द हैं, और इन शब्दों से लोगों को ठोकर लग सकती है, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि ये किसी मनुष्य के शब्द नहीं हैं। ये प्रभु यीशु मसीह द्वारा बोले गए शब्द थे।

आप कौन से समूह में हैं? मैं आपकी नागरिकता, या व्यवसाय, या धन-सम्पत्ति के बारे में जानना नहीं चाहता, और न ही मुझे आपके बाइबल के ज्ञान, या नाम और ख्याति के बारे में जानना है। क्या आप परमेश्वर के लोग हैं या आप दूसरे समूह में हैं? परमेश्वर के ईश्वरीय जीवन को ग्रहण करने द्वारा ही आप परमेश्वर के परिवार के साथ एक हो सकते हैं।

सितम्बर 9

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

“उसके जीव के छुटकारे की क़ीमत तो भारी है” (भजन. 49:8)।

क्या आप परमेश्वर के लोगों में से एक हैं? अपने प्रति ईमानदार हों। आपकी पहली प्रार्थना यह हो: “हे परमेश्वर, मुझे उस कृपा के अनुसार स्मरण कर जो तू अपनी प्रजा पर करता है।” परमेश्वर के लोग होना कितना बड़ा विशेषाधिकार, कितना बड़ा सम्मान है। प्रभु यीशु मसीह इस संसार में इसलिए आया कि शैतान की संतानें परमेश्वर की संतानें बन जाएं। मैं परमेश्वर का बहुत धन्यवाद करता हूँ कि अब वह मुझे यह कहकर पुकार सकता है: “मेरे पुत्र!”; लेकिन आप सिर्फ परमेश्वर का जीवन, अनन्त आत्मिक जीवन, नया ईश्वरीय जीवन ग्रहण करने द्वारा ही परमेश्वर की संतान बन सकते हैं। तब, आपके माँगे बिना ही, आपको उसकी ईश्वरीय कृपा भी मिल जाएगी। भजनकार आगे कहता है, *“उद्धार करके मेरी सुधि ले।”* वास्तव में उसका विचार यह है: “हे प्रभु, मुझे अपने पूरे उद्धार का दर्शन दे।”

ऐसे बहुत से तथा-कथित मसीही हैं जो यह सोचते हैं कि बाइबल के कुछ पद सीख लेने से वे उद्धार पा लेंगे। लेकिन ये उद्धार महान् और अनन्त है। इसे सिर्फ कुछ दिनों में, या सालों में भी नहीं समझा जा सकता। मसीह को पूरी तरह जानने में पूरा अनन्त लग जाएगा। भजनकार कहता है: “मेरा उद्धार करके मेरी सुधि ले।” वह यह नहीं कह रहा है, “प्रभु, मुझे बाइबल के बारे में और सिखा।” वह एक भूख के साथ यह कह रहा है, “मुझे अपने उद्धार के बारे में पूरी तरह सिखा।” परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले हरेक काम में उसका पूरा उद्देश्य और विचार क्या है, उसे समझने की इच्छा आपके अन्दर होनी चाहिए। वह आपको क्यों खोज रहा है? वह आपको ढूँढने और बुलाने में इतना समय क्यों लगाए, और इतना कष्ट क्यों उठाए?

आपके माता और पिता से भी ज़्यादा परमेश्वर आपका मूल्य जानता है। परमेश्वर की नज़र में एक मानवीय जीव की क़ीमत संसार की सारी धन-सम्पत्ति से बढ़कर है।

सितम्बर 10

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"परमेश्वर ने संसार के निकृष्ट और तुच्छों को चुन लिया है... कि कोई शरीरधारी परमेश्वर के सामने गर्व न करे" (1 कुरि. 1:28,29)।

परमेश्वर आपके पीछे इसलिए लगा हुआ है, क्योंकि वह जानता है कि वह आपको क्या बना सकता है। वह अनन्त के लिए आपको उसका सहभागी और सहकर्मी बनाना चाहता है। परमेश्वर के उद्धार के लिए भजनकार की अभिलाषा एक प्रार्थना है: "हे परमेश्वर, मुझे अपना चुना हुआ पात्र बना", और पद 5 में वह इसकी वजह बताता है: *"कि तेरे चुने हुओं की समृद्धि देखूँ।"*

एक बार मैं एक घर में गया और वहाँ मैंने उनकी बैठक के कक्ष में बहुत सुन्दर चित्रकारी की हुई कुछ वस्तुएं देखीं। मैंने उस घर के मालिक से पूछा, "ये सब क्या है?" उसने कहा कि वे अण्डों के मामूली खोल थे जिन पर चित्रकारी की गई थी। उसने उनमें छोटा सा छेद करके उन्हें ख़ाली किया था, और इस तरह वह बहुत सालों से उन्हें जमा कर रहा था। वह अच्छा चित्रकार था, इसलिए उसने उन पर बहुत सुन्दर चित्रकारी कर रखी थी। एक अण्डे का खोल आपके किसी काम नहीं आएगा, लेकिन एक चित्रकार उसको बहुत सुन्दर बना सकता है। हालांकि यह हो सकता है कि पाप ने आपको बर्बाद और कलंकित कर दिया हो, और दूसरे मनुष्य आपके मुख पर पाप के चिन्ह् देख सकते हों, लेकिन आपको चुनने और बुलाने में परमेश्वर का भी एक उद्देश्य है।

परमेश्वर के वचन में हमारी तुलना मैले चिथड़ों, सूखी हुई घास, मुर्झाए हुए फूल, और कुम्हलाए हुए पत्तों से की गई है। हम परमेश्वर की नज़र में ये हैं, लेकिन उसने फिर भी हमें चुना हुआ है। वह आपको और मुझे, उसके आदर और महिमा का चुना हुआ स्वर्गीय पात्र बनाना चाहता है। मनुष्य यह नहीं कर सकता। क्या आप परमेश्वर का एक चुना हुआ पात्र बनने के लिए तैयार हैं? आप चाहे बिलकुल निकम्मे हैं, फिर भी परमेश्वर ऐसा करने के लिए तैयार है। परमेश्वर आपको अनन्त के लिए उसके लिए एक उपयोगी वस्तु बना सकता है, लेकिन ऐसा होने के लिए आपको उसके पास आना होगा, और अपने आपको पूरी तरह से सिर्फ उसको अर्पित कर देना होगा।

सितम्बर 11

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हे उसके दास अब्राहम के वंश, हे उसके चुने हुए याकूब की संतान"(भजन. 105:6)।

यहाँ याकूब को एक चुना हुआ पात्र कहा गया है, और परमेश्वर ने उसके बारे में सब जानते हुए भी उसे चुना था। लेकिन हमारा चुनना कैसा होता है? जब हम अपने लिए कुछ ख़रीदते हैं, तो बहुत ध्यान से चुनते हैं। हम कहते हैं: यह अच्छा है; यह अच्छा नहीं है; यह बहुत बड़ा है, और यह बहुत छोटा है; यह बहुत पुराना है, और यह बहुत बिगड़ा हुआ है। हमारा चुनना इस तरह से होता है। लेकिन परमेश्वर कहता है कि इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि आप बदसूरत हैं, मैले-कुचैले हैं, या पाप से बर्बाद हो गए हैं। मनुष्य यह कह सकता है कि आप किसी काम के नहीं हैं, लेकिन जब आप परमेश्वर के पास जाएंगे, तो वह आपसे यह कहेगा, "क्या तू मेरा पात्र बनने के लिए तैयार है? क्या तू अपने आपको मुझे अर्पित कर देने के लिए तैयार है?" - वह बस इतना ही चाहता है। अगर आप अपने आपको उसके हाथों में सौंप दें, तो वह जानता है कि आपको कैसे धोना है, कैसे साफ करना है, और कैसे बदलना है।

मसीह यह जानता है कि किसी भी घिनौने पापी को बदल कर एक महिमामय वस्तु कैसे बनाया जा सकता है। इसमें आपका भाग सिर्फ इतना है कि आप उसके चुने हुए पात्र बनने के लिए तैयार और इच्छुक होने चाहिए। परमेश्वर ने याकूब को अपने हाथ में लिया, और हालांकि उसे इस काम में 20 साल लगे, लेकिन उसने याकूब को परमेश्वर का एक अधिपति बना दिया। अगर आप अपने कपड़े धोने के लिए किसी धोबी को दे आएं, और उन्हें लेने के लिए 20 साल के बाद जाएं, तो आपके मन में कैसे विचार आएंगे? लेकिन यह अफसोस की बात है कि हम मैले कपड़ों से भी ज़्यादा गंदे होते हैं, और हमारे प्रभु को हमें तब तक धोते रहना होता है जब तक हम उसके जैसे नहीं बन जाते। परमेश्वर को तब तक संतोष नहीं होगा जब तक हम "उसके पुत्र की समानता में नहीं बदल जाते।" क्या आप उसका चुना हुआ पात्र होना चाहते हैं? क्या आप तब तक धुलने और शुद्ध किए जाने के लिए तैयार हैं जब तक कि वह संतुष्ट नहीं हो जाता?

सितम्बर 12

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को चुना जो पवित्र-आत्मा से परिपूर्ण था" (प्रेरितों 6:5)।

मैं चाहता हूँ कि आप प्रेरितों के काम 6:5 के इन शब्दों पर ध्यान दें, *"और उन्होंने स्तिफनुस को चुना।"* पवित्र-आत्मा के मार्गदर्शन में, पूरी मण्डली द्वारा स्तिफनुस नाम के एक पुरुष को चुना गया। उन्होंने उसे मतदान द्वारा नहीं चुना था, बल्कि एक-मन होकर या एक-साथ चुना था। यूनानी भाषा में "चुना" शब्द के अर्थ में यह शामिल है कि वह चुनाव "कोई विरोध बिना, संयुक्त रूप में" किया गया है। इस चुनाव में कोई अलगाव, कोई निराशा, और कोई झगड़ा नहीं हुआ था। सभी लोग यह जानते थे कि वह चुना हुआ था। "स्तिफनुस" शब्द का अर्थ "मुकुट" है, और वह पुरुष हालांकि थोड़ा ही समय रहा, फिर भी उसका जीवन कैसा जयवंत जीवन था। परमेश्वर के इस एक जन ने उसके थोड़े से समयकाल में जो हासिल किया, वह उससे ज़्यादा है जो हम अनेक सालों तक प्रभु में होने के बाद भी नहीं कर पाते, और वह वास्तव में मुकुट पाने योग्य था - जीवन का मुकुट।

हमें स्तिफनुस के बारे में बहुत नहीं बताया गया है। हम उसके माता-पिता या परिवार या पढ़ाई-लिखाई के बारे में कुछ नहीं जानते। वह एकाएक मंच पर चमकते हुए तारे की तरह आता है और सबसे पहला शहीद बन जाता है, जिसने उसकी मृत्यु के क्षण में प्रभु यीशु मसीह के नाम को पुकारा था। स्तिफनुस के जीवन और सेवकाई द्वारा हमारे सामने ईश्वरीय चुनाव का अर्थ प्रकट किया गया है। क्या हम भी उसकी तरह चुने जाना चाहते हैं, स्वर्गीय बुलाहट के साथ परमेश्वर के बुलाए हुए होना चाहते हैं? क्या आपके जीव में ऐसी लालसा है जैसी भजनकार के अन्दर उस समय थी जब उसने भजन 106:1 को इन शब्दों के साथ शुरू किया था: "प्रभु की स्तुति करो।" स्तुति एक स्वर्गीय बात है। हम अनन्त की आशिषों के लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं, सिर्फ पृथ्वी की बातों के लिए नहीं बल्कि स्वर्ग की अनन्त और महिमामय बातों के लिए स्तुति करते हैं। अगर हम एक जयवंत जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें सबसे पहले यह समझना होगा कि परमेश्वर के लोगों में से एक होने का क्या अर्थ होता है। *"हे परमेश्वर, अपनी उस कृपा के कारण जो तू अपनी प्रजा पर करता है, मुझे स्मरण कर, और मेरा उद्धार करके मेरी सुधि ले।"*

सितम्बर 13

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"इसलिए अब अगर तुम निश्चय मेरी बात मानोगे और मेरे वचन का पालन करोगे, तो सब जातियों में से तुम ही मेरी निज सम्पत्ति बनोगे" (निर्ग. 19:5)।

क्या आत्मिक तौर पर आप इस बात से क़ायल हुए हैं कि आप स्वर्गीय लोगों में से एक हैं, परमेश्वर के चुने हुए हैं, ऐसे लोग जो परमेश्वर के सामर्थी हाथ द्वारा खींच कर निकाले गए हैं, और जो अब उसकी निज सम्पत्ति बन गए हैं। इस शब्द पर ध्यान दें – "उसकी निज सम्पत्ति।" मनुष्य के चुनने का मानक स्तर पद या स्तर या धन-सम्पत्ति या ख्याति होता है। लेकिन परमेश्वर का मानक स्तर इनसे अलग है। हालांकि हम मैले चिथड़े हैं, पाप से बर्बाद हुए और बिलकुल निकम्मे और नालायक़, फिर भी प्रभु यह कहता है, "हे मेरे पुत्र, हे मेरी पुत्री, मैं तुझे अपनी *'निज सम्पत्ति'* बनाना चाहता हूँ।" अगर हम सिर्फ अपने आपको उसके हाथों में सौंप दें, तो वह जानता है कि वह आपको और मुझे अनन्त के लिए क्या बना सकता है।

इसलिए, जब परमेश्वर की आपको चुनने की इच्छा हो, तो आपकी तरफ बढ़ रहे उसके हाथ का विरोध न करें। भजन 106:4,5 में भजनकार यह प्रार्थना करता है, "मैं तेरे चुने हुओं की समृद्धि देखूँ, तेरी प्रजा के आनन्द में मग्न हो जाऊँ, और तेरी मीरास के लोगों के साथ महिमा करूँ।" ये सब बातें स्तिफनुस के जीवन में एक नमूने के रूप में नज़र आती हैं, जिसने परमेश्वर का चुना हुआ पात्र होकर बहुत लोगों को स्वर्गीय आनन्द से भरा, और एक विश्वासी के रूप में, महान् स्वर्गीय विरासत में सभी संतों के साथ महिमान्वित हुआ।

परमेश्वर की नज़र में एक जीवात्मा का मूल्य सारे जगत की सारी धन सम्पत्ति से बढ़कर है। इस प्रकार परमेश्वर स्तिफनुस के जीवन में से, एक ऐसे अज्ञात व्यक्ति के जीवन में से उन स्वर्गीय सत्यों के आत्मिक अर्थ सिखाता है जिसके परिवार के बारे में, मूल गाँव या प्रांत के बारे में, या उसकी योग्यता के बारे में हम कुछ नहीं जानते, लेकिन जो एक ऐसा मनुष्य था जो परमेश्वर की नज़र में बहुत क़ीमती था।

सितम्बर 14

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

“स्तिफनुस कृपा और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों के बीच में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह् दिखाया करता था ... वह ऐसी बुद्धि और सामर्थ्य से बोला कि वे उसका विरोध करने में असमर्थ रहे” (प्रेरितों. 6:8,10)।

फिर भी, प्रेरितों के काम का यह भाग यह दर्शाता है कि कैसे आप और मैं स्वर्गीय ख्याति और एक अनन्त नाम पाने के लिए चुने जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी गाँव में कुछ विश्वासी रह रहे हों और आप वहाँ जाकर उनसे कहें: “क्या आप सुब्बाराव को जानते हैं?” और वे जवाब दें, “नहीं!” हालांकि वह एक छोटा सा गाँव है और थोड़े ही लोग उसका नाम जानते है, लेकिन जब यही व्यक्ति परमेश्वर द्वारा चुन लिया जाता है तब सब बातें कैसे बदल जाती हैं। तब आप स्वर्ग में जाकर किसी भी स्वर्गदूत से पूछ सकते हैं, “क्या तुम सुब्बाराव को जानते हो?”, तो वह यही कहेगा, “हाँ, मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।” “तुम उसे कैसे जानते हो?” “हमारे स्वर्गीय राजा ने उसे चुना है, और स्वयं राजा ने ही हमें बताया है कि वह उसका चुना हुआ है।” यह हो सकता है कि पृथ्वी पर एक मनुष्य कुछ न हो, लेकिन जब वह परमेश्वर द्वारा चुन लिया जाता है, तब आनन्द और हर्ष के साथ स्वर्गीय सेनाओं द्वारा उसके नाम का अंगीकार किया जाएगा। लेकिन अफसोस की बात यह है कि ऐसे विश्वासी कम ही हैं जो उसके चुने हुए पात्र होना चाहते हैं।

आप एक अच्छे मसीही हो सकते हैं। आपका स्तर ऊँचा हो सकता है। लेकिन परमेश्वर इससे बढ़कर चाहता है। वह आपसे प्रेम करता है, और उसने आपको उसके लहू से इसलिए ख़रीदा है कि वह आपको उसका चुना हुआ पात्र, उसकी निज प्रजा, उसकी दाख की बारी, उसका सहकर्मी, और उसके अनन्त सहयोगी बना सके। इसमें सबसे मूल बात स्तिफनुस की तरह होना है - किसी पद या सम्मान के लिए काम न करने वाला। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि अगर आप उन्हें कोई पद या सम्मान दे देंगे तो वे दिन-रात काम करने के लिए तैयार रहेंगे, लेकिन अगर उन्हें कोई पद नहीं दिया जाएगा तो वे पीछे हट जाएंगे और कोई काम नहीं करेंगे। वे सिर्फ अपने नाम की ख्याति के लिए काम करते हैं। लेकिन हमें बताया गया है कि स्तिफनुस ने किसी पद या प्रतिष्ठा पाने के लिए कुछ नहीं किया था। उसने ख़ामोशी और प्रेम से अपना काम किया था।

सितम्बर 15

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"उन दिनों में, जब चेलों की संख्या बढ़ रही थी... तब उनमें एक विवाद उठ खड़ा हुआ... इसलिए हे भाइयो, अपने बीच में से सात सच्चरित्र पुरुषों को चुन लो जो पवित्र-आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों कि हम इस काम का संचालन उनके हाथों में सौंप दें। लेकिन स्वयं हम तो प्रार्थना और वचन की सेवा में ही लगे रहेंगे।" प्रेरितों. 6:1,3-4)

जब विश्वासियों की संख्या एक गुणात्मक रूप में बढ़ रही थी और प्रभु सामर्थ्य के साथ काम कर रहा था, तब शैतान ने यूनानी लोगों में इब्रानी लोगों के ख़िलाफ कुड़कुड़ाहट और शिकायतें भर दीं क्योंकि उनके कहने के अनुसार प्रतिदिन के भोजन वितरण में उनकी विधवाओं को अनदेखा किया जा रहा था। इस तरह शैतान ने बड़ी चालाकी से परमेश्वर के लोगों में संघर्ष और लड़ाई-झगड़ा पैदा कर दिया। बीती सदियों में परमेश्वर के काम में रुकावट पैदा करने और परमेश्वर के सेवकों को सच्ची सेवा करने से रोकने के लिए शैतान दो हथियारों का इस्तेमाल करता रहा है। पहला, जब परमेश्वर एक काम शुरू करता है, और उसकी सामर्थ्य जीवनों में प्रकट होने लगती है, तो परमेश्वर के लोगों में कुड़कुड़ाहट, शिकायतें और लड़ाई-झगड़े शुरू हो जाते हैं, और इस तरह उस काम में गड़बड़ और रुकावट पैदा हो जाते हैं। ऐसी कुड़कुड़ाहट से भरे थोड़े से विश्वासी भी पवित्र-आत्मा की आग को बुझा सकते हैं, और तब परमेश्वर के काम का नुक़सान होता है।

दूसरी बात, शैतान ऐसी रुकावट पैदा करने की कोशिश करता है कि परमेश्वर के सेवक वचन की सेवा न कर सकें, और इसकी बजाए उन्हें खिलाने-पिलाने की सेवा करने के लिए मजबूर कर देता है। शैतान ने यह चाहा था कि प्रेरित उनके इस महत्वपूर्ण काम को छोड़कर यह करने लगें। पहले होने वाली बातों को पहले ही होना चाहिए। और हम प्रभु की कृपा से ही ऐसा कर सकते हैं। जैसे उसने प्रेरितों के काम 6:5 में अपने सेवकों को बुद्धि दी, वैसी ही बुद्धि वह हमें भी देगा: "यह बात पूरी मण्डली को सही जान पड़ी," और उन्होंने स्तिफनुस जैसे लोगों को चुना जिन्होंने घर-घर जाकर लोगों की मदद की थी, और विधवाओं और ग़रीबों की देखभाल की थी। इन लोगों को कोई नहीं जानता था। उनका जन्म और इतिहास एक रहस्य था; उन्हें जहाँ भी कोई ज़रूरत नज़र आती थी, वे वहाँ जाकर एक सहज रूप में सेवा करते रहते थे। और जब समय हुआ, तब पूरी मण्डली ने एक मन होकर उन्हें चुना क्योंकि वे उनके जीवनों को देख रहे थे, और उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया था कि वे कैसे बिना कोई दिखावा किए सेवा करते थे, और इसके साथ ही हर तरह की सेवकाई के लिए वे पवित्र-आत्मा और ईश्वरीय बुद्धि से भी भरे हुए थे।

सितम्बर 16

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"तुम जो कुछ भी करते हो, उस काम को मनुष्यों का नहीं वरन् प्रभु का समझकर तन-मन से करो... तुम प्रभु मसीह की ही सेवा करते हो" (कुलु. 3:23,24)।

हमारी सेवा में, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, हमें भी पवित्र-आत्मा की ज़रूरत होती है। परमेश्वर के घर में वह सेवा सिर्फ विधवाओं या ग़रीबों की सेवा करना, भवन की देखभाल करना, खाना खिलाना, चटाई बिछाना, या ऐसा ही कोई दूसरा काम हो सकता है। वह चाहे जो भी हो, लेकिन हमें मनुष्यों की प्रशंसा की अभिलाषा न करते हुए, पवित्र-आत्मा के अभिषेक और बुद्धि से भरते जाना चाहिए। यह जानने के लिए कि परमेश्वर के घर में और परमेश्वर की सेवा में हमें क्या करना चाहिए, यह ज़रूरी है कि हममें पवित्र-आत्मा की बुद्धि और ईश्वरीय अभिषेक हो, और हम जो कुछ भी करें, उस काम को मनुष्यों का नहीं वरन् प्रभु का समझ कर करें।

क्या आप भी एक अलौकिक रूप में चुने हुए पात्र होना चाहते हैं? तो साधारण कामों को आनन्द और हर्ष के साथ करने के लिए तैयार रहें - मनुष्यों के लिए नहीं, लेकिन परमेश्वर के लिए करें, और तब परमेश्वर स्वयं आपको उसकी पवित्र-आत्मा और बुद्धि से भरेगा। स्तिफनुस इस तरह ही परमेश्वर के एक पात्र के रूप में चुना गया था। प्रेरितों के काम 6:8 में लिखा है, "स्तिफनुस कृपा और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों के बीच में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह् दिखाया करता था।" उसे सिर्फ विधवाओं की देखभाल और लेखा-जोखा रखने के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन जल्दी ही यह प्रकट हो गया कि वह एक विश्वासी पुरुष था।

अगर आप परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए तैयार होंगे, तो वह अपको चुनकर एक विश्वासी पुरुष बना देगा। आपको परमेश्वर द्वारा किए जा रहे काम की अद्‌भुत बातें दिखाई जाएंगी। वह जीवित परमेश्वर है। प्रेरितों के काम 6:10 में, हम यह पढ़ते हैं: "जिस बुद्धि और आत्मा से वह बोलता था, वे उसका विरोध न कर सके।" स्तिफनुस अपना काम करता रहा, और इसके साथ वह उससे मिलने वाले लोगों को वचन भी बाँटता रहता था। वह एक नम्र व दीन व सामान्य मनुष्य था, लेकिन ऐसा मनुष्य जो परमेश्वर की आत्मा और ऐसी ईश्वरीय बुद्धि से परिपूर्ण था जो ज्ञानियों के मुँह बंद कर सकती थी। जब आप परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, सिर्फ तभी वह आपको ऐसी ईश्वरीय बुद्धि देता है जिससे आप हरेक हालात का सामना कर सकते हैं, और जो आपको एक चुना हुआ पात्र बनाएगी।

सितम्बर 17

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हे परमेश्वर, मैं तो बोलने में कुशल नहीं हूँ... मैं जीभ का भद्दा हूँ। और प्रभु ने उससे कहा, 'मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? मुझ परमेश्वर के अलावा वह कौन बनाता है? अब जा, मैं तेरे मुख के संग रहूँगा, और तुझे सिखाता रहूँगा कि तू क्या कहे।"
(निर्ग. 4:10-12)।

मैं आपको स्वयं अपना अनुभव बताना चाहूँगा, क्योंकि मैं इसे एक बड़ी और अद्‌भुत बात मानता हूँ कि मेरे प्रभु ने मुझे चुना है। मैं यह भी चाहता हूँ कि दूसरे लोग भी यह समझ सकें कि वह कितने सहज तरीकों से हमें बुलाता है और हमसे बात करता है कि कहीं ऐसा न हो कि जब वह उन्हें बुलाए, तो वे उसकी आवाज़ को सुनने से चूक जाएं।

वर्ष 1930 में विनिपैग, कनाडा में मेरे मन-फिराव के बाद, मैं रविवार की सुबह एक सभा में गया। सभा समाप्त होने के बाद, जब मैं बाहर खड़ा हुआ था, तब एक पुरुष मेरे पास आया और मुझसे हाथ मिलाया। मैं उसके हाथों की शक्तिशाली गिरफ्त के बारे में सोच ही रहा था कि वह मुझसे बोला, "भाई, आप भारत में जाकर प्रचार क्यों नहीं करते?" मैंने उसे जवाब देते हुए कहा, "भाई, मैं एक इंजीनियर हूँ, और मैंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई में कई साल लगाए हैं। इसके अलावा, मैं हकलाता और तुतलाता हूँ, और मैं इतना घबराता हूँ कि थोड़े से लोगों के सामने भी खड़ा होकर बोल नहीं सकता। उन्हें देखकर मेरे घुटने आपस में टकराने लगते हैं। एक हकलाने और तुतलाने वाला व्यक्ति प्रचारक कैसे बन सकता है?" उसने आगे कुछ नहीं कहा, लेकिन दो साल तक उसके वे शब्द बार-बार मेरे पास लौटकर आते रहे। मुझे उसके हाथ की वही मज़बूत पकड़ और मेरे हृदय में उसके शब्दों का वही स्वर सुनाई देता रहा: "आप क्यों नहीं करते? आप क्यों नहीं करते?"

मैंने प्रभु से कहा, "प्रभु, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपनी सारी कमाई तुझे दे दूँगा। इतने रुपयों से तो बहुत से प्रचारक प्रचार के काम में लगाए जा सकेंगे, लेकिन तू मुझे प्रचारक मत बना!" लेकिन परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मैं तेरा धन नहीं, तुझे चाहता हूँ!" पूरे दो साल तक ये शब्द मेरे पास आते रहे। यह वास्तव में एक रहस्य है कि परमेश्वर हमें क्यों चुनता है। यह इसलिए है कि उसका हम पर अधिकार है। वह मेरा सृष्टिकर्ता और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर है, और वह जानता है कि जब हम अपने आपको उसे अर्पित कर देते हैं, और उसका आज्ञापालन और अनुसरण करते हैं, तो हम और ज़्यादा पूरे और भरपूर रूप में उस सामर्थ्य को जान पाते हैं जिसमें वह हममें और हमारे द्वारा काम करता है।

सितम्बर 18

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"जब सभा में बैठे हुए लोगों ने उस पर दृष्टि गड़ाई, तो उसका मुख स्वर्गदूत के समान देखा" (प्रेरितों. 6:15)।

स्तिफनुस एक सामान्य व्यक्ति था जिसके कुटुम्ब या माता-पिता या उसकी परिस्थितियों के बारे में हम कुछ नहीं जानते; लेकिन वह अचानक दृश्यपटल पर प्रकट होता है, और हम यह देखते हैं कि इस चुने हुए पात्र के बिलकुल सामान्य काम थे, और उसकी ग़रीब लोगों और विधवाओं के बीच में एक साधारण सेवा थी जिसमें उसके लिए कोई प्रतिफल नहीं था। लेकिन फिर सब मनुष्यों को यह नज़र आने लगा कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं था। उसके अन्दर परमेश्वर को प्रसन्न करने की लालसा थी, और उसका जीवन एक जयवंत जीवन था। उसने क्योंकि परमेश्वर की आज्ञापालन करने का चुनाव किया था, इसलिए वह पवित्र-आत्मा और बुद्धि से, और विश्वास और सामर्थ्य से भरा हुआ था।

प्रभु द्वारा चुने हुओं का यह विशेषाधिकार होता है। जब आपके हृदय में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की और परमेश्वर की बाट जोहने की लालसा होगी, तब आप यह देखेंगे कि वह उसके अपने ही तरीक़ों से आपके हृदय की अभिलाषाओं को पूरा करेगा। आपको अपनी आशाओं के पूरा होने के लिए पुकारना और संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। आप सिर्फ उसकी आज्ञाओं और उसके वचन का पालन करना शुरू करें, और उसके वचन को अपने हृदय में ग्रहण करें, तब आप यह पाएंगे कि जिन गुणों को आप अपने अन्दर सालों से देखना चाह रहे थे, वे आपके जीवन में प्रकट होने लगे हैं। आप परमेश्वर के ठहराए हुए उद्देश्य के अनुसार उसके चुने हुए पात्र बन जाएंगे।

प्रेरितों के काम 6:13-15 में, हम यह देखते हैं कि कैसे देश के प्रमुख अगुवों ने स्तिफनुस के ख़िलाफ झूठे साक्षी खड़े किए थे। तब प्राचीन और शास्त्री भड़क कर उस पर चढ़ आए और उसे घसीट कर महासभा में ले गए, और उस पर झूठे दोष लगाने लगे। जब वे ये झूठे दोष लगा रहे थे, और जब महासभा के लोगों ने उसके मुख की ओर देखा, तो वे चकित हो गए क्योंकि उसका मुख स्वर्गदूत के मुख की तरह चमक रहा था। सताव के उस समय में उसके मुख का तेज और ज़्यादा बढ़ गया था। यह उद्धार कितना ज़बरदस्त है! वह कैसा पात्र था! ऐसा चमकता हुआ मुख होना कितने सौभाग्य की बात है!

सितम्बर 19

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हमारा पिता अब्राहम जब मैसोपोटामिया में था, तब महिमामय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया" (प्रेरितों. 7:2)।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के पास आते हैं, तो उसकी ज्योति सबसे पहले हमारे हृदय में, फिर हमारे मुख पर, और फिर हमारे मार्गों में आएगी। यह त्रिगुणी ईश्वरीय ज्योति है। क्या इस भावार्थ में आप परमेश्वर के चुने हुए पात्र बन गए हैं? आपके साथ क्या हुआ है? प्रभु ने, किन्हीं प्रचारकों या संदेशों ने नहीं, बल्कि जीवित परमेश्वर ने आपको एक चमकता हुआ मुख दिया है। और अगर ऐसा हुआ है, तो सारी परीक्षाओं, संकटों, क्लेशों और समस्याओं के बावजूद, आपका मुख दिन-प्रतिदिन और ज़्यादा चमकदार होता जाएगा। ऐसे ही चमकदार मुख से हम शत्रु को हराते हैं। स्तिफनुस को उसका बचाव करने के लिए किसी वकील की ज़रूरत नहीं थी। उसका चमकता हुआ मुख उसका वकील था। आपके साथ भी ऐसा ही होना चाहिए। हालांकि दूसरे लोग आपसे घृणा करेंगे, आपको सताएंगे, या आपके साथ बुरा व्यवहार करेंगे, फिर भी उनके सामने एक गवाह और साक्षी के रूप में आपके मुख पर ज्योति होनी चाहिए (2 कुरि. 4:6)। जैसे-जैसे आप प्रभु की राह तकते हुए पाए जाएंगे, वैसे-वैसे आपके मुख की ज्योति बढ़ती जाएगी। आपकी जानकारी के बिना ही दूसरों को आपके मुख पर परमेश्वर की ज्योति नज़र आएगी, और उस दिन आप अपनी पीड़ाओं के लिए भी परमेश्वर को धन्यवाद देंगे।

यह ध्यान दें कि प्रेरितों के काम 7:2 में स्तिफनुस ने अपना बचाव कैसे किया था। उसने यह नहीं कहा: "हे *शत्रु,* अब मेरी बात सुन!" उसने कहा, "हे *भाइयो और बुज़ुर्गों,* मेरी सुनो!" पूरी भीड़ उसके ख़िलाफ थी, फिर भी उसने उन्हें "भाई" कहा, और उसका मुख चमक रहा था। किसी तरह उसने उनके मन की बात जान ली थी, और उसके संदेश ने उन्हें जवाब दिया था: "हमारा पिता अब्राहम हारान में रहने से पहले जब मैसोपोटामिया में था, तब महिमा के परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।" परमेश्वर के बारे में बोलते समय वह उसे "महिमा का परमेश्वर" कहता है। क्यों? इसलिए कि एक देश के रूप में अब्राहम के वंशजों में भी वही महिमा नज़र आए। लेकिन इस्राएल यह भूल चुका था।

सितम्बर 20

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

“हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा है, ‘मैं उनमें निवास करूँगा और उनमें चला-फिर करूँगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे’” (2 कुरि. 6:16)।

शुरू से ही परमेश्वर की यह योजना थी कि इस्राएल उसकी महिमा से भरा हुआ रहे। इस वजह से ही, जब मिलाप वाले तम्बू का और बाद में मन्दिर का काम पूरा हुआ था, तो हम पढ़ते हैं कि “निवास-स्थान परमेश्वर की महिमा से भर गया” था (निर्ग. 40:34; 2 इति. 7:1)। सुलैमान का मन्दिर और मिलाप वाला तम्बू दोनों ही परमेश्वर की महिमा से भर गए थे। परमेश्वर ने उनसे सोना या चाँदी नहीं माँगा था, लेकिन एक ऐसी जगह चाही थी जो उसकी महिमा से भरी जा सके। उन्हें यह सिखाया गया था कि वे स्वयं कैसे परमेश्वर की महिमा से भर सकते थे। लेकिन वे उसके बारे में पूरी तरह से भूल चुके थे। उनकी नज़रें सिर्फ अपने आप पर और मन्दिर की भव्यता पर थीं। उन्हें हाथों से बनाए गए मन्दिर पर बहुत गर्व था; लेकिन परमेश्वर की महिमा इसलिए प्रकट हुई थी कि वे उसकी महिमा को देख सकें, और स्वयं उनमें उस महिमा का वास हो सके। परमेश्वर हाथों के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। वह एक जीवित मन्दिर में रहना चाहता है। परमेश्वर इसलिए एक मन्दिर चाहता है कि उसके लोग वह ईश्वरीय सिद्धान्त सीखें जिसके द्वारा वह उनमें वास कर सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे परमेश्वर की महिमा को सिर्फ पल भर के लिए ही देखेंगे, बल्कि यह कि उस महिमा का उनमें अनन्त वास होगा।

हमें चुनने में परमेश्वर का उद्देश्य क्या है? वह आपका धन, या सोना या चाँदी नहीं चाहता, लेकिन वह आपको चाहता है। वह आपको इसलिए चाहता है कि उसकी महिमा आपके अन्दर भर जाए, और यह कि उसकी उपस्थिति आपके साथ रहे, कि आप एक नया जीवन जीएं और आपका चाल-चलन नया हो। परमेश्वर यह चाहता है कि आपकी देह उसका मन्दिर हो जिससे कि उसकी महिमा आपके अन्दर आ सके। उसने इस वजह से आपको चुना है। जब आप महिमा के परमेश्वर को अपने हृदय के मन्दिर में आने देंगे, तब आप इस सत्य को जान लेंगे कि महिमा का परमेश्वर आपके अन्दर रहता है।

परमेश्वर हमारी मदद करे कि हम उसकी महिमा को देख सकें और उस महिमा को अपने चेहरों से प्रतिबिम्बित कर सकें।

सितम्बर 21

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"और याजक परमेश्वर के भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि परमेश्वर का भवन परमेश्वर के तेज से भरा हुआ था" (2 इति. 7:2)।

सबसे पहली ज़रूरत परमेश्वर का चुना हुआ पात्र होने और उसके हाथों में आने की ज़रूरत है। इसमें हमारी इच्छा होनी ज़रूरी है। इस क़दम के बाद यह स्पष्ट हो जाएगा कि प्रभु कैसे हमें उन अगले दो अनुभवों में ले जाएगा जो एक के बाद दूसरे में पहुँचाते हैं।

अब हम दूसरे भाग में आते हैं: "कि मैं तेरे चुने हुओं की समृद्धि देखूँ, और तेरी प्रजा के आनन्द में मग्न हो जाऊँ।" पद 1-50 में स्तिफनुस ने इस्राएल के पूरे इतिहास का इसलिए बयान किया कि वह उस जाति को चुनने में परमेश्वर के उद्देश्य को प्रदर्शित कर सके। हम इस कहानी को सात प्रतीकात्मक स्वरूपों में बाँट सकते हैं। पहले तीन प्रतीकों के स्वरूप अब्राहम, इसहाक़ और याकूब हैं। वहाँ से हम मिस्र में, जंगल में, और राजा सुलैमान के मन्दिर की तरफ बढ़ते हैं। स्तिफनुस ने अपनी बात की शुरूआत अब्राहम से की और उसे सुलैमान पर पूरा किया। वह आगे बात न कर सका क्योंकि उस पर दोष लगाने वाले क्रोध से दाँत पीसते हुए उसके ऊपर झपट पड़े थे। लेकिन जो ज़रूरी बातें थीं, उसने वे सब उन्हें बता दी थीं। स्तिफनुस ने इस रहस्य को प्रकट कर दिया कि परमेश्वर उसकी प्रजा को इसलिए तैयार कर रहा था कि वह उसे एक स्वर्गीय आनन्द से भर सके (2 इति. 7:1-3)।

परमेश्वर के लोगों के रूप में वह दिन उनके लिए सबसे ज़्यादा ख़ुशी का दिन था, देश के पूरे इतिहास में वह उनका चरम् बिन्दु था। जब परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वर्गीय नमूने के अनुसार मन्दिर के निर्माण का काम पूरा हो गया, तब स्वर्ग से आग गिरी जिसने सारी होम-बलियों को भस्म कर दिया, और तब परमेश्वर की महिमा से पूरा मन्दिर भर गया। इस्राएल की समस्त प्रजा ने भूमि पर गिर कर प्रभु की आराधना और स्तुति की। वे स्वर्गीय आनन्द से भर गए थे क्योंकि उन्होंने ऐसा पहले कभी कुछ नहीं देखा था।

सितम्बर 22

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"पिता की महिमा के लिए जैसे मृतकों में से मसीह जिलाया गया था, वैसे ही हम भी जीवन की नई चाल चलें" (रोमियों 6:4)।

पहले, परमेश्वर ने अब्राहम को चुना, और उसके द्वारा इसहाक और याकूब को चुना गया। याकूब के जीवनकाल में ही वे मिस्र चले गए थे, और वहाँ से वे जंगल में पहुँचाए गए, और वहाँ 40 साल तक भटकने के बाद, उन्होंने प्रतिज्ञा देश कनान में प्रवेश किया। देश में प्रवेश करने के बाद भी उन्होंने अनेक सालों तक प्रतीक्षा की और पीड़ा सही, और अंततः मन्दिर का निर्माण हुआ, और जब परमेश्वर का घर उसकी महिमा से भर गया, तब उन्होंने परमेश्वर की योजना को पूरा होते हुए देखा।

परमेश्वर जिस तरीक़े से अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपने लोगों को चुनता है, उसमें एक गहरा महत्व होता है। क्या इस वास्तविकता का कोई महत्व नहीं है कि अब्राहम की पत्नी बाँझ थी, इसहाक की पत्नी भी बाँझ थी, और याकूब की पत्नी राहेल भी बाँझ थी? निश्चय ही परमेश्वर यह दिखा रहा है कि कैसे हम अपने आप में सूखे हुए हैं। पाप ने जगत में प्रवेश किया, और उससे पूरा जगत एक सूखेपन की दशा में आ गया, और इस सूखेपन को मानवीय कोशिशों से दूर नहीं किया जा सकता। इस्राएल बहुत समय तक सूखेपन की दशा में रहा कि मनुष्य यह जान ले कि पाप की वजह से हम सूखे रहते हैं। परमेश्वर यह चाहता है कि मनुष्यों के रूप में हम सबसे पहला पाठ यह सीखें कि अपने आप में हम सूखे और बंजर हैं। क्या आप स्वर्गीय आनन्द चाहते हैं; फलवंत होने का आनन्द? तब सबसे पहले सीखने वाली बात उसके जी-उठने की सामर्थ्य है, और यह जानना कि आपके जीवन में मृत्यु और सूखेपन पर जय पाने के लिए अब यही सामर्थ्य आपके लिए भी उपलब्ध है। प्रभु मरा, गाड़ा गया और फिर जी उठा कि वह उसके जी-उठने की सामर्थ्य को हमारे लिए उपलब्ध कर सके।

सितम्बर 23

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"ये बातें मैंने तुमसे कही हैं, कि तुम मुझमें शांति पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, लेकिन साहस रखो, मैंने संसार को जीत लिया है" (यूहन्ना 16:33)।

इसहाक एक और प्रतीकात्मक स्वरूप है। "प्रभु ने उसे आशिष दी" (उत्पत्ति 26:12), और वह "और ज़्यादा सामर्थी हो गया" (पद 16)। वह परमेश्वर का चुना हुआ पात्र होने की वजह से जहाँ भी गया, वहाँ उन्नत हुआ। तब प्रदेश के सब पुरुष उससे ईर्ष्या करने लगे और बोले, "हमारे पास से चला जा!" लेकिन परमेश्वर ने उससे एक नई जगह पर जाने के लिए कहा। वहाँ भी इसहाक़ समृद्ध हुआ और फिर से लोग उससे ईर्ष्या करने लगे। लेकिन वह परमेश्वर के निर्देशानुसार चलता रहा और फिर वह बेर्शेबा में पहुँचा, जो एक बहुत अच्छी जगह थी। परमेश्वर उसके साथ था, क्योंकि उसने संघर्ष, घृणा और शत्रुता करने से इनकार किया था। और अंततः वह बेर्शेबा में पहुँच गया, जो वाचा की जगह थी, और वहाँ परमेश्वर ने उससे कहा:

"मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; मैं तुझे आशिष दूँगा" (पद 24)।

जब परमेश्वर एक व्यक्ति को आशिष देता है, तब ऐसा ज़रूर होता है कि उसका विरोध हो और उससे लोग घृणा करें। शैतान ऐसी कोशिश ज़रूर करता है कि परमेश्वर के लोगों को संघर्ष और लड़ाई-झगड़ों में फँसाए, और किसी तरह उनकी शांति, आनन्द और विश्वास को चुरा ले जाए। क्या आपके साथ ऐसा हो रहा है? तो उस दिशा में बढ़ते रहें जो परमेश्वर आपको दिखा रहा है और घृणा, झगड़े और ईर्ष्या का इनकार करते रहें, और अंततः परमेश्वर आपको बेर्शेबा में ले आएगा। जितना आपके पास पहले कभी नहीं था, वह आपको उससे बढ़कर देगा। हमारे प्रभु ने यूहन्ना 16:20,22 में कहा है: "तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा, और तुम्हारे आनन्द को तुमसे कोई न छीन सकेगा।" झगड़े, घृणा और ईर्ष्या में पड़ने से दूर रहें। इसहाक़ का यही संदेश है।

सितम्बर 24

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"हमारा संघर्ष तो माँस और लहू से नहीं है... बल्कि अंधकार की शक्तियों से है. .. इसलिए परमेश्वर के समस्त अस्त्र-शस्त्र धारण कर लें" (इफि. 6:12,13)।

याकूब का जन्म होने से पहले ही परमेश्वर ने यह तय कर दिया था कि वह एक अधिपति होगा, लेकिन याकूब की माता ने ही उसे धोखा दिया था। वह उसे बहुत प्रेम करती थी, और याकूब वही करता था जो वह उससे कहती थी, और इसलिए उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को एक ग़लत ढंग से पूरा करने की कोशिश की थी। फिर अनेक वर्षों तक संघर्ष करने के बाद ही ऐसा हो सका कि वह परमेश्वर और मनुष्य के सम्मुख एक अधिपति बन सका था। याकूब के जीवन से परमेश्वर हमें यह सिखाना चाहता है कि हम परमेश्वर के साथ शासक और सहकर्मी कैसे बन सकते हैं। फिर मिस्र का प्रकरण हुआ। इस्राएल की संतान को वहाँ चार सौ साल तक रहना पड़ा था। वहाँ उनकी संख्या बहुत बढ़ गई थी और फिरौन उनके प्रति कड़वाहट से भर गया था। परमेश्वर ने उन्हें मिस्र में फिरौन की गुलामी में एक लम्बे समय तक इसलिए रहने दिया कि वे यह समझ सकें कि शत्रु कितना क्रूर, निर्दयी और दुष्ट है।

उन्हें सुबह से लेकर रात तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, भारी पत्थर उठाने पड़ते थे, और दूसरे भारी बोझ ढोने पड़ते थे, और ऐसा परिश्रम करने के बाद वे कोई उचित मज़दूरी भी नहीं पाते थे। अंततः, अपनी पीड़ा में उन्होंने प्रार्थना की: "हे परमेश्वर, हमें छुड़ा। हमारी पीड़ा और हमारे आँसुओं को देख," और परमेश्वर ने उनकी पुकार को सुना और उनके लिए एक मुक्तिदाता को भेजा। लेकिन उन्हें छुड़ाने से पहले, परमेश्वर ने मिस्र को दस महामारियों से मारा। क्यों? इसलिए कि लोग शत्रु की धोखेबाज़ी से भरी चालों को समझ लें। परमेश्वर के हरेक सेवक को यह मालूम होना चाहिए कि वह शत्रु कितना दुष्ट और चालाक है जो परमेश्वर के बच्चों को अंधकार में खींच ले जाने की कोशिश कर रहा है। जब एक सेवक शैतान और अंधकार की शक्ति और शासन को भूल जाता है, तो यक़ीनन वह गुलामी में फँस जाता है।

सितम्बर 25

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"वे सब जो परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं" (रोमियों. 8:14)।

इस्राएल की संतान जब जंगल में पहुँची, तब उनके लिए कोई काम नहीं था, उनके पास कोई खेती-बाड़ी नहीं थी, और उनके रहने के लिए कोई घर नहीं थे। और उनके खाने के लिए, प्रभु ने कहा, "मैं प्रतिदिन मन्ना दूँगा।" लेकिन उन्हें एक काम करना था; कि उन्हें अपने डेरे में तब तक रहना था तब तक मिलाप वाले तम्बू के ऊपर से परमेश्वर का बादल उठकर आगे नहीं चलता था (गिन्ती. 9:18-22)।

जैसे ही बादल उठता था, और जिस दिशा में भी वह जाता था, वह चाहे दिन का समय हो या रात का, उन्हें फौरन उठकर चल देना पड़ता था। जब तक वे जंगल में रहे, वे अपनी मर्ज़ी से कभी भी और कहीं नहीं जा सके थे। वे परमेश्वर के लोग थे, और यह ज़रूरी था कि हरेक बात में वे परमेश्वर की अगुवाई, शासन और नियंत्रण में रहें। यह एक सहज पाठ था, लेकिन यह एक ऐसा पाठ था जिसे सीखना उनके लिए बहुत मुश्किल था। परमेश्वर आपको और मुझे भी यही पाठ सिखाना चाहता है - कि हम पवित्र-आत्मा की अगुवाई द्वारा चलना सीखें (रोमियों. 8:14)। परमेश्वर के लोगों को पवित्र-आत्मा का वरदान दिया गया है। वह मुक्तिदाता और मार्गदर्शक भी है। यह ज़रूरी है कि परमेश्वर की एक संतान सिर्फ पवित्र-आत्मा द्वारा ही नियंत्रित और शासित हो। यह तभी सम्भव होता है जब हम अपनी ख़ुदी में मर जाते हैं। यह पाठ सीखने में बहुत साल लग जाते हैं।

जंगल में से परमेश्वर के लोग कनान देश में आए, जो प्रतिज्ञा का वह देश था जिसमें दूध और नदी की धाराएं बहती थीं - जो परमेश्वर द्वारा एक प्रतीकात्मक चिन्ह् था कि वह अपने लोगों के लिए प्रबन्ध करता है। परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा दी थी कि वे उस प्रदेश में रहने वाले लोगों के साथ कभी किसी तरह की वाचा न बाँधें और संधि न करें, और न ही उनके साथ अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह करें। फिर भी उन्होंने ये आज्ञाएं न मानने द्वारा परमेश्वर को निराश किया। जब गिब्बोनी लोग यहोशू के पास आए, तो परमेश्वर से परामर्श किए बिना ही यहोशू ने उनके साथ वाचा बाँध ली और बाद में वही लोग उनके लिए एक फँदा बन गए थे। धीर-धीरे परस्पर विवाह होने लगे, मूर्तिपूजा शुरू हो गई, और दूसरी वर्जित बातें भी आम बातें हो गईं, और लोग आत्मिक तौर पर अंधे हो गए।

सितम्बर 26

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

“संसार तथा उसकी लालसाएं भी मिटती जा रही हैं, लेकिन वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा” (1 यूह. 2:17)।

अगर परमेश्वर का एक बच्चा स्वर्गीय कनान का आनन्द मनाना चाहता है, तो उसका जीवन संसार और संसार के तौर-तरीक़ों और भोग-विलासिता से पूरी तरह से अलग होना चाहिए। ऐसा क्यों है कि चारों तरफ परमेश्वर के लोगों में एक सूखापन है? उनके पास अच्छी शिक्षा है, फिर भी वे अंधे और सूखे हैं। इसका एक कारण यह है कि अनेक लोग संसार के साथ वाचा बांधते और समझौता करते हैं - कुछ लोगों का समझौता कपड़ों और फैशन में होता है, कुछ का वैवाहिक सम्बंधों में, और दूसरे काम-धंधों में समझौते कर लेते हैं। ऐसे लोग प्रभु यीशु मसीह के प्रबन्ध को कैसे जान सकते हैं? वह हमारी स्वर्गीय रोटी और पानी है, और वही हमें भरपूरी से तृप्त करता है। लेकिन यह ज़रूरी है कि आप उसके प्रति ईमानदार रहें। इसका अर्थ शायद यह होगा कि कुछ लोगों को एक लम्बा समय तक अविवाहित रहना पड़ेगा, क्योंकि उनके लिए एक ऐसा पति या पत्नी पाना मुश्किल होगा जो वास्तव में आत्मिक हो। लेकिन ऐसी अविवाहित अवस्था उस भोग-विलास के जीवन से अच्छी है जिसमें आत्मिक सूखापन है।

फिर मन्दिर का निर्माण करने का समयकाल आया। परमेश्वर ने दाऊद को चुना, और उसके बहुत सालों तक पीड़ा सहने के बाद उसे स्वर्गीय नमूना दिया गया (1इत. 28:19)। परमेश्वर ने दाऊद को मन्दिर के निर्माण की जगह भी दिखाई। दाऊद ने सुलैमान को नमूना और निर्माण की सामग्री दी और उसने मन्दिर का निर्माण किया। सुलैमान के समय में शान्ति बनी रही, और सारा काम न सिर्फ शांति के समयकाल में पूरा हुआ बल्कि निर्माण का सारा काम भी पूरी तरह से एक शान्त और नि:शब्द वातावरण में तब तक चलता रहा जब तक वह परमेश्वर द्वारा बताए गए नमूने के अनुसार वह हू-ब-हू पूरा न हो गया। तब राजा और प्रजा बलिदान और भेंट लेकर आए, और एकाएक स्वर्ग से आग गिरी और पूरा मन्दिर परमेश्वर की महिमा से भर गया।

परमेश्वर ने उसकी प्रजा की अगुवाई कैसे की थी, उन क़दमों पर ध्यान दें। उसने पहले व्यक्तिगत रूप से अब्राहम, फिर इसहाक़, और फिर याकूब की अगुवाई की, और फिर वह अपने लोगों को मिस्र में ले गया, वहाँ से वह उन्हें जंगल में ले गया, फिर कनान में, फिर मन्दिर के निर्माण में, और फिर परमेश्वर की उस महिमा में जो स्वर्गीय वैभव और सामर्थ्य के साथ उसके लोगों के बीच में आ बसी थी।

सितम्बर 27

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"अगर हम संतान हैं तो उत्तराधिकारी भी हैं - परमश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के सह-उत्तराधिकारी।" रोमियों 8:17

भजन संहिता 106: 4,5 पदों में भजनकार की तीव्र लालसा पर ध्यान दें, और उसके साथ पद 5 के अंतिम भाग को अपनी भी तीव्र लालासा बना लें कि "तेरी विरासत के लोगों के साथ महिमा करूँ।" जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करते हैं, तब हम इस महान् विरासत में सहभागी हो जाते हैं। विश्वासियों के रूप में, कई बार हमारी स्वर्गीय विरासत के मूल्य को समझने में हमें बहुत साल लग जाते हैं। तो अब हम यह सीख लें। परमेश्वर का वचन इस बात में बिलकुल स्पष्ट है कि जब हम प्रभु को अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करते हैं, तब हमें परमेश्वर की संतान हो जाने का हक़ और अधिकार मिल जाता है। हम परमेश्वर के सनातन प्रेम की वजह से, जिसे हमने विश्वास से ग्रहण किया है, अनन्तकाल के लिए परमेश्वर के पुत्र हैं। प्रभु यीशु मसीह की विरासत में हमारा भाग है। इस विरासत का आनन्द उठाना आपके विश्वास पर निर्भर होता है। रोमियों 8:17,18 कहता है: "अगर हम संतान हैं, तो उत्तराधिकारी भी - परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के सह-उत्तराधिकारी।" ये दोनों बातें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। अगर आप यह कह सकते हैं: "मैं परमेश्वर की संतान हूँ," तो आप स्वत: यह भी कह सकते हैं: "मैं परमेश्वर का उत्तराधिकारी हूँ और प्रभु यीशु मसीह का सह-उत्तराधिकारी हूँ।"

आपको यह विश्वास करना होगा कि आप एक महान् और अनन्त विरासत के वारिस होने के लिए बुलाए गए हैं। प्रभु यीशु मसीह को हमारे मुक्तिदाता और प्रभु के रूप में स्वीकार करते ही हम एक पूर्ण आत्मिक सहभागिता में शामिल हो जाते हैं। सबसे पहले तो हम एक आत्मिक स्वभाव में सहभागी होते हैं (2 पत. 1:4)। दूसरी बात, कि हम पवित्र-आत्मा में सहभागी होते हैं (इब्रा. 6:4)। तीसरी बात, कि हम स्वर्गीय बुलाहट में सहभागी होते हैं (इब्रा. 3:1)। चौथी बात, कि परमेश्वर की पवित्रता में सहभागी होते हैं (इब्रा. 12:12)। पाँचवीं बात, हम आने वाली महिमा में सहभागी होते हैं (1 पत. 5:11)। छठी बात, हम ज्योति में पवित्र संतों की विरासत में शामिल होते हैं (कुलु. 1:12)। सातवीं बात, कि हम स्वयं प्रभु में सहभागी होते हैं (इब्रा. 3:14)।

सितम्बर 28

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"और पिता का आनन्द से धन्यवाद करते जाओ जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ उत्तराधिकार में सहभागी हों" (कुलु. 1:12)।

परमेश्वर की स्वर्गीय विरासत में शामिल होना कितनी अद्‌भुत बात है। हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें चुना है कि वह हमें उस आत्मिक, अविनाशी और महिमामय विरासत में पहुँचाए जिसमें वह हमें आनन्दित करना चाहता है। आपको यह विश्वास करना होगा कि आपकी उस विरासत में सहभागिता है। ऐसे कितने विश्वासी हैं जो उद्धार पाने को सिर्फ स्वर्ग जाना समझते हैं। वे सोचते हैं कि परमेश्वर दयालु है, और वह उनके पाप इसलिए क्षमा करता है कि वे स्वर्ग जा सकें। और स्वर्ग में पहुँचने के बाद, अगर उन्हें रहने के लिए वहाँ एक छोटा सा कोना ही मिल जाएगा, तो उन्हें कोई फर्क़ नहीं पड़ेगा।

शत्रु इसी तरह धोखा देता है, और स्वर्गीय विरासत में आपको आपका हिस्सा पाने से वंचित कर देता है। आपको अपने हिस्से के स्वर्ग पर अपने अधिकार का दावा करना होगा, और एक जयवंत जीवन बिताते हुए उसमें आनन्दित होना होगा। प्रकाशितवाक्य 21:7 में प्रभु स्वयं कहता है, "जो जय पाए, वह इन सब बातों का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।" चाहे आप नई सृष्टि की सारी बातों के वारिस हो जाएं, फिर भी आपका सबसे बड़ा अधिकार आपके प्रभु के ऊपर होगा। आप यह कह सकेंगे: "वह मेरा प्रभु है, मेरा अपना परमेश्वर है। मैं उसके पास किसी भी समय और किसी भी जगह जा सकता हूँ।" इस तरह यहीं पृथ्वी पर ही हमें स्वर्ग का पूर्वस्वाद मिल जाता है।

आपके जीवन के आरम्भिक दिनों में, जब आप प्रार्थना करने के लिए घुटने टिकाते हैं, तब आप प्रार्थना करने को शायद पृथ्वी की बातों से जोड़ते होंगे। हम परमेश्वर से सिर्फ पार्थिव बातों के लिए ही प्रार्थना करते हैं। और अगर परमेश्वर हमारी प्रार्थना का जवाब देता है तो हम कहते हैं, "प्रभु एक बहुत अच्छा परमेश्वर है!" लेकिन जब मुश्किलें, परीक्षाएं और दु:ख आते हैं, तो हम पूछते हैं, "परमेश्वर कहाँ है? वह कहाँ है? मैंने इतने भले काम किए हैं, और फिर भी प्रभु ने मुझे ऐसी परीक्षाओं में डाल दिया है। उसने मुझे त्याग दिया है और मुझे भूल गया है।" क्या ऐसा हो सकता है? आप उसके बच्चे हैं। उसके मार्ग आपके मार्गों से बहुत ऊँचे हैं। उसने आपको एक महिमामय स्वर्गीय विरासत में बुलाया है, और इस विरासत का आनन्द मनाना आपकी जय पाने की योग्यता पर निर्भर होगा।

सितम्बर 29

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

“तुम परमेश्वर के योग्य चाल चलो जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है” (1 थिस्स. 2:12)।

रोमियों 8:18 में, हम यह पढ़ते हैं कि इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि हमारी तकलीफें कितनी दर्दनाक हैं, क्योंकि वह उस महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं जो हममें और हमारे द्वारा प्रकट होने वाली है। हमें हृदय से यह विश्वास करना होगा कि परमेश्वर ने हमें उसके महिमामय राज्य में बुलाया है (1थिस्स. 2:12)। मेरा यह विश्वास है कि परमेश्वर ने मुझे उसके महिमामय राज्य में बुलाया है। और अगर हम इस सत्य पर विश्वास करेंगे, तो हम उसकी बुलाहट के अनुसार योग्य चाल भी चलेंगे। आप परमेश्वर की संतान, उसके सहयोगी और उसके पात्र हैं, एक राजा, एक शासक और एक याजक हैं। परमेश्वर के योग्य चाल चलें।

हमें अनेक परीक्षाओं, प्रलोभनों, संघर्षों और कठिनाइयों में अपने आपको उस महिमामय स्वर्गीय बुलाहट के लिए तैयार करना पड़ता है, और हमें परमेश्वर से यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि हमें वह कैसे प्रशिक्षित करे। सिर्फ परमेश्वर ही यह जानता है कि हमारे लिए क्या सबसे अच्छा है, और परमेश्वर ही यह जानता है कि हमें कैसे प्रशिक्षित करना है; और हमारी ताड़ना करने, डाँटने, और हमें परखने में उसका कोई उद्देश्य होता है।

हमें अपने माता-पिता से जो राष्ट्रीयता मिली है, उसके साथ एक विरासत भी शामिल है। इसी तरह, परमेश्वर की संतान होते हुए, हमारे स्वर्गीय पिता का चरित्र, और हमारी स्वर्गीय नागरिकता के गुण हममें नज़र आने चाहिए। पापियों के रूप में, हम पाप, लज्जा और गंदगी से भरे हुए है, लेकिन हमारे मन-फिराव के बाद, हम अपने अन्दर कुछ ईश्वरीय गुणों के प्रमाण देखते हैं। ये हमारे परिवार या पीढ़ी में से नहीं आते, और न ही ये हमारी पृथ्वी की राष्ट्रीयता में से आते हैं, बल्कि ये हमारे प्रभु यीशु मसीह में से आते हैं। हमारे प्रभु की योग्यताएं और गुण - दया, कोमलता, प्रेम, धीरज, सहनशीलता और धैर्य हममें स्थानान्तरित/आरोपित होने लगते हैं। यह हमारी वह स्वर्गीय विरासत है जो हमने अपने माता-पिता, शिक्षकों, प्रचारकों, या प्राध्यापकों से नहीं पाई है, बल्कि हममें मौजूद परमेश्वर के जीवन में से पाई है। लेकिन इन गुणों के हममें प्रकट होने के लिए यह ज़रूरी है कि हम उन्हें प्रकट करना चाहें।

सितम्बर 30

परमेश्वर के चुनाव के रहस्य

"जो जय पाए, वह इन बातों का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा" (प्रका. 21:7)।

परमेश्वर की संतान के रूप में हम राजा और याजक बन गए हैं। यह हमारा विशेषाधिकार है (प्रका. 1:6)। यह न सोचें कि ये शब्द सिर्फ प्रेरितों, शहीदों या नबियों के लिए ही हैं। ये शब्द हम सभी के लिए हैं। वे सभी लोग जो प्रभु यीशु मसीह के लहू द्वारा धोए गए हैं, शुद्ध किए गए हैं, और साफ किए गए हैं, उनका स्वर्गीय परिवार में जन्म हो गया है, और वे परमेश्वर के शासक और याजक बन गए हैं।

इस उत्तराधिकार द्वारा आपका एक भविष्य भी है। अगर आपका परमेश्वर के राज-परिवार में जन्म हुआ है, तो आप यह जानेंगे कि एक दिन आप उसके राज्य में सदा के लिए राज्य करेंगे, और इस समय आप उसके लिए तैयार किए जा रहे हैं। अंतिम बात यह है, कि हम स्वयं परमेश्वर की विरासत होने के लिए चुने गए हैं। हमारा स्वर्गीय पिता हमें अनन्त प्रेम से प्रेम करता है। यह हमारी स्वर्गीय विरासत है। हम उसके प्रेम की भरपूरी का आनन्द मनाएं; यह हमारे स्वर्गीय पिता, हमारे मित्र, हमारे दूल्हे का प्रेम है। लेकिन वह हममें संतुष्ट भी होना चाहता है। हम उससे कितना प्रेम करते हैं? यह कितने अफसोस की बात है कि अक्सर हम अपनी स्वर्गीय विरासत और अपने स्वर्गीय पिता का अंगीकार करने से लजा जाते हैं।

यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे कितने विश्वासी हैं जो प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने में लजाते हैं। जब वे अपने मित्रों व पड़ोसियों के बीच में जाते हैं, तो वे प्रभु से लजाते हैं, लेकिन जब वे किसी संकट में होते हैं तो उसे पुकारते हैं: "हे प्रभु, हमारी मदद कर, मुझे तेरी मदद की ज़रूरत है!" प्रभु तुरन्त मदद करता है, लेकिन इससे प्रभु का हृदय संतुष्ट नहीं होता। वह चाहता है कि हम पूरी तरह उसके साथ एक हों, पूरी तरह उसके हों, उसके लिए ऐसे हों जैसे एक दूल्हे के लिए उसकी दुल्हन होती है। यह हमारी और प्रभु की अनन्त स्वर्गीय विरासत है। ऐसा हो कि प्रभु इस महिमामय विरासत के लिए हमें एक गहरी लालसा दे, और इन सब बातों का अर्थ क्या है, इसकी एक सच्ची समझ दे।

अक्टूबर 1

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"तुम्हें यह दिया गया है कि तुम स्वर्ग के राज्य के भेदों को जानो" (मत्ती 13:11)।

परमेश्वर के वचन में तीन जगह अब्राहम को परमेश्वर का मित्र कहा गया है (यशा. 41:8; 2 इति. 20:7; याकूब 2:23)। यूहन्ना 15:15 में प्रभु यीशु मसीह ने कहा है कि वह चाहता है कि उसके शिष्य उसके मित्र हों। वह चाहता है कि हम उसके हृदय के सब भेदों को जानें, क्योंकि जब मित्र एक-दूसरे के साथ अपने हृदय की बात करते हैं तो उनकी मित्रता और ज़्यादा मज़बूत होती है। उत्पत्ति 18:17 में, परमेश्वर ने सदोम और अमोरा का नाश करने से पहले यह कहा: "जो मैं करने पर हूँ, क्या मैं उसे अब्राहम से छुपा रखूँ?" परमेश्वर हमें अपने ऐसे मित्र बनाना चाहता है कि जब हम उसकी स्वर्गीय योजना में शामिल हो जाएं, तो वह हम पर उसके छुपे हुए रहस्य प्रकट कर सके। क्योंकि हम परमेश्वर के साथ ऐसी सहभागिता का आनन्द उठाते हैं (मत्ती 13:17), इसलिए परमेश्वर चाहता है कि जो बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छुपा कर रखी गई हैं, वह हम पर प्रकट कर दी जाएं। 1 पतरस 1:12 जिन बातों के बारे में बात करता है, "जिन बातों को स्वर्गदूत भी देखने की बड़ी लालसा करते हैं," ये वे बातें हैं जो स्वर्गदूतों, परमेश्वर के नबियों, और दूसरे महान् लोगों से भी छुपी रहीं, लेकिन उन्हें उन लोगों पर प्रकट किया गया है जो प्रभु यीशु मसीह के मित्र बन गए हैं।

उत्पत्ति अध्याय 10 के बाद प्रभु ने अब्राहम को दस बार दर्शन दिया। अध्याय 12 में उसने दो बार दर्शन दिया। हरेक मुलाक़ात में उसने ईश्वरीय मित्रता का एक रहस्य प्रकट किया था। वह एक क़दम के बाद दूसरे क़दम पर दिया गया प्रकाशन था (उत्पत्ति 12:1)।

अक्टूबर 2

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"तुम संसार के नहीं हो, लेकिन मैंने तुम्हें संसार में से चुनकर निकाल लिया है" (यूहन्ना 15:19)।

प्रभु यीशु मसीह के सच्चे मित्र होने के लिए यह ज़रूरी है कि हम अपनी सभी पुरानी मित्रताओं में से छुड़ाए जाएं, और नई मित्रताओं में पहुँचाए जाएं। यूहन्ना 15:19 में, हमें यह अहसास होता है कि हम परमेश्वर के सामर्थी हाथ द्वारा ऐसे संसार, सांसारिक सम्बंधों और मित्रों में से खींच कर निकाले गए हैं जो परमेश्वर के साथ इस मित्रता का आनन्द नहीं उठा सकते।

अनेक अवसरों पर प्रभु ने उसके एक शब्द से या एक स्पर्श से किसी न किसी बीमार को चंगा किया था। लेकिन मरकुस 8:23 के मामले में, उसने उस अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़ा, और हमें एक नमूना दिखाया कि एक सच्चा शिष्य या मित्र कैसे बना जा सकता है। उस दिन तक उस अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़ कर सिर्फ उसके सम्बंधियों या मित्रों ने ही उसे चलाया था। लेकिन जिस दिन प्रभु उसका हाथ पकड़ कर उसे बाहर लाया, तो असल में वह उससे यह कह रहा था, "अब मुझे तेरी मदद करने दे कि मैं तुझे दिन-प्रतिदिन लेकर चल सकूँ।" इसलिए उसने उसके पुराने सम्बंधों में से उसे बाहर निकाला, इसलिए नहीं क्योंकि वह चमत्कार करने में उसे कोई झिझक महसूस हो रही थी, बल्कि इसमें उसका एक उद्देश्य था, वही उद्देश्य जिसमें अब्राहम को उसके सम्बंधियों और मित्रों के बीच में से निकालने के लिए उसे मजबूर किया था, और फिर उसे नए सम्बंधों में पहुँचाया गया था। अगर हमें परमेश्वर की ईश्वरीय मित्रता का आनन्द मनाना है, तो यह वह पहला पाठ है जो हमें सीखना पड़ता है।

प्रभु ने अध्याय 12:2-3 में, अब्राहम से सात-गुणी आशिष की प्रतिज्ञा की: "मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और मैं तुझे आशिष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और इसलिए तू आशिष का कारण होगा। जो तुझे आशिर्वाद देंगे उन्हें मैं आशिष दूँगा, और जो तुझे श्राप दे, उसे मैं श्राप दूँगा, और पृथ्वी के सब घराने तुझ में आशिष पाएंगे।" यह सात-गुणी आशिष ऐसे हरेक व्यक्ति के लिए है जो परमेश्वर का मित्र बनना चाहता है।

अक्टूबर 3

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और मैं तुझे आशिष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और इसलिए तू आशिष का कारण होगा। जो तुझे आशिर्वाद देंगे उन्हें मैं आशिष दूँगा, और जो तुझे श्राप दे, उसे मैं श्राप दूँगा, और पृथ्वी के सब घराने तुझ में आशिष पाएंगे" (उत्पत्ति 12:2-3)।

"मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा।" जब एक बार आप उद्धार पा लेते हैं, तो आपके द्वारा दूसरे बहुत से लोग उद्धार पाएंगे; और फिर उनके द्वारा एक एक करके और लोग उद्धार पाएंगे। और हम सब परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बन जाएंगे, और हमारी प्रार्थनाओं, साक्षी, प्रेम, सेवा, और दूसरे तरीकों से, और लोग उद्धार पाएंगे।

"मैं तुझे आशिष दूँगा।" हम दिन प्रतिदिन परमेश्वर से अनेक प्रकार की अनन्त और विशेष आशिषें पाने लगते हैं। नए जीवन और उसके प्रेम की वजह से हम एक अनन्त शांति, और अनन्त आनन्द, प्रेम और मित्रता पा लेते हैं।

"मैं तेरा नाम महान् करूँगा।" जब एक व्यक्ति मर जाता है, तो संसार में वह कितना भी महान् क्यों न रहा हो, उसे पूरी तरह से भुला दिया जाता है। लेकिन एक व्यक्ति जिसका नया जन्म हुआ हो, और वे सब जो प्रभु यीशु मसीह के हैं, उनकी मृत्यु होने पर उनका स्वर्ग में शासकों और याजकों की तरह स्वागत किया जाएगा।

"तू आशिष का कारण होगा।" पृथ्वी के वासी हमारे द्वारा सान्त्वना, शक्ति और उत्साह पाएंगे।

"जो तुझे आशीर्वाद देंगे, मैं उन्हें आशिष दूँगा" का अर्थ अक्षरशः वही है जो इस प्रतिज्ञा में है, और *"जो तुझे श्राप देंगे, उन्हें मैं श्राप दूँगा"* का अर्थ है कि वह शत्रु के किसी हथियार को हम पर प्रबल नहीं होने देगा।

"पृथ्वी के सारे घराने तुझ में आशिष पाएंगे।" इस प्रतिज्ञा में यह संकेत है कि हमारे पास सब देशों के लिए एक संदेश है। प्रभु हमें जहाँ भी ले जाए, हम सभी जगह वही सुसमाचार और वही संदेश दे सकते हैं। यह सात-गुणी प्रतिज्ञा ऐसे हरेक व्यक्ति के लिए है जो अपने आपको संसार और संसार की बातों से अलग करने के लिए तैयार है।

अक्टूबर 4

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन देकर कहा, 'यह देश मैं तेरे वंश को दूँगा" *(उत्पत्ति 12:7)।*

पद 7 में, परमेश्वर ने दोबारा दर्शन दिया। अब्राहम अब परमेश्वर की आराधना करना सीखने लगा था। पहली बार जब उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और अपना सब कुछ छोड़ कर निकल गया था, तब प्रभु ने उसे दर्शन देकर उसे आराधना करना सिखाया था। अब वेदी के पास वह इस सहज पाठ को सीख रहा था कि उसे धर्मी (सही) ठहराने के लिए उसकी जगह किसी दूसरे का मरना ज़रूरी था। वेदी हमारे प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और बलिदान का प्रतीक है; वह जगत में आया, हमारी मौत खुद मरने के लिए आया, और हमारे पापों के लिए मरा कि हमें धर्मी ठहरा सके। हम परमेश्वर की आराधना करना जितना ज़्यादा सीखेंगे, हमें उतना ही यह समझ आएगा कि उसने हमारी जगह खुद मर कर कितना बड़ा दाम चुकाया है कि फिर वह हमें धर्मी बना सके।

जब हमारा नया जन्म होता है तो हम अलौकिक नहीं बन जाते हैं। हमें मानवीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारी देह मिट्टी की ही देह बनी रहती है, और हमें परीक्षाएं, पीड़ा, बीमारी, और हर तरह की निराशा देखनी पड़ती है, फिर भी हम यह पाते हैं कि परमेश्वर लगातार हमारी रक्षा करता रहता है (1कुर. 10:13; 2कुर. 2:9; भज. 24:7)। हम मानवीय कमज़ोरी की वजह से खुद को जब भी किसी बड़े ख़तरे में, प्रलोभन में, या परीक्षा में पाएं, तब हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि प्रभु यह जानता है कि उसे हमारी रक्षा कैसे करनी है।

किसी नए रास्ते में चलते समय हम अक्सर अपने आपको अनेक तरह के भय से भरा हुआ पाते हैं, लेकिन प्रभु अपनी कृपा और दया में हमें ऐसे हरेक भय से बचाता है। हमें सिर्फ उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने, उसमें अपना भरोसा बनाए रखने, और उसका आज्ञापालन करने की ज़रूरत होती है, और तब हम अपने आत्मिक जीवन में और विश्वास को एक-एक क़दम पर बढ़ता हुआ पाते हैं।

अक्टूबर 5

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"जो मुझसे ज़्यादा अपनी माता या पिता से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है। जो मुझ से ज़्यादा अपने बेटे या बेटी से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है; जो अपनी सूली उठा कर मेरे पीछे नहीं चलता वह मेरे योग्य नहीं है।"
मत्ती 10:37,38

यूहन्ना अध्याय 15 में प्रभु यीशु मसीह ने उसमें विश्वास करने वाले लोगों से कहा है, "मैंने तुम्हें अपना दास नहीं अपना मित्र कहा है," क्योंकि वह हमें वह सब कुछ देना चाहता है जो उसने पिता से पाया है। हम जैसे-जैसे आत्मिक तौर पर बढ़ेंगे, हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारी मित्रता में हम आनन्दित होंगे, और हम उसके साथ खुलकर बातचीत करेंगे, उसे अपने मन की बातें बताएंगे, और वह भी हमसे प्रेम से बात करेगा, और हमें दिन-प्रतिदिन बहुत सी नई बातें दिखाएगा।

मत्ती 11:25 में हमें याद दिलाया गया है कि जो बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छुपा ली गई हैं, वे बच्चों पर प्रकट की गई हैं।

40 साल के अंतराल में, परमेश्वर ने अब्राहम को दस बार दर्शन दिया था। और हरेक दर्शन में उसने ईश्वरीय मित्रता का एक नया भेद उस पर प्रकट किया था; असल में, इन दर्शनों को ईश्वरीय मित्रता के दस क़दम भी कहा जा सकता है। तीसरी बार परमेश्वर ने अब्राहम को उसका देश छोड़कर एक नए स्थान में चले जाने के लिए कहा था, लेकिन परमेश्वर ने लूत को अब्राहम के साथ जाने के लिए नहीं कहा था। अब्राहम सिर्फ मानवीय संवेदना की वजह से लूत को अपने साथ ले जाने के लिए तैयार हुआ था। लेकिन कुछ समय के बाद, लूत के सेवकों और अब्राहम के सेवकों के बीच झगड़ा शुरू हो गया था (उत्पत्ति 13:7)। मानवीय लगावों का नतीजा हमेशा लड़ाई-झगड़े ही होते हैं, और हमें याद रखना चाहिए कि हमारे स्नेह का हरेक सम्बंध - चाहे वह हमारे पति, पत्नी, माता-पिता, भाइयों, बहनों या सम्बंधियों का स्नेह हो - यह ज़रूरी है कि वह स्नेह प्रभु यीशु मसीह द्वारा पवित्र/शुद्ध किया जाए। अगर वह पवित्र नहीं किया जाएगा, तो एक दिन वह मुश्किल पैदा करेगा।

अक्टूबर 6

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"क्योंकि जो कोई मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा पूरी करता है, वही मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माता है" (मत्ती 12:50)।

हमें अक्सर ऐसे कितने लोग मिलते हैं जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की बजाय अपने सम्बंधियों से प्रेम करना ज़्यादा पसन्द करते हैं। वे सोचते हैं: "हम उस व्यक्ति को कैसे छोड़ सकते हैं? हम इस व्यक्ति को कैसे तकलीफ़ दे सकते हैं? हम उस अमुक व्यक्ति को कैसे चोट पहुँचा सकते हैं?" और इस तरह परमेश्वर की इच्छा का विरोध करने द्वारा वे हर समय पवित्र-आत्मा को शोकित करते रहते हैं।

यह बिलकुल स्पष्ट है कि लूत की स्वर्गीय बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि जब उसके सामने फैली भूमि में से अब्राहम ने उससे चुनाव करने को कहा, तो लूत ने एक ऐसी अच्छी भूमि को चुना जो सदोम और अमोरा से ज़्यादा दूर नहीं थी (उत्पत्ति 13:10)। लूत ने मैदानी क्षेत्र के नगरों के बीच में अपना डेरा लगाया जिसका मुख सदोम की तरफ था। लूत सदोम और अमोरा के बारे में जानता था। उनकी दशा कोई रहस्य नहीं था। सारे प्रदेश में ये नगर इनकी दुष्टता और निर्लज्जता की वजह से बदनाम थे। अब्राहम ने लूत से कहा: "अगर तू बाईं तरफ जाए, तो मैं दाईं तरफ जाऊँगा, और अगर तू दाईं तरफ जाए, तो मैं बाईं तरफ जाऊँगा।"

लूत ने एक ऐसी जगह चुनी जो सदोम और अमोरा से ज़्यादा दूर नहीं थी। वह ज़मीन की उत्पादकता से आकर्षित हुआ था। उसने अपने मन में यह सोचा होगा, "मैं सदोम और अमोरा के अन्दर नहीं हूँ। मैं इसके बाहर ही रहूँगा।" अध्याय 19:1 में, वह सदोम के अन्दर था। उन दिनों में उस नगर के प्राचीन न्याय करने के नगर-द्वार पर बैठते थे, और लूत भी जल्दी ही उस नगर में एक प्राचीन बन गया था। वह शायद नगर के बाहर रहना चाहता था, और जब सदोम और अमोरा के पुरुषों ने उसके सामने नगर का एक अगुवा बनने का प्रस्ताव रखा, तो उसने सोचा होगा कि शायद इस तरह वह कुछ भला कर सकेगा।

अक्टूबर 7

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"तू अपने लिए बड़ी-बड़ी बातों की खोज में है? उन्हें मत खोज" (यिर्म. 45:5)।

हम यह स्पष्ट देख सकते हैं कि लूत के मन में क्या था। उसमें लोकप्रिय होने की अभिलाषा थी, और जब वह ज़्यादा धनवान हो गया तब उसने अपने लिए नाम और शोहरत भी कमाना चाहा। इसी तरह, अनेक विश्वासी भी नाम, शक्ति और अधिकार पाने की महत्वकांक्षा रखते हैं। वे मण्डली में भी अगुवे होना चाहते हैं, इसलिए नहीं क्योंकि उनमें कोई आत्मिक बातों के लिए दिलचस्पी होती है, बल्कि सिर्फ इसलिए कि वे अपना नाम चाहते हैं। ऐसी बातों में रखे ख़तरे को देखें, और सांसारिक समृद्धि से धोखा न खाएं। जो कुछ परमेश्वर अपने समय से देता है, वह पृथ्वी की धन-सम्पत्ति से बहुत ज़्यादा बेहतर होता है।

उत्पत्ति 12:1 में हम देखते हैं कि हालांकि अब्राहम ने कसदियों के ऊर नगर को त्यागने द्वारा एक बड़ा बलिदान किया था, फिर भी परमेश्वर ने दूसरी तरह से उसकी भरपाई कर दी थी। उसे ज़्यादा पशु और धन पाने के लिए सदोम और अमोरा में जाने की ज़रूरत नहीं थी; परमेश्वर ने अपने तरीक़े से उसकी ज़रूरतें पूरी करना शुरू कर दिया था। इसलिए हम विश्वासियों को ज्यादा धन या आमदनी के लिए संसार के तौर तरीक़े अपनाने की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि परमेश्वर स्वयं उसके तरीक़े से हमारी ज़रूरत को पूरी करता है।

पद 14 में हमें बताया गया है कि जब लूत अब्राहम से अलग हो गया, तब परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिया। परमेश्वर की आज्ञापालन करने और लूत से अलग होने के बाद, प्रभु ने अब्राहम को दूसरे निर्देश दिए। उसने उससे कहा, "अब अपनी आँख उठा और जिस स्थान पर तू है वहाँ से उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चारों तरफ दृष्टि डाल, क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को सदा के लिए दूँगा" (पद 14-15)। परमेश्वर अब अब्राहम को एक और ज़्यादा स्पष्ट रूप में यह दिखा रहा था कि उसने उसके लिए और उसके वंश के लिए कैसी विरासत रखी थी।

अक्टूबर 8

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा, तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है; तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहेगा" (भजन. 16:11)।

हमारे ध्यान और सोच-समझ की सीमाओं के बढ़ने पर ही हम आत्मिक बातों को समझने लायक़ बन पाते हैं। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में देखे, और भूमि की लम्बाई और चौड़ाई में चल-फिर कर विश्वास से अपनी विरासत का अधिकारी होने का दावा करे। असल में परमेश्वर यह कह रहा था, "मैं तुझे एक ऐसी विरासत दे रहा हूँ जिसे किसी मानवीय नाप से नहीं नापा जा सकता।"

हमारे लिए भी ऐसा ही है, कि जब हमारा आत्मिक दृष्टिकोण बढ़ता है, सिर्फ तभी हम उस विरासत को जान और नाप सकते हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है। परमेश्वर अब्राहम को यह दिखा रहा था सिर्फ उसके साथ - जीवित परमेश्वर के साथ सहभागिता करने द्वारा ही वह परमेश्वर के मार्गों को समझ सकता था। जीवित परमेश्वर के साथ समय बिताना मुश्किल होता है, क्योंकि आपकी भावनाएं और विचार आपको सताते हैं, या वे इधर-उधर भटकते रहते हैं। फिर भी जीवित परमेश्वर के साथ समय बिताना एक ऐसा समय होता है जो तरोताज़ा करता है और आशिषित समय होता है (यशा. 40:31), और जीवित और प्रेमी परमेश्वर के साथ संगति करने द्वारा आप ज़्यादा और ज़्यादा बल पाते हैं।

प्रभु अब्राहम को हेब्रोन में मिला। अब्राहम ने वहाँ एक वेदी बनाकर परमेश्वर का इस बात के लिए धन्यवाद देना शुरू किया कि उसने उसे धर्मी बनाया था। हम परमेश्वर की जितनी ज़्यादा आराधना करते हैं, हम सच्ची आराधना का उतना ही ज़्यादा आनन्द उठाते हैं। प्रभु से कहें, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ और तेरी उपस्थिति में रहूँ, इसके अलावा मेरी तुझसे कोई विनती नहीं है। मैं सिर्फ तेरी उपस्थिति में रहते हुए यह महसूस करना चाहता हूँ कि तू मेरे साथ है।" ऐसी सहभागिता आपको प्रोत्साहित करेगी, और परमेश्वर आपको यह दिखा सकेगा कि उसकी इच्छा के अनुसार वह आपसे क्या चाहता है।

अक्टूबर 9

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहता, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; लेकिन मैंने तुम्हें मित्र कहा है" (यूहन्ना 15:15)।

प्रभु यह चाहता है कि हम उसकी मित्रता का वैसे ही आनन्द मनाएं और उसके रहस्यों में उसके साथ वैसे ही सहभागी हों जैसे दो मित्र, जो एक-दूसरे के बहुत नज़दीक होते हैं, एक-दूसरे के रहस्यों में सहभागी होते हैं। ऐसा कर पाने के लिए हमें उससे खुलकर बात करना और प्रतिदिन एक स्पष्ट रूप में उसकी आवाज़ को सुनना सीखना होगा। हमारे जीवन की हरेक छोटी-बड़ी बातों में हमें उसकी अगुवाई में चलना होगा। अगर हम दिन-प्रतिदिन अपने एकान्त का समय प्रार्थनापूर्वक उसके साथ बिताएंगे, तो हम प्रभु यीशु मसीह को उसके वचन में से हमसे बात करता हुआ और हमें ऐसी बहुत सी रहस्यमयी बातें दिखाता हुआ पाएंगे जो ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छुपी हुई हैं। लेकिन उसकी दोस्ती हासिल करने के लिए उसे दिया जाने वाला हमारा जवाब सच्चा होना चाहिए।

उत्पत्ति 14 में, परमेश्वर ने अब्राहम पर अपने आपको चौथी बार मलिकिसिदक के प्रतीकात्मक स्वरूप में प्रकट किया। उस समय अब्राहम सदोम के राजा के शत्रुओं को हरा कर लौट रहा था। अब्राहम ने लूत और उसके परिवार को, और उसकी सम्पत्ति और उसके दासों को छुड़ाया (पद 16)। और उसी समय उसने सदोम के राजा और उसके लोगों को भी छुड़ाया था।

सदोम का राजा उसके लोगों और उसकी सम्पत्ति को छुड़ाने के लिए अब्राहम का बहुत आभार मान रहा था। उसने अब्राहम के पास आकर बड़ी उदारता से कहा, "लोगों को मुझे दे दे लेकिन माल-सामान तू ले ले।" अब्राहम के लिए यह बहुत बड़ा प्रलोभन हो सकता था, लेकिन परमेश्वर ने मलिकिसिदक द्वारा बोलते हुए अब्राहम को पहले ही तैयार कर दिया था।

अक्टूबर 10

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"यीशु ने उनसे कहा, 'जीवन की रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आता है वह भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है, कभी प्यासा न होगा" (यूह. 6:35)।

जैसा कि हम इब्रानियों 7:13 में देखते हैं, कि मलिकिसिदक परम्-प्रधान परमेश्वर का याजक था "जिसका कोई पिता या माता नहीं थे, कोई वंशावली नहीं थी, उसके जीवन का कोई आरम्भ और अंत नहीं था, बल्कि वह परमेश्वर के पुत्र के समान हमेशा के लिए याजक बना रहता है।" मलिकिसिदक उसके साथ रोटी और दाखमधु भी लाया था और उसने अब्राहम को आशिष दी। यही वह आत्मिक भोजन था जो अब्राहम के लिए उस समय जय पाने के लिए ज़रूरी था। इस तरह, मलिकिसिदक हमारे प्रभु यीशु मसीह का एक प्रतीकात्मक स्वरूप बना जो हमारे जीवन की रोटी और हमारा महान् महायाजक दोनों बन गया है।

यूहन्ना 6:48 से आगे, यह विचार कि प्रभु यीशु मसीह हमारे जीवन की रोटी है, सात बार दोहराया गया है। जैसे हम प्यासे होने पर पानी पीते हैं और भूखे होने पर रोटी खाते हैं, वैसे ही हम आत्मिक तौर पर भूखे और प्यासे होने पर अपने प्रभु यीशु मसीह को खा और पी सकते हैं। इस तरह हम किसी भी परीक्षा/प्रलोभन पर जय पा सकते हैं। हम सभी प्रतिदिन बहुत सी परीक्षाओं का सामना करते हैं, और परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह को हमारे रोज़ की रोटी बनाने द्वारा हमारे लिए जय पाने का एक प्रेम-भरा प्रबन्ध कर दिया है।

अब्राहम ने बहुत दूर तक शत्रु का पीछा किया था, और उनके साथ हुई मुठभेड़ और लड़ाई के बाद जब वह लौटा तब वह बहुत ही ज़्यादा थका हुआ था। अब्राहम ने सारी "धन-सम्पत्ति" लेने से इसलिए इनकार नहीं किया था क्योंकि वह साधन-सम्पन्न था और उसे किसी वस्तु की ज़रूरत नहीं थी, बल्कि उसने यह दर्शाने के लिए इनकार किया था कि उसकी सारी ज़रूरतों के पूरा होने के लिए वह सिर्फ परमेश्वर पर ही निर्भर था। यह पहला विचार है।

अक्टूबर 11

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"मेरा परमेश्वर उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी प्रत्येक ज़रूरत पूरी करेगा" (फिलिप्पियों 4:19)।

अब्राहम ने सदोम और अमोरा के राजा की भ्रष्ट वस्तुओं से अपने आपको भ्रष्ट करने से इनकार कर दिया। यही वजह थी कि उसने एक धागा, जूते का एक फीता, या रोटी का एक टुकड़ा भी लेने से इनकार कर दिया था। जब हम भूखे और प्यासे हो जाते हैं, तभी हम बहुत सी परीक्षाओं में पड़ते हैं। उस समय हमारे लिए यह भरोसा रख पाना मुश्किल हो जाता है कि परमेश्वर हमारी सभी ज़रूरतें पूरी कर सकता है।

परमेश्वर के कुछ सेवक यह कहते हैं कि वे परमेश्वर की सेवा करते हैं, लेकिन पत्रों और चित्रों द्वारा वे धन की भीख माँगते रहते हैं। इस वजह से ही वे उनके कामों की रिपोर्ट भेजते हैं। वे ज़्यादा से ज़्यादा धन पाना चाहते हैं और कभी संतुष्ट नहीं होते। इसलिए उनकी ज़रूरतें भी कभी पूरी नहीं होतीं और आत्मिक रूप में वे सूखे ही रहते हैं। लेकिन अगर आप सिर्फ परमेश्वर में भरोसा रखें तो वह आपकी सारी ज़रूरतें पूरी करेगा, यहाँ तक कि जूतों के फीतों का भी इंतज़ाम करेगा! सदोम के राजा के पास मदद लेने के लिए न जाएं, क्योंकि अनेक विश्वासियों ने इसी तरह अपना सब कुछ खोया है। कोई नौकरी या पदोन्नति पाने के लिए वे सांसारिक लोगों के पास जाते हैं और सांसारिक तौर-तरीक़े अपनाते हैं, या उनके विवाह के ख़र्च के लिए उनकी मौसियों और चाचा-मामाओं पर भरोसा रखते हैं।

सदोम के राजा के प्रस्ताव को स्वीकार करने के प्रलोभन का सामना करने के लिए अब्राहम को आत्मिक भोजन दिया गया, और उससे प्राप्त हुए बल द्वारा वह परीक्षा पर जय पा सका। इन दिनों जबकि भारत में अन्न की कमी हो रही है, तो लोग अमेरिका या दूसरे देशों में झूठी रिपोर्ट बनाकर भेज रहे हैं! यह कैसा ढोंग और दिखावा है! ऐसे लोग अपने आपको और दूसरों को धोखा देते हैं, और परमेश्वर में अपना भरोसा खो देते हैं। लेकिन अगर हम अब्राहम की तरह परमेश्वर को आदर देते हैं, तो परमेश्वर भी हमारा आदर करता है, और हमारी सारी ज़रूरतों को पूरा करता है।

अक्टूबर 12

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन देकर कहा, 'अब्राहम, मत डर, मैं तेरी ढाल और तेरा महान् प्रतिफल हूँ'" (उत्पत्ति 15:1)।

उत्पत्ति अध्याय 15 में, हम प्रभु द्वारा अब्राहम को दिया गया पाँचवाँ दर्शन पाते हैं, जिसमें प्रभु इसलिए प्रकट हुआ था कि वह अब्राहम के विश्वास को परखे। "परमेश्वर के समस्त अस्त्र-शस्त्रों" में, हमें विश्वास की ढाल दी गई है (इफ. 6:16), क्योंकि हम सिर्फ एक दृढ़ जीवित विश्वास द्वारा ही शत्रु को हरा सकते हैं। मरकुस 11:11 में, स्वयं प्रभु इसे परमेश्वर का विश्वास कहता है, जैसा कि हम कोष्ठक में पाते हैं। गलातियों 2:20 में इसे परमेश्वर के पुत्र में विश्वास कहा गया है। हमारे अन्दर एक दृढ़ विश्वास सिर्फ तभी हो सकता है जब स्वयं परमेश्वर हममें रहता है। उत्पत्ति 15 के इस दर्शन में परमेश्वर ने अब्राहम से असल में यह कहा था, "मुझमें और मेरे वचन में भरोसा रख।"

परमेश्वर ने आगे कहा, "मैं तेरी ढाल और तेरा महान् प्रतिफल हूँ।" भजन संहिता 84:11 में परमेश्वर का बयान "सूर्य और ढाल" के रूप में किया गया है। यह प्रतिफल विश्वास पर निर्भर होता है। एक असली सक्रिय विश्वास के बिना हम एक प्रतिफल नहीं पा सकते। हमें विश्वास प्रदान करने के लिए प्रभु पीड़ाओं और परीक्षाओं को इस्तेमाल करता है (1पत. 1:7)। परमेश्वर ने अब्राहम से स्पष्ट बात बोली थी, फिर भी अब्राहम के लिए विश्वास करना मुश्किल था (उत्पत्ति 15:2,3)। अब्राहम ने बहुत सालों तक इंतज़ार किया था, और यह यक़ीन हो जाने के बाद कि वह निःसंतान ही रहेगा, उसने अपने मुख्य भण्डारी को अपना वारिस बनाने के बारे में सोचना शुरू कर दिया था। परमेश्वर ने उसे इसलिए दर्शन दिया कि वह ऐसी ग़लती न करे। हमारी हदों की वजह से अक्सर हमारे अन्दर बहुत सी आशंकाएं आ जाती हैं। कभी-कभी हमारा विश्वास बहुत मज़बूत होता है, लेकिन फिर अनेक संदेह हमें सताने के लिए आ जाते हैं, और परमेश्वर अपने प्रेम और दया की वजह से बार-बार हस्तक्षेप करता रहता है।

अक्टूबर 13

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"अब्राहम ने विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया" (रोमियों 4:3)।

एक सही समय पर, स्वयं परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिया था। उसने अब्राहम को उसके तम्बू में से बाहर बुलाकर उससे कहा, "अब्राहम अपनी नज़र को ऊपर की ओर उठा। न अपनी तरफ देख, न अपनी पत्नी की तरफ देख, न अपनी हदों को देख, और न अपनी पत्नी की हदों को देख। अपने आसपास के हालातों को भी मत देख बल्कि ऊपर देख, और तब तेरा विश्वास दृढ़ हो जाएगा। ऊपर देखकर आकाश के तारों को गिन। तेरा वंश भी ऐसा ही होगा।"

आज तक कोई आकाश के तारों की संख्या नहीं जान सका है। वे इतने ज़्यादा और ऐसे विस्तृत रूप में फैले हुए हैं। परमेश्वर जानता था कि वह उनको नहीं गिन सकेगा, लेकिन उसका उद्देश्य अब्राहम के विश्वास को दृढ़ करना था; सिर्फ ऊपर देखने द्वारा ही हम विश्वास पा सकते हैं। शत्रु हमें नीचे देखने के लिए मजबूर करता है। वह हमें हमारी हदें, हमारी कमियाँ, और हमारी नाकामियाँ ही दिखाता है। हमारी नज़रें लगातार प्रभु पर लगी रहनी चाहिए, और हमें विश्वास से उसकी प्रतिज्ञाओं को थामें रहना चाहिए (पद 5-8)।

यिर्मयाह 34:18 इस भाग पर कुछ रौशनी डालता है। उन दिनों जब दो व्यक्तियों/समूहों के बीच में कोई अनुबंध होता था, तब उन्हें एक जानवर को काट कर उसके दो भाग करने होते थे। तब दोनों व्यक्तियों को पशु के दोनों भागों में से गुज़रते हुए उस अनुबंध के साथ स्वयं को वचनबद्ध करना पड़ता था, और फिर उस प्रतिज्ञा को तोड़ा नहीं जा सकता था। परमेश्वर ने भी अब्राहम के साथ स्वयं को इसी तरह वचनबद्ध किया; उसने उससे तीन पशु और दो पक्षी लाने के लिए कहा (पद 10,15,17), और उन्हें काटकर दो भाग करने के लिए कहा। फिर प्रभु ने उनके बीच में से एक धुआँ देती अंगीठी और एक जलती हुई मशाल को गुज़रने दिया, और इस तरह उसने अब्राहम के साथ एक अटूट वाचा बाँधी (पद 13-17)।

अक्टूबर 14

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बारे में वह अविश्वास से विचलित नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए वह विश्वास में दृढ़ रहा" (रोम. 4:20)।

अब्राहम परमेश्वर की वाणी को सुन रहा था, और इसलिए परमेश्वर उसे पहले से ही यह बता सका कि कैसे उसका वंश एक जाति के रूप में मिस्र में चार सौ साल तक दासत्व में रहेगा, और फिर चौथी पीढ़ी में वह देश में लौट आएगा। इस तरह परमेश्वर देश में रह रहे अमोरियों और हित्तियों को पश्चाताप् करने के लिए 400 साल का समय दे रहा था। इस समयकाल में अगर वे अपने पापों से मन नहीं फिराते, तब उनका न्याय होना था। लैव्य व्यवस्था 18:23-25 में वहाँ रहने वाली जातियों की दुष्टता का बयान है। जब इस्राएल की संतान मिस्र में से लौटी, तब वहाँ ऐसी ही दुष्टता थी। परमेश्वर ने वहाँ रहने वाली जातियों के मन-फिराव के लिए 400 साल तक इंतज़ार किया, लेकिन क्योंकि उन्होंने पश्चाताप् नहीं किया, इसलिए उनका न्याय करना ज़रूरी हो गया था। परमेश्वर ने इस्राएल की संतान से उन नगरों और उनमें रहने वालों को पूरी तरह नाश कर देने के लिए कहा था।

आज प्रभु यीशु मसीह ने अपने ही लहू के द्वारा हमारे साथ एक वाचा बांधी है, और उस वाचा द्वारा ही हम उसके उत्तराधिकार में सह-उत्तराधिकारी हुए हैं। और अब हमें इस्तेमाल किया जाएगा कि हमारे द्वारा दूसरी शक्तियों का न्याय किया जाए (1कुर. 6:2,3)। ऐसा विशेषाधिकार पाने के लिए हमें एक दृढ़ सक्रिय विश्वास दिए जाने की ज़रूरत होती है, ऐसा विश्वास जो संदेह पर जयवंत होता है, और जब प्रभु हमसे बात करता है तो वह सुनता और आज्ञापालन करता है।

अक्टूबर 15

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मृतक समान शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा को जानते हुए भी विश्वास में निर्बल न हुआ... और वह पूरी तरह आश्वस्त था कि जिसने उससे प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है" (रोमियों. 4:19,21)।

अब्राहम को दिए अपने हरेक दर्शन में, परमेश्वर ने हर बार अपनी ईश्वरीय मित्रता के दस-गुणा रहस्यों के बारे में थोड़ा-थोड़ा बताया और उसे एक प्रकाशन के बाद दूसरा प्रकाशन दिया। अगर आपके घर में सीढ़िया हों, तो आप उनके ऊपर से कूदते-फाँदते नहीं बल्कि एक सीढ़ी के बाद दूसरी सीढ़ी से जाएंगे। ऐसा ही अब्राहम के साथ था। परमेश्वर ने उत्पत्ति 12 में उसे दो बार दर्शन दिया, और फिर अध्याय 13,14,15 में दर्शन दिया। अध्याय 17 में अब्राहम को दिए गए छठे दर्शन का बयान किया गया है जब वह 99 साल की उम्र पार कर चुका था और इस योग्य नहीं था कि वह एक पुत्र उत्पन्न कर सके। उसकी पत्नी और वह दोनों ही सूखे हुए पेड़ की तरह हो गए थे। उस समय उसे यह विश्वास करने की ज़रूरत थी कि हालांकि वह और उसकी पत्नी दोनों ही बूढ़े हो चुके थे, फिर भी परमेश्वर उसकी प्रतिज्ञा को पूरा कर सकता है (रोमियों. 4:19-24)।

यही वह समय था जब अब्राहम ने सच्चा विश्वास पाया, और उसमें ऐसा विश्वास पाने के लिए ही परमेश्वर 25 साल से इंतज़ार कर रहा था। परमेश्वर ने जब उसे पहले दर्शन दिया था, तब उसमें विश्वास था, लेकिन वह एक दृढ़ विश्वास नहीं था (इब्रा. 11:8)। उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था और तुरन्त ही अपना देश और कुटुम्बियों को छोड़कर एक अनजाने और नए देश को चला गया था, और हालांकि इस तरह आज्ञापालन करने में काफी बलिदान और विश्वास की ज़रूरत थी, फिर भी परमेश्वर संतुष्ट नहीं था। वह एक क़दम के बाद दूसरे क़दम पर अब्राहम को एक दृढ़ विश्वास में ले जा रहा था, और तब तक वह और उसकी पत्नी संतान उत्पन्न करने के लिए बहुत बूढ़े हो चुके थे। अब जब तक परमेश्वर उनके शरीरों में नया जीवन नहीं डालता, तब तक उनका कोई बच्चा नहीं हो सकता था। यह विश्वास का वह महान् रहस्य था जिसके द्वारा उन्हें जी-उठने की सामर्थ्य के बारे में आंशिक रूप में कुछ समझ आया था; और उसी सामर्थ्य के द्वारा हम भी अपनी परीक्षाओं पर जय पा सकते हैं।

अक्टूबर 16

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"कि तुम्हारा विश्वास, जो आग में ताए हुए सोने से भी ज़्यादा मूल्यवान है, परखा जाकर यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, महिमा और आदर का कारण ठहरे" (1 पत. 1:7)।

हम प्रेरित पौलुस को फिलिप्पी में बड़ी लालसा के साथ यह कहता हुआ पाते हैं, "कि मैं उसको और उसके जी-उठने की सामर्थ्य को जानूँ।" हालांकि उसने अपनी सेवकाई के द्वारा बीते सालों में अनेक चिन्ह्-चमत्कार होते हुए देखे थे, और हालांकि परमेश्वर ने उसमें से सामर्थ्य के साथ काम किया था, फिर भी यहाँ वह अपनी वृद्धावस्था में कह रहा था, "जो बातें मेरे लाभ की थीं उन्हें मैंने हानि समझ लिया है... कि मैं उसके जी-उठने की सामर्थ्य को जानूँ," जो विश्वासियों के लिए उपलब्ध सबसे श्रेष्ठ सामर्थ्य है। अनेक विश्वासी अनेक वर्षों तक अपने जीवनों में सामर्थ्य पाने के लिए युक्तियाँ करते हैं और योजनाएं बनाते हैं।

वे सोचते हैं कि स्वप्न देखने, या कुछ ख़ास तरह के अनुभव होने द्वारा वे सामर्थ्य पा सकते हैं। लेकिन वे फिर भी निर्बल दशा में ही रहते हैं। वे नहीं जानते कि उनके लिए जी-उठने की सामर्थ्य उपलब्ध है। अगर हम यह विश्वास करें कि प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के लिए हमारी जगह मरा है, और यह भी विश्वास करें कि हमें धर्मी ठहराने के लिए वह जी-उठा कि फिर उसके पवित्र-आत्मा द्वारा हममें वास करे, तब हम हरेक स्थिति, हरेक परीक्षा और हरेक ज़रूरत के लिए विश्वास से दिन-प्रतिदिन जी-उठने की सामर्थ्य पा सकते हैं।

हमें ऐसा विश्वास देने के लिए प्रभु अनेक पीड़ादायक स्थितियों और परीक्षाओं में से ले जाता है। हम 1पतरस 1:7,11 में यह देखते हैं। सोने को आग से शुद्ध करना पड़ता है; वह साबुन और पानी से साफ नहीं हो सकता। सोने को बार-बार शुद्ध करने वाली आग में तब तक डाला जाता है जब तक उसकी हरेक अशुद्धता जल कर भस्म नहीं हो जाती। इसी तरह, हमें भी हमारी शंकाओं और अविश्वास से छुटकारा दिलाने के लिए शुद्ध करने वाली आग में से गुज़रना पड़ता है।

अक्टूबर 17

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"जिससे कि मैं उसको और उसके जी-उठने की सामर्थ्य को और उसके साथ दु:खों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ कि उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ" (फिलि. 3:10)।

जब तक हममें दिन-प्रतिदिन उसके जी-उठने की सामर्थ्य को प्राप्त करने वाला विश्वास नहीं होता, प्रभु हमसे संतुष्ट नहीं होता। पौलुस ने गलातियों 2:20 में कहा, "मसीह मुझ में जीवित है," क्योंकि वह जीवित मसीह है जो उसके जी-उठने की सामर्थ्य में विश्वास द्वारा हममें रहता है कि प्रतिदिन हमारी परीक्षाओं पर जय पाए।

हालांकि इफिसियों के विश्वासी पौलुस, अपुल्लोस और तीमुथियुस द्वारा सिखाए गए थे, फिर भी पौलुस ने उनके लिए प्रार्थना की (इफि. 1:16-20) कि वे परमेश्वर की असीम महान् सामर्थ्य को जानें, वही सामर्थ्य जिसे उसने मसीह में तब पूरा किया जब उसने उसे मृतकों में से जिला उठाया। इफिसियों 1:3 कहता है, "हमारे प्रभु यीशु का पिता धन्य हो जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशिषों से आशीषित किया है।" ऐसी आशिष पाने के लिए हमें यह मालूम होना चाहिए कि हम उसके जी-उठने की सामर्थ्य को अपने अन्दर कैसे ग्रहण कर सकते हैं, और हम उस ज्ञान और विश्वास को हासिल कर सकें, इसके लिए प्रभु हमें परीक्षाओं, पीड़ाओं, तकलीफों और मुश्किलों में से लेकर गुज़रेगा।

जैसे अब्राहम ने परमेश्वर का दस बार दर्शन पाया था, वैसे ही प्रभु जी उठने के बाद उसके शिष्यों को दस बार मिला था। पहले वह कब्र पर मरियम को मिला, फिर शिष्यों को, पतरस को, फिर इम्माउस के मार्ग में जा रहे शिष्यों को, और शाम को ऊपरी कक्ष में शिष्यों को, फिर 500 की भीड़ को, फिर याकूब को, फिर थोमा को, फिर गलील की झील पर, और अंत में बैतनिय्याह में जहाँ से वह स्वर्ग चला गया।

अक्टूबर 18

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"क्या प्रभु के लिए कुछ भी असम्भव है?" उत्पत्ति 18:14

जब हम इन दर्शनों का एक-साथ अध्ययन करते हैं तो हमें बहुत मदद मिलती है- अर्थात् परमेश्वर के अब्राहम को दिए गए दर्शन और प्रभु को उसके शिष्यों को दिए गए दर्शन। उत्पत्ति 17 में प्रभु ने कहा, "मैं सर्वशक्तिशाली परमेश्वर हूँ।" यह उसने इसलिए कहा कि अब्राहम परमेश्वर की महान् सामर्थ्य का आनन्द उठा सके। "मैं सर्वशक्तिशाली परमेश्वर हूँ, मेरे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।" परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है; वह कुछ भी कर सकता है। प्रेम और दया का परमेश्वर यह चाहता है कि हममें ऐसा विश्वास हो जो मसीह के जी-उठने की सामर्थ्य का अनुभव कर सके और उसका आनन्द उठा सके।

परमेश्वर मानो यह कह रहा था: "मैं सर्वशक्तिशाली परमेश्वर हूँ और मैं तुझ में सामर्थ्य उण्डेलूँगा" (पद 2 व 6)। अब्राहम ज़्यादा-से-ज़्यादा एक पुत्र माँग रहा था। लेकिन प्रभु ने उससे कहा, "मैं तुझे बहुत फलवंत करूँगा, तुझ में से जातियाँ उत्पन्न करूँगा, और तुझ में से राजा निकलेंगे।" इस अनुभव के अलावा अब्राहम और किसी भी तरह यह नहीं जान सकता था कि उसके लिए परमेश्वर के मन में क्या है। इसी तरह हमारी पीड़ाओं में भी हम यह नहीं जान पाएंगे कि हमारे लिए परमेश्वर के मन में क्या है और वह हमें क्या देना चाहता है। हम सिर्फ विश्वास द्वारा ही अपनी आशिषों को हासिल कर सकते हैं। शैतान बार-बार हमारे विश्वास को कमज़ोर करना चाहता है। परमेश्वर में भरोसा रखने की बजाए हम मनुष्यों से ही सब बातों की अपेक्षा रखते हैं, और यही वजह है कि हम परमेश्वर के सेवकों को हर जगह पीड़ा में पाते हैं।

अक्टूबर 19

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"उसकी महिमामय शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवंत किए गए" (कुलु. 1:11)।

हमें यह साबित करने की ज़रूरत होती है कि हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिशाली परमेश्वर है। हम जिसमें विश्वास करते हैं और जिसका प्रचार करते हैं वह एक जीवित मसीह है, और वह हमें सब कुछ देने के लिए तैयार है। परमेश्वर क्योंकि अब्राहम के अन्दर जी-उठने की सामर्थ्य प्रकट करना चाहता था, इसलिए उसने उसके साथ एक वाचा बाँधी (पद 11)। कुलुस्सियों 1:11 कहता है, "सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवंत।" अब्राहम को मानवीय सामर्थ्य से संतान प्राप्त नहीं हुई थी क्योंकि वह और उसकी पत्नी बहुत बूढ़े थे। परमेश्वर को उन दोनों की देह में एक नया जीवन उण्डेलने की ज़रूरत थी। यह जी-उठने की सामर्थ्य है, ईश्वरीय जीवन की मृत्यु पर जय पाने वाली सामर्थ्य। उस सामर्थ्य के द्वारा ही वे एक बच्चा पा सके थे। विश्वास से हम इस सामर्थ्य को तब हासिल करते हैं जब हमारी हरेक परीक्षा, प्रलोभन और परख के लिए हम इसे ग्रहण करते हैं। वही प्रभु जो हमारे लिए मरा था, और जो हममें रहने के लिए आता है, हमें इस सामर्थ्य को दे सकता है।

हम सभी की समस्याएं एक-जैसी ही होती हैं। शत्रु बहुत से हालातों में हमारे मनों में आशंकाएं भरता रहता है, लेकिन परमेश्वर प्रेमपूर्वक हमारी ताड़ना और हमारी मदद करता रहता है। परमेश्वर हमारी मानवीय सीमाओं को जानता है (उत्पत्ति 17:17), इसलिए हमें एक दृढ़ विश्वास देने के लिए, और हमारे भय और शंकाओं को दूर करने के लिए, वह बार-बार अपने संदेश-वाहकों को हमारे पास भेजता है (भजन. 103:4)।

अक्टूबर 20

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"और जब उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, तो देखा कि तीन पुरुष सामने खड़े हैं। उन्हें देखकर वह उनसे मिलने को तम्बू के द्वार से दौड़ा और भूमि पर गिरकर उसने दण्डवत् किया" (उत्पत्ति 18:2)।

उत्पत्ति 18:1 में प्रभु ने अब्राहम को सातवीं बार दर्शन दिया, और इस बार वह उससे मम्रे के मैदानी क्षेत्र में मिला। उत्पत्ति 13:18 के अनुसार मम्रे हेब्रोन में है, और हेब्रोन का अर्थ *सहभागिता* है। अब्राहम ने परमेश्वर के साथ इस सहभागिता के अपने विशेषाधिकार का आनन्द मनाना सीख लिया था। अध्याय 18:1 में, हम अब्राहम को बड़ी अपेक्षा के साथ उसके तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ पाते हैं। वह बहुत खुश नहीं है, लेकिन वह कुछ उम्मीद कर रहा है। उसमें कुछ भावी अपेक्षा थी। आप जब आत्मिक रूप में बढ़ेंगे, तब आपको आने वाली घटनाओं का अंदेशा होने लगेगा। आपके अंतर्मन में ऐसा कुछ होगा जो आपको सचेत करते हुए एक अपेक्षा के मनोभाव में ले जाएगा। इस तरह हम पहले से ही तैयार कर दिए जाते हैं।

परमेश्वर ने अब्राहम से अकेले में व्यक्तिगत बातचीत शुरू की, और हालांकि प्रभु ने अपने आपको एक स्वर्गदूत के रूप में छुपा रखा था, फिर भी अब्राहम ने जान लिया कि वह परमेश्वर से बात कर रहा था। हालांकि वे सामान्य मनुष्यों की तरह आए थे, अब्राहम ने बड़े आनन्द के साथ उनका स्वागत किया। उत्पत्ति 18:6 में, हम देख सकते हैं कि अब्राहम कितने आनन्द के साथ झुण्ड के पास दौड़ा गया और एक अच्छा सा नरम बछड़ा ले आया। उसने अपनी पत्नी से तीन पसेरी मैदा लेकर गूँधने के लिए कहा। एक पसेरी आटा 10 लोगों के लिए काफी होता है, लेकिन उन्होंने लगभग 30 लोगों का खाना बना दिया। हालांकि उसके मेहमानों की संख्या तीन ही थी, लेकिन उसका आनन्द ऐसी भरपूरी से उमड़ और छलक रहा था कि उसने पूरे परिवार को उसमें सहभागी करना चाहा। वह जो कुछ भी तैयार कर सकता था, उसने वह भरपूरी से किया, और वे उसके पास बहुत आनन्द के साथ आए।

अक्टूबर 21

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"अतिथि-सत्कार करना न भूलो, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने ही स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया है" (इब्रा. 13:2)।

वे दो पुरुष लूत के सामने हालांकि स्वर्गदूतों के रूप में आए थे, फिर भी उसने उनका स्वागत कैसे गुनगुने तौर पर किया था। लूत यह जानता था कि वे पुरुष स्वर्गदूत थे, फिर भी उनका स्वागत करते समय वह उसकी अपनी जगह पर ही खड़ा रहा था। और हालांकि उसने उन्हें पैर धोने के लिए पानी दिया था, फिर भी उसने उन्हें खाने का आमंत्रण नहीं दिया था। उसने स्वर्गदूतों से कहा, "यहाँ रात बिताओ और फिर सुबह जल्दी उठकर अपने मार्ग में चले जाना" (उत्पत्ति 19:2)।

लेकिन स्वर्गदूत ने कहा, "नहीं, हम चौक में ही रात बिताएंगे" (उत्पत्ति 19:2)। लूत ने क्योंकि बड़े अनमने ढंग से उनका स्वागत किया था, इसलिए वे सारी रात चौक में ही रहने के लिए तैयार थे। वे जानते थे कि लूत की पत्नी और उसके बच्चे उसके साथ एक-मन नहीं थे, इसलिए स्वर्गदूत उसके साथ उसके घर में नहीं जाना चाहते थे, और इसलिए लूत को उनसे बहुत विनती करनी पड़ी थी।

हम पढ़ते हैं कि स्वयं लूत ने उनके लिए "अख़मीरी रोटियाँ बनाई और उन्होंने खाई।" लूत ने सदोम के बिलकुल नज़दीक रहने का चुनाव किया था। इसका नतीजा यह हुआ कि उसका अपना परिवार ही सांसारिक भोग-विलास में पड़ गया था। अनेक विश्वासी अपना हर्ष और आनन्द इसलिए खो देते हैं क्योंकि वे सांसारिक सम्मान, धन-सम्पत्ति और ढोंग-दिखावे से आकर्षित होते हैं। अब्राहम ने उन अतिथियों को परमेश्वर के संदेशवाहकों के रूप में ग्रहण किया था। पहले उसने उन्हें अनजान लोग समझा था। हमारा भी यही मनोभाव होना चाहिए; कि उसके नाम में बड़े आनन्द के साथ अनजान लोगों को भी स्वीकार करें।

अक्टूबर 22

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"और परमेश्वर ने कहा, 'जो कुछ मैं करने पर हूँ, क्या उसे अब्राहम से छुपाए रखूँ?" (उत्पत्ति 18:17)।

प्रभु ने अब्राहम के विश्वास को दृढ़ करने के लिए अपने आपको उस पर प्रकट किया था। प्रभु ने कहा, "तेरी पत्नी सारा से एक पुत्र होगा।" यह सुनकर सारा मन-ही-मन हँसी और यह बोली, "मैं बूढ़ी हो गई हूँ, और मेरा स्वामी भी तो अब बूढ़ा हो गया है, तो क्या मुझे यह सुख मिलेगा?" प्रभु ने कहा, "सारा क्यों हँसी?" परमेश्वर पहले ही यह जानता था कि उनके मन में संदेह आ जाएगा, इसलिए वह प्रेमपूर्वक उनके संदेह दूर करने के लिए आया था। उत्पत्ति 18:16 में, अब्राहम उन पुरुषों के साथ-साथ चलने लगा। तब उनमें से दो पुरुष सदोम की दिशा में आगे बढ़ गए और प्रभु अब्राहम से व्यक्तिगत रूप में बात करने के लिए वहीं रहा। उसने कहा, "अब्राहम मेरा मित्र है। मैं उसे जानता हूँ और मैं उससे कुछ छुपा कर नहीं रखना चाहता। मैंने उसे देखा है कि वह कैसे अपने परिवार की देखभाल करता है। अब मैं उसे अपने मन का भेद बताऊँगा।

अब सदोम और अमोरा के लोगों का न्याय करने का मेरा समय आ गया है।" स्वर्गदूतों के सदोम और अमोरा की तरफ चले जाने के बाद, अब्राहम प्रभु के सामने खड़ा रहा, और प्रभु परमेश्वर ने अब्राहम से व्यक्तिगत बातचीत की। अब्राहम के मित्र के रूप में उसने उसके साथ खुलकर बातचीत की। प्रभु ने अब्राहम से बात करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को नहीं भेजा बल्कि वह व्यक्तिगत रूप में स्वयं आया। परमेश्वर यहाँ यह कह रहा है, "अब्राहम के साथ मैं स्वयं बात करूँगा। मुझे एक ज़रूरी मामले में उससे बातचीत करनी है।"

अक्टूबर 23

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, अगर उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो" (यूह. 15:14)।

यह हमारा कितना बड़ा विशेषाधिकार है। उसका मित्र होना कितने बड़े सम्मान की बात है। ज़रा सोचें, कि प्रभु स्वयं हमसे बात करने के लिए आता है। लेकिन यह ज़रूरी है कि पहले हम परखे जाकर इस विशेषाधिकार के योग्य माने जाएं। उत्पत्ति 18:19 में प्रभु कहता है, "मैं जानता हूँ कि वह अपने बच्चों और अपने घराने को आज्ञा देगा कि वे धार्मिकता और न्याय के काम करें।" इसका अर्थ है कि प्रभु अब्राहम और उसके घराने को एक लम्बे समय से देख रहा था, और उसने यह देखा था कि कैसे अब्राहम विश्वासयोग्यता के साथ अपने पूरे घराने को परमेश्वर का संदेश देता रहा था। हरेक परिवार को नियमित रूप में पारिवारिक प्रार्थना करनी चाहिए।

अगर हम एक नियमित और विश्वासयोग्य रूप में अपने बच्चों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देंगे, तो हम भी परमेश्वर के मित्र बन सकते हैं, और जो स्वर्गदूतों से छुपा हुआ है, वह हम पर प्रकट किया जाएगा। जब परमेश्वर ने होने वाली घटनाओं के बारे में अब्राहम को बताया तो अब्राहम ने सदोम और अमोरा के लोगों के लिए मध्यस्थता की। परमेश्वर के मित्र के रूप में उसने साहस प्राप्त किया। हम भी दूसरों के लिए मध्यस्थता करने का साहस और आज़ादी और उन लोगों के लिए अधिकारपूर्वक कृपा और दया पा सकते हैं जो अंधकार में हैं। इस तरह हम परमेश्वर के सहकर्मी बन सकते हैं (पद 33)।

प्रभु लूत के साथ अपने रहस्य नहीं बाँटना चाहता था, क्योंकि लूत ने सदोम और अमोरा के पास रहने का फैसला करने के द्वारा प्रभु को शोकित किया था। अगर लूत की तरह हममें से भी कोई सांसारिक भोग-विलास और सम्मान चाहेगा, तो प्रभु हमारे पास नहीं आएगा और न ही अपने रहस्यों को हम पर प्रकट करेगा। यह बातें हमारे लिए एक चेतावनी के रूप में बनी रहें, कि ऐसा न हो कि इस संसार की बातें हमारे लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से बढ़कर हो जाएं।

अक्टूबर 24

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र तो मुक्त स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी न होगा" (गल. 4:30)।

जब सारा ने यह देखा कि इश्माएल इसहाक़ का ठट्ठा उड़ा रहा है, तो उसने अब्राहम से कहा, "इस दासी को इसके पुत्र सहित निकाल दे, क्योंकि इस दासी के पुत्र का मेरे पुत्र इसहाक़ के साथ कोई उत्तराधिकार न होगा।" यह बात अब्राहम के लिए पीड़ादायक थी। इश्माएल के प्रति अब्राहम के अन्दर एक प्राकृतिक प्रेम था और इस वजह से इन शब्दों से उसे चोट लगी और वह आहत हुआ। तब परमेश्वर ने उसे आठवीं बार दर्शन दिया। अध्याय 21:10 में हम अब्राहम को मानवीय भावनाओं के वशीभूत देखते हैं। जब सारा ने उसका पीड़ादायक पाठ सीख लिया, तब उसने कहा, "दासी और उसके पुत्र को निकाल दे।" मसीही कहलाए जाने वाले सभी लोगों की संतों के साथ ज्योति में विरासत नहीं है। धार्मिक मसीही, वे बाहर से चाहे कितने भी अच्छे क्यों न नज़र आएं, उनका इस विरासत में बिलकुल कोई भाग नहीं है। अपने उद्धार के लिए वे स्वयं अपनी धार्मिकता पर भरोसा रखते हैं।

हालांकि अब्राहम इश्माएल से बहुत प्रेम करता था, फिर भी इश्माएल का परमेश्वर के राज्य में कोई भाग नहीं था। इश्माएल शारीरिक रीति से पैदा हुआ था, जबकि इसहाक़ का जन्म आत्मिक रीति से हुआ था। इसहाक़ के जन्म से पहले परमेश्वर ने अब्राहम की देह में नया जीवन डाला था। इसलिए बाइबल में इसहाक़ जी-उठने की सामर्थ्य का एक प्रतीकात्मक स्वरूप है। जब तक हम जी-उठने की सामर्थ्य का अनुभव नहीं करते, तब तक हमारा परमेश्वर के राज्य में कोई भाग नहीं है। आपको यह सुनिश्चित कर लेना होगा कि आप कौन से समूह में हैं - इश्माएल के या इसहाक़ के।

अक्टूबर 25

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"यीशु ने उससे कहा, 'तुझ में अब भी एक बात की कमी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेचकर ग़रीबों में बाँट दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और तू आकर मेरे पीछे चल।"
मरकुस 10:21,22

सुसमाचार-प्रचार का अभियान चलाने के लिए परमेश्वर का एक जन किसी जगह में ठहरा हुआ था। वहाँ वह एक अच्छे मसीही परिवार के साथ रह रहा था। जब वह उस जगह से जाने लगा तो उसने यह प्रार्थना की, "प्रभु, इस परिवार के पुरुष व स्त्री के लिए मुझे एक संदेश दे। इन्होंने मेरे साथ बड़ी भलाई की है, इसलिए मुझे एक अच्छा शब्द दे।" प्रभु ने उसे संदेश दिया, और वह यही था, "तुममें अब भी एक बात की कमी है।" परमेश्वर के जन ने कहा, "प्रभु, इन्होंने मेरे साथ बड़ी भलाई की है, मैं इन्हें ऐसा संदेश कैसे दे सकता हूँ?" उसके बार-बार प्रार्थना करने पर भी उसे वही संदेश दिया गया। "तुझ में अभी तक इस एक बात की कमी है" (लूका 18:22)।

उसमें यह साहस नहीं था कि वह उसका अतिथि-सत्कार करने वाले पति और पत्नी के मुँह पर उन्हें यह बोल पाता, इसलिए उसने उस संदेश को लिखकर उसे खिड़की के पर्दे में लगा दिया। फिर उसने नीचे जाकर उन्हें धन्यवाद दिया और चला गया। उसके जाने के बाद घर की स्त्री ऊपर गई और उसे खिड़की के पर्दे के साथ लगा हुआ वह काग़ज मिला। उसने उन शब्दों को पढ़ा, "तुझ में अभी तक इस एक बात की कमी है," और उसने अपने पति को बुलाया, "परमेश्वर के जन की तरफ से हमारे लिए ये विदाई-वचन है" उसने कहा। तब वे दोनों खिड़की के पास घुटने टिका कर प्रार्थना करने लगे, "हे परमेश्वर, हमें यह दिखा कि तेरे दास द्वारा हमारे लिए दिए गए इस वचन का क्या अर्थ है।"

जब उन्होंने इस तरह प्रार्थना की, तब परमेश्वर ने उन्हें उसका अर्थ बताया, कि कैसे उस दिन तक उनका नया जन्म नहीं हुआ था, बल्कि धर्मी ठहराए जाने के लिए वे अब तक अपने कामों पर ही निर्भर थे। उन्होंने अब तक प्रभु यीशु को उनके मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करने का अनुभव ही नहीं पाया था।

अक्टूबर 26

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"तब उसकी पत्नी ने उससे कहा, 'क्या तू अब भी खराई पर स्थिर है? परमेश्वर की निन्दा कर और मर जा।' लेकिन उसने उससे कहा, 'तू मूर्ख स्त्री के समान बातें करती हैं। क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं दु:ख न लें?'" (अय्यूब 2:9,10)।

उस समय अब्राहम एक बड़े आत्मिक ख़तरे में पड़ गया था, क्योंकि इश्माएल के मामले में वह उसके मानवीय मनोभाव के अनुसार सोच रहा था। तब परमेश्वर ने दर्शन देकर उससे कहा कि वह उसकी पत्नी की बात मान ले क्योंकि उसकी बात महत्वपूर्ण थी। अनेक माता-पिता, पत्नियाँ, पति, और बच्चे परमेश्वर की आज्ञा का इसलिए उल्लंघन करते हैं क्योंकि वे किसी दूसरे को प्रेम करते हैं। तब यह ज़रूरी हो जाता है कि उस मानवीय प्रेम को परमेश्वर के प्रेम की अधीनता में लाया जाए। हालांकि यह अधीनता बहुत पीड़ादायक होती है लेकिन इसमें बड़ी सुरक्षा होती है। अब्राहम को उसके पुत्र को उससे दूर भेज देना पड़ा और अगर अब्राहम ने आज्ञापालन न किया होता तो परमेश्वर उसे दर्शन न देता। हालांकि उस आज्ञा का पालन करना अब्राहम के लिए बहुत पीड़ादायक था, फिर भी उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी। कई बार परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की आज्ञापालन करना बहुत पीड़ादायक होता है, लेकिन अब्राहम परमेश्वर की ताड़ना सहने के लिए तैयार था।

अध्याय 21 में परमेश्वर द्वारा अपने आपको अब्राहम पर प्रकट करने का उद्देश्य हमें यह दिखाना था कि हम हर समय कैसे शरीर के अनुसार नहीं बल्कि पवित्र-आत्मा के अनुसार चल सकते हैं।

अगर आप परमेश्वर के मित्र होना चाहते हैं, तो अपने पिता, माता, भाई, बहन, बच्चे, मित्र या पत्नी, किसी को भी परमेश्वर की आज्ञा के पालन के बीच में न आने दें। शत्रु बहुत चालाकी से हमारे स्नेह के इन पात्रों को आपके सामने लाएगा, और फिर यह हो सकता है कि आपको परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से रोकने के लिए आपकी पत्नी या बच्चा विलाप करने लगे।

अक्टूबर 27

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"और उसने कहा, 'अपने पुत्र, हाँ, अपने एकलौते पुत्र इसहाक़ को, जिससे तू प्रेम करता है साथ लेकर मोरिय्याह देश को जा, और वहाँ एक पहाड़ पर जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा, उसे होमबलि करके चढ़ा। और अब्राहम बड़े सवेरे उठा, और उस स्थान के लिए प्रस्थान किया जिसके बारे में परमेश्वर ने उससे कहा था।"
उत्पत्ति 22:2-3

मुझे ईमानदारी से बताएं, क्या आपने उस समय परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया था जब आपके किसी प्रियजन ने यह जानकर रोना शुरू कर दिया था कि आप परमेश्वर की आज्ञापालन करना चाह रहे हैं? इस वजह से ही अनेक लोगों ने सेवकाई के लिए परमेश्वर की बुलाहट का आज्ञापालन नहीं किया है। इसी तरह अनेक लोगों ने वहाँ जाने से इनकार कर दिया है जहाँ परमेश्वर ने उन्हें भेजना चाहा था। कुछ लोगों ने बपतिस्मा लेने से इनकार किया है। दूसरों ने परमेश्वर को वह नहीं दिया जो उसने उनसे माँगा था। प्रियजनों के आँसुओं की वजह से इन आज्ञाओं को तोड़ा गया था, और तब प्रभु को आपसे बात करने और आपको डाँटने की ज़रूरत पड़ी थी। एक व्यक्ति चाहे कितना भी प्रेम करने वाला या प्रेम करने लायक़ हो, लेकिन आप परमेश्वर से ज़्यादा किसी से प्रेम नहीं कर सकते। परमेश्वर का वचन कहता है, "जो मुझसे ज़्यादा अपने पिता या माता या पति या पत्नी से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है।"

उस परीक्षा में सफल होने के बाद, अब्राहम फिर दूसरी परीक्षा के लिए तैयार हो सका। हाजिरा और इश्माएल के मामले में अब्राहम ग़लती करने के बिन्दु पर पहुँच गया था, लेकिन परमेश्वर ने उससे बात की और उसने आज्ञा का पालन किया। फिर अध्याय 22 में एक बहुत कठोर परीक्षा आई। और तब परमेश्वर ने उसे नौवीं बार दर्शन दिया, जो अध्याय 22 की घटना का ही वर्ष था। इसहाक़ के मामले में सारा की भी परीक्षा थी। इस वजह से अब्राहम ने सारा को यह नहीं बताया कि परमेश्वर ने इसहाक़ को माँग लिया है।

अब्राहम का यह अनुभव था कि सारा को कुछ ख़ास तरह की बातें बता देने में ख़तरा होता है। वह जानता था कि अगर उसने सारा को यह बता दिया कि परमेश्वर ने इसहाक़ को होमबलि के रूप में माँग लिया है, तो वह फौरन आँसू बहाते हुए यह कहने लगेगी, "हे मेरे बेटे इसहाक़, मेरे एकलौते बेटे, परमेश्वर हमसे कभी ऐसी बात की माँग नहीं कर सकता।" इसलिए, पवित्र-आत्मा के मार्गदर्शन में, अब्राहम सारा को कुछ बताए बिना ही इसहाक़ को लेकर चला गया।

अक्टूबर 28

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

“और तेरे वंशजों के कारण पृथ्वी की सारी जातियाँ आशिष पाएंगी, क्योंकि तूने मेरी आज्ञा का पालन किया है” (उत्पत्ति 22:18)।

अध्याय 22 में वह मेंढ़ा स्वयं परमेश्वर द्वारा पहुँचाया गया था। उस मेंढ़े के भाग जाने का कोई ख़तरा नहीं था। परमेश्वर उसे वहाँ लाया था, और अब्राहम ने उसके सींगों से उसे एक झाड़ी में फँसा हुआ पाया। परमेश्वर ने अब्राहम से मेंढ़े को बलि करने के लिए क्यों कहा था? उस मेंढ़े के झाड़ी में फँसे होने के पीछे एक उद्देश्य था। परमेश्वर उसके द्वारा मानो अब्राहम से यह कह रहा था, “अब्राहम, तूने मेरी आज्ञा का पूरा पालन किया है। कोई सवाल किए बिना और कोई झिझक बिना तूने अपने पुत्र को वेदी पर भेंट के रूप में अर्पित किया है। इसलिए जैसे यह मेंढ़ा झाड़ी में फँसा है, वैसे ही मैं तुझमें फँस गया हूँ और तेरे साथ बँध गया हूँ। अब अगर तू मुझे आज्ञा देगा तो मैं तेरी आज्ञा का पालन करूँगा।” यह कैसा रहस्य है! परमेश्वर अब्राहम के साथ बंध गया था! आप शायद यह नहीं समझते कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन आपके लिए कितने बड़े सौभाग्य की बात है, कि वह आपका अधिकार है। जब हम पूरे हृदय से परमेश्वर की आज्ञापालन करते हैं, तो हम परमेश्वर को आज्ञा दे सकते हैं। “मुझे आज्ञा दो,” परमेश्वर यशायाह 45:11 में कहता है। तब वह आपकी सुनेगा।

परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दिया गया यह दसवाँ और अंतिम दर्शन था। और इस बार यह देखें कि परमेश्वर ने अब्राहम को कैसी आशिष दी थी। “तूने क्योंकि मेरी वाणी को सुना है और मेरी आज्ञा का पालन किया है, इसलिए अब मैं तेरे साथ बँध गया हूँ, और अब तू मुझे आज्ञा दे सकता है। अब मैं तेरी सेवा में हाज़िर हूँ।” यह एक स्वर्गीय रहस्य है। जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, हम परमेश्वर के पूरे राज्य के योग्य हो जाते हैं (उत्पत्ति 22:17 अंतिम भाग): “और तेरे वंशज अपने शत्रुओं के नगरों पर अधिकार कर लेंगे।” परमेश्वर हमें पूरा राज्य, शत्रुओं पर पूरी जय, और उसके सारे कामों पर पूरा अधिकार देना चाहता है। “हे छोटे झुण्ड, मत डर, क्योंकि पिता ने प्रसन्नतापूर्वक तुझे राज्य देना चाहा है।”

अक्टूबर 29

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

“पर तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों में जाकर मेरे पुत्र इसहाक़ के लिए पत्नी ले आना” (उत्पत्ति 24:4)।

अब्राहम ने जब अपने सेवक को अपने पुत्र के लिए एक पत्नी लाने के लिए कहा, तब उसने उसे एक कड़ी चेतावनी दी (उत्पत्ति 24:3)। “मैं तुझे प्रभु अर्थात् स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर की शपथ खिलाता हूँ कि जिन कनानियों के बीच में मैं रहता हूँ, उनकी बेटियों में से मेरे बेटे के लिए तू कोई पत्नी नहीं चुनेगा।”

विश्वासियों के लिए यह पहली चेतावनी है। आप अविश्वासियों के साथ असमान जुए में नहीं जुड़ सकते (2 कुरि. 6:14), और यह पहली बात है जो आपको अपने मन में रखनी चाहिए। अब्राहम ने उसके सेवक को कनानी लड़कियों के बारे में बड़ी कठोर चेतावनी दी थी। उसे एक-एक क़दम पर ईश्वरीय बुद्धि के मार्गदर्शन में चलना था। हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं कि हरेक बात में अब्राहम का सेवक परमेश्वर पर निर्भर रहा था। इस काम को पूरा करने के लिए उसने इधर-उधर जाकर किसी से कुछ नहीं पूछा (पद 12)। उसने परमेश्वर की इच्छा को सुनिश्चित करने के लिए एक बड़ी परीक्षा तय की। अगर वह मानवीय बुद्धि पर निर्भर रहता तो वह पहले यह छानबीन करता कि वह लड़की एक योग्य घराने की है या नहीं।

लेकिन उसके मन में ऐसे कोई विचार नहीं थे। इस मामले में उसने सिर्फ परमेश्वर की इच्छा चाही थी, और बड़े विश्वास से उसने प्रार्थना की जिससे यह साबित होता है कि वह एक प्रार्थना करने वाला पुरुष था और बहुत आत्मिक था। वह जानता था कि परमेश्वर की इच्छा को एक निश्चित रूप में कैसे जाना जा सकता है। वह स्वयं अपने फैसले या भावनाओं के अनुसार चलने वाला व्यक्ति नहीं था।

अक्टूबर 30

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"तब उन्होंने रिबका को बुलाकर उससे पूछा, 'क्या तू इस पुरुष के साथ जाएगी?' और उसने कहा, 'हाँ, मैं जाऊँगी'" (उत्पत्ति 24:58)।

एलियाज़र ने प्रभु से एक बड़ा चिन्ह् माँगा (पद 13,14)। "देख, मैं जल के सोते के पास खड़ा हूँ ... अब ऐसा हो कि जिस कन्या से मैं कहूँ, 'अपना घड़ा उतार कि मैं पानी पी सकूँ', और वह यह जवाब दे, 'ले पी ले और बाद में मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी', वह वही हो जिसे तूने अपने सेवक इसहाक़ के लिए ठहराया है।" सेवक के साथ दस ऊँट थे। यह कितना बड़ा काम था! ऐसी परीक्षा को सिर्फ परमेश्वर ही सफल कर सकता था।

यहाँ हम एलियाज़र को दी गई ईश्वरीय बुद्धि को देखते हैं। एक लड़की जो दस ऊँटों के लिए पानी खींच सकती हो, निश्चय ही वह बड़े उदार और कोमल हृदय वाली लड़की होगी। एलियाज़र एक ऐसी लड़की की खोज में था जो नम्र व दीन और अपनी ख़ुशी से सेवा करने वाली हो। एक आत्मिक मनुष्य होते हुए वह एक आत्मिक लड़की की खोज में था। रिबका एक ऐसी ही लड़की थी। जब उसके माता-पिता ने यह चाहा कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे, तो उसने इनकार कर दिया और सेवक के साथ तुरन्त ही जाने के लिए तैयार हो गई (पद 59)।

जब उसने यह जाना कि कैसे प्रभु ने सेवक का एक-एक क़दम पर मार्गदर्शन किया था, तो उसने यह जान लिया कि इसहाक़ के लिए वह परमेश्वर का चुनाव थी, इसलिए वह बिना कोई सवाल किए एलियाज़र के साथ चली गई।

अक्टूबर 31

ईश्वरीय चाल चलन के रहस्य

"अविश्वासियों के साथ असमान जुए में मत जुतो; क्योंकि ज्योति का अंधकार से क्या मेल?" (2 कुरि. 6:14)।

रिबका एक आत्मिक स्त्री थी। वह परमेश्वर की इच्छा की खोज करना जानती थी। इन बातों से यह प्रकट होता है कि परमेश्वर एलियाज़र को सही चुनाव करने में ईश्वरीय बुद्धि दी थी। अगर आप अपनी बेटी, अपने बेटे, या ख़ुद के लिए एक साथी की तलाश में हैं, तो पहले ईश्वरीय बुद्धि, कृपा और सहायता पाने के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए सब तरह से छानबीन करें, लेकिन अपनी भावनाओं, बुद्धि या फैसलों के अनुसार न चलें।

उत्पत्ति 24:63 में हम पढ़ते हैं कि इसहाक़ मैदान में ध्यान करने या प्रार्थना करने गया था। जबकि एलियाज़र उसके लिए एक पत्नी की खोज में गया था, तो इसहाक़ इस बारे में मैदान में प्रार्थना कर रहा था। वह अवश्य ही ऐसी प्रार्थना कर रहा होगा: "हे प्रभु, एलियाज़र का मार्गदर्शन करना कि वह मेरे लिए एक सही चुनाव कर सके।" अब्राहम ने प्रार्थना की, एलियाज़र ने प्रार्थना की, और इसहाक़ ने प्रार्थना की, और इस तरह उन्होंने परमेश्वर की इच्छा को जाना। आपके लिए भी यह एक नमूना हो। इस मामले में कोई ग़लती न करें क्योंकि एक सही साथी का चुनाव करना एक बहुत महत्वपूर्ण और बड़ा मामला होता है। इस मामले में बहुत से विश्वासी, माता-पिता, और स्वयं युवा लोग भी ग़लती कर बैठते हैं, और फिर उन्हें पीड़ा सहनी पड़ती है; लेकिन तब तक बहुत देर हो जाती है। अपने आसपास पीड़ा भोग रहे घरों को देखें और चेतावनी पाएं।

नवम्बर 1

नमक के संदेश का रहस्य

"तुम पृथ्वी का नमक हो" (मत्ती 5:13)।

मेरा यह मानना है कि प्रभु के पहाड़ी उपदेश के इस भाग में हमारे लिए एक मूल्यवान पाठ रखा है। प्रभु ने तीन अध्यायों के पूरे उपदेश का सारांश इन थोड़े से शब्दों में किया है: "तुम पृथ्वी का नमक हो।"

नमक का क्या अर्थ होता है? सबसे पहले, तो उसका अपना एक स्वाद होता है। हरेक देश के लोग अपने खाने में नमक पसन्द करते हैं। कोई भी व्यंजन चाहे कितनी भी अच्छी तरह तैयार किया गया हो, लेकिन अगर उसमें नमक नहीं होगा तो उसका स्वाद किसी को भी पसन्द नहीं आएगा। प्रभु अपने लिए एक ऐसी प्रजा इकट्‌ठी करना चाह रहा है जो, नमक की तरह, पूरे संसार को स्वास्थ्य और आनन्द दे सके।

नमक विश्वासयोग्यता का भी प्रतीक है। हिन्दी में एक कहावत है, "उसे कभी धोखा न देना जिसका तुमने नमक खाया हो।" इस तरह, नमक को अक्सर स्वामीभक्ति और विश्वासयोग्यता का प्रतीक माना जाता है। नमक वस्तुओं के संरक्षण के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। मक्खन को अगर ज़्यादा समय तक रखा जाए तो वह ख़राब हो जाता है, लेकिन अगर उसमें नमक मिला दिया जाए तो उसे एक लम्बे समय तक रखा जा सकता है। इसी तरह अगर आप देसी घी में थोड़ा काला नमक मिला देंगे, तो वह कई महीनों तक संरक्षित हो जाता है, वर्ना उसमें से दुर्गन्ध आने लगती है। अचार के संरक्षण में भी नमक का इस्तेमाल होता है। मछली और माँस भी नमक से सुरक्षित रहते हैं। इसलिए नमक एक ऐसी बात का प्रतीक है जो वस्तुओं को एक लम्बे समय तक संरक्षित रखती है।

नमक एक स्थाई मित्रता का भी प्रतीक है। 2इतिहास 13:5 में, हम एक "नमक की वाचा" के बारे में पढ़ते हैं। कोष्ठक में इसका वर्णन "मित्रता की सनातन वाचा" के रूप में किया गया है। पुरानी वाचा में हरेक अन्नबलि को नमक के साथ चढ़ाया जाना था (लैव्य. 2:13; मरकुस 9:49,50)। इस तरह, नमक अनन्त जीवन का और मित्रता और प्रेम में विश्वासयोग्यता का प्रतिनिधित्व करता है। इन बातों द्वारा हमें यह समझने में मदद मिलती है कि प्रभु यीशु ने क्यों अपने शिष्यों से यह कहा था, "तुम पृथ्वी का नमक हो।"

नवम्बर 2

नमक के संदेश का रहस्य

"जैसे मेरे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ" (यूह. 20:21)।

मसीह के बिना ये जीवन ऐसा है जैसे बिना नमक का खाना। अगर आपको सुबह, दोपहर और शाम बिना नमक का खाना दिया जाए, तो आप यही कहेंगे कि नमक के बिना खाने में कुछ मज़ा नहीं है। इसी तरह, मसीह के बिना जीवन में कुछ मज़ा नहीं है।

सब लोगों के बीच में अपनी सेवकाई शुरू करने से पहले प्रभु यीशु मसीह ने यर्दन नदी में बपतिस्मा लिया था और फिर जंगल में उसे परखा गया था। फिर भी गलील के प्रदेश में गया। वहाँ उसने कुछ पुरुषों से कहा, "मेरे पीछे चलो, तो मैं तुम्हें मनुष्यों का मछुआरा बनाऊँगा। और वे तुरन्त उसके पीछे चल दिए थे" (मत. 4:18-22)। प्रभु यीशु मसीह ने अपनी सेवकाई की शुरूआत एक बड़े जनसमूह से नहीं की थी।

जंगल में 40 दिन तक परखे जाने के बाद, वह गलील प्रदेश में आया। वहाँ पहुँचने के लिए उसे 100 मील से भी ज़्यादा दूर तक सफर करना पड़ा था। उसे यह यात्रा क्यों करनी पड़ी? इसलिए क्योंकि जिन थोड़े से लोगों को उसे अपने शिष्य बनाना था, वे सभी कफरनहूम में रहते थे। यह गलील के समुद्र के किनारे बसा हुआ एक नगर था और शमौन, अन्द्रियास और याकूब वहाँ रहते थे। ज़रा सोचिए, कि चार-पाँच लोगों के लिए प्रभु यीशु ने इतना लम्बा सफर तय किया था। क्यों? क्योंकि वह इन्हें पूरे जगत के लिए नमक बनाने वाला था। इन पुरुषों को अपना शिष्य बनाने के बाद प्रभु उस क्षेत्र के आराधनालयों में सिखाने लगा था। फिर बड़े जन-समूह उसके पास आए। उसने उन्हें नहीं बुलाया था, लेकिन वे बस उसके पास चले आए। जब उन्होंने उसके अन्दर से प्रकट होने वाले अधिकार और सामर्थ्य को देखा, तो वे उसके आसपास इकट्ठे होने लगे थे। वे उसके पास छुटकारा और चंगाई पाने के लिए आते थे। समाज के हरेक वर्ग के लोग उसके पास आते थे। वे गलील, डेकापोलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यर्दन के उस पार के क्षेत्र से भी आते थे।

नवम्बर 3

नमक के संदेश का रहस्य

"तुम लोग उस समय मसीह से अलग थे... आशाहीन और संसार में परमेश्वर-रहित थे" (इफि. 2:12)।

गलील में रहने वाले लोगों के पास सब कुछ भरपूरी से था। उस समय वह क्षेत्र एक भरपूर क्षेत्र के रूप में जाना चाहता था। उनके पास भरपूर पानी था, बहुत से फल, मकई और भरपूर मछली थी। जहाँ तक उनकी पार्थिव ज़रूरतों की बात थी, तो उन्हें कोई कमी नहीं थी। इसके बावजूद, उनके बीच में ऐसे लोग थे जो तरह-तरह के रोगों से पीड़ित थे।

डेकापोलिस का अर्थ है "दस नगरों का एक समूह।" वह यर्दन नदी से लगभग 80 मील दूर था। ये दस नगर एक बड़ी घाटी में बसाए गए थे। इनमें बड़ी भव्य इमारतें बनाई गई थीं क्योंकि यह सौन्दर्य और भोग-विलास का एक ऐसा प्रांत था जिसमें लोगों के आराम और सुख-सुविधा के लिए अनेक काम चलते होते थे। इसके बावजूद ये लोग प्रसन्नचित्त नहीं थे, और ये भी प्रभु यीशु के पास आते थे।

यरूशलेम धर्म का केन्द्र था, और मन्दिर वहीं था। मन्दिर में सेवा करने वाले लोगों में महायाजक और अनेक लेवी थे। लोगों को परमेश्वर का संदेश देने वाली नबी भी वहाँ थे। यरूशलेम के लोग उनके बीच में मन्दिर, नबियों के लेख, और उनके पूर्वजों की परम्पराओं के होने पर गर्व करते थे, लेकिन वे *आत्मिक* रूप में अंधे थे। हमारे प्रभु ने हरेक दिशा में से लोगों को अपनी तरफ आकर्षित किया था। इस वजह से ही हम यह पाते हैं कि जब लोगों ने हमारे प्रभु के नाम को सुना, तो वे अलग-अलग स्थानों से, डेकिपोलिस से लेकर यर्दन के क्षेत्रों से भी उसके पास आए। उनकी दशा क्या थी? वे ऐसे खाने की तरह थे जिसमें नमक नहीं था। उनके हृदयों या उनके जीवनों में कोई सच्चा आनन्द नहीं था। वे किसी काम के नहीं थे।

नवम्बर 4

नमक के संदेश का रहस्य

"अगर नमक अपना स्वाद खो दे, तो वह किससे नमकीन किया जाएगा? फिर वह इसके अलावा और किसी काम का नहीं रह जाता कि उसे बाहर फेंक दिया जाए, और वह मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए" (मत्ती 5:13)।

हम मत्ती के सुसमाचार में पढ़ते हैं कि हमारे प्रभु ने भीड़ को देखा, और उसने उन्हें अपना संदेश देना शुरू किया। उसने उनसे कहा कि हालांकि वे वहाँ चंगाई पाने आए थे लेकिन चंगाई उन्हें प्रसन्नता नहीं दे सकती। उसने उन्हें चंगा किया, लेकिन वे फिर भी अपने मनोभावों में वे प्रसन्नचित्त नहीं थे। उनमें सच्चा आनन्द नहीं था। उन्हें नमक की ज़रूरत थी। हमारा प्रभु यह कह रहा था, "जब तुम मेरा नमक बन जाओगे, तो हालांकि तुम थोड़े ही हो, फिर भी तुम्हारे द्वारा मैं सारे जगत को सच्ची शांति, आनन्द और प्रसन्नता दूँगा।" यही वजह थी कि उसने शुरू में सिर्फ थोड़े लोगों को ही चुना था। उसने पूरी भीड़ को उसके पीछे चलने के लिए कभी नहीं कहा था, लेकिन उसने सिर्फ कुछ चुने हुए लोगों से ही यह कहा था, "तुम मेरे पीछे चलो, तो मैं तुम्हें पृथ्वी का नमक बना दूँगा।"

नमक को इस्तेमाल करने से पहले उसे शुद्ध किया जाता है। फिलिस्तीन में मृत सागर में से नमक का उत्पादन किया जाता था। खाने में इस्तेमाल करने से पहले उसे शुद्ध करना पड़ता था। मत्ती 5:3-12 में कुछ चरणों का बयान किया गया है। जो प्रभु यीशु के पीछे चलते हैं, उन्हें इन चरणों में से गुज़रना पड़ता है और उसके बाद ही वे पृथ्वी का सच्चा नमक बन सकते हैं।

आज हम हर जगह दु:ख, पीड़ा और अप्रसन्नता पाते हैं। मनुष्यों के जीवन ऐसे हैं जैसे स्वाद बिना नमक। जब नमक को शुद्ध किया जाता है तो वह दो भागों में बँट जाता है - एक भाग स्वादिष्ट होता है, और एक भाग स्वादहीन। दूसरे भाग को फेंक दिया जाता है। कभी-कभी उसे इमारतों की नींव में डालने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वह नमक जो उसका स्वाद खो देता है, वह किसी काम का नहीं रहता। वह न तो पेड़-पौधों के, न मनुष्यों के, और न पशु-पक्षियों के ही काम आता है। हमारा प्रभु चाहता है कि हम अच्छा नमक हों कि हम अनेक जीवनों में नया स्वाद और नया आनन्द ला सकें।

नवम्बर 5

नमक के संदेश का रहस्य

"नमक तो अच्छा है, लेकिन अगर नमक का स्वाद बिगड़ जाए तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा? न तो वह भूमि के और न ही खाद के काम आता है, वरन् लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके कान हों, वह सुन ले" (लूका 14:34,35)।

प्रभु यहाँ ऐसे नमक की बात कर रहा है जिसने अपना स्वाद खो दिया है। जब उसने भीड़ को अपनी तरफ आते हुए देखा, तो उसने एक पापी के जीवन की तुलना ऐसे नमक से की जिसने अपना स्वाद खो दिया है। वह लोगों के दो तरह के समूह देख रहा था: एक समूह बहुत छोटा था, जिसे नमक कहा जा सकता था; और दूसरा समूह बड़ा था, 5000 लोगों से भी ज़्यादा, जिसे ऐसा नमक कहा जा सकता था जो स्वादहीन था। अच्छे नमक की मात्रा बहुत कम थी, जो उसके पीछे चलने वाले उसके शिष्य थे। दूसरे सिर्फ ऐसे लोग थे जो चिन्ह्-चमत्कार देखना चाहते थे, और रोटी और मछली खाना चाहते थे। प्रभु ने उनकी तुलना ऐसे नमक से की जिसका स्वाद खो चुका था।

गोबर का एक घूरा चीटियों, केंचुओं और दूसरे छोटे कीड़ों को भोजन प्रदान करता है। हमारे प्रभु ने कहा कि जिस नमक का स्वाद ख़त्म हो जाता है, वह गोबर के घूरे पर फेंके जाने लायक़ भी नहीं रह जाता। वह बिलकुल बेकार है और उसे कहीं फेंक देना चाहिए। जिस मनुष्य का उद्धार नहीं हुआ है, उसकी दशा ऐसी ही होती है।

अगर आप सच्चाई से, आनन्द से भरकर, और एक स्पष्ट रूप में यह नहीं कह सकते कि प्रभु ने आपके पाप क्षमा कर दिए हैं, आपकी गंदगी को साफ कर दिया है, और आपको एक नया ईश्वरीय स्वभाव दे दिया है, तो आप उस नमक की तरह हैं जो अपना स्वाद खो चुका है। आप चाहे जो भी हों, आप किसी काम के नहीं हैं। पृथ्वी पर आपका रहना एक बोझ के अलावा और कुछ नहीं है। आप जहाँ भी जाएंगे और जहाँ भी रहेंगे, वहाँ आप सिर्फ कष्ट और दु:ख ही लाएंगे। जिनका वास्तव में नया जन्म नहीं हुआ है, वे सच्चाई से कभी यह नहीं कह सकेंगे कि वे दूसरों की मदद करने या उनके काम आने लायक़ हैं। उनका जीवन बर्बाद हो रहा है।

नवम्बर 6

नमक के संदेश का रहस्य

"इस्राएल के विषय में वह कहता है, 'दिन-भर मैं अपने हाथों को अनाज्ञाकारी और हठी प्रजा की ओर बढ़ाए रहा" (रोमियों. 10:21)।

इस्राएली लोग परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करने की वजह से तितर-बितर कर दिए गए थे, और वे संसार के अनेक देशों में बिखरे हुए थे। अब हम यह देख रहे हैं कि अनेक प्रकार के हालातों के दबाव में आ जाने की वजह से, वे वापिस फिलिस्तीन के प्रदेश में लौट रहे हैं। वे दूसरे देशों में से बहुत सा धन और ज्ञान लेकर लौटे हैं, और 25 साल के थोड़े से समयकाल में ही उन्होंने पूरे देश को रेगिस्तान से एक उपजाऊ भूमि में बदल दिया है। अगर आप 25 साल पहले फिलिस्तीन में गए होते तो आपको वहाँ एक रेगिस्तान के अलावा और कुछ नज़र नहीं आता। लेकिन अब एक सुन्दर देश नज़र आता है जिसमें चारों तरफ बहुत से ख़ुशहाल शहर नज़र आते हैं। वहाँ अब भी नई सड़कों, स्कूलों और विश्व-विद्यालयों का निर्माण हो रहा है। इस तरह, वे पवित्र शास्त्रों में से यह दिखा सकते हैं कि मसीह के जगत में आने से भी बहुत पहले, नबियों ने यह नबूवत की थी जो भूमि रेगिस्तान बन गई है, वह फिर से उपजाऊ हो जाएगी। उन्होंने पवित्र शास्त्र की हस्तलिपियों को बहुत अच्छी तरह संरक्षित किया है।

मैंने फिलिस्तीन में कुछ ऐसे विश्वासियों के बीच में थोड़े दिन बिताए जो यहूदी से मसीही बने थे, और उन्होंने मुझसे कहा कि वे अपने देशवासियों के लिए दु:खी होने के अलावा और क्या कर सकते हैं। सारी सुख-सुविधाएं होने के बावजूद वे अंधकार और अंधेपन में थे। वास्तव में उन्हें ऐसा नमक कहा जा सकता है जिसने अपना स्वाद खो दिया है। आत्मिक तौर पर वे पूरी तरह अंधे हैं। वे एक कठोर रूप में प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के विरोधी हैं। वे इन दिनों किसी को भी खुलकर सुसमाचार का प्रचार नहीं करने देते। देश में बुराई के बढ़ने से उन्हें कोई फर्क़ नहीं पड़ता; असल में, वे स्वयं यूरोप और दूसरे देशों में से बहुत सी बुरी बातें लेकर आए हैं। लेकिन वे सुसमाचार नहीं चाहते। वे ऐसे नमक की तरह हैं जिसने अपना स्वाद खो दिया है।

नवम्बर 7

नमक के संदेश का रहस्य

"उस भोजन के लिए परिश्रम मत करो जो नाश हो जाता है, लेकिन उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक बना रहता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा" (यूह. 6:27)।

जो लोग प्रभु के पीछे-पीछे गए, उसने उनसे यह कहा कि वे सिर्फ इस वजह से उसके पीछे आ रहे थे क्योंकि उन्हें खाने के लिए रोटी मिल गई थी। उसके इन शब्दों से उन्हें ठोकर लगी और वे उसे छोड़ कर चले गए (देखें यूह. 6:5,26,27,66)। उन्होंने सोचा कि बिना कोई मेहनत किए और बिना कोई रोटी पकाए खाना खा लेना एक चमत्कारिक बात थी। इसलिए पद 26 व 27 में प्रभु ने उनसे कहा: "तुम उस रोटी को ढूँढ रहे हो जिससे तुम तृप्त हुए हो। इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि तुम कैसी रोटी खाते हो, क्योंकि वह तुम्हें कभी सच्चा संतोष नहीं देगी। मैं जीवन की रोटी हूँ; तुम्हें मुझे खाने की ज़रूरत है। मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि तुम्हें मुझे कैसे खाना है। फिर तुम सदा जीवित रह सकोगे।"

जब उन्होंने ये शब्द सुनें तो वे क्रोधित हो गए और फिर उसके साथ नहीं चले। वे इतना पास आने के बाद भी निष्फल हो गए थे। उन्होंने परमेश्वर के राज्य को पा लिया होता, लेकिन वे ख़ाली ही लौट गए। वे ऐसा नमक थे जो अपना स्वाद खो चुका था। क्या आपकी तुलना अच्छे नमक से की जा सकती है, या आप सिर्फ ऐसा नमक हैं जो अपना स्वाद खो चुका है? आपके जीवन से कितने शत्रुओं, मित्रों, अजनबियों और सम्बंधियों को आत्मिक फायदा हुआ है? हम प्रचारकों को नमक बहुत पसन्द है। हर बार जब हमारा गला बैठ जाता है और उसमें ख़राश आ जाती है तो हम नमक का इस्तेमाल करते हैं। उससे बेहतर और कुछ नहीं होता। हम सभी नमक के लिए कितने आभारी हैं। थोड़े से नमक से ही हमें राहत मिल जाती है। आपका जीवन भी ऐसा ही होना चाहिए। हमारे अपने स्वभाव से हम लाल मिर्च की तरह हैं। हम तसल्ली और आराम देने की बजाय दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचाते और लोगों को पीड़ा देते हैं। लेकिन कुछ लोग आशिष लाते हैं और उनके चले जाने से हम उदास हो जाते हैं। थोड़े से नमक की तरह, उन्होंने आपके जीवन में आनन्द, आराम और उत्साह देकर आपको तरोताज़ा किया था।

नवम्बर 8

नमक के संदेश का रहस्य

"इसलिए अगर कोई मसीह यीशु में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं, देखो, नई बातें आ गई हैं।"
2 कुरि. 5:17

स्वयं प्रभु यीशु के हमारे जीवन में आने के बाद ही ऐसा होता है हम एक नमक जैसा जीवन जी सकते हैं। जब प्रभु आपको बदल देता है, तब आप जहाँ भी जाएंगे, आप एक नए नाम से पुकारे जाएंगे, और लोग आपको ग्रहण करेंगे और अच्छे नमक की तरह आपका स्वागत करेंगे। कुछ लोगों को दूसरों की सेवा करने में आनन्द और प्रसन्नता मिलती है। यह इसलिए है क्योंकि वे अच्छा नमक बन गए हैं। चाहे आप जवान हैं या बूढ़े, अगर आपके अन्दर प्रभु यीशु मसीह का जीवन है, तो आप दूसरों की मदद करने के मौक़ों की तलाश में रहेंगे। आप दूसरों को ख़ुशी, चैन और आराम देने वाले होंगे, और तब आप यह पाएंगे कि आपका जीवन भी आनन्द से भरपूर हो गया है।

हमारी पाप के साथ कोई सहभागिता नहीं हो सकती। अपनी प्रवृत्ति में सभी मनुष्य पापमय होते हैं, इसलिए वे हमारे सच्चे भाई-बहन नहीं हो सकते। वे जो प्रभु के हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं, वे ही हैं जो अनन्त के लिए हमारे भाई व बहन बन जाते हैं। हमारा प्रभु कह रहा है कि अगर आप ऐसे सच्चे भाई और बहन चाहते हैं जो आपसे एक अनन्त प्रेम करें, तो पहले आपको मानवीय प्रेम के पक्षपात से मुक्त होना सीखना पड़ेगा। आपके द्वारा दूसरों को प्रतिदिन कितना आराम, प्रेरणा, शांति और आनन्द मिलता है? या आप ऐसे नमक की तरह हैं जिसने अपना स्वाद खो दिया है? प्रभु आपको बदल देने में सामर्थी है। यीशु के पास आएं और उससे कहें, "हे प्रभु, अब तक मैं ऐसे नमक की तरह था जो अपना स्वाद खो चुका था। क्या आज तू इस तरह से मेरा जीवन बदल देगा कि मैं अपने कॉलेज में, अपने काम/धंधे की जगह में, या जहाँ भी रहूँ वहीं पर अपने साथियों को सान्त्वना देने वाला बन सकूँ?"

नवम्बर 9

नमक के संदेश का रहस्य

“तुम पृथ्वी का नमक हो... तुम जगत की ज्योति हो। पहाड़ी पर बना घर छुप नहीं सकता” (मत्ती 5:13,14)।

हमारे प्रभु के सामने एक बड़ा काम रखा था, और वह यह था कि वह कुछ शिष्यों को उस काम के लिए बुलाए जिसे पृथ्वी पर किया जाना था। वह पापियों को ढूँढने और उन्हें बचाने के लिए आया था कि वह पूरे जगत के लिए कुछ नमक और ज्योति उपलब्ध करा सके। प्रभु ने जो कुछ भी किया, अपने मन में इस विचार को रखते हुए ही किया: ऐसा नमक प्रदान करना जो पूरी मानव जाति को आनन्द दे सके; और ऐसी ज्योति प्रदान करना जो अनन्त जीवन दे सके।

आप में से शायद कुछ लोगों ने यह देखा होगा कि समुद्र के किनारे नमक कैसे बनाया जाता है। समुद्र के पानी का वाष्पीकरण किया जाता है, और फिर उसमें भरा हुआ नमक बाक़ी बचा रह जाता है। इस नमक को इस्तेमाल करने से पहले साफ करना पड़ता है। परमेश्वर अच्छा और शुद्ध नमक चाहता है। हममें से हरेक वह अच्छा और शुद्ध नमक बन सकता है। यह हो सकता है कि हमारी संख्या बहुत कम हो, लेकिन हम जहाँ भी होंगे पूरे देश को आनन्दित कर सकेंगे। हज़ारों लोगों को खिलाने के लिए हमें चावल की बहुत सी बोरियों की ज़रूरत होती है, लेकिन हमें इतने ज़्यादा नमक की ज़रूरत नहीं होती। थोड़ा सा नमक बहुत लोगों के खाने को स्वादिष्ट बना सकता है।

ऐसे बहुत से नगर, कस्बे और गाँव हैं जहाँ विश्वासियों की संख्या बहुत कम है, शायद दो, तीन, चार या पाँच ही होंगे। फिर भी वे थोड़े से विश्वासी उस पूरे क्षेत्र को आनन्दित, हर्षित और प्रसन्नचित्त कर सकते हैं और सभी लोगों को ज्योति दे सकते हैं। इस वजह से प्रभु विश्वासियों की तुलना पहाड़ी पर बने घर से करता है। पहाड़ी पर बना घर मीलों दूर से नज़र आ जाता है। प्रभु यीशु मसीह में जीवन और ज्योति है, लोगों को यह बताने के लिए एक विश्वासी ही काफी होता है।

नवम्बर 10

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" (मत्ती 5:3)।

उत्तर भारत में, जब कहीं कोई मेहमान आता है, तो उसे पहले खाने के लिए कुछ नमकीन और एक गिलास पानी दिया जाता है। इसके द्वारा वे अपने मेहमान से यह कहते हैं, "हम आपको ग्रहण करते हैं और आपका स्वागत करते हैं, और इस तरह हम अपने प्रेम का प्रदर्शन करते हैं।" इस तरह, नमक सच्चे और उत्साही प्रेम का प्रतीक होता है।

सच्चे प्रेम का प्रदर्शन सिर्फ विश्वासियों द्वारा ही हो सकता है। जब प्रभु यीशु मसीह यह कहता है, "तुम पृथ्वी के नमक हो," तो असल में उसके कहने का अर्थ यह है कि आप जहाँ कहीं भी जाएं, वह आपके द्वारा अपने अनन्त जीवन का प्रदर्शन, घोषणा और प्रचार करना चाहता है। 1,155 भाषाएं बोलने वाले अनेक नस्लों/जातियों के लोगों ने इसी प्रेम को नया जन्म पाए हुए लोगों में से पाया है। सभी तरह के लोग - ऐसे लोग जो पहले नरभक्षी, हत्यारे और चोर-डाकू थे, जिन्हें मानवीय समाज ने पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया था, अब दूसरों के सामने परमेश्वर के प्रेम के साक्षी हैं।

पार्थिव प्रेम पृथ्वी की बातों पर निर्भर होता है, लेकिन ईश्वरीय प्रेम हरेक बात की गहराई में उतर जाता है। प्रभु ने कहा, "अपने शत्रुओं से प्रेम करो!" यह कितना अद्भुत नमक है! वे लोग जो हमसे घृणा करते हैं और हमें श्राप देते हैं, हम उन्हें प्रेम कर सकते हैं। हम सिर्फ थोड़ी देर की राहत देने के लिए उनसे प्रेम नहीं करते, बल्कि इस प्रेम में अनन्त सहभागिता करने के लिए उनसे प्रेम करते हैं। किसी भी जगह में रहने वाले लोगों को हम कुछ ऐसा दे सकते हैं जो अनन्त तक बना रहेगा। जब हम उनके संपर्क में आते हैं, तो हम उन्हें ईश्वरीय नमक का असली स्वाद दे सकेंगे। हम कैसे ऐसा सच्चा नमक बन सकते हैं, यह हम मत्ती के अध्याय 5 के पद 3 में देखते हैं। हममें एक नम्र व दीन और पश्चातापी आत्मा होनी चाहिए। नमक के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में यह पहला चरण होता है।

नवम्बर 11

नमक के संदेश का रहस्य

"पश्चातापी आत्मा परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए हृदय को तुच्छ नहीं जानता" (भजन. 51:17)।

परमेश्वर किसी ऐसे भवन में नहीं रहता जिसे मनुष्यों ने उनके हाथों से बनाया हो। वह एक टूटे और पीसे हुए हृदय में रहता है। यह कितना बड़ा सम्मान और विशेषाधिकार है! जब परमेश्वर स्वयं हममें रहने के लिए आ जाता है, हम सिर्फ तभी पृथ्वी का नमक बन सकते हैं। सिर्फ तभी ऐसा होगा कि हम सब मनुष्यों से, और अपने शत्रुओं से भी सच्चा प्रेम कर सकेंगे। वर्ना हमारे हृदय ईर्ष्या, शत्रुता और भ्रष्टता से भरे रहेंगे। इन दिनों में, पूरा संसार घृणा और कड़वाहट से भरा हुआ है; जाति जाति के ख़िलाफ है, भाई भाई के खिलाफ है, दोस्त दोस्त के ख़िलाफ है, और बच्चे माता-पिता के ख़िलाफ हैं। क्यों? क्योंकि उनमें नमक नहीं है।

हमें वास्तव में नम्र व दीन बनाने के लिए परमेश्वर को कभी-कभी पीड़ादायक तरीक़े अपनाने पड़ते हैं। भजन संहिता 51:17 में वह पढ़ें जो दाऊद कहता है। उसने एक बहुत कठोर अनुभव के द्वारा यह पाठ सीखा था। हालांकि वह एक समझदार व्यक्ति और एक अच्छा राजा था, लेकिन फिर भी शैतान ने उसे धोखा दिया था। पाप में गिरने के बाद, दाऊद ने यह पाठ सीखा था। और तब उसे मानवीय हृदय की घिनौनी दशा समझ में आनी शुरू हुई थी।

तब दाऊद ने पुकार कर कहा, "हे परमेश्वर, मेरे पापों को क्षमा कर; मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है, और जो तेरी नज़र में बुरा है वही किया है। मुझे धो तो मैं हिम से भी ज़्यादा श्वेत हो जाऊँगा।" उसे अपनी भीतरी भ्रष्टता का अहसास हो गया था। हम यह नहीं समझ पाते हैं कि हम सभी के हृदयों में कितनी भ्रष्टता, दुष्टता और गंदगी भरी होती है। लेकिन हम इस दूषण को तभी देख पाते हैं जब परमेश्वर की ज्योति हमारे हृदयों में प्रवेश करती है। जब आप यह जान लेंगे कि आप क्या हैं, तब आप भी दाऊद की तरह पुकार कर यही कहेंगे, "प्रभु मुझे पूरी तरह साफ कर और मुझे धो। मुझे भीतर और बाहर दोनों तरफ से शुद्ध कर। मुझे सारी बुराई से शुद्ध कर।" जिस हृदय में से ऐसी पुकार आती है, वही टूटा हुआ हृदय होता है। अगर आप दाऊद की तरह अच्छा नमक बनना चाहते हैं, तो प्रभु को पुकारें कि वह आपको शुद्ध कर दे।

नवम्बर 12

नमक के संदेश का रहस्य

"हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा फिर से जागृत कर" (भजन. 51:10)।

जब दाऊद एक टूटे हुए हृदय वाला व्यक्ति बन गया, सिर्फ तभी वह सच्चे नमक वाला पुरुष बन सका। ईश्वरीय नमक बनने का यह पहला चरण होता है। *"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" (मत्ती 5:3)*। अब देखें कि ऐसे लोगों के लिए कैसा प्रतिफल होता है। वे न सिर्फ परमेश्वर के रहने की जगह, और परमेश्वर का नमक बन जाते हैं, लेकिन परमेश्वर का वचन यहाँ कहता है, "स्वर्ग का राज्य उन्हीं के लिए है!" वे परमेश्वर के पवित्र राज्य के सहभागी और उसके उत्तराधिकारी बन जाते हैं। आपको परमेश्वर के सम्मुख ज़्यादा और ज़्यादा दीन बनने की ज़रूरत है। यह एक जीवन-भर सीखते रहने वाला पाठ है। इस वजह से ही प्रभु यह कहता है कि हमें अपनी आत्मिक कंगाली और हमारी भीतरी दुष्टता के बारे में मालूम होना चाहिए। लेकिन हमें बदल देने के लिए परमेश्वर की कृपा और प्रेम उपलब्ध हैं।

असली ज्योति वह ज्योति है जो आप प्रभु में ग्रहण करते हैं। अगर हमें इस योग्य बनना है कि हम अपनी व्यक्तिगत दशा को देख सकें, तो परमेश्वर की ज्योति का हममें आना ज़रूरी है। वह बिलकुल स्पष्ट रूप में कहता है, "मैं जगत की ज्योति हूँ।" वह अनन्त ज्योति है। नई सृष्टि में किसी तरह की कोई ज्योति की ज़रूरत नहीं होगी। प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का मेमना ही उसकी ज्योति होगा। जब हमारी असली दशा हमें दिखाई जाए, तो हमें प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए। तब हम यह कहते हुए एक टूटे हुए हृदय से उसे पुकार सकते हैं, "हाँ, प्रभु, मैं नहीं जानता था। मेरा हृदय बहुत दुष्ट, पापमय और भ्रष्ट है। मुझ पर दया कर।" तब वह हमें जवाब देता है, "मैंने अनन्त प्रेम से तुझसे प्रेम किया है, और प्रेम की डोरी से मैंने तुझे अपनी ओर खींचा है।" हममें एक टूटा और पिसा हुआ हृदय होना चाहिए। यह नमक बनने की प्रक्रिया की शुरूआत होती है। पवित्र प्रेमी परमेश्वर, महान् परमेश्वर, जीवित परमेश्वर हममें आकर रहना चाहता है। ऐसा हो कि परमेश्वर हमें एक टूटा हुआ हृदय और पिसी हुई आत्मा दे।

नवम्बर 13

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सान्त्वना पाएंगे" (मत्ती 5:4)।

ये बहुत अर्थपूर्ण शब्द हैं, और यह हमें अच्छा नमक बनाने में दूसरा क़दम है। हम जैसे ही एक सच्चे हृदय से प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, तभी से हम अपने आपको ऐसी स्थितियों का सामना करता हुआ पाते हैं जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं होता। हमारे मन-फिराव से पहले हमारे मित्र, सम्बंधी, और माता-पिता हमारी बहुत प्रशंसा करते थे। लेकिन जैसे ही हम प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करने का फैसला करते हैं, हमारे मित्र हमारे शत्रु बन जाते हैं! हमसे बहुत प्रेम करने वाले हमारे भाई, बहनें, बच्चे और माता-पिता हमसे घृणा करने लगते हैं! मेरे परिवार में मैं सबसे बड़ा लड़का हूँ, इसलिए मेरे बचपन से ही मेरे माता, पिता, भाइयों व बहनों ने मेरे प्रति बहुत प्रेम प्रदर्शित किया था। उन्होंने मुझे चोट पहुँचाने वाला एक शब्द भी कभी नहीं कहा था। लेकिन जब मैं एक मसीही बन गया और प्रभु यीशु मसीह मेरा व्यक्तिगत मुक्तिदाता बन गया, और उसने मेरे जीवन को पूरा बदल दिया, मेरे सारे बुरे कामों से छुड़ाकर मुझे एक नया जीवन दे दिया, तो मेरे सम्बंधियों और मित्रों ने मुझे अस्वीकार कर दिया!

जब 1933 में मैं भारत वापिस लौटा, तो मेरे माता-पिता मुझे मुम्बई में मिले। हालांकि मैं सात साल के बाद भारत लौटा था, लेकिन फिर भी वे मुझे तब तक घर ले जाने के लिए तैयार नहीं थे जब तक कि मैं इस बात पर सहमत नहीं होता कि मैं अपने मसीही होने की बात किसी से नहीं कहूँगा। उस समय मैंने सोचा कि अगर मैं एक शराबी या व्यभिचारी बन कर भारत में लौटता तो उन्होंने मेरा स्वागत किया होता। अब जबकि मेरे प्रभु ने मुझे बदल दिया है और मुझे एक नया जीवन दे दिया है, तो अब इन्हें मेरी ज़रूरत नहीं है! कुछ क्षणों के बाद, मुझे ये शब्द सुनाई दिए, "कोई भी व्यक्ति जो अपना हाथ हल पर रखने के बाद पीछे मुड़कर देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है। जो अपने पिता या माता, भाई या बहन को मुझसे बढ़कर चाहता है, वह मेरा शिष्य बनने योग्य नहीं है।" तब मैंने अपनी माता से कहा, "मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मेरे प्रभु का स्थान पहला है।" तब वे दोनों मुझे मुम्बई में छोड़कर चले गए।

नवम्बर 14

नमक के संदेश का रहस्य

"समस्त शांति का परमेश्वर... हमारे सब क्लेशों में हमें शांति देता है, कि हम भी उनको जो क्लेश में हैं, शान्ति दे सकें" (2 कुरि. 1:3,4)।

ऐसे समय होते हैं जब हम सभी को दु:ख और आलोचना के समयों में से गुज़रना पड़ता है। जब आपके अपने भाई और बहनें आपसे घृणा करें, आपको श्राप दें और आपको कोसें, तो आप ज़रूर दु:खी हो जाएंगे। लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारे प्रभु यीशु मसीह में हम शांति पाते हैं। समय गुज़रने के साथ-साथ परमेश्वर ने उसके अपने तरीके से मेरे परिवार के लोगों के साथ बात करनी शुरू की। मैंने अपने परिवार के लोगों को यह अनुमति दी कि वे मुझे कोसें और गाली बकें, लेकिन मैंने अपना मुँह खोलकर उनके ख़िलाफ एक शब्द भी नहीं कहा। मेरे ह्रदय में उनके लिए कोई घृणा भी नहीं थी। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मेरे प्रभु के लिए मुझे अपमानित होने का सौभाग्य मिला।

वही लोग जिन्होंने मुझे श्राप दिए और मुझे कोसा, बाद में शांति पाने के लिए मेरे पास आए। उन दिनों में, प्रभु मेरे नज़दीक आया और उसने मुझसे कहा, "मैं सदा तेरे साथ हूँ।" मेरे दु:ख में प्रभु मुझे बहुत प्रिय हो गया, और अनेक सालों तक वह मुझे बहुत सी पीड़ाओं में से लेकर गुज़रा। मैं यह सिर्फ उसकी महिमा के लिए बोल रहा हूँ। मैंने घण्टों आँसू बहाए हैं। मेरे परिवार का कोई व्यक्ति मुझे नहीं चाहता था। लेकिन फिर ऐसा समय भी आया जब वे अपनी हरेक ज़रूरत के लिए मेरे पास आते थे।

कुछ साल पहले मेरे तीसरे भाई के सबसे बड़े पुत्र की, जो 21 साल का नौजवान था, मृत्यु हो गई। यह समाचार सुन कर मैं हवाई जहाज़ से उससे मिलने के लिए गया। जब मैंने उसकी हालत देखी तो मुझे यह समझ नहीं आया कि उसे तसल्ली देने के लिए मैं क्या कहूँ। उसने मुझसे कहा, "मुझे बताओ अब तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है? वह कहाँ चला गया है?" मैं चुप रहा। मैं उसे कोई जवाब नहीं दे सकता था। मैंने बस घुटने टिका कर उसके लिए प्रार्थना की, "प्रभु, इसे सान्त्वना दे, इसकी पीड़ा बहुत गहरी है। इसका सबसे बड़ा पुत्र गुज़र गया है, जो एक अच्छा युवक था। अगर तू इसे सान्त्वना देगा, तो यह बदल जाएगा।" उसी दिन वह उठा, उसने अपने कपड़े बदले, दाढ़ी बनाई, और अपने कार्यालय चला गया। उसे कितनी बड़ी सान्त्वना मिली थी! इसलिए, दूसरों को सान्त्वना देने के लिए हमें शोक करना पड़ता है।

नवम्बर 15

नमक के संदेश का रहस्य

“परमेश्वर ने आरम्भ ही से तुम्हें चुना लिया है कि आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर और सत्य पर विश्वास करके उद्धार पाओ” (2 थिस्स. 2:13)।

वह कहता है, “तुम पृथ्वी का नमक हो।” यह तभी सम्भव होता है जब वह हममें रहने के लिए आ जाता है। यह ज़रूरी है कि वह आपका जीवित मुक्तिदाता हो। जब वह मेरा मुक्तिदाता बना, उस समय मुझे उद्धार, या नए जन्म, या प्रायश्चित् के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। मुझे शैतान के बारे में भी कुछ पता नहीं था। लेकिन प्रभु ने मुझमें प्रकट होकर मुझे पाप के घिनौनेपन को दिखाया। फिर एक धीमी, मीठी आवाज़ आई, “ये मेरी देह है जो तेरे लिए तोड़ी गई, और ये मेरा लहू है जो तेरे लिए बहाया गया।” मैंने कहा, “प्रभु, ये शब्द मेरी समझ से बाहर हैं। मैं बिलकुल मूर्ख हूँ। मैं इन शब्दों के अर्थ नहीं जानता, लेकिन मैं यह जानता हूँ कि ये तेरे शब्द हैं। हालांकि ये मुझे समझ नहीं आ रहे हैं, लेकिन मैं इन पर विश्वास करता हूँ।” फिर एक धीमी आवाज़ आई, “तेरे पाप क्षमा हुए।” उस समय से मैं पूरी तरह बदल गया। पाप के कामों में मेरी दिलचस्पी ख़त्म हो गई। मेरा प्रेमी प्रभु मेरे हृदय में आ गया।

मैं आज भी उस आनन्द से भरे दिन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। मैं एक ईशनिन्दक था लेकिन उसने फिर भी मुझे क्षमा किया था। मैं इस लायक़ नहीं हूँ कि वह मुझसे प्रेम करे और अनन्त के लिए मुझे अपना बना ले। मैं जानता हूँ कि वह एक प्रेमी मुक्तिदाता है। वह मुझसे प्रेम करता है। इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि उसे अस्वीकार न करें। पीड़ा और दु:ख से न डरें। वह दिन-प्रतिदिन आपकी अगुवाई करेगा। हरेक पीड़ा में वह आपसे यह कहेगा, “मेरे बेटे, मेरी बेटी, मत डर, मैं तेरे साथ हूँ।” मैने हरेक दु:ख में उसे परखा और सच्चा पाया है। मैं उसे प्रेम करता हूँ। वह मेरा परमेश्वर है। वह आपका भी जीवित मुक्तिदाता बन जाएगा। वह आपके लिए भी बहुत मूल्यवान हो जाएगा।

नवम्बर 16

नमक के संदेश का रहस्य

"परमेश्वर के छुड़ाए हुए लौटेंगे... उनका मुकुट अनन्तकाल का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएंगे, और शोक और आहें भरना जाता रहेगा" (यशा. 35:10)।

प्रभु यीशु मसीह पापियों को इसलिए बचाना चाह रहा है कि वह उन्हें ऐसा नमक बना सके जो मानवजाति के लिए नया आनन्द, नई शांति और नई ज्योति दे सकें। प्रभु यीशु मसीह मनुष्य को आनन्द देने के लिए जगत में आया था। हरेक समयकाल में लोगों के मन में आनन्द पाने की बड़ी अभिलाषा रही है, लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि वे कैसे आनन्द पा सकते हैं। वे यह नहीं जानते थे कि परमेश्वर कौन है, वह कहाँ हैं, वे उसे कैसे पा सकते हैं और उससे कैसे बात कर सकते हैं।

मुझे याद है कि जब तक मैंने मन नहीं फिराया था, तब तक मेरे अन्दर भी कैसी भूख और प्यास थी। सिख धर्म की शिक्षा के अनुसार, मैं यह सोचता था कि परमेश्वर कहीं बहुत दूर है, और यह कि कोई मनुष्य उसके पास तक कैसे पहुँच सकता है। अपने बचपन के दिनों में मैं यह प्रार्थना किया करता था, "हे परमेश्वर, तू कौन है? तू कहाँ है? मैं तुझे कैसे ढूँढ सकता हूँ?" बहुत बार मुझे ऐसा लगता था कि मैं परमेश्वर से और ज़्यादा दूर होता जा रहा हूँ। इसी तरह, हरेक युग में परमेश्वर की खोज करने वाले मेरे जैसे बहुत लोग हुए हैं, जिनमें शांति पाने की बड़ी लालसा थी और जो उसे वैसा ही जानना चाहते थे जैसा वह है। लेकिन अंततः उन्होंने निराश होकर उसे खोजना छोड़ दिया था।

जब हम एक बार स्वर्गीय आनन्द पा लेते हैं, तो यह ज़रूरी होता है कि हम उसे दूसरों के साथ बाँटें। क्या आपने यह आनन्द पा लिया है? ऐसे कितने लोग हैं जिन्होंने आपके द्वारा उस आनन्द को पा लिया है जो आपके अन्दर है? आपका आनन्द दूसरों के साथ बाँटने से बढ़ता है। हमारा प्रभु कहता है, "तुम पृथ्वी के नमक हो।" आप जहाँ भी होंगे, वहाँ ख़ुशियाँ ही बाँटेंगे। हम एक दीन आत्मा और टूटे हुए हृदय के द्वारा शुद्ध नमक बन सकते हैं। जब हमारे मित्र और सम्बंधी हमसे घृणा करने लगेंगे, तब हम प्रभु द्वारा तसल्ली पाएंगे। ईश्वरीय तसल्ली को जानने के लिए हमें हर तरह के दुःख में से गुज़रना पड़ेगा। इस तरह हम दूसरों को तसल्ली देने के लिए प्रशिक्षित किए जाएंगे।

नवम्बर 17

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे" (मत्ती 5:5)।

अनेक लोगों को यह पता नहीं होता कि परमेश्वर ने उन्हें कितना ज़्यादा देने की योजना बना रखी है। वह हमेशा हमारी सोच और कल्पना से बढ़ कर हमें देगा। लेकिन हमें दिए जाने वाले इस विशेषाधिकार को समझने के लिए हमें परमेश्वर के हृदय में प्रवेश करना पड़ेगा। परमेश्वर हमें इतना सब कुछ देना चाहता है, यह मानना हमारे लिए कितना मुश्किल होता है (देखें 1कुरि. 2:9,10; मत्ती 13:17; प्रका. 21:7)। क्या ये वचन अद्‌भुत नहीं हैं? "जिन बातों को किसी कान ने नहीं सुना, किसी आँख ने नहीं देखा, और जो किसी के मन में भी नहीं समाई, उन्हीं बातों को परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया है।" फिर, परमेश्वर का वचन यह कहता है कि बहुत से नबियों और धर्मी लोगों ने इन बातों को देखना चाहा था, लेकिन वे इन्हें नहीं देख पाए। परमेश्वर न सिर्फ हमारे पाप क्षमा करना चाहता है बल्कि वह हमें वह सब कुछ देना चाहता है जो उसका है।

हमारा प्रभु यह बात बहुत अच्छी तरह जानता है कि पापी होते हुए हमें कितने भारी बोझ उठाकर चलना पड़ता है। इसलिए हमारा प्रभु हम सबसे कहता है, "हे सब थके और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ।" यह कितना सुन्दर आमंत्रण है। प्रभु यीशु हमारे पापों के लिए दाम चुकाने के लिए तैयार था। और उसने पूरा दाम चुकाया, हमारे पापमय विचारों और कल्पनाओं के लिए भी।

हमारा प्रभु जगत में हरेक नुक़सान की भरपाई करने के लिए आया था। वह तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक हम परमेश्वर से सब कुछ नहीं पा लेते - सब कुछ वैसी ही पूरी भरपूरी में जैसा परमेश्वर ने अपने हृदय में हमारे लिए तय कर रखा है। यह हम नम्रता सीखने द्वारा हासिल कर सकते हैं, और यही अच्छा नमक बनने का तीसरा क़दम है। इस वजह से ही वह कहता है, "मेरे पास आओ... और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं मन में नम्र व दीन हूँ, और तुम अपने जीवन में विश्राम पाओगे।" यह जीवन-भर सीखते रहने वाला पाठ होता है। हमारे मन-फिराव से पहले हममें जो घमण्ड था, हमें उसे छोड़ देना चाहिए - परिवार, देश, मित्रों, सम्बंधों या शैक्षणिक योग्यताओं का घमण्ड।

नवम्बर 18

नमक के संदेश का रहस्य

"परमेश्वर की कृपा से मैं जो हूँ सो हूँ" (1कुरि 15:10)।

हम अपने ऊपर घमण्ड करते हैं। फिर भी ये सब बातें गुज़र जाने वाली हैं। योग्यताएं और दान-वरदान जल्दी ही ख़त्म हो जाएंगे। हम परमेश्वर के सम्मुख कुछ भी नहीं हैं। बाइबल में हम यह पढ़ते हैं कि पवित्र-आत्मा हमारे भले कामों को 'मैले चिथड़े' कहता है। परमेश्वर के सम्मुख हमारी ऐसी दशा है! हमारे मन-फिराव के बाद हम उसकी निज प्रजा बन जाते हैं। 1कुरिन्थियों 15:10 में पौलुस कहता है, "मेरे प्रति उसकी कृपा व्यर्थ नहीं ठहरी।" वह परमेश्वर का जन था जिसे प्रभु ने बड़ी सामर्थ्य के साथ इस्तेमाल किया था। उसके परिवार, ज्ञान और शिक्षा को देखते हुए यह समझ आता है कि वह एक श्रेष्ठ योग्यताओं वाला सांसारिक मनुष्य था। बाद में, वह एक प्रेरित बना। फिर भी वह यह कहता है, "परमेश्वर की कृपा से मैं जो हूँ सो हूँ।"

जब हमारा नया जन्म हो जाता है, तब परमेश्वर हममें से हरेक को कोई न कोई दान-वरदान देता है। लेकिन हमें उस पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। परमेश्वर से हम जो कुछ भी पाते हैं, हम उसका संक्रमण अपने आसपास के लोगों में करते हैं, और यह हम परमेश्वर की कृपा द्वारा ही कर पाते हैं। परमेश्वर ने जो दान-वरदान हमें दूसरों पर ख़र्च करने के लिए दिए हैं, उन पर गर्व करने का हमारे पास कोई कारण नहीं है।

परमेश्वर हमें सिर्फ तभी इस्तेमाल कर सकेगा जब हम नम्र व दीन होंगे, और जब हम परमेश्वर की कृपा के लिए प्रतिदिन उसे धन्यवाद देते रहेंगे। बाइबल के ज्ञान या हमारी योग्यताओं के द्वारा नहीं बल्कि सिर्फ नम्रता द्वारा परमेश्वर के राज्य के योग्य पाए जाएंगे। कृपया मत्ती 5:5 पर ध्यान दें: "धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।" कोई भी विश्वासी इस उत्तराधिकार को प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारी विरासत हमारी शिक्षा या और किसी बात पर निर्भर नहीं है।

नवम्बर 19

नमक के संदेश का रहस्य

"निर्बलता में ही मेरी सामर्थ्य सिद्ध होती है"
(2 कुरि. 12:9)।

मेरे मन-फिराव के बाद, मैं दो साल तक परमेश्वर से यह प्रार्थना करता रहा कि वह मुझे उसकी सामर्थ्य का रहस्य दिखाए जिससे कि मेरा जीवन जयवंत और फलवंत हो सके। दो साल तक प्रार्थना करने के बाद, प्रभु एक रात मुझे मिला और उसने मुझसे बात की, "बख़्त सिंह, मुझे बता कि तेरे पाप कैसे क्षमा हुए थे?" मैंने जवाब दिया, "प्रभु मैंने यह अंगीकार किया था कि मैं पृथ्वी पर जी रहा सबसे बड़ा पापी था। मैंने यह मान लिया था कि मेरे पापों के लिए तूने अपना लहू बहाया और मेरे पापों को क्षमा किया था।" प्रभु ने मुझसे कहा, "अब मुझे बता, क्या तू यह मानता है कि तू पृथ्वी का सबसे निर्बल व्यक्ति है और तुझमें कोई सामर्थ्य नहीं है?" उसी क्षण मेरे सारे संदेह दूर हो गए, और मेरे प्रभु के बिना मैंने अपनी निर्बलता और असहायता को जान लिया। वह बहुत विश्वासयोग्य है, और वह मेरी निर्बलता को जानता है, और उसने मुझसे कहा, "मेरी कृपा तेरे लिए काफी है।" किसी भी व्यक्ति के लिए यह कृपा भरपूर है, पर्याप्त है। इस बात से कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि हम क्या हैं, अगर हम सिर्फ नम्र व दीन-हीन बने रहें, तो उसके हाथ में हम एक अद्‌भुत पात्र बन सकते हैं। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं हरेक क़दम पर निर्बल और असहाय होता हूँ लेकिन मैं उसकी कृपा में विश्वास करता हूँ। सिर्फ ऐसा विश्वास ही हमें उसके राज्य के योग्य बनाएगा।

लेकिन सबसे पहले, आपके पाप क्षमा होने चाहिए। यह मसीही जीवन की शुरूआत होती है। नए जन्म के अनुभव के बिना हम इन सत्यों को नहीं समझ सकते। अब जब हम यह कहते हैं, "क्या आपका नया जन्म हुआ है?", तो इसका अर्थ यह होता: "क्या आप आत्मिक रूप में स्वस्थ हैं? क्या प्रभु आपका प्रेमी मित्र बन गया है? क्या वह आपसे बात करता है? क्या आपको उसकी उपस्थिति का अहसास रहता है?" अगर इन सारे सवालों के लिए आपका जवाब हाँ नहीं है, तो अभी उसके चरणों में आ जाएं, इसी क्षण यह पढ़ते-पढ़ते ही आ जाएं और वह आपके पापों को क्षमा कर देगा, आपको धो देगा, अपने प्रेम को आपके अन्दर उण्डेल देगा, और आपको उसके राज्य में शामिल कर लेगा। लेकिन पहले आपको उसे अपने हृदय में आने के लिए कहना होगा।

नवम्बर 20

नमक के संदेश का रहस्य

"इसलिए तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है" (मत्ती 5:48)।

बाइबल परमेश्वर के बारे में तीन बातों को साबित करती है। सबसे पहले यह कि परमेश्वर है। अपनी मूर्खता में, अनेक नस्लों के लोगों ने यह साबित करने की कोशिश की है कि परमेश्वर नहीं है। लेकिन बाइबल का परमेश्वर यह ऐलान करता है: कि वह है, और यह कि वह एक जीवित और व्यक्तिगत परमेश्वर है; हम उसे सुन सकते हैं, उसे महसूस कर सकते हैं, और उससे बात कर सकते हैं। दूसरी बात, कि बाइबल हमें यह दिखाती है कि परमेश्वर प्रेम है। तीसरी बात, वह हमें यह दिखाती है कि आप चाहे जो भी हों, परमेश्वर हमसे प्रेम करता है।

चाहे आपके साथ या आसपास रहने वाले लोग आपसे घृणा करें या आपको तुच्छ जानें, फिर भी मैं पूरे यक़ीन के साथ आपसे यह कह सकता हूँ: परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। जब एक बार हम उसका स्वाद पा लेते हैं, तब फिर हम जहाँ भी जाएंगे या जहाँ भी रहेंगे, हमारे द्वारा दूसरे लोग उस ईश्वरीय प्रेम का स्वाद पा सकेंगे। यह ईश्वरीय प्रेम न सिर्फ हमारे प्रचार द्वारा, बल्कि हमारे जीवन में से भी हर समय प्रवाहित हो सकता है।

हमारा प्रभु चाहता है कि हम अच्छे व शुद्ध नमक हों। उस समय हालांकि ये शब्द उसने पहाड़ी पर बैठकर एक बड़ी भीड़ से कहे थे, लेकिन असल में वे कुछ शिष्यों के लिए ही थे; इसलिए नहीं क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि वह विशाल जन-समूह भी अच्छा नमक बने, बल्कि इसलिए क्योंकि उनमें से ज़्यादातर सिर्फ रोटी और मछली के ही पीछे लगे थे। उसने एक ही बात में पूरे उपदेश का निचोड़ निकाल दिया था: "इसलिए तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" ज़रा सोचिए कि यह कितना ऊँचा मानक स्तर है! इस वजह से ही वह हमें सिद्ध बनाने के लिए आया था। हालांकि हम पाप द्वारा पूरी तरह से बर्बाद और दूषित हो गए हैं, लेकिन हमारे प्रभु के हाथों में आने से हम पूर्ण और सिद्ध हो जाएंगे, और हममें किसी तरह का कोई दाग़ या धब्बा नहीं रहेगा।

नवम्बर 21

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे" (मत्ती 5:6)।

हमें शुद्ध नमक बनाने के लिए शुद्धता की विभिन्न प्रक्रियाएं होती हैं। इसमें चौथा क़दम मत्ती अध्याय 5 का पद 6 है। प्रभु कहता है, "धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं।" ऐसे बहुत लोग हैं जो यह दावा कर रहे हैं कि वे परमेश्वर को खोज रहे हैं, लेकिन असल में वे परमेश्वर को नहीं खोज रहे हैं। वे सिर्फ अपने लिए कुछ खोज रहे हैं। परमेश्वर के ऐसे खोजी बनने के लिए वे बहुत पीड़ा सहने और बड़े बलिदान करने के लिए भी तैयार रहते हैं।

इब्रानियों के 5:12-14 में हम यह देख सकते हैं कि कैसे कुछ विश्वासी सालों-साल तक आत्मिक बच्चे ही बने रहते हैं। आपको ऐसे बहुत लोग मिलेंगे जो किसी मुश्किल, परेशानी, दु:ख या तकलीफ़ के आते ही प्रार्थना करने लगते हैं। स्कूलों के बच्चे और कॉलेज के लड़के-लड़कियाँ भी ऐसे ही होते हैं। अपनी परीक्षाओं के शुरू होने से पहले वे प्रार्थना करना शुरू कर देते हैं: "हे प्रभु, परीक्षा में पास हो जाने में हमारी मदद करना। अगर मैं पास हो गया तो मैं पाँच रुपए दान-पेटी में डालूँगा, लेकिन अगर मैं फेल हो गया तो दो महीने तक किसी सभा में नहीं जाऊँगा।" जब वे कुछ चाहते हैं, तो इस तरह से प्रार्थना करते हैं। जिस धार्मिकता की बात यहाँ परमेश्वर ने की है, उस धार्मिकता को पाने की लालसा बहुत कम लोगों में होती है।

हमारे मसीही जीवन की शुरुआत में, हममें बहुत सी बातों की लालसा होती है। हममें से कुछ लोग चिन्ह्-चमत्कारों की लालसा करते हैं। मैंने भी ऐसा सोचा कि अगर मुझे मेरे कक्ष में कोई अलौकिक ज्योति नज़र आ जाए, तो मैं बहुत आशिषित हो जाऊँगा। इसलिए मैंने प्रार्थना की, "प्रभु, मेरे कक्ष में थोड़ी ईश्वरीय ज्योति भेज दे।" फिर एक रात को जब मैं प्रार्थना कर रहा था, तो मैंने अपने कक्ष में एक धुंधली ज्योति देखी। मैंने दोबारा प्रार्थना की, "प्रभु, इसे ज़्यादा ज्योतिर्मय कर!" फिर कुछ समय बाद, मैंने अपनी आँखें खोलीं तो वह ज्योति थोड़ी तेज़ हो गई थी। कुछ देर बाद जब मैंने खिड़की खोली तो मैंने जाना कि मेरे कक्ष में आनी वाली ज्योति सिर्फ चन्द्रमा की ज्योति थी!

नवम्बर 22

नमक के संदेश का रहस्य

"तेरे भवन की भरपूरी से वे तृप्त होते हैं, और तू उन्हें अपने आनन्द की नदी में से पिलाता है; क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है, और तेरे ही प्रकाश से हमें प्रकाश मिलता है" (भजन. 36:8,9)।

मुझमें यह बड़ी लालसा थी कि मुझे परमेश्वर से किसी तरह का कोई वरदान मिले। मैं क्योंकि गाना नहीं गा सकता था इसलिए मैंने 9 साल तक यह प्रार्थना की कि प्रभु मुझे गाने की या कोई साज़ बजाने की योग्यता प्रदान करे। मैं सोचता था कि अगर मुझे वॉयलिन बजाना आ जाए तो मैं परमेश्वर के लिए महान् काम कर सकूँगा। लेकिन परमेश्वर ने मुझे ऐसा कुछ नहीं दिया। उसने मुझे ऐसे दान-वरदानों से वंचित ही रखा। तब मुझमें एक नई लालसा ने जन्म लिया, "मैं सिर्फ तुझे चाहता हूँ। अब मुझमें दूसरी कोई लालसा नहीं है। मुझे कोई दान-वरदान नहीं चाहिए। मैं सिर्फ तुझे ज़्यादा से ज़्यादा जानना चाहता हूँ कि तू मेरे लिए सबसे ज़्यादा मूल्यवान और वास्तविक हो जाए।" उस दिन के बाद से मेरे जीवन में सब कुछ बदल गया, और मुझे बड़े संतोष की अनुभूति हुई।

पवित्र-शास्त्र कहता है: "धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।" वही हैं जो तृप्त किए जाएंगे। जब हम इस तरह से प्रार्थना करने वाले बन जाएंगे, तब हम यह कहेंगे, "प्रभु, मेरी कोई अभिलाषा नहीं है। मैं तुझसे कुछ माँगने के लिए नहीं आया हूँ। मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ कि मैं हमेशा तेरे पास रहूँ और तेरी उपस्थिति में आनन्दित रहूँ, और अपने इर्द-गिर्द तेरी बाहों के घेरे को महसूस करता रहूँ।"

नवम्बर 23

नमक के संदेश का रहस्य

“स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे सिवाय मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता” (भजन. 73:25)।

कुछ लोगों को प्रार्थना करना बहुत मुश्किल लगता है। शुरू में मुझे भी प्रार्थना करना मुश्किल लगता था। मैं दिन में बहुत घण्टों तक बाइबल पढ़ता रहता था। परमेश्वर ने मेरे अन्दर से चलचित्र (मूवी) देखने और दूसरी सांसारिक बातों की लालसा को निकाल दिया था। इसलिए मैंने दूसरी सभी पुस्तकें पढ़ना छोड़कर सिर्फ बाइबल पढ़ना शुरू कर दिया था। मैं बाइबल पढ़ने से कभी नहीं थकता था हालांकि मैं कभी-कभी 12 घण्टे या उससे भी ज़्यादा देर तक पढ़ता रहता था। लेकिन मैं पाँच मिनट से ज़्यादा प्रार्थना नहीं कर पाता था। मैं बहुत कोशिश करता था, लेकिन हमेशा ही, कुछ ही मिनटों के बाद मेरे विचार भटकने लगते थे, या मुझे नींद आ जाती थी। ऐसा दो साल तक चलता रहा।

लेकिन मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे उसके साथ बात करना सिखा दिया। उसके बाद यह मेरा सबसे मूल्यवान अनुभव हो गया और तब मेरे मन में से बाक़ी सारी लालसाएं जाती रहीं। मैं जब भी प्रभु के पास जाता था, मैं उससे यही कहता था, “प्रभु, मैं तेरे पास धन या ज्ञान या और किसी बात के लिए नहीं आया हूँ। तू मुझे कहीं भी रख और मुझे कहीं भी भेज, लेकिन मैं सिर्फ तेरे साथ रहना चाहता हूँ। मुझे सिर्फ और सिर्फ तेरे ही साथ रहने का सौभाग्य और सम्मान दे।” जब भी आप इस तरह उसकी ईश्वरीय उपस्थिति में जाएंगे, तो आप आपनी सारी थकान, डर और आशंकाओं को लुप्त होता हुआ पाएंगे।

आपका भय या संकट चाहे जो भी हो, आपके घाव चाहे कितने भी पीड़ादायक क्यों न हों, जब आप प्रभु यीशु मसीह के पास जाएं, तो उसे अपनी चिंताओं, मुश्किलों या पीड़ाओं के बारे में न बताएं; वह आपके बताने से पहले ही उन्हें जानता है। आप उसके आगे घुटने टिका कर यह कहें: “मैं यह समय तेरे साथ बिताना चाहता हूँ। मुझे तेरी उपस्थिति में आनन्द मनाने दे।” तब आपकी सारी तकलीफें ग़ायब हो जाएंगी, और जब आप अपने घुटनों पर से उठेंगे, तो आप आशिषित और तरोताज़ा महसूस करेंगे।

नवम्बर 24

नमक के संदेश का रहस्य

"तुम जीवित पत्थरों के समान एक आत्मिक भवन बनते जाते हो" (1 पत. 2:5)।

सवाल यह है कि एक जीवात्मा की भूख और प्यास कैसे मिट सकती है? इसका जवाब भजन संहिता 36:8 में दिया गया है: "तेरे भवन की भरपूरी से वे तृप्त होते हैं।" परमेश्वर के लोग सिर्फ परमेश्वर के भवन में आने द्वारा ही पूरी तरह तृप्त हो सकते हैं। 1 पतरस 2:5 के अनुसार हम स्वयं ही वे जीवित पत्थर हैं जिन्हें आपस में जुड़कर परमेश्वर का भवन बनना है।

जब मैं फिलिस्तीन गया तो मैंने एक बहुत पुराने यहूदी आराधनालय में कुछ बहुत बड़े पत्थरों को लगा हुआ देखा। एक छोटा कंकर लेकर दीवार में लगे इन बड़े पत्थरों पर मारने से एक बड़ा मधुर संगीतमय स्वर निकलता था, ऐसा जैसे एक बाजे में से निकलता है। हरेक पत्थर में से एक अलग ही स्वर निकलता था। कोई यह नहीं जानता कि उन पत्थरों को कैसे तराशा गया था। दूर-दूर से लोग आकर उन पत्थरों पर कंकर मारते और उनमें से निकलने वाले मधुर स्वर को सुनते थे।

इसी तरह, जब आपका नया जन्म हो जाता है, तो आप प्रभु यीशु मसीह के जीवित पत्थर बन जाते हैं, और आपके अन्दर से स्वर्गीय संगीत निकलता है। लोग चाहे हमें श्राप दें, हमें मारें, या हमारी बुराई करें, हम फिर भी उनसे कह सकते हैं, "प्रभु तुम्हें आशिष दे, तुम्हें और ख़ुशी दे, और तुम्हें क्षमा करे।" स्तिफनुस को हालांकि पत्थरों से मार रहे थे, फिर भी उसने कहा, "प्रभु, यह पाप इन पर मत लगा।" वह यह कह रहा था, "प्रभु, इन्हें क्षमा कर।" प्रभु ने उसके अन्दर स्वर्गीय संगीत दिया। ऐसे सभी पत्थर मिलकर परमेश्वर का भवन बनाते हैं।

नवम्बर 25

नमक के संदेश का रहस्य

“कोने का पत्थर, स्वयं प्रभु यीशु मसीह... जिसमें पूरी रचना एक-साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।” (इफि. 2:20,21)।

मेरे मन-फिराव के बाद, मैं अलग-अलग जगहों में घूमता रहता था, और अपने हृदय में एक भूख लिए विभिन्न् कलीसियाई भवनों में आता-जाता रहता था। लेकिन ऐसे बड़े-बड़े भवनों, बड़े योग्य प्रचारकों और बड़े भव्य संगीत के बावजूद, उन भवनों में से निकलते समय मेरी भूख वैसी ही बनी रहती थी।

एक सुबह में वैन्कूवर के रास्तों में घूमने के लिए निकला। वहाँ मैंने एक छोटी सी जगह देखी। मैंने सोचा, “मैं अपनी रविवार की आराधना यहीं कर लेता हूँ।” जब मैं अन्दर गया, तो एक व्यक्ति ने, जिसका चेहरा चमक रहा था, आकर मेरा स्वागत किया। उसने कहा, “आपको देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई है।” मेरा नाम पूछे बिना ही उसने मुझे अन्दर आने के लिए कहा और मुझे बताया कि वे सिर्फ थोड़े से ही विश्वासी थे, लेकिन वे सभी प्रभु से प्रेम करते थे। उनमें से हरेक के पास बाइबल थी। मुझे उस छोटे से झोंपड़ीनुमा घर में बहुत ख़ुशी मिली।

परमेश्वर के बच्चों के साथ मिलकर सहभागिता करने, आत्मा और सत्य में उसकी आराधना करने, और परमेश्वर के घर के आत्मिक रहस्यों को समझने से ही ऐसा होगा कि हमारी भूख भरपूरी से तृप्त की जा सकेगी। लेकिन यह एक दु:ख की बात है कि ज़्यादातर विश्वासियों को सच्ची कलीसिया का अर्थ ही नहीं पता है। हम विश्वासियों को मिलाकर ही सच्ची कलीसिया बनती है। जब हम परमेश्वर के घर की भरपूरी में से अपना पूरा भाग लेते हैं, सिर्फ तभी हम अपनी भूख और प्यास को पूरी तरह तृप्त होता हुआ पाएंगे। हम जैसे-जैसे प्रभु की आराधना करेंगे, और उसे देखेंगे और उसमें से खाएंगे और पीएंगे, तो वह हमारे लिए ज़्यादा से ज़्यादा वास्तविक बनता जाएगा। तब हम इस पृथ्वी को अच्छे नमक का स्वाद दे सकेंगे।

नवम्बर 26

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो दयावंत हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी" (मत्ती 5:7)।

"धन्य हैं वे जो दयावंत हैं" (पद 7) यह पाँचवाँ क़दम है। सिर्फ सच्चे विश्वासी ही असली दया और करुणा प्रदर्शित कर सकते हैं। वे किसी पर भी, कहीं भी, और हर समय दया कर सकते हैं। सबसे अप्रिय व्यक्ति पर भी दया दिखाई जा सकती है, लेकिन यह सिर्फ तभी सम्भव होगा जब हममें ईश्वरीय प्रेम होगा। यह प्रेम हममें किसी भी मानवीय काम या कोशिश से पैदा नहीं हो सकता है। यह प्रेम हममें पवित्र-आत्मा द्वारा बाहर से ही उण्डेला जा सकता है। सिर्फ ऐसे ईश्वरीय प्रेम से ही हमारे लिए दूसरों को क्षमा करना आसान हो सकेगा। ऐसे अनेक मसीही हैं जिनके हृदय बहुत कठोर हैं। वे जो भी प्रेम प्रदर्शित करते हैं वह हृदय से नहीं बल्कि सिर्फ मुँह से बोलने के लिए ही होता है।

जब दूसरे लोग उन्हें क्षमा करने के लिए हमसे कहते हैं, तब हमारे पास यह मौक़ा होता है कि हम मसीह के नाम में उनके सामने दया प्रकट करें (मत्ती 18:35)। यह मेरा अनुभव रहा है कि अनेक लोग जब परमेश्वर के वचन के द्वारा छुए गए थे, तो उन्होंने जाकर सम्बन्धित व्यक्ति से क्षमा माँगी थी। लेकिन वे व्यक्ति कभी-कभी ऐसा जवाब देते हैं, "ठीक है, मैं तुम्हें क्षमा कर रहा हूँ, लेकिन मैं तुमसे बात नहीं करूँगा। अब कृपया मेरे घर दोबारा न आना।" यह क्षमा नहीं है। चाहे उन्होंने आपके ख़िलाफ कितनी बार भी अपराध क्यों न किया हो, आपको उन्हें हृदय से क्षमा करना चाहिए (देखें मत्ती 18:21,22)। जैसे प्रभु ने आपको क्षमा किया है, वैसे ही आप भी दूसरों के प्रति दया, करुणा और क्षमा करने वाले हों। कुलुस्सियों 3:13,14 को दोबारा से देखें। अगर आप दया करने वाले बनना चाहते हैं, तो उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार रहें जो क्षमा माँगते हैं।

सिर्फ प्रभु यीशु मसीह ही हमारे हृदयों में ऐसा प्रेम उण्डेल सकता है। प्रभु की स्तुति हो कि यह "नमक" न सिर्फ हमारे मित्रों और सम्बंधियों के लिए, बल्कि हमारे शत्रुओं के लिए भी एक आशिष होता है (देखें रोमियों 12:20,21)। "धन्य हैं वे जो दयावंत हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।"

नवम्बर 27

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जिनके मन हृदय शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती 5:8)।

जब हम खुले स्थानों में प्रचार करते हैं, तो अक्सर लोग हमारा मज़ाक उड़ाते हैं और यह कहते हैं, "हम परमेश्वर को देखना चाहते हैं। हमें अपना परमेश्वर दिखा दो, तो हम उसमें विश्वास करने लगेंगे।" वे यह नहीं समझते कि इससे पहले कि वे परमेश्वर को देख सकें, यह ज़रूरी है कि उनके हृदय शुद्ध हों। बाइबल कहती है, "धन्य हैं वे जिनके हृदय शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" वे उसे देखेंगे, एक क्षण या एक मिनट या एक घण्टे के लिए नहीं, बल्कि अनन्तकाल के लिए। वे उसे उसकी पूरी महिमा में देखेंगे, और वे उसके पास होंगे।

1यूहन्ना 1:7 में परमेश्वर का वचन कहता है कि यीशु मसीह का लहू हमें लगातार साफ करता रहता है। मैं इस बात की व्याख्या करना चाहता हूँ। आँख की रचना इस तरह से की गई है कि जब भी उसमें कोई धूल का कण या कोई बाहरी चीज़ आ जाती है, चाहे वह कितनी भी सूक्ष्म क्यों न हो, तो आँख फड़फड़ाने लगती है और उसमें से तब तक पानी बहता रहता है जब तक कि वह बाहरी गंदगी साफ नहीं हो जाती। इस तरह आँख की पुतली हमेशा साफ रहती है। इसी तरह लहू भी हमें शुद्ध करता है। हमेशा ही हम यह पाते हैं कि कोई बुरा विचार या कुछ और हमारे हृदयों में प्रवेश करने की कोशिश करता रहता है। वे प्रभु मसीह के लहू के अलावा और किसी तरीक़े से नहीं निकल सकते। जब हम विश्वास से पुकार कर यह कहते हैं, "हे प्रभु, हमें शुद्ध कर", तो हम उसी क्षण शुद्ध हो जाते हैं। प्रभु यह नहीं कहेगा, "अभी मेरे पास समय नहीं है। मैं कल आकर यह करूँगा।" इसकी बजाय, वह कहता है, "मुझे पुकार, मैं तेरी सुनूँगा।" हम यह कैसे जानेंगे कि हम शुद्ध हो गए हैं? क्योंकि तब हम परमेश्वर को देख सकेंगे। यूहन्ना 4:24 के अनुसार, "परमेश्वर आत्मा है, और यह ज़रूरी है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।" जब हम अपनी आत्मा में शुद्ध हो जाते हैं, तब हम परमेश्वर को जान लेते हैं, उसे देख लेते हैं, और उसके साथ होते हैं।

नवम्बर 28

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे" (मत्ती 5:9)।

हमारे अपने स्वभाव में हम सब परमेश्वर के शत्रु हैं। फिर जब हमारा नया जन्म होता है तो हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं। जब आपका नया जन्म होता है तब आप मेल कराने वाले बन जाते हैं। तब आपके द्वारा परमेश्वर के शत्रु परमेश्वर के मित्र बन सकेंगे, और आपको यह सेवकाई परमेश्वर की संतान होने के विशेषाधिकार के रूप में दी जाती है।

क्या परमेश्वर आपसे यह कह रहा है: "मेरे पीछे चल, मेरे पीछे आ?" उसका विरोध न करें। परमेश्वर के साथ तर्क-वितर्क करने में अपना समय बर्बाद न करें। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने से शैतान हमें किस तरह रोकता रहता है! ऐसा हो कि चाहे परमेश्वर आपको पृथ्वी के छोर तक भी क्यों न भेजे, फिर भी वह उसकी आज्ञा का पालन करने में आपकी मदद करे। इस तरह आज्ञापालन करने के लिए आपको हर तरह का कष्ट सहने के लिए तैयार रहना होगा। मानवीय योग्यताओं के बारे में बढ़-चढ़ कर न सोचें। हममें से जो भी परमेश्वर के आगे टूटने के लिए तैयार हो जाएगा, वह उसे इस्तेमाल कर सकता है। लेकिन वह आपको बलपूर्वक मजबूर नहीं करेगा।

जब मैंने परमेश्वर से यह कहा, "मैं अपना जीवन तुझे सौंपता हूँ," सिर्फ तभी उसने मुझे लिया और इस्तेमाल किया। तब उसने अपने तरीक़े से मुझे तैयार किया। वह मुझे बहुत सी पीड़ादायक परीक्षाओं में से लेकर गुज़रा, और मैं उन सबके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। अब मैं आपसे यह निवेदन करता हूँ कि अब आप उसकी आज्ञा का पालन करें। उससे कहें, "मेरे जीवन को ले ले और अपनी इच्छानुसार मुझे इस्तेमाल कर।" जब हम अपने आपको प्रभु यीशु मसीह को सौंप देते हैं, तो वह हममें से अद्‌भुत स्वर्गीय संगीत उत्पन्न कर सकता है। इसलिए उसके आगे टूट जाएं, उसे प्रत्युत्तर दें और कहें, "मेरे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूँगा। मेरा जीवन ले ले; मुझे अपना साक्षी बना; मुझे अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल कर। मैं तेरे लिए ख़र्च करना और ख़र्च होना चाहता हूँ।" जबकि आप अभी जवान ही हैं तो उसे अपना जीवन सौंप दें। ऐसा करने के लिए वृद्धावस्था तक इंतज़ार न करें। "धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।" वे परमेश्वर के हृदय को भरपूर आनन्द देंगे।

नवम्बर 29

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" (मत्ती 5:10)।

कुछ साल पहले एक मुस्लिम व्यक्ति मेरे पास आया और मुझसे बोला कि वह मसीही बनना चाहता है। वह विश्व-विद्यालय का स्नातक था। "क्या आप कहीं सभाओं में गए हैं?" मैंने उससे पूछा। "नहीं," उसने जवाब दिया। मैंने उससे पूछा कि फिर उसे सुसमाचार में ऐसी दिलचस्पी क्यों हो गई थी। तब उसने मुझे बताया कि एक दिन वह उसके घर के पास उसके एक हिन्दू मित्र से मिलने गया था। उसके मित्र के घर के आगे एक छोटा सा ओसारा था। जब वह वहाँ खड़ा था तो एक सफाई कर्मचारी वहाँ आया और अपनी टोकरी को ओसारे में रखकर वहाँ सफाई करने लगा। जबकि यह व्यक्ति वहाँ झाड़ू लगा रहा था, तब एक हिन्दू दुकानदार ने भी उस घर के ओसारे में प्रवेश किया। वह धोती पहने हुए था, और ऐसा हुआ कि उसकी धोती का किनारा वहाँ रखी टोकरी से छू गया।

इस पर वह व्यक्ति क्रोध से आग-बबूला हो उठा। उसने अपनी चप्पल निकाल उस सफाई कर्मचारी को यह कहते हुए उससे पीटना शुरू कर दिया, "तूने इस टोकरी को यहाँ क्यों रखा है?" उसने जवाब दिया, "यही मेरा काम है, और मैं सिर्फ अपना काम ही कर रहा हूँ।" यह कहकर उस सफाई कर्मचारी ने अपना गाल उसकी तरफ फेरकर कहा, "परमेश्वर तुम्हें आशिष दे।" जब सारा मामला निपट गया, तब इस मुस्लिम व्यक्ति ने सब कुछ देखने के बाद उस सफाई करने वाले से पूछा, "तुमने उसे ऐसा क्यों करने दिया? तुम अपना कर्तव्य निभा रहे थे। सारी ग़लती उस आदमी की थी, उसे अपनी धोती को थोड़ा ऊपर उठाकर चले जाना चाहिए था।" लेकिन उसने मुझसे कहा, "अगर मेरे प्रभु ने मेरे लिए इतना कुछ सहा है, तो क्या मैं उसकी ख़ातिर इतना भी नहीं सह सकता?" उस मुस्लिम युवक ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "उस सफाई कर्मचारी के प्रेम ने मेरे हृदय में काम किया। इस वजह से ही मैं अब मसीही बनना चाहता हूँ।" वह एक मसीही बना, उसने बपतिस्मा लिया, और वह प्रभु का एक अच्छा साक्षी भी बना। अगर हम धीरज से सताव सहने वाले होंगे, तो हम दूसरों के हृदयों में प्रेम का संचार करने वाले बनेंगे।

नवम्बर 30

नमक के संदेश का रहस्य

"धन्य हो तुम जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करे, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल-बोल कर तुम्हारे ख़िलाफ सब तरह की बातें करें। आनन्दित और मग्न होना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान् है" (मत्ती 5:11,12)।

अगर आप विश्वासयोग्य होना चाहते हैं, तो आपको परमेश्वर-रहित लोगों के हाथों सताए जाने के लिए तैयार रहना होगा। ऐसे कितने लोग हैं जो रिश्वत न देने और न लेने की वजह से सताव सहते हैं! अनेक लोग अनेक सालों तक उनकी पदोन्नति से वंचित हो जाते हैं। इसलिए, अगर आपको सताव सहना पड़े, तो धीरज रखें। परमेश्वर का वचन कहता है कि स्वर्ग में आपके लिए एक महान् प्रतिफल रखा है।

कुछ ऐसे मसीही हैं जो अपने माथे पर *तिलक* लगाते हैं (जो हिन्दुओं का एक धार्मिक चिन्ह् होता है) क्योंकि उन्हें मसीही कहलाने में शर्म आती है। वे हिन्दुओं के साथ अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। कराची (पाकिस्तान) के साम्प्रदायिक दंगों में, एक मसीही स्त्री के माथे पर एक मुस्लिम ने ऐसा ही एक तिलक का निशान देखा। उसने उसे एक हिन्दू समझ कर अपना छुरा निकाल कर उसे मार डालना चाहा। वह स्त्री चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगी, "मैं एक मसीही हूँ!" उस मुस्लिम पुरुष ने उससे पूछा, "तब तूने अपने माथे पर यह तिलक क्यों लगा रखा है?" उसने फौरन अपने ही थूक से उसे पोंछ डाला। अनेक मसीही प्रभु यीशु मसीह के नाम से लजाते हैं। वे सताव सहने से डरते हैं। इस वजह से उनके जीवन सूखे, शर्मनाक और घिनौने होते हैं।

ऐसा हो कि हमारा प्रभु हमें ऐसा अच्छा नमक बना सके जो न सिर्फ अच्छा स्वाद देने वाला हो, बल्कि जो अपने आसपास के लोगों के प्रति भरपूर कृपा और संवेदना भी प्रदर्शित कर सके। पृथ्वी का नमक होते हुए, हम बहुत सी आँखों के आँसू पोंछ सकते हैं और बहुत से घरों में आनन्द ला सकते हैं, और इस तरह उनके जीवनों से दु:ख और कष्ट को दूर भगा सकते हैं। परमेश्वर आपको ऐसी सेवकाई में बुला रहा है। अगर आप अपने आपको दीन करेंगे, और अपने पापों का अंगीकार करेंगे, तो प्रभु यीशु मसीह अपने लहू से आपको धो देगा और आपको नया जीवन देगा। उस जीवन के द्वारा आप नमक के समान बन जाएंगे, और फिर आप जहाँ भी जाएंगे वहाँ हमेशा नया स्वाद, नया जीवन और नई आशिष देंगे।

दिसम्बर 1

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"मत डर, मैं ही प्रथम, अंतिम और जीवित हूँ। मैं मर गया था और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूँ। मृत्यु और अधोलोक की कुँजियाँ मेरे पास हैं" (प्रका. 1:17,18)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का पहला अध्याय हमारे सनातन महायाजक के रूप में प्रभु यीशु मसीह की महिमा को दर्शाता है। यह पुस्तक आत्मिक पुनःप्राप्ति के लिए एक संदेश है। अगर हम ईश्वरीय क़ानूनों को मानेंगे, तो हरेक नुक़सान की भरपाई की जा सकती है। हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना ने उसके पीछे एक बड़ी आवाज़ सुनीं, और वह यह देखने के लिए मुड़ा कि वह कौन है जो उससे बोल रहा है। यूहन्ना ग़लत दिशा में देख रहा था (प्रका. 1:10–12)। हम भी जब ग़लत दिशा में देखने लगते हैं, तो निराश हो जाते हैं।

प्रकाशितवाक्य 1:20 में हम यह देखते हैं कि प्रभु यीशु मसीह किस तरह की कलीसिया का निर्माण कर रहा है। प्रकाशितवाक्य 1:13 मसीह को हमारे सनातन महायाजक के रूप में प्रकट करता है। यह अध्याय प्रभु यीशु मसीह की सात विशिष्टताएं दिखाता है।

1. उसका सिर और बाल ऊन की तरह सफेद थे – प्रका. 1:1–18।
2. उसकी आँखें अग्निमय ज्वाला की तरह थीं।
3. उसके पैर चमकाए हुए पीतल की तरह थे; पीतल न्याय का प्रतीक होता है। उत्पत्ति 3:15 में यह नबूवत की गई थी कि सर्प के सिर को कुचला जाएगा।
4. उसकी आवाज़ महाजलनाद की तरह थी – प्रका. 1:15; 19:6।
5. उसके हाथ में सात तारे थे। प्रभु कलीसियों को अपने हाथ में रखता है।
6. उसके मुख से एक तेज़ दोधारी तलवार निकल रही थी; इब्रानियों 4:12 में परमेश्वर के वचन की तुलना एक तेज़ दोधारी तलवार से की गई है।
7. अंततः, उसका मुख–मण्डल ऐसा था जैसा दोपहर के समय चमकता हुआ सूर्य।

प्रभु ने प्रेरित यूहन्ना को अपना एक नया दर्शन दिया। जब आप मसीह को प्रस्तुत करें, तो सिर्फ उसकी शिक्षाएं ही नहीं उसकी स्वर्गीय महिमा और सौन्दर्य को भी प्रस्तुत करें। प्रकाशितवाक्य 19:6 उसे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में प्रस्तुत करता है।

दिसम्बर 2

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"वह जो अपने हाथों में सात तारे लिए हुए है, और जो सात स्वर्ण दीपदानों के बीच में चलता है, वह यह बातें कहता है" (प्रका. 2:1)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, अंत के दिनों के लिए एक विशेष संदेश है, और इसे सुनने और इस "नबूवत के वचन" (प्रका. 22:7) का पालन करने वाले के लिए विशेष आशिष की प्रतिज्ञा की गई है। प्रकाशितवाक्य 21:7 कहता है: "जो जय पाए, वह इन बातों का वारिस होगा" और यह पुस्तक हमें जय पाना सिखाती है। इस अध्याय में, प्रभु यीशु अपनी कलीसियाओं के बीच में नज़र आता है (देखें मत्ती 16:18)।

इस पुस्तक के संदेश को सात भागों में बाँटा जा सकता है, और हरेक भाग इतिहास के एक समयकाल का बयान करता है। कुल मिलाकर सात संदेश हैं और हरेक के सात भाग हैं। प्रभु यीशु मसीह को सात शीर्षक दिए गए हैं। और इनमें उसने अपने आपको सातों कलीसियाओं के आगे प्रस्तुत किया है, और हरेक कलीसिया या समयकाल में उसने आपको जिस भूमिका में प्रस्तुत किया है, उस भूमिका में उसे जानने द्वारा ही एक जय पाने वाला जय पाने योग्य बन सकता है।

पहला समयकाल इफिसुस की कलीसिया द्वारा चित्रित किया गया है। प्रकाशितवाक्य 2:1, इफिसुस की कलीसिया के दूत से बात कर रहा है। मसीह अपना परिचय इस रूप में देता है कि वह वही है *जिसके हाथ में सात तारे* हैं। प्रभु ने इस कलीसिया को अपना परिचय इस रूप में भी दिया कि *वह जो सात स्वर्ण दीपदानों के बीच में चलता-फिरता* है। वह इस कलीसिया के ख़िलाफ एक गंभीर आरोप लगाता है: "तूने अपना पहला-सा प्रेम छोड़ दिया है। मैं तुझे इस्तेमाल नहीं कर सकता। तूने प्रभु से प्रेम करना छोड़ दिया है।" अगर हममें प्रभु के लिए प्रेम नहीं है, तो वह हमें इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। इस कलीसिया से इस *प्रतिफल* की प्रतिज्ञा की गई है कि जो जय पाएगा, मसीह उसे जीवन के वृक्ष में से खाने के लिए देगा (प्रका. 2:7)। विश्वासयोग्य रहने का प्रतिफल जीवन के वृक्ष में से खाना है।

दिसम्बर 3

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह के द्वारा हमारी जय के उत्सव में अगुवाई करता है, और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की मधुर सुगन्ध हर जगह फैलाता है। परमेश्वर के निमित्त हम मसीह की मधुर सुगन्ध हैं" (2 कुरि. 2:14-15)।

दूसरा समयकाल स्मुरना की कलीसिया का समयकाल है (प्रका. 2:8)। इस नाम में पीड़ा का संकेत है। हमें पीड़ा सहने के लिए बुलाया गया है कि हममें से एक मधुर सुगन्ध निकल सके। प्रभु ने उनसे कहा, "तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना पड़ेगा, लेकिन तुम प्राण देने तक विश्वासी रहना।" अंक 10 परीक्षा का प्रतीक होता है। इस परीक्षा में सफल होने वाले *जीवन का मुकुट* पाएंगे (याकूब 1:12)।

दूसरी कलीसिया से यह प्रतिज्ञा की गई है (2:11) कि जय पाने वालों को दूसरी मृत्यु से कोई नुक़सान नहीं होगा। प्रभु इस कलीसिया में "प्रथम और अंतिम" के रूप में आता है, वह "जो मर गया था, लेकिन अब जी-उठा है।"

तीसरा समयकाल पिरगमुन की कलीसिया का है (प्रक. 2:12 से अध्याय के अंत तक)। इस कलीसिया के सामने मसीह ने स्वयं को प्रस्तुत करते हुए कहा कि वह वही है "जिसके पास तेज़ दोधारी तलवार है।" इस कलीसिया में ऐसे सदस्य भी थे जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते थे (प्रक. 2:15)। यह वह शिक्षा है जिसमें परमेश्वर की कलीसिया में मनुष्यों द्वारा नियुक्त किए गए अगुवों का सर्वाधिकार होता है। यहाँ जिस प्रतिफल की प्रतिज्ञा की गई है वह छुपा हुआ मन्ना है, वह आत्मिक भोजन जिसकी हमें नया जीवन पाने के लिए ज़रूरत होती है। जय पाने वाले को एक*सफेद पत्थर* भी देने की प्रतिज्ञा की गई है। सफेद पत्थर के द्वारा हम भी परमेश्वर की इच्छा जान सकेंगे।

कलीसियाई इतिहास का चौथा समयकाल थूआतीरा की कलीसिया का समयकाल है (प्रका. 2:18)। यहाँ मसीह अपने आपको परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। वह कहता है, "मेरी आँखों में देखो!" मैं ऐसा दुस्साहस कैसे कर सकता हूँ? जब तक शैतान के द्वारा पैदा किए गए पाप का न्याय नहीं हो जाता, तब तक हम स्वयं शैतान पर भी जय नहीं पाप सकते।

यहाँ जिस प्रतिफल की प्रतिज्ञा की गई है, वह 2:28 में भोर का तारा है।

दिसम्बर 4

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"देख, मैं द्वार पर खड़ा खटखटाता हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुन कर द्वार खोले तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ" (प्रका. 3:20)।

पाँचवाँ समयकाल (प्रका. 3:6) *सरदीस* का समयकाल है। इसमें प्रभु यीशु मसीह अपना परिचय देते हुए कहता है कि उसके पास परमेश्वर की सात आत्माएं हैं (प्रका. 3:1)। पद 5 में जय पाने वालों को जिस श्वेत वस्त्र की प्रतिज्ञा की गई है, वह स्वर्गीय सुन्दरता के बारे में बताता है। उसने यह प्रतिज्ञा भी की है कि वह जय पाने वालों के नाम को जीवन की पुस्तक में से नहीं मिटाएगा।

छठा समयकाल *फिलादेलफिया* (प्रका. 3:7) है जो मिशनरी समयकाल है। यहाँ प्रभु अपना परिचय देते हुए कहता है कि जिस द्वार को वह बंद कर देता है, उसे कोई मनुष्य नहीं खोल सकता। पद 12 में वह जय पाने वालों से चार–गुणी प्रतिज्ञा करता है। जय पाने वाले को मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक स्तम्भ बनाऊँगा। वह दूसरे विश्वासियों को नया बल देने वाला होगा। उसके ऊपर 'मेरे परमेश्वर के नगर अर्थात् नए यरूशलेम का नाम, और मेरा नाम और सबसे बढ़कर मेरे परमेश्वर का नाम भी लिखा होगा।'

प्रकाशितवाक्य 3:14 में, हम *सातवाँ* समयकाल या *लौदीकियाई*समयकाल पाते हैं। इसमें प्रभु अपना परिचय आदि और अंत के रूप में देता है। वह सारी सृष्टि का आरम्भ है। पद 15 में वह कलीसिया से कहता है कि वे लोग उसकी नज़र में गुनगुने और लापरवाह हैं जिनमें परमेश्वर के वचन के लिए कोई भूख नहीं है; उनमें सिर्फ औपचारिकता है, भद्र व सम्मानित नज़र आने की लालसा है; और अनेक पुस्तकें, इमारतें और धन–सम्पत्ति की अभिलाषा है। जब हम परमेश्वर के सिंहासन में सहभागी होने की लालसा करते हैं, जैसा कि प्रभु प्रका. 3:21 में प्रतिज्ञा करता है, तब हम यह भी सोचते हैं जबकि हमारी मानवीय सीमाएं इतनी ज़्यादा हैं तो हम ऐसा कैसे कर सकेंगे।

हमारे उस सिंहासन में शामिल होने की वजह हमारा कुछ होना नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर की वाचा की वजह से है। भजन संहिता 89:34 में वह प्रतिज्ञा करता है: "मैं अपनी वाचा नहीं तोड़ूँगा।" मेघधनुष परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का प्रतीक है। हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करके उस पर हमारे अधिकार का दावा करना चाहिए।

दिसम्बर 5

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"मैं अपनी वाचा को नहीं तोडूँगा, और न अपने होठों से निकली बातों को बदलूँगा" (भजन. 89:34)।

मेघधनुष में सात रंग होते हैं, जो सात वाचाओं के प्रतीक हैं।

1. परमेश्वर ने पहली *वाचा आदम के साथ* बाँधी थी (उत्पत्ति 3:15)
2. परमेश्वर ने *दूसरी वाचा नूह के साथ* बाँधी थी (उत्पत्ति 9:9-11)।
3. परमेश्वर ने *तीसरी वाचा अब्राहम के साथ* बाँधी थी (उत्पत्ति 17:19)।
4. परमेश्वर ने *चौथी वाचा मूसा के साथ* बाँधी थी (व्य.वि. 18:15)।
5. परमेश्वर ने *पाँचवीं वाचा दाऊद के साथ बाँधी थी* (2 शमू. 7:12-13)।
6. प्रभु की *छठी वाचा प्रभु यीशु मसीह के साथ* थी (भजन. 2:7-8)।
7. परमेश्वर की *सातवीं वाचा विश्वासी के साथ* है (इब्रा. 10:12-17)।

प्रकाशितवाक्य 21:7 यह प्रतिज्ञा करता है कि जय पाने वाले सब बातों के वारिस होंगे। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4 व 5 स्वर्गीय कलीसिया में प्रभु यीशु मसीह की उस महिमा का बयान करते हैं जब कलीसिया सिद्ध हो जाएगी। सिंहासन के चारों तरफ एक मेघधनुष था। परमेश्वर की सात आत्माएं पवित्र-आत्मा की भरपूरी के बारे में बताती हैं (प्रका. 4:5)। चारों प्राणी प्रभु यीशु मसीह के चार महान् गुणों के बारे में बताते हैं, और जब हम उसके शीर्षाधीन हो जाते हैं, तब हम भी उन गुणों में शामिल हो जाते हैं।

सिंह: (नीति. 30: 29,30) सब प्राणियों में सबसे शक्तिशाली है। वह नदी की धारा का प्रवाह तेज़ होने पर भी उसमें से सीधा निकल जाता है। *बैल:* (मत्ती 11:28) भूमि जोतने के काम आता है। एक कमज़ोर बैल को ज़्यादा बोझ ढोने वाले शक्तिशाली बैल के साथ जोता है। *मनुष्य* (इब्रा. 2:17)। वह हमारी तरह मनुष्य बन गया। उसने अपने आपको हमारी तरह परखे जाने दिया। हमारी निर्बलताओं का अहसास उसे छूता है। इसलिए हम सदेह कृपा के सिंहासन के पास जा सकते हैं। *उकाब:* (व्य.वि. 32:11)। उकाब अपना घोंसला ऊँचे स्थानों में बनाता है। हम प्रभु यीशु की शीर्षता के अधीन होते ही ये चारों गुण प्राप्त कर लेते हैं (प्रका. 4:9,10)। प्राचीन वे जय पाने वालों के प्रतीक हैं जो स्तुति से भरे हुए हैं। एक जय पाने वाले का सबसे बड़ा चिन्ह् यह है कि वह स्तुति से भरा होता है। अगर स्तुति नहीं है, तो आत्मिक उन्नति बहुत मामूली होगी। हमारी शिक्षा अच्छी हो सकती है, लेकिन अगर कोई आराधना नहीं है, तो कोई उन्नति नहीं होगी।

दिसम्बर 6

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"तब मैंने सिंहासन और उन प्राचीनों और चारों प्राणियों सहित मानो बलि किया हुआ मेमना खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात नेत्र थे, जो कि परमेश्वर की सात आत्माएं हैं जो समस्त पृथ्वी पर भेजी गई थीं" (प्रका. 5:6)।

सिंहासन के बीच में मानो एक घात किया हुआ मेमना खड़ा था। घात हुए मेमने के अलावा कोई पुस्तक को खोलने लायक़ नहीं मिला (प्रक. 5:6)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परमेश्वर के मेमने का उल्लेख 28 बार किया गया है। इससे हमारे प्रभु यीशु मसीह की सूली का अर्थ 28 गुणा हो जाता है। *सात सींग* यह दर्शाते हैं कि वह एक राजा है, क्योंकि राज्य का प्रतीक होते हैं (प्रका. 17:12)। *सात आँखें पवित्र–आत्मा* की महान् भरपूरी के उस रहस्य के बारे में बताती हैं जिसे हमारे प्रभु यीशु मसीह की सूली के साथ जोड़ने द्वारा जाना जा सकता है।

मेमना मुहर को खोलता है, और *पहली* मुहर के खोले जाते ही यूहन्ना एक सफेद घोड़ा देखता है। मसीह–विरोधी लोगों को यह धोखा देने की कोशिश करता हुआ आएगा कि वह मसीह है। संसार के शासक मसीह–विरोधी को अपना नायक बना देंगे और वह एक वैश्विक तानाशाह बन जाएगा। पद 3–4 में, *दूसरी* मुहर के खुलने पर आने वाले लाल घोड़े के सवार को एक बड़ी तलवार दी जाती है। यह अनेक युद्धों के बारे में बताती है। पद 5–6 में, *तीसरी* मुहर के खुलते ही एक काला घोड़ा आता है जो जगत के अनेक भागों में भयंकर अकाल पड़ने की अग्रघोषणा करता है।

प्रकाशितवाक्य 6:8 में, *चौथी* मुहर के खुलने पर एक हल्के पीले रंग का घोड़ा आता है जिसके सवार का नाम मृत्यु है, और जिसके पीछे–पीछे अधोलोक है। 6:9–11 में, *पाँचवीं* मुहर के खुलते ही यूहन्ना ने यह देखा कि अनेक विश्वासियों को घात किया गया। तब वैश्विक स्तर पर ऐसा सताव होगा जो महाक्लेश के अंत तक चलता रहेगा (प्रका. 10:7)। प्रकाशितवाक्य 6:12–17 में, *छठी* मुहर के खोले जाते ही सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, चन्द्रमा लहू के समान बन जाएगा, और तारे टूट कर गिरने लगेंगे (तुलना करें, मत्ती 24:29)।

दिसम्बर 7

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"जो इन बातों की साक्षी देता है, वह यह कहता है: 'हाँ, मैं शीघ्र आने वाला हूँ। आमीन। हे प्रभु यीशु आ!" (प्रका. 22:20)।

जब सातवीं मुहर खोली गई, तो सात स्वर्गदूतों को सात तुरहियाँ दी गईं (प्रकाशितवाक्य 8:6)। यूहन्ना को यह बताया गया कि जब सातवाँ स्वर्गदूत उसकी तुरही बजाएगा, तब परमेश्वर का रहस्य प्रकट हो जाएगा (प्रका. 10:7)।

अब हम प्रकाशितवाक्य के अध्याय 11–19 पर आते हैं। इन अध्यायों में क्लेश के समयकाल के अंतिम 36 सालों का बयान है। सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और अब सब यह देख सकते हैं प्रभु यीशु मसीह राज करने वाला है। शैतान पर जय पाने के लिए हमारे पास 3 हथियार हैं (प्रका. 12:11)।

1. पहला मेमने का लहू है।

2. दूसरा हमारा साक्षी का वचन है।

3. तीसरा यह कि हमें मृत्यु तक अपने प्राण को प्रिय नहीं जानना है। साहस के साथ खड़े रहने से हम शैतान को हरा सकते हैं।

पशु की आराधना करने से अच्छा पीड़ा सहना और मर जाना होगा। फिर मेमने का विवाह आ पहुँचता है (प्रका. 19:9), और वह जो "विश्वासयोग्य और सत्य" कहलाता है, खुले हुए स्वर्ग में से एक घोड़े पर निकलता है (पद 11)। शैतान को पकड़ कर एक हज़ार साल के लिए बाँध दिया जाता है। हज़ार साल के अंत में शैतान को छोड़ा जाएगा (पद 7,8) और वह जाकर फिर से जातियों को भरमाएगा, और उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करेगा। लेकिन स्वर्ग से परमेश्वर की आग गिरकर उन्हें भस्म कर डालेगी। फिर शैतान का न्याय होगा और उसे आग की झील में डाला जाएगा (पद 10)। फिर मृतक जी उठेंगे और वे महाश्वेत सिंहासन के सामने हाज़िर किए जाएंगे। वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाए गए, उन्हें आग की झील में डाल दिया गया (पद 11–15)।

पुस्तक का अंत इस अद्भुत प्रतिज्ञा के साथ होता है: "हाँ, मैं शीघ्र आने वाला हूँ। आमीन।" और लेखक जवाब देता है, "हे प्रभु यीशु, आ!" और फिर उसने आगे कहा: प्रभु यीशु की कृपा सब के साथ रहे। आमीन (प्रका. 22:20–21)।

दिसम्बर 8

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“देख, मैं शीघ्र आने वाला हूँ। प्रत्येक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार फल देने को प्रतिफल मेरे पास है” (प्रका. 22:12)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ने वाले के लिए एक विशेष आशिष की प्रतिज्ञा की गई है। “धन्य है वह जो इस नबूवत के वचनों को पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो इसे सुनते हैं और इसमें लिखी बातों का पालन करते हैं, क्योंकि समय निकट है” (प्रका. 1:3), और प्रकाशितवाक्य 22:3 भी यह कहता है: “देख मैं शीघ्र आने वाला हूँ। धन्य है वह जो इस पुस्तक की नबूवत के वचन को मानता है।” इस पुस्तक के संदेश का उद्देश्य हमें प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार करना है। इसलिए, अगर प्रकाशितवाक्य को धीरे-धीरे और प्रार्थनापूर्वक पढ़ा जाएगा, तो इससे आपको बहुत मदद मिलेगी।

जब हम 1:1-6; 3:1; 4:1-5; 5:5-6 पढ़ते हैं, और इनमें पवित्र-आत्मा के सात नामों का अध्ययन करना शुरू करते हैं, तब हम आशिष पाते हैं। बाइबल में अंक 7 परिपूर्णता की संख्या है। जब मसीह अपनी सात आत्माओं की बात करता है, तो उसके कहने का अर्थ हमारे जीवनों में हुआ पवित्र-आत्मा का पूरा और सिद्ध काम है। परमेश्वर मानो यह कह रहा है: “क्या तुम सातों आत्माओं का अर्थ जानते हो? तो उन्हें पूरी आज़ादी से अपने अन्दर काम करने दो, और तब तुम मेरे सिंहासन तक ऊँचे उठाए जाओगे।” सात आत्माएं आत्मा की परिपूर्णता दर्शाते हैं।

हम “सात आत्माओं” के इस वाक्यांश का उल्लेख अध्याय 1:4; 3:1; 4:5 और 5:6 में चार बार पाते हैं। हम पवित्र-आत्मा के काम को चार भागों में बाँट सकते हैं।

पहली बात, कि बाइबल में पवित्र-आत्मा को सात नाम दिए गए हैं। दूसरा, पवित्र-आत्मा का सात-गुणा ऐसा काम होता है जो एक विश्वासी के अन्दर ख़ामोशी से चलता रहता है। तीसरा, पवित्र-आत्मा का सात-गुणा ऐसा काम होता है जो दूसरे लोगों को नज़र आता है। और चौथा पवित्र-आत्मा का वह सात-गुणा काम है जो प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में है।

दिसम्बर 9

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"आशा में लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र- आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उण्डेला गया है" (रोमि. 5:5)।

बाइबल में पवित्र–आत्मा को दिया गया पहला नाम रोमियों 1:4 में है, "*पवित्रता के आत्मा* के अनुसार मृतकों में से जी–उठने के द्वारा सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित हुआ।" उसे वह नाम इसलिए दिया गया है कि हम परमेश्वर की पवित्रता का अर्थ समझ सकें, और हम भी वैसे ही पवित्र बन सकें जैसे वह पवित्र है। आपके और मेरे लिए यह परमेश्वर का मानक स्तर है।

इब्रानियों 9:14 में, हम पढ़ते हैं: "तो मसीह यीशु का लहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा द्वारा परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष चढ़ा दिया, तुम्हारे विवेक के मरे हुए कामों से और भी ज़्यादा शुद्ध क्यों न करेगा कि तुम जीवित परमेश्वर की सेवा करो?" यह *दूसरा* नाम है जो हम बाइबल में पाते हैं: *सनातन आत्मा*। उसने हमें पवित्र–आत्मा इसलिए दिया है कि वह हमें अनन्त बातें सिखाए।

यूहन्ना 14:16 में हम पढ़ते हैं: "और मैं पिता से प्रार्थना करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे।" बाइबल में पवित्र–आत्मा को दिया गया *तीसरा* नाम *सहायक* है। उसे इसलिए सहायक कहा गया है कि उसके द्वारा हम परमेश्वर के प्रेम का पूरा आनन्द उठा सकें।

पवित्र–आत्मा का *चौथा* नाम यूहन्ना 16:13 में दिया गया है। "लेकिन जब वह, अर्थात् *सत्य* का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी तरफ से कुछ नहीं कहेगा, लेकिन जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आने वाली बातों को तुम पर प्रकट करेगा।" सत्य का आत्मा मुझे दिन–प्रतिदिन होने वाली बातों के बारे में सिखाएगा, और इसके साथ ही मुझे उद्धार की पूरी योजना की एक स्पष्ट समझ देगा क्योंकि पवित्र–आत्मा के द्वारा ही हम साफ तौर पर यह जान पाते हैं कि हमें परमेश्वर के सम्मुख न्यायोचित और धर्मी कैसे होना है; हमारे पाप कैसे क्षमा होने हैं; और कैसे स्वयं प्रभु हमारी पवित्रता और धार्मिकता है। इसलिए वह कहता है: "वह आने वाली बातों को हम पर प्रकट करेगा।"

दिसम्बर 10

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"क्योंकि प्रभु परमेश्वर सूर्य और ढाल है; प्रभु कृपा और महिमा देता है; जो खरी चाल चलते हैं उनसे वह कोई अच्छी वस्तु न रख छोड़ेगा।"
भजन. 84:11

पवित्र–आत्मा को दिया गया *पाँचवाँ* नाम गलातियों 4:6 में मिलता है: "इसलिए कि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र का आत्मा, जो 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है।" पद 7 कहता है: "इसलिए अब तू दास नहीं वरन् पुत्र है, और जब पुत्र है तो मसीह के द्वारा परमेश्वर का उत्तराधिकारी भी है।" परमेश्वर के पुत्र का आत्मा हमें यह आज़ादी और साहस देता है कि हम कभी भी परमेश्वर को पुकार सकते हैं।

पवित्र–आत्मा का *छठा* नाम 2 तीमुथियुस 1:7 में मिलता है: "परमेश्वर ने हमें भय का नहीं बल्कि सामर्थ्य, प्रेम और सम्मति का आत्मा दिया है।" यह छठा नाम है – *सामर्थ्य, प्रेम और सम्मति का आत्मा*। ये *तीनों* एक–साथ होते हैं, इसलिए इन्हें अलग न करें: सामर्थ्य, प्रेम और सम्मति। कुछ लोग सामर्थ्य चाहते हैं लेकिन प्रेम नहीं चाहते। वे दोनों को एक–साथ नहीं चाहते, लेकिन उनका एक–साथ होना ज़रूरी है। सामर्थ्य, प्रेम और सम्मति का आत्मा सबसे पहले मेरे सारे भय को दूर करेगा। वही आत्मा आपको पाप और प्रलोभन के ऊपर सामर्थ्य प्रदान करेगा, और परमेश्वर के मन की बात को, परमेश्वर की बुद्धि और योजना को, और परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को समझने के लिए सम्मति भी देगा।

पवित्र–आत्मा का सातवाँ नाम 2 यूहन्ना 2:27 में है, "वह अभिषेक जो तुमने उससे प्राप्त किया है, तुम में बना रहता है, और तुम्हें इस बात की ज़रूरत नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए। लेकिन उसका वह अभिषेक जो तुम्हें सब बातों के बारे में सिखाता है, और सत्य है और झूठ नहीं, और जैसा कि उसने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो।" यह सातवाँ नाम है: *अभिषेक*। उसे अभिषेक का आत्मा कहा गया है कि वह हमें झूठे नबियों की ग़लत शिक्षाओं से बचाए।

दिसम्बर 11

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“जो जय पाए उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ” (प्रका. 3:21)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पूरे संदेश को प्रकाशितवाक्य 21:7 के एक पद में समाहित किया जा सकता है जहाँ परमेश्वर यह कहता है: “जो जय पाए वह इन बातों का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा।” इस पृथ्वी पर यह समझना बहुत मुश्किल है कि हमारी विरासत वास्तव में क्या है, लेकिन हम इसे परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार करते हैं, और कोई सवाल या शक किए बिना इस पर विश्वास करते हैं।

प्रकाशितवाक्य की इस पुस्तक के आरम्भ में हमारे ध्यान को सिंहासन की तरफ आकर्षित किया गया है। हमारे प्रभु यीशु ने उन सारे सवालों का जवाब दिया जो उस समय प्रेरितों के मन में थे, कि वह कैसे शत्रु को हराएगा, और कैसे वह एक दिन हम सबको, जैसा कि उसने प्रतिज्ञा की है, अपने सिंहासन के ऊँचे स्थान में पहुँचाएगा। प्रकाशितवाक्य 3:21 पर ख़ास ध्यान दें। परमेश्वर का उद्देश्य यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि हमारा प्रभु यह चाहता है कि हम उसके साथ उसके सिंहासन पर बैठें। यह संदेश कितना सहज है: “जो जय पाए, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसे मैं भी जय पाकर पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ।” हमारा यह प्रश्न स्वाभाविक है कि हम जैसे निर्बल मनुष्य इतना ऊँचे कैसे उठ सकते हैं कि हम परमेश्वर के सिंहासन पर बैठ सकें, लेकिन हम विश्वास से इस बात को आसानी से स्वीकार कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ऐसा दया और कृपा करने वाला है कि वह हमारे पापों को क्षमा करना चाहता है, और इस वजह से ही उसने यीशु मसीह के द्वारा हमारे पापों को क्षमा करने का इंतज़ाम किया है। हमारे लिए यह समझना तब आसान हो जाता है जब हम यह जान लेते हैं कि यह सम्मान उनके लिए “जो जय पाते हैं,” और फिर यह कि जो जय पाते हैं वही इन बातों के वारिस होंगे (प्रका. 21:7)।

दिसम्बर 12

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"परमेश्वर स्वयं तुम्हारी इच्छा और कामों को प्रोत्साहित करने के लिए तुममें सक्रिय है" (फिलि. 2:13)।

जब हम अपने मनों में यह कहते हैं, "हमारे जैसे लोग इतना ऊँचे कैसे उठ सकते हैं कि हम परमेश्वर के सिंहासन पर जा बैठें?" तो इसका जवाब है "सात आत्माएं।" सात अंक सिद्धता और पूर्णता की बात करता है। अगर हम पवित्र–आत्मा को हममें गहराई से काम करने की अनुमति देंगे, पूरी तरह और पूरी आज़ादी से, तो हम स्वतः प्रभु यीशु मसीह के सिंहासन पर बैठने योग्य हो जाएंगे। यह हमारी सोच–समझ की मानवीय क्षमताओं द्वारा नहीं होगा, लेकिन जब पवित्र–आत्मा हमारे अन्दर प्रतिदिन, गहराई से, आज़ादी से, और पूरी तरह काम करेगा, तब ऐसा हो सकेगा। पहली बात यह, जैसा कि हमने पहले भी देखा है, बाइबल में पवित्र–आत्मा के सात नाम दिए गए हैं।

दूसरी बात, कि हमारे अन्दर पवित्र–आत्मा का काम बहुत ख़ामोशी के साथ चल रहा है, वैसे ही जैसे एक बड़े पेड़ की जड़ें ज़मीन की गहराई में दूर–दूर तक फैलती जाती हैं, और एक महत्वपूर्ण काम करती हैं। और गहराई में ख़ामोशी से होने वाला यह काम मनुष्यों को बाहर नज़र नहीं आता। इसी तरह पवित्र–आत्मा का सात–गुणा काम भी हमारे अन्दर बहुत ख़ामोशी से चलता रहता है। हालांकि दूसरों को यह हमेशा नज़र नहीं आएगा, लेकिन हम यह जानते हैं।

तीसरी बात, पवित्र–आत्मा का एक ऐसा भी काम होता है जो हमारे पड़ोसियों, मित्रों, शत्रुओं और सम्बंधियों को नज़र आता है। इस तरह, आप पवित्र–आत्मा के काम को दो तरह से बाँट सकते हैं: एक अन्दर होने वाला सात–गुणा अदृश्य काम, और दूसरा बाहर होने वाला सात–गुणा प्रत्यक्ष काम जो सबको नज़र आता है। चौथी बात, पवित्र–आत्मा का वह सात–गुणा काम है जो प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में पूरा हुआ है। अगर आप पवित्र–आत्मा के काम को इन चार समूहों में बाँट देंगे, तो आप सब मनुष्यों के लिए होने वाले (चाहे वे जो भी हों) पवित्र–आत्मा के काम की परिपूर्णता के रहस्य को जान लेंगे।

दिसम्बर 13

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"उसने हमारा उद्धार हमारे द्वारा किए गए धर्म के कामों के आधार पर नहीं, लेकिन अपनी दया के अनुसार अर्थात् पवित्र–आत्मा के द्वारा नए जन्म और नए बनाए जाने के स्नान से किया" (तीतुस 3:5)।

आइए, हमारे अन्दर ख़ामोशी से चलने वाले पवित्र–आत्मा के सात–गुणा काम का हम गहराई से अध्ययन करें, जिस काम के द्वारा हमारा जीवित मुक्तिदाता उसके साथ हमें उसके सिंहासन पर बैठने के लिए तैयार कर रहा है। वह काम हमारे अन्दर होता है, और आप उसे देख नहीं सकते। जब प्रभु यीशु दूसरी बार आएगा, और हम उसे आमने–सामने देखेंगे, तब हम पूरी तरह यह जान सकेंगे कि वह काम हममें कैसे हुआ है।

नया बनाने का काम पवित्र–आत्मा द्वारा किया जाने वाले पहला भीतरी काम होता है। इस तरह हमारी आत्मा में हम नए बनाए जाते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारा नया जन्म हो जाता है (यूह. 3:6; तीतुस 3:5)। "परमेश्वर आत्मा है" (यूह. 4:24)। अगर हम परमेश्वर को जानना और सुनना चाहते हैं, अगर हम उसे छूना और महसूस करना चाहते हैं, तो हम उसे सिर्फ अपनी आत्मा में ही जान सकते हैं। परमेश्वर ने मुझे आत्मिक बातों को समझने वाली आत्मा दी। उसने मुझे मत्ती 5:8 में से स्पष्ट कहा, "धन्य हैं वे जिनके हृदय शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" परमेश्वर को देखा जा सकता है, लेकिन प्राकृतिक दृष्टि से नहीं। हम परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकते हैं, हालांकि अक्सर यह सुनना हमारे प्राकृतिक कानों द्वारा नहीं होता।

भजन संहिता 16:11 में हम पढ़ते हैं, "तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है।" हाँ, हम परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं, देह में नहीं, लेकिन भीतरी और आत्मिक रूप में। जब तक हमारी आत्मा में हम पवित्र–आत्मा द्वारा नए नहीं बनाए जाते, तब तक हम परमेश्वर को न तो देख सकते हैं, न छू सकते हैं, न जान सकते हैं, और न महसूस कर सकते हैं। परमेश्वर जब आपके या मेरे अन्दर आता है, तो वह सिर्फ हमारी आत्मा के द्वारा ही आ सकता है। मैं उसके जीवन को मेरे अन्दर आते हुए महसूस कर सकता हूँ, और वह मेरे पुकारने पर जवाब देता है। यह कैसे होता है? यह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा होता है। ऐसा क्यों है कि हम आत्मा में भी उसे स्पष्ट रूप में नहीं देख सकते? इसकी वजह पाप है।

दिसम्बर 14

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"अब न कोई यहूदी है न यूनानी, न दास है और न स्वतंत्र, न पुरुष है और न स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गला. 3:28)।

आत्मा के तीन भाग होते हैं: सबसे पहले विवेक है, वह भीतरी योग्यता जो मुझे बताती है कि यह या वह बात ग़लत है। दूसरा भाग आराधना है, उस अनदेखे को देखने की मेरी वह लालसा जो मेरा सृष्टिकर्ता है। वह कहाँ है? मैं उसे कैसे ढूंढ सकता हूँ? मैं उसे कहाँ पा सकता हूँ? हम सभी के अन्दर यह लालसा कभी-न-कभी ज़रूरी होती है। कुछ लोग परमेश्वर को प्रकृति में पाना चाहते हैं, कुछ लोग उसे भवनों या मन्दिरों में पाना चाहते हैं, और कुछ लोग उसे धार्मिक रीतियों/विधियों में पाना चाहते हैं, लेकिन परमेश्वर इनमें से किसी भी तरह से नहीं, सिर्फ पवित्र-आत्मा द्वारा हमारी आत्मा में ही जाना जा सकता है।

आत्मा का तीसरा भाग हमारी अंतर्दृष्टि या अंतर्मन है। अचानक एक विचार आता है। पवित्र-आत्मा का काम मुझे पूरी तरह नया बनाना है कि मैं उसे अपनी आत्मा में ग्रहण कर सकूँ। लेकिन इससे पहले कि पवित्र-आत्मा मुझमें आ सके, यह ज़रूरी है कि पहले मेरे सभी पापमय विचारों, शब्दों और कृत्यों के दोष के धब्बे मेरे अन्दर से धोए और मिटाए जाएं। परमेश्वर ने हमारे हृदयों में एक टेप लगा रखा है कि हमारे द्वारा बोला गया हरेक शब्द, और हमारे द्वारा सोचा गया हरेक विचार, और हमारे द्वारा किया गया हरेक काम ख़ामोशी के साथ हमारे विवेक में दर्ज होता रहे। हमारा विवेक परमेश्वर का टेप है।

जब मसीह के लहू द्वारा मैं भीतरी तौर पर साफ और शुद्ध कर दिया जाता हूँ, तब पवित्र-आत्मा मेरे अन्दर आता है और मुझे एक नया मनुष्य बनाता है। इसे नया जन्म कहते हैं, और यह पवित्र-आत्मा का पहला महान् काम होता है (तीतुस 3:5)। पवित्र-आत्मा का दूसरा भीतरी काम मुझे *बपतिस्मा देना,* मुझे मिलाना, मुझे मसीह की देह में रखना, मुझे स्वर्गीय परिवार का सदस्य बनाना, मुझे प्रभु यीशु मसीह के शीर्षाधीन कर देना है। हम चाहे किसी भी देश में जाएं, हम भीतरी तौर पर सभी मसीहियों के साथ एक होकर जुड़ जाते हैं (इफि. 1:11-13)।

पवित्र-आत्मा का तीसरा भीतरी काम हमारी सुरक्षा के लिए हमें मुहरबंद कर देना होता है। जब हम पवित्र-आत्मा द्वारा मुहरबंद कर दिए जाते हैं, तब हमें यह आश्वासन मिल जाता है कि मेरा प्रभु मेरे आसपास के हरेक ख़तरे को जानता है, और वह मुझे उनसे बचाएगा।

दिसम्बर 15

पवित्र-आत्मा के रहस्य

"जिसने हम पर मुहर भी लगाई और पवित्र-आत्मा को बयाने में हमारे हृदयों में दिया" (2 कुरि. 1:22)।

पवित्र-आत्मा का चौथा भीतरी काम (इफिसियों 1:14 व 2 कुरि. 1:22) यह है कि *वह हमारी विरासत का बयाना है*। प्रभु यीशु मसीह ने हमें एक महान् स्वर्गीय विरासत में बुलाया है (1पत. 1:4)। प्रभु यीशु मसीह यह चाहता है कि आप और मैं स्वर्गीय विरासत में हमारा हिस्सा पाने के लिए अपने आपको तैयार करें। इस विरासत का प्रमाण पवित्र-आत्मा का बयाना है। प्रकाशन का आत्मा पवित्र-आत्मा का *पाँचवाँ भीतरी काम* है (इफि. 1:16-20)। मुझे पवित्र-आत्मा इसलिए दिया गया है कि *मैं यह जान सकूँ कि जी-उठने की अद्भुत सामर्थ्य को मेरी सभी ज़रूरतों के लिए कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है।*

पवित्र-आत्मा का *छठा काम* इफिसियों 3:16-19 में देखा जा सकता है "कि हम परमेश्वर के आत्मा द्वारा हमारे भीतरी मनुष्य में नया बल पाएं।" यह काम एक विश्वासी के अन्दर चलता रहता है। हमारे नए मनुष्य में हम जितना ज़्यादा बल पाते हैं, उतना ही ज़्यादा हम परमेश्वर की परिपूर्णता से भरने की योग्यता पाते हैं। जब भी आप आत्मिक तौर पर अपने आपको ख़ाली और सूखे, या असहाय और कमज़ोर महसूस करें, तब ऐसा करके देखना: अपने घुटने टिका कर यह कहना, "मेरे भीतरी मनुष्य में मुझे नया बल दे, और अपना आत्मा मुझमें उण्डेल दे।" फिर विश्वास से कुछ समय तक इंतज़ार करें। इसके बाद, *हमारे अन्दर होने वाला पवित्र-आत्मा का सातवाँ काम हमारा पवित्रीकरण है* (1 पत. 1:2), जो "आज्ञापालन के लिए" और "उसके लहू के छिड़के जाने के लिए" है। पवित्र किया जाना मुझे आज्ञापालन करने में मदद करता है। पवित्र करने द्वारा पवित्र-आत्मा मुझे तब तक अतिरिक्त बल देता है जब तक मैं यह कहने वाला नहीं बन जाता: मुझे इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि लोग क्या कहते हैं, लेकिन मैं अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करूँगा। यही सच्ची पवित्रता है क्योंकि इसमें मैं जान लेता हूँ कि मेरे पास जो कुछ भी है वह सिर्फ प्रभु के लिए है।

पवित्र किया जाना "यीशु मसीह के लहू का छिड़का जाना" भी है। पवित्र-आत्मा का यह काम है कि वह मुझे कभी-कभी नहीं बल्कि हरेक क्षण, हर पल और हर घण्टे मूल्यवान लहू के छिड़काव के नीचे लाए कि मुझे एक सिद्ध शुद्धता में बनाए रखा जा सके। सातवाँ काम आज्ञापालन के लिए और निरंतर शुद्ध किए जाने के लिए होने वाला पवित्रीकरण का काम है।

दिसम्बर 16

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"मैं मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया गया हूँ; लेकिन मैं जीवित हूँ, फिर भी मैं नहीं मसीह मुझमें जीवित है" (गला. 2:20)।

पवित्र–आत्मा का एक सात–गुणा ऐसा काम भी है जो बाहरी तौर पर देखा जा सकता है, अर्थात् हमारे जीवनों में पवित्र–आत्मा के सात–गुणा काम की ऐसी बाहरी अभिव्यक्ति जिसे हमारे मित्र और हमारे शत्रु दोनों देख सकते हैं। यह काम छुप नहीं सकता, और रोमियों 8:9 में एक स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। "तुम शरीर में नहीं वरन् आत्मा में हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है। लेकिन अगर किसी में मसीह का आत्मा न हो, तो वह उसका नहीं है।"

सबसे पहला काम पवित्र–आत्मा का हममें रहना है। दूसरे शब्दों में, कि पवित्र–आत्मा हममें प्रभु यीशु मसीह के गुण आरोपित कर देगा। अगर आप अपने आपको पवित्र–आत्मा को सौंप देंगे, तो दूसरे लोग उस भलाई को देख सकेंगे जो वह आपके अन्दर करेगा। एक निश्चित रूप में पवित्र–आत्मा हमारे मुख पर एक अनोखी ज्योति और सौन्दर्य प्रकट करेगा, लेकिन यह पाने के लिए हमें उसका आज्ञापालन करना पड़ेगा। वह हमें अपने जैसा बनाएगा। पवित्र–आत्मा का पहला महान् बाहरी काम मुझ में उसके वे गुण प्रकट करना है जो मेरे आसपास के लोगों को नज़र आएंगे।

कुलुस्सियों 3:12-16 में एक विश्वासी के गुणों की सूची है, "परमेश्वर के उन चुने हुओं के सदृश हो जो पवित्र और प्रिय हैं; अपने हृदयों में सहानुभूति, करुणा, दीनता, विनम्रता और सहनशीलता धारण करो। अगर किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो तो एक दूसरे को सह लो, और एक–दूसरे के अपराध क्षमा करो। जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए हैं, वैसे तुम भी करो। इन सबके ऊपर प्रेम को, जो एकता का सिद्ध बन्ध है, धारण कर लो। मसीह की शांति तुम्हारे हृदयों में राज्य करे जिसके लिए तुम वास्तव में एक देह होने के लिए बुलाए गए; और धन्यवादी बने रहो। मसीह के वचन को अपने हृदयों में बहुतायत से बसने दो, समस्त ज्ञान सहित एक–दूसरे को शिक्षा और चेतावनी दो, अपने हृदयों में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।"

दिसम्बर 17

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“अगर उसका आत्मा जिसने मसीह को मृतकों में से जीवित किया तुममें निवास करता है, तो वह जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया है, तुम्हारी मरणहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में वास करता है, जीवित करेगा” (रोमियों. 8:11)।

हमें आत्मा में *जीवित कर देने का काम* पवित्र–आत्मा का *वह दूसरा काम है जो बाहरी तौर पर नज़र आता* है। जीवित कर देने वाली आत्मा एक दिन हमारी देहों को अमर बना देगी। हमें अमर, महिमामय, स्वर्गीय, आत्मिक देह दी जाएगी, और उस देह से हम उसे देखेंगे, और जीवित कर देने वाली आत्मा की सामर्थ्य से उसके जैसे हो जाएंगे। अब भी हम पृथ्वी पर इस जीवन देने वाली आत्मा के काम का पूर्वस्वाद पा सकते हैं। जब हम अपने आपको शारीरिक रूप में कमज़ोर महसूस करते हैं, तब उसकी सेवा करने के लिए परमेश्वर हमें अतिरिक्त बल देता है।

आत्मा का तीसरा काम अगुवाई करने वाली आत्मा होना है। “क्योंकि वे सब जो परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं” (रोमियों. 8:14)। हमारे जीवनों में होने वाले पवित्र–आत्मा के काम की यह तीसरी अभिव्यक्ति है। हम इतने मूर्ख हैं कि हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा नहीं जान पाते। “निर्बुद्धि न बनो, लेकिन यह जान लो कि प्रभु की इच्छा क्या है” (इफि. 5:17)। परमेश्वर की इच्छा को एक निश्चित रूप में जानने के लिए आपके अन्दर सात–गुणा प्रमाण होने चाहिए। मैं एक संक्षिप्त रूप में आपको परमेश्वर की इच्छा के सात गुणा प्रमाण के बारे में बताता हूँ। सबसे पहले 1शमुएल 16:12 है। हम इसे *पवित्र–आत्मा की साक्षी* कह सकते हैं। *दूसरा* प्रमाण भजन संहिता 119:5 में है; यह *परमेश्वर के वचन की साक्षी* है। *तीसरा* प्रमाण दानिय्येल 2:17–19 में है; यह *साथी–विश्वासियों की साक्षी* है। *चौथा* प्रमाण यशायाह 32:17 में है; यह *भीतर बढ़ती रहने वाली शांति का प्रमाण* है।

पाँचवाँ प्रमाण एक दृढ़, सक्रिय और बढ़ता जाने वाला विश्वास है। *छठा* प्रमाण *एक निश्चित चिन्ह् का प्रमाण* है। *सातवाँ* प्रमाण इब्रानियों 12:21 में है; *प्रभु के नाम की महिमा करने का प्रमाण।* इन सात प्रमाणों द्वारा आप परमेश्वर की इच्छा जान सकते हैं।

दिसम्बर 18

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"तुमने दासत्व का आत्मा नहीं पाया कि फिर भयभीत हो, लेकिन पुत्रों के समान लेपालकपन का आत्मा पाया है, जिससे हम 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारते हैं" (रोमियों. 8:15)।

लेपालकपन के आत्मा का काम, जो परिपक्वता की तरफ ले जाता है, पवित्र–आत्मा का *चौथा* बाहरी काम है। परमेश्वर हमें परिपक्वता की आत्मा देता है। उसने अपने सेवकों को, अर्थात् प्रेरितों, नबियों, सुसमाचार–प्रचारकों, पासबानों और शिक्षकों को अधिकार दिया। उनके पास यह अधिकार है कि वे परमेश्वर के वचन को अधिकार के साथ दे सकें।

पाँचवाँ काम साक्षी का आत्मा होना है। "आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिलकर यह साक्षी देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। अगर हम संतान है तो उत्तराधिकारी भी – परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह में सह–उत्ताधिकारी" (रोमियों. 8:16,17)। पवित्र–आत्मा का पाँचवाँ काम स्वर्गीय विरासत में मेरे हिस्से के बारे में मुझे सिखाना है जो प्रभु यीशु ने मेरे लिए स्वर्ग में रखा है क्योंकि हम सह–उत्तराधिकारी हैं, और मुझे पृथ्वी पर यह सीखना होगा कि मुझे उसकी देखभाल कैसे करनी है। पृथ्वी पर मेरी सारी पीड़ा का उद्देश्य यह है कि वह मुझे सिखाए, मुझे शिक्षित करे, मेरी मदद करे और मुझे इसमें प्रशिक्षित करे कि मुझे अपनी स्वर्गीय विरासत का आनन्द कैसे मनाना है।

पवित्र–आत्मा का काम मुझे यह बताना है कि कैसे परमेश्वर ने मेरे लिए स्वर्ग में एक महान् विरासत रखी है। इस वजह से ही हम अपनी परीक्षाओं में जयवंत होते हैं, कुड़कुड़ाते और शिकायत नहीं करते, बल्कि पीड़ा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, क्योंकि इस पीड़ा के द्वारा ही हम स्वर्ग में प्रभु यीशु के साथ राज करने की योग्यता पाते हैं।

दिसम्बर 19

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"इसी रीति से आत्मा भी दुर्बलताओं में हमारी सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें प्रार्थना कैसे करनी है, लेकिन आत्मा स्वयं हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों. 8:26)।

सहायता करने वाली आत्मा का काम छठा बाहरी काम है। हम नहीं जानते कि हम किन बातों के लिए प्रार्थना करें, लेकिन जैसे-जैसे हम पवित्र–आत्मा का आज्ञापालन करना सीखते हैं, वैसे-वैसे वह हमें यह याद दिलाता है कि हमें किसके लिए प्रार्थना करनी है। "और जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है वह यह है: कि अगर हम उसकी इच्छानुसार कुछ माँगें तो वह हमारी सुनता है" (1 यूह. 5:14)। पवित्र–आत्मा लगभग प्रतिदिन आपको यह याद दिलाएगा कि आपको किसके लिए प्रार्थना करनी है। वे लोग जहाँ भी थे और उनकी जो भी ज़रूरतें थीं, पवित्र–आत्मा ने ऐसे बहुत से लोगों को याद करने में मेरी मदद की है।

सातवाँ काम मध्यस्थता करने वाली आत्मा का काम है। "और हृदयों को जाँचने वाला जानता है कि आत्मा की इच्छा क्या है, क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छानुसार विनती करता है" (रोमियों. 8:27)। हमें पवित्र–आत्मा इसलिए दिया गया है कि हम परमेश्वर के संतों के लिए मध्यस्थता कर सकें। मेरे हृदय पर बार–बार किसी–न–किसी व्यक्ति के लिए मध्यस्थता करने का बोझ डाला गया है, और इसका अर्थ प्रार्थना में दु:ख सहना और आहें भरना है। हम प्रार्थना में दु:ख सहने द्वारा उन लोगों की रक्षा करते हैं।

यह पवित्र–आत्मा की वह सात–गुणी बाहरी अभिव्यक्ति है जो मित्रों, शत्रुओं, पड़ोसियों और सम्बंधियों द्वारा देखी जा सकती है। इस सात–गुणी परिपूर्णता पर अपने अधिकार का दावा करें और फिर वह आपको दिखाएगा कि यह विरासत कैसे आपकी हो सकती है।

दिसम्बर 20

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“तू जीवित परमेश्वर का पुत्र, मसीह है” (मत्ती 16:16)।

मुझे शुरू से यह मालूम था कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, लेकिन इससे पहले कि मैं वह देख पाता जो वह मुझे दिखाना चाह रहा था, मुझे बाइबल को सौ बार पढ़ना पड़ा था। अब हम प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में पवित्र–आत्मा का सात–गुणा काम देखेंगे।

लूका 1:34 में हम पढ़ते हैं: “तब मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, ‘यह कैसे होगा, क्योंकि मैं तो कुंवारी हूँ?” पद 35: “पवित्र–आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान का सामर्थ्य तुझ पर छा जाएगा, इसलिए वह पवित्र पुत्र जो उत्पन्न होगा वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।” यह प्रभु यीशु मसीह का पहला सबसे महान् काम है। वह किसी मनुष्य के काम द्वारा नहीं बल्कि पवित्र–आत्मा द्वारा गर्भ में आया। इसी तरह हमारा भी मानवीय बुद्धि या चतुराई द्वारा नहीं बल्कि पवित्र–आत्मा में नया जन्म होता है। जब तक पवित्र–आत्मा हममें नहीं आता, तब तक हममें से कोई भी प्रभु यीशु मसीह को हमारे मुक्तिदाता के रूप में नहीं जान सकता।

परमेश्वर का असली काम पवित्र–आत्मा द्वारा ही तैयार किया जाता है। हम चाहे कितने भी चतुर क्यों न हों, लेकिन हम पवित्र–आत्मा को अलग नहीं हटा सकते। प्रभु यीशु पवित्र–आत्मा द्वारा पैदा हुआ था। हमारी आँखें सिर्फ पवित्र–आत्मा द्वारा ही खोली जा सकती हैं। 1 कुरिन्थियों 12:3 हमें बताता है, “मैं तुम्हें बता देता हूँ कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कहता कि यीशु श्रापित है। और न ही पवित्र–आत्मा के बिना कोई मनुष्य यह कहता है कि यीशु प्रभु है।” उद्धार के लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण सत्य है।

दिसम्बर 21

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"इसलिए हम बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में सहभागी होकर उसके साथ गाड़े गए हैं, जिससे कि पिता की महिमा द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे ही हम भी जीवन की नई चाल चलें" (रोमियों 6:4)।

प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पवित्र–आत्मा का *दूसरा* काम लूका 3:21 और उससे आगे मिलता है। लूका 3:21,22 हमें बताता है, "ऐसा हुआ कि जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया, और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तब आसमान खुल गया। तब पवित्र–आत्मा एक कबूतर के रूप में उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई: 'तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझसे अति प्रसन्न हूँ।"

प्रभु द्वारा उसकी सार्वजनिक सेवकाई शुरू करने से पहले वह पवित्र–आत्मा द्वारा भरा गया था। लूका 4:1 भी देखें: "यीशु पवित्र–आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटा, और आत्मा उसे जंगल में इधर–उधर ले जाता रहा।"

प्रभु का बपतिस्मा उसकी मृत्यु, दफन और जी–उठने की पूर्वसूचना थी। प्रभु ने एक सहज रूप में यह दर्शाया कि अगर हम उसकी परिपूर्णता चाहते हैं तो हमें उसकी मृत्यु, दफन और जी–उठने के साथ अपनी अभिन्न् पहचान बनानी होगी, और तब हम वह परिपूर्णता पा लेंगे। तीसरी बात, प्रेरितों के काम 10:38 में हम यह पढ़ते हैं: "*परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र–आत्मा और सामर्थ्य से अभिषिक्त किया* और वह भलाई करता और उन सबको जो दुष्टात्माओं द्वारा सताए हुए थे चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।" यह प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पवित्र–आत्मा का तीसरा काम था। पवित्र–आत्मा के अभिषेक से वह भलाई करता हुआ घूमता रहा। दूसरे शब्दों में, उसने अपनी मर्ज़ी से कोई चमत्कार नहीं किया था।

दिसम्बर 22

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"वे लोगों के सामने उसे किसी बात में न पकड़ सके, लेकिन उसके जवाब सुनकर अचम्भित हो गए और चुप रहे" (लूका 20:26)।

यशायाह 11:2–5 में हम पढ़ते हैं: "तब परमेश्वर का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा, वरन् ज्ञान और परमेश्वर के भय का आत्मा उस पर छाया रहेगा, और वह परमेश्वर का भय मानने से हर्षित होगा, और वह न तो मुँह–देखा न्याय करेगा, और न कानों से सुनकर निर्णय लेगा। लेकिन वह कंगालों का न्याय धार्मिकता से, और पृथ्वी के पीड़ितों का न्याय खराई से करेगा। और वह पृथ्वी को अपने मुँह के सोटे से मारेगा; वह दुष्ट को अपने मुँह की फूँक से मिटा देगा। उसका कटिबंध धार्मिकता और उसका कमरबंध सत्य होगा।" प्रभु यीशु मसीह के जीवन में होने वाला पवित्र–आत्मा का यह *चौथा काम* था – उसकी बुद्धि व ज्ञान सिद्ध था। उसके हरेक शब्द में सामर्थ्य और अधिकार था। मत्ती 7:29 देखें: "क्योंकि वह उन्हें उनके शास्त्रियों के समान नहीं, वरन् अधिकार के साथ उपदेश दे रहा था।" फिर से यूहन्ना 7:46 को देखें: "सिपाहियों ने जवाब दिया, 'आज तक ऐसी बातें किसी ने कभी नहीं कहीं जैसे वह कहता है।"

पाँचवीं बात, यशायाह 42:1–4 में हम पढ़ते हैं: "मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हुए हूँ, मेरे चुने हुए को, जिससे मेरा जी प्रसन्न है। मैंने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह जाति–जाति के लिए न्याय का लाने वाला होगा। वह न तो चिल्लाएगा, न ऊँचे शब्द से बोलेगा, और न मार्ग में अपनी वाणी सुनाएगा। कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती हुई बत्ती को बुझाएगा। वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा। जब तक कि वह पृथ्वी पर न्याय को स्थिर न कर चुकेगा, वह न तो हताश और न निराश होगा और द्वीप उसकी बाट जोहेंगे।" पद 2 को देखें: "वह न तो चिल्लाएगा, न ऊँचे शब्द से बोलेगा, और न मार्ग में अपनी वाणी सुनाएगा", लेकिन वह प्रेम, और दया और सत्य से संसार को जीत लेगा।

दिसम्बर 23

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"और यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गई। उसने पुस्तक को खोलकर वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था, 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्यों उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है" (लूका 4:17,18)।

प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पवित्र–आत्मा का छठा काम यशायाह 61:1–3 में मिलता है। "*प्रभु परमेश्वर का आत्मा* मुझ पर है, क्योंकि परमेश्वर ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शांति दूँ; कि बंदियों के लिए स्वतंत्रता का और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूँ, कि परमेश्वर के करुणा करने के समय, और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ, कि सब शोकितों को शांति दूँ, और सिय्योन में विलाप करने वालों को राख के बदले मुकुट, शोक के बदले में हर्ष का तेल, और निराशा के बदले बड़ाई का ओढ़ना प्रदान करूँ जिससे कि वे धार्मिकता के बांजवृक्ष और परमेश्वर के लगाए हुए कहलाएं, और उसकी महिमा प्रकट हो।" अपने बपतिस्मा के बाद जब प्रभु पहली बार कफरनहूम के आराधनालय में आया था, तब उसने वहाँ यही भाग पढ़ कर सुनाया था।

लूका 7:21–22 भी पढ़ें: "उसी समय उसने बहुत से लोगों को बीमारियों, पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ा कर चंगा किया, और बहुत से लोगों को जो अंधे थे, आँखें दीं। तब उसने उनसे कहा, 'जो कुछ तुमने देखा और सुना उसे जाकर यूहन्ना को बताओ: अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"

अंततः, रोमियों 1:4 हमें *प्रभु यीशु के जीवन में पवित्र–आत्मा के सातवें काम* के बारे में बताता है: "पवित्रता के आत्मा के अनुसार मृतकों में से जी–उठने के द्वारा *सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित हुआ*।" वह पवित्रता के आत्मा द्वारा मृतकों में से जिलाया गया था।

अब जबकि हमने प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पवित्र–आत्मा का सात–गुणा काम देख लिया है, तो हमने पूरा रहस्य जान लिया है। हम ईश्वरीय सिद्धान्त पूरे किए बिना पवित्र–आत्मा की भरपूरी नहीं पा सकते। परमेश्वर जो कुछ भी करता है, वह ऐसे ईश्वरीय सिद्धान्तों द्वारा ही करता है जिन्हें बदला नहीं जा सकता।

दिसम्बर 24

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"चाहे पौलुस हो, अपुल्लोस हो या कैफा, चाहे संसार हो या जीवन या मृत्यु, चाहे वर्तमान बातें हों या आने वाली बातें – यह सब तुम्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है" (1 कुरि. 3:22,23)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर ख़ास ध्यान देने के लिए स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने सभी विश्वासियों को प्रोत्साहित किया है। सबसे पहले तो हम विश्वास द्वारा जय पाना सीखते हैं (1 यूह. 5:4)। इस तरह हम एक जयवंत जीवन की शुरूआत करते हैं, "जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिसने संसार पर जय प्राप्त की है, यह है: हमारा विश्वास।" इस पुस्तक में हमें एक सात-गुणा रूप में यह बताया गया है कि हम कैसे जय पा सकते हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 व 3 में "जो जय पाए" वाक्यांश सात बार दोहराया गया है।

इसी तरह, जय पाने वालों के लिए भी सात प्रतिफल हैं, और जय पाने वाला होने के लिए हमें सात आत्मिक अनुभवों में से गुज़रना पड़ता है। सबसे पहला आत्मिक अनुभव प्रेम है। "पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहला-सा प्रेम छोड़ दिया है।" हम बहुत निर्दयी बन जाते हैं: हमारे मुख से जाने-अनजाने दया-रहित, चोट पहुँचाने वाले कठोर शब्द निकलते रहते हैं, और हम अपने आपको ख़ुश करने के लिए दूसरों को बुरी लगने वाली बातें बोलते हैं। प्रभु को भी इन बातों से दु:ख होता है और चोट लगती है, और वह कहता है: "मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है।"

जब हम अपने हृदयों को एक कठोर दशा में पाएं, तो हमें प्रार्थना करनी चाहिए, "प्रभु, मेरे हृदय को कोमल बना दे।" यह मेरी प्रतिदिन की प्रार्थना होती है, "प्रभु, मेरे हृदय को कोमल बनाए रखना।" हम इतना ज़्यादा बोलते हैं कि हमारे हृदय कठोर हो जाते हैं। हम दूसरों की भावनाओं की परवाह किए बिना बहुत सी चोट लगने वाली बातें बोलते रहते हैं। हमारे हृदय सिर्फ प्रार्थना द्वारा कोमल, प्रेमी और दयालु बने रह सकते हैं। जय पाने वाला बनने में सबसे पहला और मूल अनुभव *दूसरों से प्रेम करना।*

दिसम्बर 25

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“हे प्रियो, यह दुःख–रूपी अग्नि–परीक्षा तुम्हारे बीच में इसलिए आई है कि तुम्हारी परख हो – इसे यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनहोनी घटना तुम पर घट रही है। लेकिन जैसे–जैसे तुम मसीह के दुःखों में सहभागी होते हो, तो आनन्दित हो, जिससे कि उसकी महिमा के प्रकट होते समय भी तुम आनन्द से उल्लसित हो जाओ” (1 पत. 4:12–13)।

दूसरा अनुभव प्रकाशितवाक्य 2:9–10 में मिलता है। “मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूँ (पर तू धनवान है), और उनकी ईश–निन्दा को भी जानता हूँ जो अपने को यहूदी तो कहते हैं पर हैं नहीं, वरन् शैतान के सभागृह हैं। *जो क्लेश तू सहने पर है उनसे मत डर।* प्राण देने तक विश्वासी रह तब मैं तुझे जीवन का मुकुट प्रदान करूँगा।”

पीड़ा सहना एक बड़ा विशेषाधिकार और सम्मान होता है, और हम इससे बच नहीं सकते। “शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, और न ही दास अपने स्वामी से बड़ा होता है। यही काफी है कि एक शिष्य अपने स्वामी की तरह, और एक दास अपने स्वामी की तरह हो।”

हम विश्वासियों को एक अलगाव का जीवन जीना चाहिए। हम संसार की नकल नही कर सकते, और न ही अविश्वासियों के साथ असमान जुए में जोते जा सकते हैं (2कुर. 6:14–17)। यह तीसरा अनुभव है – एक अलगाव का जीवन जीना। हम परमेश्वर के लोग हैं इसलिए हमारे कपड़े पहनने की आदतें, तौर–तरीक़े, रीति–रिवाज और बातचीत परमेश्वर के वचन के अनुसार होने चाहिए, और हमें अपनी बातचीत, लिबास, पसन्द, संगीत या इन्टरनेट के इस्तेमाल आदि से यही दर्शाना चाहिए कि हमारे जीवन से प्रभु की महिमा होती है।

चौथे अनुभव के लिए, हम प्रकाशितवाक्य 2:18–20 को देखेंगे।। उन्होंने सूली की आराधना करनी शुरू कर दी थी, और फिर धीरे–धीरे वे अनेक मूर्तियों को कलीसिया में ले आए और उनकी आराधना करने लगे। लेकिन इन सभी मूर्तिपूजक रीतियों/विधियों को दूर किया जाना चाहिए। ये सभी चीज़ें प्रभु यीशु मसीह की महिमा को चुराती हैं। परमेश्वर एक आत्मा है और यह ज़रूरी है कि हम आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें। अपनी आराधना को सहज बनाए रखें और उसमें व्यर्थ रीतियों, विधियों और परम्पराओं को शामिल करने से बचें।

दिसम्बर 26

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"जागृत हो और जो वस्तुएं शेष रह गई हैं और मिटने पर हैं, उन्हें दृढ़ कर, क्योंकि मैंने अपने परमेश्वर की दृष्टि में तेरे किसी काम को पूरा नहीं पाया है" (प्रका. 3:1–2)।

जागते रहो। यह हमारा पाँचवाँ आत्मिक अनुभव है। "इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आ जाएगा – सांयकाल, मध्यरात्रि, या मुर्ग़ के बांग देने के समय या प्रातःकाल – कहीं ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोता हुआ पाए। और जो मैं तुमसे कहता हूँ वही सबसे कहता हूँ" (मरकुस 13:35–37)। हम उसके आने की राह ताकते रहें। जागते रहने द्वारा हम स्वर्गीय विरासत में अपने भाग का आनन्द मना सकते हैं।

छठे अनुभव के लिए, हम प्रकाशितवाक्य 3:2 देखते हैं। "मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख मैंने तेरे लिए एक द्वार खोल रखा है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। हालांकि तेरी सामर्थ्य थोड़ी तो है, फिर भी तूने मेरे वचन का पालन किया है, और मेरे वचन का पालन किया है" (प्रका. 3:8)। "देख, मैंने तेरे आगे एक द्वार खोल रखा है, वह द्वार जिसे प्रभु यीशु मसीह ने खोला है।"

हमें बाहर जाना है। हमने अपने अनुभव में यह जाना है कि जब हमने मिलकर प्रार्थना की है, तो प्रभु ने हमें यह बताया है कि हमें कहाँ जाना है और क्या करना है, और तब हमने सुसमाचार के लिए बहुत सी जीवात्माओं को तैयार पाया है। और वह हमें बहुत सी जीवात्माएं देगा। परमेश्वर के दिशा–निर्देश में और परमेश्वर के लिए हम जिन जीवात्माओं को जीतते हैं, वे परमेश्वर के लिए हैं और वह उन्हें जानता है। हमने यह पाया है कि एक व्यक्ति का उद्धार हो जाने के बाद उसके द्वारा दूसरे लोगों का भी उद्धार होता है।

दिसम्बर 27

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"तुम्हारा विश्वास, जो आग में ताए हुए नश्वर सोने से भी ज़्यादा मूल्यवान है, परखा जाकर यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे" (1 पत. 1:7)।

सात आत्मिक अनुभवों में यह अंतिम अनुभव है। प्रकाशितवाक्य 3:18 कहता है: "इसलिए मैं तुझे सम्मति देता हूँ कि आग में शुद्ध किया हुआ सोना मुझसे मोल ले कि तू धनी हो जाए, और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहन कर तेरे नंगेपन की लज्जा प्रकट न हो, और अपनी आँखों में लगाने के लिए सुरमा ले ले कि तू देख सके।" यह एक *सशक्त और जीवित विश्वास* का चित्र है। सोने को सात बार शुद्ध करना पड़ता है। परमेश्वर कहता है कि अगर हमें ऐसा स्पष्ट विश्वास चाहिए तो हमें बहुत सी शुद्ध करने वाली आग में से गुज़रना पड़ेगा। अंत के इन दिनों में हमें एक दृढ़ विश्वास की ज़रूरत है।

फिर वह हमसे कहता है कि हम आँखों के लिए *सुरमा* ले लें। "अपनी आँखों में लगाने के लिए सुरमा ले ले कि तू देख सके" (प्रका. 3:18)। परमेश्वर के वचन में ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम नहीं समझते। इसलिए जब हम उसके पास जाते हैं, तो वह हमें आत्मिक सुरमा देता है, और हम इन बातों को समझने लगते हैं। जैसा कि भजनकार कहता है, "मेरी आँखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातों को देख सकूँ" (भजन. 119:18)।

अब आपके पास ये सात सहज अनुभव हैं। पहला *प्रेम* है; दूसरा कुड़कुड़ाए बिना *आनन्दपूर्वक पीड़ा सहना* है; तीसरा *संसार से अलगाव* है; चौथा *मनुष्यों की बनाई हुई रीतियों, परम्पराओं, विधियों और पर्वों से मुक्ति* है; पाँचवाँ *जागते रहना* है कि उसके आने के लिए तैयार रहें। छठा *खुले हुए दरवाज़ों में से प्रवेश करना* और यह सीखना है कि उसके लिए उन जीवात्माओं को कैसे ढूँढा और जीता जाए जिन्हें उसने तैयार किया है; और सातवाँ *दृढ़, जीवित विश्वास* है, आत्मिक सुरमे का इस्तेमाल करते हुए एक जीवित विश्वास और जीवन कि हम उसके स्वर्गीय रहस्यों को जान सकें। इन सब सहज बातों द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह में अपनी आत्मिक, स्वर्गीय, और महिमामयी विरासत को पाने की योग्यता हासिल कर सकते हैं।

दिसम्बर 28

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“और मैं अपना आत्मा तुममें उण्डेलूँगा... और तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा” (यहेज. 36:27,28)।

“इसलिए अगर कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं, देखो नई बातें आ गईं” (2 कुर. 5:17)। पद 18 का पहला भाग बहुत महत्वपूर्ण है, “ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं।” वह यह नहीं कहता, “अगर कोई मसीही है,” बल्कि यह, कि “अगर कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।” ‘अगर कोई व्यक्ति मसीह में है ... तो पुरानी बातें मिट जाती हैं, और सब बातें नई हो जाती हैं।’

ये नई बातें क्या हैं? “और फिर मैं तुम्हें एक नया हृदय दूँगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम्हें नया हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुममें डालूँगा और तुम्हें विधियों पर चलाऊँगा और तुम मेरे नियमों का पालन करोगे।” सबसे पहले यह काम होता है, ‘मैं तुम्हें एक नया हृदय दूँगा।’ जिस व्यक्ति ने एक नया हृदय पा लिया है, उसके अन्दर सबसे बड़ा बदलाव यह होता है: उसमें स्वर्गीय बातों के प्रति प्रेम पैदा हो जाता है।

जो *दूसरी चीज़* परमेश्वर हमें देता है, वह एक *अच्छा चरित्र* है। पापमय विचारों और कामों के जो भी गंदे दाग़ मुझ पर लगे थे, वह मेरे प्रभु ने अपने लहू से धोकर शुद्ध कर दिए हैं। इसका सबूत यह है कि अब मुझमें उसकी उपस्थिति में साहस और आज़ादी है। इब्रानियों 4:16 कहता है: “हम साहस के साथ कृपा के सिंहासन के पास आएं कि हम पर दया हो और कृपा पाएं कि आवश्यकता के समय हमारी सहायता हो।”

दिसम्बर 29

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"हे छोटे झुण्ड, मत डर, क्योंकि तुम्हारे पिता ने तुम्हें प्रसन्नतापूर्वक राज्य देना चाहा है" (लूका 12:32)।

हमें एक *नया स्वभाव* मिलता है। यह तीसरी नई बात है। "क्योंकि उसने हमें अपनी बहुमूल्य और उत्तम प्रतिज्ञाएं दी हैं, जिससे कि तुम उनके द्वारा उस भ्रष्ट आचरण से, जो वासना के कारण संसार में है, छूटकर ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ" (2पत.1:4)। परमेश्वर हमें एक ईश्वरीय, अलौकिक और शुद्ध स्वभाव देता है, क्योंकि हमारा पापमय स्वभाव कभी भी मानवीय प्रयास द्वारा शुद्ध नहीं किया जा सकता।

जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करते हैं, तब हम एक सात–गुणी सहभागिता में प्रवेश करते हैं। पहली बात, कि प्रभु यीशु मसीह को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने द्वारा हम पवित्र–आत्मा में सहभागी हो जाते हैं। दूसरी बात, कि हम परमेश्वर की पवित्रता में सहभागी हो जाते हैं। तीसरी बात, कि हमारी एक स्वर्गीय बुलाहट में सहभागिता हो जाती है। "इसलिए, हे पवित्र भाइयो, तुम स्वर्गीय बुलाहट में सहभागी हो" (इब्रा. 3:1)। यह बुलाहट क्या है? कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा और सामर्थ्य को आकाश की शक्तियों के सामने प्रकट किया जाए।

चौथी बात, कि हम स्वर्गीय विरासत में सहभागी हैं। "और पिता का धन्यवाद आनन्द से करते जाओ जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ विरासत में सहभागी हों" (कुलु. 1:12)।

पाँचवीं बात, कि हम स्वर्गीय महिमा में सहभागी हो जाते हैं। "इसलिए, मैं जो तुम्हारा सह–प्राचीन हूँ, मसीह के दुखों का साक्षी हूँ, और उस प्रकट होने वाली महिमा का भी सहभागी हूँ" (1 पत. 5:1)। छठी बात, कि हम स्वयं प्रभु के सहभागी हैं। "अगर हम अपने प्रथम भरोसे पर अंत तक दृढ़ता से स्थिर रहते हैं, तो हम मसीह में भागीदार बन गए हैं" (इब्रा. 3:14)। उन सब बातों में सहभागी जो उसके पास है। और सातवीं बात, हम ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी हो जाते हैं। मसीह को स्वीकार करने द्वारा हम इस सात–गुणी आत्मिक सहभागिता में प्रवेश करते हैं।

दिसम्बर 30

पवित्र–आत्मा के रहस्य

"उसी समय यीशु ने कहा, 'हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छुपा कर रखीं और बच्चों पर प्रकट की हैं'" (मत्ती 11:25)।

आठ नई बातों में से पहली तीन बातें हैं एक *नया हृदय*, एक *नया विवेक*, और एक *नया स्वभाव*। चौथी बात, कि हमें *नई बुद्धि* दी जाती है। "लेकिन उसी के कारण तुम मसीह यीशु में हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की तरफ से हमारी बुद्धि, धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा ठहरा" (1 कुरि. 1:30)। हमें स्वर्गीय रहस्यों को समझने के लिए स्वर्गीय बुद्धि दी जाती है। स्वर्गीय बातें सिर्फ स्वर्गीय बुद्धि द्वारा ही जानी जा सकती हैं। "लेकिन शारीरिक मनुष्य परमेश्वर की बातों को ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण होती हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरि. 2:14)।

पाँचवीं बात, कि हमारे मुख में स्तुति का एक *नया गीत* डाला जाता है। "उसने मुझे विनाश के गड्ढे में से निकाला, और उसने मेरे पैरों को चट्टान पर स्थिर करके मेरे क़दमों को दृढ़ किया। उसने मेरे मुँह में स्तुति का एक नया गीत, हमारे परमेश्वर की स्तुति का गीत डाला। बहुत से लोग देखेंगे और भयभीत होंगे, और परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे" (भजन. 40:2,3)। क्या परमेश्वर ने आपके मुख में ऐसा नया गीत डाला है कि आप हर तरह के हालात में उसकी स्तुति कर सकें?

और छठी नई बात एक *नया सौन्दर्य* है, वह सौन्दर्य जो सांसारिक वस्त्र और आभूषणों से नहीं मिलता पवित्र शास्त्र कहता है, "उसने मुझे उद्धार के वस्त्र से ढांपा है, सजाया है, और घेर लिया है" जो ज़्यादा और ज़्यादा जगमगाहट से भरता जाता है। इसे पहन कर देखें, तब आपका मुख परमेश्वर की महिमा से चमकने लगेगा। सब कुछ नया हो जाएगा। "देख, मैं सब कुछ नया करता हूँ।"

दिसम्बर 31

पवित्र–आत्मा के रहस्य

“लेकिन हम उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी की राह देख रहे हैं जिसमें धार्मिकता वास करती है” (2 पत. 3:13)।

वह हमें *नए सम्बंध* देता है। यह सातवीं नई बात है। “परन्तु उस कहने वाले को उत्तर देते हुए उसने कहा, ‘कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई?’ और अपने चेलों की तरफ हाथ बढ़कर उसने कहा, ‘देखो, मेरी माता और मेरे भाई! क्योंकि जो कोई मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा पूरी करता है, वही मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माता है’” (मत्ती 12:48–50)।

अंत में, हम शैतान को सांसारिक हथियारों से नहीं हराते। “हमारे *युद्ध के हथियार*गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य से परिपूर्ण हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली हरेक कल्पना का खण्डन करते हैं और प्रत्येक विचार को बन्दी बनाकर मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं” (2 कुरि. 10:4,5)।

परमेश्वर हमें नए हथियार देता है। यह आठवीं नई बात है। अब आप शत्रु को हरा सकते हैं। यशायाह 54:17 में हम पढ़ते हैं: “तेरी हानि के लिए बनाया गया कोई भी हथियार सफल न होगा, और जितनी भी जीभें तुझ पर दोष लगाएं, तू उन्हें दोषी ठहराएगी। परमेश्वर के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे कारण निर्दोष ठहराए जाएंगे। परमेश्वर की यही वाणी है।” रोमियों के अध्याय 12 में हम अपने युद्ध के हथियारों के बारे में पढ़ते हैं। “परन्तु अगर तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खाना खिला, और अगर प्यासा तो उसे पानी पिला, क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा” (रोमियों. 12:20)। बुराई से हार न मानो बल्कि भलाई से बुराई को जीत लो। हमारे युद्ध के नए हथियार हैं प्रेम, दया, संवेदना, प्रार्थना, सहनशीलता और धीरज। परमेश्वर की इच्छा को जानने द्वारा, और परमेश्वर के वचन का आदर करने द्वारा, हम शत्रु को हराते हैं।

अगर आप चाहते हैं कि वह आपको क्षमा करे, आपको बदल दे, और आपको एक नया मनुष्य बना दे, तो परमेश्वर का वचन पढ़ें, और उससे प्रार्थना करें।